ResearchGate

See discussions, stats, and author profiles for this publication at: https://www.researchgate.net/publication/324151845

□□□□ □□□□

Book · January 2017

CITATIONS
0

READS
34

1 author:

Bhagawati Paraksh Sharma
Pacific University India
265 PUBLICATIONS **0** CITATIONS

SEE PROFILE

All content following this page was uploaded by Bhagawati Paraksh Sharma on 02 April 2018.

The user has requested enhancement of the downloaded file.

अजेय भारत

प्रोफेसर भगवती प्रकाश शर्मा

लेखक की लघु पुस्तिकाएं

1. स्वदेशी
2. विश्व व्यापार संगठन
3. आर्थिक वैश्वीकरण : बाहरी दबाव जन्य रीतिनीति
4. आर्थिक वैश्वीकरण : वैश्विक षडयंत्र की रीतिनीति
5. स्वदेशी का शंखनाद
6. Disinvestment
7 Reasons of Global Meltdown & Lessons for India
8 वैश्विक आर्थिक संकट : कारण व समाधान
9. चीन एक सुरक्षा संकट
10 Nuclear Programme of India
11 फुटकर व्यापार में विदेशी पूंजी निवेश
12 विकास की भारतीय अवधारणा
13 चीनी गुसपैठ और हमारी सुरक्षा व्यवस्था
14 Chinese Agression : Need for Deterrent Action
15 Economic Resurgence through : Made by India "A Strategic Mix for Economic Turnaround of the Indian Economy
16 Economic Reforms and Made by India
17 FDI in Insurance & Pension Sectors
18 एकात्म मानव दर्शन
19. आर्थिक सुधार बनाम ''मेड बाई इंडिया''
20. मेड बाई इण्डिया
21 Made By India
22 सौर ऊर्जा तकनीकी राष्ट्रवाद की प्रासंगिकता
23. Solar Power : Need for Techno Nationalistic Approach
24 आर्थिक सुधारों के 25 वर्ष
25 चीन की चुनौतियाँ और समाधान
26 हिन्दुत्व की पहचान – समरस समाज

भूमिका

भारत की अनादि एवं चिरन्तन संस्कृति का गौरव बोध आज प्रत्येक भारतवासी में है। विश्व के विविध भागों में हुये अनेक भारतीय पुरातात्विक अन्वेषणों में प्राप्त पुरावशेषों के अनुसार, विश्व में विविध एकान्तवादी पंथों के उद्‌भव के पूर्व संपूर्ण भु–मण्डल पर भी भारतीय हिन्दू जीवन पद्धति व आचार–विचार परिव्याप्त रहे हैं। दक्षिण–पूर्व एशिया में इण्डोनेशिया से लेकर भारत, पाकिस्तान व अफगानिस्तान से होते हुए ईरान पर्यन्त, छठी शताब्दी तक हिन्दू जीवन पद्धति प्रचलित रही है। यूरोपीय पुरातत्वविदों– एडम्स व फीथियन द्वारा लिखित **''मित्राइज्म इन यूरोप''** नामक पुस्तक के अनुसार यूरोप का कोई भी पुरातात्विक उत्खनन ऐसा नहीं है जहाँ सूर्य की कोई प्रतिमा, पेण्डेण्ट अथवा अन्य कोई सूर्य देवता का प्रतीक या चिह्न न मिला हो अर्थात् ईसाइयत के प्रसार के पूर्व पूरे यूरोप में सूर्योपासक रहे हैं। अमेरिका महाद्वीप में तो मैक्सिको व कई दक्षिण अमेरिकी देशों में सूर्य के मन्दिर आज भी विद्यमान हैं। दक्षिणी अमरीकी देशों–पेरू, चिली, बोलिविया आदि में प्राप्त प्राचीन शिलालेखों की लिपि व सिन्धु घाटी में प्राप्त लिपि में कई समानतायें हैं। इससे यह निर्विवादतः सिद्ध होता है कि विगत दो सहस्त्राब्दियों में उत्पन्न एकान्तवादी उपासना मतों के जन्म के पूर्व समग्र भु–मण्डल पर एक साझी संस्कृति प्रचलित रही है।

औद्योगिक देशों के संगठन ''आर्थिक सहयोग व विकास संगठन'' अर्थात् ऑर्गेनाइजेशन फॉर इकॉनामिक कॉआपरेशन एण्ड डवलपमेण्ट (OECD), जिसमें अमेरिका, जापान, यूरोप आदि देश हैं के आग्रह पर, ब्रिटिश आर्थिक इतिहासकार 'एंगस मेडिसन' ने हाल ही में विश्व का जो 2000 वर्ष का इतिहास ''वर्ल्ड इकॉनामिक हिस्ट्री–ए मिलेनियम पर्सपेक्टिव'' (World Economic History-A Millenium Perspective) शीर्षक से इतिहास लिखा है, उसमें उन्होंने लिखा है कि शून्य AD से लेकर 1500 AD तक विश्व के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में भारत का अंश सर्वोच्च 33 प्रतिशत था अर्थात पूरे विश्व के उत्पादन का एक तिहाई भारत में ही होता था। उनके अनुसार मध्ययुग की उथल–पूथल में 1700 AD तक भी यह 24 प्रतिशत रहा है। ओ.ई.सी.डी. देशों के मुख्यालय व बेल्जियम की राजधानी ब्रुसेल्स से यह पुस्तक प्रकाशित हुयी है।

आज भी भारत, विश्व का विशालतम लोकतंत्र है। आज भारत की आर्थिक वृद्धि दर विश्व में सर्वोच्च है, विश्व की सर्वाधिक 18 करोड़ हैक्टैर, कृषि योग्य भूमि व सर्वाधिक 6 करोड़ हैक्टैर सिंचित क्षेत्रफल भारत के पास ही है। अपनी सर्वाधिक युवा जनसंख्या और विशाल तकनीकी कौशल–युक्त जनशक्ति (Large Pool of Talent) के माध्यम से भारत आज भी विश्व के उन्नत राष्ट्रों में क्रमांक एक पर प्रतिष्ठापित होने की सामर्थ्य रखता है। इसके लिये हमें हमारी समता मूलक व सामाजिक समरसता पूर्ण जीवन की प्राचीन विरासत को सजीव कर, सम्पूर्ण देश को एक मन व एक मस्तिष्क वाला बनाने की आवश्यकता है।

उदयपुर
√ 2073, पौष शुक्ल 3
रविवार, जनवरी 1, 2017

भगवती प्रकाश
bpsharma131@yahoo.co.in

अनुक्रमाणिका

क्र.सं.	अध्याय	
1.	भारत एक सनातन राष्ट्र	1
2.	हिन्दुत्व की पहचान : समरसता पूर्ण समाज	12
3.	हमारा प्राचीन गौरव	21
4.	अतीत की ऐतिहासिक गलतियाँ	30
5.	हमारा उज्ज्वल भविष्य और उसका मार्ग चित्र	43

अध्याय – 1

भारत एक सनातन राष्ट्र

'भारत' का नामकरण शब्द की व्युत्पत्ति 'विश्व का भरण पोषण करने में समर्थ देश' होने से हुआ है। प्राचीन काल में इण्डोनेशिया से पश्चिम में ईरान तक के भू–भाग में अतीत में एक साझी संस्कृति पर आधारित हिन्दू जीवन पद्धति प्रचलित रही है। कनिष्क के काल में 'त्रिविष्टप' अर्थात तिब्बत व सिंकियांग सहित वर्तमान भारत से अफगानिस्तान व मध्य एशियाई देशों तक यह भाग एक भू–राजनैतिक इकाई रहा है। चोल राज राजेन्द्र के काल में 1000 वर्ष पूर्व उनका राज्य सम्पूर्ण श्रीलंका व दक्षिण पूर्व एशिया तक रहा है इण्डोनेशिया में जावा व कम्बोडिया से लेकर अफगानिस्तान पर्यन्त इस सम्पूर्ण भू–भाग में आज भी अनगिनत भव्य प्राचीन मन्दिर अथवा उनके अवशेष प्रचुरता में हैं। इस प्रकार इण्डोनेशिया से सम्पूर्ण वर्तमान भारत वर्ष सहित ईरान तक की इस एक प्राचीन भू–सांस्कृतिक समानता वाली इकाई के अनेक विभाजनों के बाद भी वर्तमान शेष भारत में भी विश्व की सर्वाधिक कृषि योग्य भूमि (18 करोड़ हैक्टैर) व आज देश में वर्षाकाल में बिना उपयोग के 20 करोड़ हैक्टैर मीटर की जो जल राशि बहकर चली जाती है, उसका उपयोग करके देश में 16 करोड़ हैक्टैर भूमि की सिंचाई की जा सकती है। इस प्रकार सिंचाई साधनों के उचित विकास से देश के सम्पूर्ण कृषि योग्य भूमि का सिंचित क्षेत्रफल लगभग 6 करोड़ हैक्टैर है। अतएव सघन कृषि के माध्यम से आज भी भारत विश्व की दो तिहाई जनसंख्या की खाद्य आवश्यकता की पूर्ति करने में सक्षम होने से भारत नाम को सार्थक करता है।

प्राचीन काल में जब हिमालय का उद्‌भव भी नहीं हुआ था, गंगा नदी की उत्पत्ति नहीं हुयी थी, सम्पूर्ण भू–मण्डल आज की भांति अलग–अलग महाद्वीपों में विभक्त नही हुआ था उस काल की भौगोलिक रचना के विवरणों से युक्त ऋग्वेद को विश्व के सभी विद्वान एक मत से विश्व की प्राचीनतम पुस्तक मानते हैं। उसे संयुक्त राष्ट्र आर्थिक व सामाजिक आयोग (यूनेस्को) ने भी विश्व की अति प्राचीन विरासत की श्रेणी में रखा है। विश्व के प्राचीनतम ज्ञान के उद्‌गम वेदों सहित प्राचीन हिन्दू वांग्मय में आज जिस उन्नत ज्ञान, विज्ञान व प्रौद्योगिकी के प्रसंग आते हैं, उससे प्राचीन काल में एक अत्यन्त उन्नत व सुसंस्कृत जीवन के असंख्य सूत्रबद्ध प्रमाण मिलते हैं। इस प्रकार वेदों में राष्ट्र की संकल्पना का विवेचन और पुराणों में भारत की भौगोलिक व्यापकता का स्पष्ट वर्णन यह सिद्ध करता है कि भारत अति प्राचीन ही नहीं, एक अनादि सनातन राष्ट्र है। इसका स्पष्टीकरण आगे किया जा रहा है। सर्वप्रथम यदि 'हिन्दू', शब्द की ही व्याख्या करें तो यह सार्वभौम जन–जीवन में श्रेष्ठता के सूत्रपात का जीवन दर्शन है। हिन्दू शब्द की विवेचना भी कई प्रकार से की जा सकती है।

1.1 हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा

भारतवर्ष या भारत भूमि में जन–जीवन की श्रेष्ठता के इन सुसूत्रों की अनादिकाल से प्रतिष्ठा होने से यह आर्य भूमि, आर्य (श्रेष्ठता पूर्ण) राष्ट्र या हिन्दू राष्ट्र कहलाता रहा है।

हिन्दू राष्ट्र व इसका विस्तार

सरलतम शब्दों में 'हिन्दू राष्ट्र' से आशय ''हिन्दुओं या हिन्दू पूर्वजों की सन्तति का देश''। हिन्दू से आशय ''हिन्दू जीवन पद्धति से जीने वाले लोग'' या ''हिन्दू जीवन पद्धति से जीने वाले लोगो की सन्तति''। भौगोलिक दृष्टि से ''हिमालय से लेकर इन्दु सरोवर'' अर्थात हिन्द महासागर के बीच स्थित भू–भाग हिन्दू राष्ट्र कहलाता है। यह भौगोलिक सीमा–संज्ञक अर्थ, हिन्द महासागर के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में स्थित भू–भाग को अभिव्यक्त करता है। इन अर्थों से हिमालय के दक्षिण का पूर्व दिशा में इण्डोनेशिया से लेकर सम्पूर्ण भारत सहित, पश्चिम में अफगानिस्तान और ईरान तक का सम्पूर्ण क्षेत्र हिन्दू राष्ट्र कहा जाता रहा है जिसका दक्षिण चरम श्रीलंका तक है। आगम शास्त्रों के अनुसार 'हिन्दू' शब्द का अन्य अर्थ भी है। यथा हीन विचारों से दूर रहने वाला व हीन विचारों से समाज की रक्षा करने वाले को हिन्दू कहा जाता रहा है। यथा – हीनश्च दूष्यत्येव हिन्दुरिति उच्येते।

हिमालय के दक्षिण में सुदूर पूर्व पर दृष्टि डालें तो, वस्तुतः पन्द्रहवीं शताब्दी में जिहादी आक्रमणों के पूर्व इण्डोनेशिया से ले कर सम्पूर्ण दक्षिण–पूर्व एशिया, सनातन हिन्दू जीवन पद्धति का ही अनुयायी रहा है। यह पूरा भाग पौराणिक व बौद्ध उपासना मतों के अनुयायियों का ही क्षेत्र रहा है। वहाँ के 'श्री विजय', 'शैलेन्द्र', 'मजपहित' आदि प्राचीन साम्राज्यों का गौरवमय काल, वहाँ की प्राचीन भाषाओं में संस्कृत की प्रधानता और सूर्य, विष्णु, शिव, राम, कृष्ण व दुर्गा आदि हिन्दू देवताओं की उपासना की सुदीर्घ काल से चली आ रही परम्परा और जेहादी आक्रमणों के बाद भी बचे वहाँ के विशाल प्राचीन हिन्दू मन्दिर, आज भी उस क्षेत्र का, हिन्दू पूर्वजों की सन्तानों से आवासित होने के द्योतक हैं। सुमात्रा से न्यू गिनी तक और आज के इण्डोनशिया से मलेशिया, सिंगापुर, बुनेई, थाइलैण्ड (स्याम देश) पूर्वी टिमोर, फिलीपिन पर्यन्त सम्पूर्ण क्षेत्र में 1293 ईस्वी से मजपहित सम्राज्य रहा है। प्राचीन जबानी भाषा, यहाँ की बोली और आध्यात्मिक पूजा विधानों में संस्कृत एक मात्र भाषा थी।

इसी प्रकार पश्चिम में ईरान तक यह हिन्दू राष्ट्र था, जहाँ पारसी लोग ही रहते थे और 633–651 के बीच हुये कई जिहादी आक्रमणों के बाद ही वहाँ की जनता ने इस्लामी मतान्तरण स्वीकार किया था। पारसियों के उपासना ग्रन्थ 'जिन्दवेस्ता' में इन्द्र, वरूण, यम, विष्णु आदि देवताओं की आराधना के विधान हैं। वहाँ के अंतिम सासानी साम्राज्य का विस्तार इराक तक था। इस प्रकार पूर्व में, दक्षिण पूर्व एशिया से, मध्य में बांग्लादेश, अफगानिस्तान व पाकिस्तान सहित सम्पूर्ण भारत और पश्चिम में, ईरान व ईराक तक का क्षेत्र, अरबों के आक्रमण के पूर्व वैदिक पौराणिक बौद्ध व पारसी उपासना मतों के अनुयायों और हिन्दू पूर्वजों से युक्त था एतदर्थ यह विशाल भू–भाग, हिन्दू पूर्वजों की सन्तति से ही आवासित है।

कुषाण वंश के बौद्ध मतावलम्बी राजा कनिष्क के शासन काल (127–150 ईस्वी) में भी भारत की सीमाएँ पश्चिम में अफगानिस्तान, मध्य एशिया में उज्बेकिस्तान व ताजिकिस्तान और चीन के आज के सिकियांग प्रान्त व त्रिविष्टप अर्थात तिब्बत तक रही है। उस साम्राज्य की तीन राजधानियों में से एक पुरुष्पुर अर्थात पेशावर में थी। वहाँ 1900 वर्ष पूर्व, उसके द्वारा बनाये बौद्ध स्तूप की 286 फीट व्यास और ऊचाँई 689 फीट रही है। इसी प्रकार चौल राज राजेन्द्र का शासन, जिनका 1014 में राज्यारोहण हुआ था, बंगाल से सम्पूर्ण श्रीलंका व ब्रह्मदेश (म्यांमार) सहित सम्पूर्ण दक्षिण पूर्व एशिया पर्यन्त फैला था।

हमारी युगादि गणनाओं के अनुसार महाभारत का रचनाकाल 5000 वर्ष से भी प्राचीन है व महाभारत के युद्ध को भी लगभग 5100 से अधिक वर्ष हुये हैं। महाभारत में ईरान से इण्डोनेशिया पर्यन्त, सम्पूर्ण भारतीय उप–महाद्वीप को 'भारत' सन्दर्भित किया है। इस भारत वर्ष में अनेक राजाओं के राज्य थे। लेकिन, तब यहाँ इण्डोनशिया से ईरान पर्यन्त समान आचार–विचार व जीवन मूल्य युक्त समाज ही नहीं, वरन एक साझे संविधान युक्त अर्थात धर्म या एक समान कर्तव्य परायणता वाली शासन व्यवस्था थी। यथा मिथिला राज्य व उसका जनकपुर जो सीता जी का जन्म स्थान है वह आज नेपाल में है। त्रिविष्टप (कैलाश मानसरोवर जहाँ है) वह तिब्बत आज चीन के अवैध नियन्त्रण में है। कैलाश पर्वत पर पाण्डवों एवं युधिष्ठिर के जाने का वर्णन महाभारत में है। हिंगलाज सहित कुछ शक्तिपीठ व कई अन्य हिन्दू तीर्थ पाकिस्तान व बांग्लादेश में चले गये हैं। इनके अतिरिक्त कई प्राचीन तीर्थ दक्षिण पूर्व एशिया व अफगानिस्तान में भी हैं। भगवान बुद्ध का जन्म स्थान लुम्बिनी भी आज नेपाल में है। कैकय देश (कैकेयी का जन्म स्थान) आज पाकिस्तान में है। मद्र देश (माद्री का जन्म स्थान) भी पाकिस्तान में चला गया है। इसी प्रकार 2600 वर्ष पूर्व रचित, विश्व के सबसे पुराने व सर्वाधिक व्यवस्थित व्याकरण के रचयिता पाणिनी का जन्म स्थान भी पाकिस्तान में चला गया है। पाकिस्तान ने भी इस संस्कृत वैयाकरण की 2600 वीं जयन्ती को यह कह कर उत्साह पूर्वक मनाया था कि, हमें गर्व है कि विश्व की प्राचीनतम व सबसे वैज्ञानिक व्याकरण का रचयिता यहाँ रहा है। गान्धारी का जन्म स्थान गान्धार आज अफगानिस्तान में है। कम्बोज आज ईरान में है। परम–कम्बोज आज तजाकिस्तान में है। प्रहलाद मन्दिर और जहाँ होलिका वाला प्रसंग घटा था, वह मुल्तान आज पाकिस्तान में है, जिसका प्राचीन नाम 'मूल–स्थान' रहा है। उत्तर पश्चिम के इन राज्यों के वर्णन वाल्मिकी रामायण में भी है। वाल्मिकी रामायण में सुग्रीव उनके सेनापति को सीता जी की रवोज में कम्बोज व यवन भूमि में उत्तर–पश्चिम में जाने को कहते हैं। उत्तरवर्ती अनेक सन्दर्भ कम्बुज लोगों के गुजरात व कम्बोडिया तक विस्तार के वर्णन अनेक ग्रन्थों में है। महाभारत में वर्णित त्रिगर्त राज्य की राजधानी मुल्तान, जिसका प्राचीन नाम मूल स्थान था और जो पूर्व में ऋषियों की स्थली रही है, आज पाकिस्तान में है। इस प्रकार 2600 वर्ष के पूर्व के काल में भारत सहित इण्डोनशिया से ईराक तक केवल हिन्दू सनातन मत के अनुयायियों से ही आवासित यह पूरा क्षेत्र रहा है। बौद्धावतार के उपरान्त, जो दस अवतारों में विष्णु का नवाँ व 24 अवतारों में 23 वाँ अवतार माना गया है, उनके इस अवतार के बाद बौद्ध मत का प्रसार तो चीन, जापान, मंगोलिया, दक्षिण पूर्वी एशिया व श्रीलंका तक हुआ है। इस काल खण्ड में सम्पूर्ण यूरोप में सूर्य के उपासक रहे हैं। यूरोपीय पुरातत्वविद् **एडम्स** व **फिथियन** की पुस्तक ''मित्राइज्म इन यूरोप'' के अनुसार यूरोप का कोई पुरातात्विक उत्खनन ऐसा नही है, जिसमें सूर्य की प्रतिमा नहीं मिली हो। विदेशों में प्राचीन हिन्दू तीर्थों, यूरोप में सूर्योपासना के प्रचुर अवशेष और इण्डोनशिया से अमरीकी महाद्वीप पर्यन्त भी सूर्योपासना के प्रमाणों का संक्षिप्त विवेचन और हिन्दू संस्कृति की प्रागैतिहासिक प्राचीनता का विवेचन पुस्तक के द्वितीय अध्याय में किया गया है।

इस विषय का विस्तार यहाँ अधिक नही करते हुये मूल विषय के अवधारणात्मक प्रतिपादन पर ही पुनः केंद्रित करते हुये हिन्दू राष्ट्र की अवधारणात्मक समीक्षा पर ही केन्द्रित रखना उचित है। इस दृष्टि से संक्षेप में हिन्दू राष्ट्र से निम्न आशय लिया जाना चाहिए।

हिन्दू राष्ट्र का अर्थ : इस शब्द के सात या अधिक आशय भी लिये जा सकते हैं :–

(अ) **समूह वाचक अर्थः** 'हिन्दुओं का राष्ट्र' या 'हिन्दुओं एंव हिन्दू पूर्वजों की सन्तति से आवासित राष्ट्र'।

(ब) **जीवन शैली आधारित अर्थः** ''ऐसा राष्ट्र जहाँ हिन्दू जीवन पद्धति प्रचलित है और जहाँ के नागरिक के पूर्वजों में हिन्दू जीवन पद्धति, आचार–विचार और परम्पराएँ प्रचलित रहीं हों, जिसमें समग्र समाज का रहन–सहन, भोजन, भाषा, वेश–भूषा, रीति–रिवाज, सभ्यता, संस्कृति, जीवन मूल्य, आचार–विचार व उपास्य सम्मिलित हैं।'' यथा केरल का मुस्लिम, भारतीय हिन्दू परम्परा की मलयालम भाषा व साहित्य एवं बंगाल व बांग्लादेश का मुस्लिम बांग्ला भाषा बोलता है। ये दोनों ही भाषाएं संस्कृत से निकली हैं। इस प्रकार भारत सब प्रकार से एक हिन्दू राष्ट्र है। इनकी भाषा ही नही भोजन, भैषज्य (औषधि चिकित्सक पद्धतियाँ) पारिवारिक परम्पराएँ, सामाजिक मूल्य, न्याय पद्धति भूषा व वेष भी तद्नुरूप व समरूप ही है। नृवंश शास्त्र के अनुसार देश के अधिकांश मुस्लिमों की शरीर रचना वहाँ के हिन्दू समाज से भिन्न नहीं है। आज के भारत में जन्म से मृत्यु पर्यन्त सभी संस्कार, साहित्य, गीत – संगीत, नृत्य कला व जीवनचर्या, पारिवारिक जीवन आदि लगभग समान हैं। उपासना व ईष्ट या आराध्य के विषय में हिन्दू जीवन में अपूर्व स्वतन्त्रता है। एक ही परिवार के सदस्यों के भी राम, कृष्ण, शिव, हनुमान, दुर्गा आदि में से आराध्य हो सकते है। हिन्दू संस्कृति में धर्म अर्थात सामाजिक नियमों, मर्यादाओं व नैतिक आचार–विचार का पालन आवश्यक है।

(स) **भौगोलिक दृष्टि से हिन्दू राष्ट्र की सीमाएँ** : भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में हिन्द महासागर या इन्दु सागर पर्यन्त यह हिन्दुस्तान है।

स्वर्गीय डा. राधाकृष्णन् ने 1965 में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर राष्ट्र के नाम प्रसारित अपने भाषण में कुलार्णव तंत्र से हिन्दुस्तान नाम के सम्बन्ध में यह श्लोक कहा था, जो निम्नोक्त है–

हिमालयं समारभ्य यावदिन्दू सरोवरम्।
हिन्दुस्थानमिति ख्यातमान्द्यन्ताक्षरयोगतः।। (कुलार्णव तंत्र)

हिमालयात समारम्य योवत् इन्दु सरोवरम्।
तं देव निर्मितं देशं हिन्दुस्थान प्रचक्षते।। (बृहस्पति आगम)

बृहस्पति आगम के इस श्लोक का भी वही अर्थ है जो कि हिमालय से हिन्दमहासागर पर्यन्त यह संपूर्ण भू–भाग हिन्दुस्थान है।

इसके अनुसार हिमालय और इन्दु सरोवर (कन्याकुमारी) नामों के मेल से हिन्दुस्तान नाम बना है।

उत्तर में हिमालय से दक्षिण में हिन्द महासागर के बीच का क्षेत्र जो पूर्व में इण्डोनेशिया से पश्चिम में ईरान पर्यन्त, फैला हुआ है उस क्षेत्र में भारत की इन पौराणिक सीमाओं के मध्य हमारी साझी सांस्कृतिक विरासत के प्रमाण आज भी प्रचुरता से विद्यमान हैं। अतएव सुदीर्घकाल तक, दक्षिण–पूर्व एशिया से ईरान पर्यन्त यह देश एक भू–सांस्कृतिक इकाई के रूप में हिन्दुओं से आवासित भारत राष्ट्र के रूप में रहा है। इस प्राचीन हिन्दू राष्ट्र के प्रमाण रूप में सुदूर पूर्व में मलेशिया व इण्डोनेशिया में स्थित प्राचीन हिन्दू मन्दिरों से लेकर पाकिस्तान व अफगानिस्तान के हिन्दू, मन्दिर और ईरान में पारसी ग्रन्थ जिन्दवेस्ता आदि के हिन्दू देवी देवताओं के उल्लेख प्रचुरता में हैं।

विष्णु पुराण के अनुसार श्रीलंका सहित समुद्र के उत्तर और हिमालय के दक्षिण का सारा भू–भाग जिसमें भारत की सन्तति निवास करती है, वह देश भारतवर्ष है –

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्ष तत् भारतं नाम भारती यत्र संततिः।। (विष्णु पुराण)

लगभग उसी समय में लिखे गये वायुपुराण में, भारत देश के विस्तार तथा लम्बाई–चौड़ाई का भी स्पष्ट उल्लेख है। इसके अनुसार गंगा के स्त्रोत से कन्याकुमारी तक इस देश की लम्बाई एक हजार योजन है –

योजनानां सहस्त्रं द्वीपोऽयं दक्षिणोत्तरम्।
तायतो हि कुमारिक्याद् गंगा प्रभवाच्च यः।।

(द) **भू–सांस्कृतिक ईकाई के रूप में** : यदि हिन्दू संस्कृति के प्राचीनकाल के प्रसार क्षेत्र की दृष्टि से विचार करें तो हिन्द महासागर के उत्तर में व हिमालय के दक्षिण में स्थित सम्पूर्ण भू–भाग में हिन्दू संस्कृति प्रभावी रही है जो पूर्व दिशा में इण्डोनशिया से लेकर पश्चिम में ईरान व इराक तक फैले मेसापोटामिया तक रहा है। इस सम्पूर्ण क्षेत्र में, 1400 वर्ष पूर्व इस्लाम के उदय के पूर्व हिन्दू जीवन पद्धति का अनुसरण करने वाले जन समूह ही रहते रहे हैं। आज भी इन सभी क्षेत्रो में प्राचीन हिन्दू मन्दिरों के अवशेष व शिलालेख प्रचुरता में फैले हुये हैं। यदि, ईरान व ईराक पर अरबों के आक्रमण पिछली सहस्त्राब्दी में ही हो गये थे, उन्हें एक बार इस दृष्टि से भी छोड़ दें कि उस क्षेत्र में सांस्कतिक व पान्थिक मतान्तरण एक हजार वर्ष पूर्व हो चूका था और वहाँ अब हिन्दू तीर्थों व सांस्कृतिक अवशेषों का पूर्व स्वरूप उस प्रचुरता व सघनता में उपलब्ध नहीं है, तब भी इण्डोनशिया से अफगानिस्तान तक आज भी अनगिनत हिन्दू तीर्थ भारत के बाहर के देशों यथा इण्डोनशिया, कोरिया, थाईलैण्ड, मलेशिया, म्यांमार, बांग्लादेश, नेपाल, तिब्बत, चीन, पाकिस्तान व अफगानिस्तान में अपने मूल स्वरूप में हैं। इनका संक्षिप्त विवेचन इस पुस्तक के परिशिष्ट में किया गया है। अफगानिस्तान में विश्व की विशालतम 2300 वर्ष प्राचीन भगवान बुद्ध प्रतिमाओं को तालिबान ने गैर इस्लामिक कह कर डायनामाइट से तोड़ दिया था। पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट दो में इसका विवरण देखें।

(य) **समान ऐतिहासिक पृष्ठभूमि** : सम्पूर्ण भारतवर्ष के लोगों का इतिहास साझा है। इस क्षेत्र में ईसाई व मुस्लिम मतान्तरण आरम्भ होने के पूर्व का इतिहास, मतान्तरण के विरुद्ध एक समान संघर्ष, संघर्ष के काल के सुख– दुःख व आक्रमणों के प्रारम्भिक प्रतिकार की अनुभूतियाँ भी साझी हैं।

इन क्षेत्रों में ईसाई व ईस्लामी मतान्तरण का उस काल में यहाँ के सभी लोगों ने एक–एक कर सब ने आगे – पीछे प्रतिकार किया है। सबके पूर्वजों का पंथ सनातन हिन्दू जीवन पद्धति पर ही आधारित रहा है। ईसाई मतान्तरण भी, गोआ आदि कुछ क्षेत्रों में तो जेहाद संदृश प्रयोग बल पूर्वक भी हुआ है और अन्य कुछ क्षेत्रों में प्रलोभन या कूट रचित सेवा कार्यों की आड़ में भी किया गया है।

(र) **गुणवाचक अर्थ** : गुणवाचकता के आधार पर हिन्दू कौन व हिन्दू जीवन पद्धति क्या है। इसका विवेचन भी आवश्यक है। गुण चिन्तन के आधार पर ''हीन विचारों से द्वेष रखने व ऐसे हीन विचारों से मानवता की रक्षा में सन्नद्ध रहने वाला हिन्दू कहलाता है।'' यथा **हीनश्च दूष्यत्यैव हिन्दुरितिउच्येते।** स्वयं हीन विचारों से दूर रहना व मानवता के विरूद्ध हीनता के प्रदर्शन व अन्याय का डटकर विरोध भी करना और ऐसी दुष्टताओ का ध्वंस।

इस प्रकार श्रेष्ठ विचारों से युक्त एवं विश्व को श्रेष्ठ बनाने के लिये सतत प्रयत्नशील यथा कृण्वन्तो विश्वमार्यम अर्थात विश्व को श्रेष्ठ बनाने के लिये ध्येयनिष्ठ सभी लोग हिन्दू हैं। हीन विचारों से विश्व, समाज व मानवता की रक्षार्थ नीचवृत्ति, मानवता के प्रति द्वेष, हिंसा, क्रूरता, वैर या, हीनता का प्रदर्शन करने वालों को निरूद्ध करना व उन्हें दण्डित करना भी समाहित है। यह सब करना भी हिन्दू का कर्त्तव्य है। इस प्रकार प्राणी मात्र के प्रति संवेदना रखना व प्राणियों की दृष्टि से रक्षा व तदर्थ पराक्रम रखना भी हिन्दुत्व है। यह श्रेष्ठता उपनिषद आदि हिन्दू धर्म ग्रन्थों के अनेक बोध वाक्यों में से निम्न 2 संस्कृत के सुभाषित श्लोकों में ही परिलक्षित हो जाती है :

(क) सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु। मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्।।

(ख) पर द्रव्येषु लोष्ठवत, पर दारेषु मातृवत,
आत्मवत सर्वभूतेषु एषः सनातन धर्मः।

(ल) **उपासना पंथों से निरपेक्ष कर्त्तव्य–प्रधानता ही हिन्दू धर्म** : किसी एक प्रकार के उपासना पंथ के प्रति आग्रह रहित रहते हुये, समाज जीवन की मर्यादाओं का अनुसरण ही सनातन हिन्दू धर्म है। इस प्रकार हिन्दुत्व के विचार में धर्म वस्तुतः विश्व मानवता एवं विश्व बन्धुत्व से सम्बन्धित

कर्तव्यों और आचार–विचार का ही समुच्चय है। वेद, पुराणों, नीति ग्रन्थों, उपनिषदों, गृह्यसूत्रों व अन्य सभी हिन्दू धर्म शास्त्रों में प्राणी मात्र के कल्याण के आचार–विचार को ही धर्म कहा है। जैन मत के आचारांग सूत्र व तत्वार्थ सूत्र जैसे ग्रन्थों या बौद्ध मत के ग्रन्थ त्रिपिटक या सिख परम्परा के गुरु ग्रन्थ सहिब सभी भारतीय उपासना पंथों की समान उदात्त शिक्षायें हैं यथा मनुस्मृति में मनु ने धर्म के दस लक्षण बताये हैं :

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशकं धर्मलक्षणम।।

धृति (धैर्य), क्षमा (दूसरों के द्वारा अनजाने में बिना किसी दुर्भावना के किये गये अपराध को क्षमा कर देना या क्षमाशील होना), दम (अपनी वासनाओं पर नियन्त्रण करना), अस्तेय (चोरी न करना), शौच (अन्तरङ्ग और बाह्य शुचिता), (इन्द्रिय निग्रहः इन्द्रियों को वश में रखना), धी (बुद्धिमता का प्रयोग), विद्या (अधिक से अधिक ज्ञान की प्राप्ति), सत्य (मन वचन कर्म से सत्य का अनुसरण करना) और अक्रोध (अकारण क्रोध न करना); ये दस धर्म लक्षण हैं।

श्री मद् भागवत पुराण में धर्म के ऐसे ही 30 लक्षणों का विवेचन किया गया है। श्री रामचरित मानस में परहित को श्रेष्ठ धर्म व दूसरों को पीड़ा या कष्ट देना घोर अधर्म कहा गया है। दूसरों को पीड़ा देने वाले को दण्डित करना भी धर्म ही है।

सनातन हिन्दू मत के अनुसार जो अपने अनुकूल न हो वैसा व्यवहार दूसरों के साथ नही करना चाहिये – यह धर्म की कसौटी है।

श्रुयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैव अनुवर्त्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि, परेशां न समाचरेत्।।

अर्थ धर्म का सर्वस्व क्या है, सुनो और सुनकर उस पर चलो ! अपने को जो अच्छा न लगे, वैसा आचरण हमें दूसरो के साथ नही करना चाहिये।

हिन्दू धर्म, संस्कृत वांग्मय के अनुसार सनातन धर्म मत विश्व के सभी पंथो में सबसे पुराना व शाश्वत धर्म मत है। यह वेदों, पुराणों, नीति, ग्रन्थों पर आधारित धर्म है, जो अपने अन्दर विविध उपासना पद्धतियों, मत – सम्प्रदायों और दर्शन को सम्मिलित कर लेता है। इसमें विविध देवी – देवताओं की पूजा अनुमति है। मूलतः यह ऐकेश्वरवादी धर्म है जिसमें कहा गया है कि 'एको सत् बहुधा वदन्ति सदविप्राः अर्थात ईश्वर एक है, जिसे विद्वान लोग अलग – अलग प्रकार से समझाते आये हैं। इस धर्म मत को सनातन धर्म अथवा वैदिक धर्म भी कहते हैं। इंडोनेशिया में इस धर्म का औपचारिक नाम ''हिन्दु आगम'' रहा है। हिन्दू केवल एक धर्म या संप्रदाय ही नही है अपितु जीवन जीने की एक अत्यन्त लोचशील या समन्वयवादी पद्धति है इसका एक लक्षण हिंसा का निषेध भी है ''हिंसायाम दूयते या सा हिन्दू'' अर्थात जो अपने मन वचन कर्म से हिंसा से दूर रहे और समाज को हिंसाधारियों से बचायें वह हिन्दू है। जो कर्म अपने हितों साधने के लिए दूसरों को कष्ट दे वह भी हिंसा कही गयी है। भारत में प्रचलित सभी पंथों यथा सिख पंथ, जैन पंथ, बौद्ध पंथ, कबीरपंथ, दादू पंथ, शैव मत, शाक्त मत, वैष्णव मत आदि सभी इन समान सिद्धान्तों पर आधारित हैं।

इस प्रकार जैन या श्रमण परम्परा के ग्रन्थ, तत्वार्थ सूत्र में भी धर्म के 10 धर्मों या कर्तव्यों का ही वर्णन है, जो निम्न हैं :–

- उत्तम क्षमा
- उत्तम मार्दव
- उत्तम आर्जव
- उत्तम शौच
- उत्तम सत्य
- उत्तम संयम
- उत्तम तप
- उत्तम त्याग
- उत्तम आकिंचन्य
- उत्तम ब्रह्मचर्य

बौद्ध मत में :

इसी प्रकार बौद्ध मत में अष्टांग मार्ग के अंतर्गत सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक, सम्यक कर्म, सम्यक जीविका, सम्यक प्रयास, सम्यक स्मृति, व सम्यक समाधि – ये अष्टांग मार्ग बताए गए हैं। आज चीन, जापान, वियतनाम, थाईलैण्ड, म्यांमार, भूटान, श्रीलंका, कम्बोडिया, मंगोलिया, तिब्बत, लाओस, हांगकांग, ताईवान मकाउ, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया व उत्तर कोरिया सहित 18 देशों में बौद्ध मत प्रमुख पंथ है। भारत, नेपाल, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, रूस, ब्रुनेई, मलेशिया आदि देशों में भी लाखों–करोड़ों बौद्ध मतानुयायी हैं। ईसा पूर्व छठी शताब्दी में जन्में भगवान गौतम बुद्ध ने भारत से प्रारम्भ कर विश्व के कई भागों में बौद्ध मत का प्रसार किया व उनके बाद बौद्ध भिक्षुओं ने इसका व्यापक प्रसार किया। भगवान विष्णु के एक अवतार के रूप में सनातन हिन्दू व बौद्ध मत में बौद्ध मत के प्रवर्तक के रूप में भगवान बुद्ध को पूजा जाता है।

धर्म का मूल ऋत

सनातन हिन्दू धर्म में धर्म के मूल 'ऋत' को सबका आधार माना गया है। प्राचीन वैदिक धर्म में सही सनातन प्राकृतिक व्यवस्था और संतुलन के सिद्धान्त को 'ऋत' कहा है। अर्थात वह तत्व जो पूरे संसार और ब्रह्मण्ड को धार्मिक स्थिति में रखे या लाए। वैदिक संस्कृत में इसका अर्थ 'ठीक से जुड़ा हुआ, सत्य, सही या सुव्यवस्थित' होता है। यह हिन्दू धर्म का एक मूल सिद्धान्त है। 'ऋत ऋग्वेद के सबसे अहम धार्मिक सिद्धान्तों में से एक है' और 'हिन्दू धर्म का आधार इसी सिद्धान्त पर आधारित है'। इसका विवेचन आधुनिक हिन्दू समाज में पहले की तुलना में चाहें कम होता है लेकिन इसका धर्म और कर्म के सिद्धान्तों से गहरा व अटूट सम्बन्ध है।

वैदिक साहित्य में 'ऋत' शब्द का प्रयोग सृष्टि के सर्वमान्य नियम व समाज जीवन में सत्याचरण के लिये हुआ है। संसार के सभी पदार्थ परिवर्तनशील है। तब भी यह परिवर्तन भी नियम आधारित अपरिवर्तनीय नियमों के कारण ही सूर्य–चन्द्र भी पूर्व निर्धारित रीति से गतिशील हैं। संसार में जो कुछ भी है वह सब ऋत के नियम से बधाँ है। ऋत को सबका मूल कारण माना गया है। ऋत शब्द का प्रयोग भौतिक नियमों के साथ–साथ आचरण सम्बन्धी

नियमों के लिये भी किया गया है। उषा और सूर्य को ऋत का पालन करने वाला कहा गया है। इस ऋत के नियम का उल्लंघन करना असम्भव है। उसी प्रकार मानव मात्र को भी ऋत के नियम का पालन करना आवश्यक है। देवताओं से भी यह प्रार्थना की जाती है कि वे सब लोगों को ऋत के मार्ग पर ले चलें तथा अनृत के मार्ग से दूर रखें। ऋत को वेद में सत्य से पृथक माना गया है। ऋत वस्तुतः 'सत्य का नियम' है। अतः ऋत के माध्यम से सत्य की प्राप्ति स्वीकृत की गई है। यह ऋत तत्त्व वेदों की दार्शनिक भावना का मूल रूप है। ऋत का स्थान धर्म की ही तरह समाज जीवन की परम आवश्यकता है

पारसी धर्म और ऋतः पारसी धर्म में भी इसी से मिलता–जुलता 'अर्ता' का सिद्धांत मिलता है।

सिख मत में : पूज्य गुरू ग्रन्थ साहिब में तो देश के सभी सन्तों की वाणी व सनातन ऐसी ही कर्त्तव्य रूपी, भक्ति के संदेश व देवी–देवताओं के प्रचुर वर्णन व नामोल्लेख आदि हैं।

अतएवं सम्पूर्ण एशिया महाद्वीप में हिन्दुत्व के इन्हीं सिद्धान्तों का भिन्न–भिन्न प्रकार से विवेचन व इनका ही साक्षात प्रसार है।

विविधताओं से युक्त एकात्म सांस्कृतिक राष्ट्र : विविध उपासना पंथों से युक्त एक जन, एक समाज, एक संस्कृति व समान आचार–विचार युक्त राष्ट्र है। हिन्दू संस्कृति उपासना मत के आधार पर मानवता को खण्ड–खण्ड बाँटने पर विश्वास नहीं करती है। हमारी जीवन पद्धति साझी है।

हम सभी भारतवासी एक जन, एक देश और एक संस्कृति–हिन्दू संस्कृति के संवाहक हैं, व इसी के आधार पर भारत एक हिन्दू राष्ट्र है। ज्ञात इतिहास के प्रारंभ से ही यहां एक समुन्नत संस्कृति और सभ्य जीवन था। इस सन्दर्भ से हमारा राष्ट्र अनादिकाल से है।

भारत की राष्ट्रीयता, अपनी मातृभूमि के प्रति श्रद्धा, सुख–दुख की एक सी स्मृतियां, एक ही पूर्वज श्रृंखला और भविष्य के एक से सपनों में प्रकट होती है। यही है : भू सांस्कृतिक राष्ट्रवाद।

हमने इस बात को शुरू से ही समझा, कि एक ही सत्य को विद्वान अलग–अलग ढंग से समझते और कहते हैं। वेदवाक्य 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' इस को अभिव्यक्त करता है। हमारे इस विश्वास के कारण, हमने आस्था और विचार के स्वातंत्र्य को स्वाभविक रूप से जीया है।

1.2 अतीत में सम्पूर्ण भूमण्डल एक हिन्दू राष्ट्र

अतीत में सम्पूर्ण भूमण्डल पर यहीं श्रेष्ठ विचारों पर आधारित हिन्दू जीवन पद्धति से जीने वाला समाज रहा है। इण्डोनेशिया से अमेरिका तक इस समान जीवन पद्धति के अनेक उद्धरण व प्रमाण रहे हैं। सम्पूर्ण यूरोप में सूर्य के उपासक रहे हैं। सूर्य अर्थात मित्र के वर्णन एवं पुरावशेष आज भी सम्पूर्ण यूरोप में फैले हैं। यूरोपीय पुराविशेषज्ञों एडम्स व फीथियन की पुस्तक Mitraism in Europe में इसका समुचित विवेचन है।

सम्पूर्ण भू–मण्डल के एक राष्ट्र होने के वेद वाक्य अर्थात पृथ्वी से समुद्र पर्यन्त एक राष्ट्र व उसमें भिन्न–भिन्न शासन प्रणालियों से युक्त राज्य :

समस्त भू–मण्डल पर एक समेकित संस्कृति की दृष्टि से ईरान से भी परे यूरोप के लगभग सभी प्राचीन पुरातात्विक उत्खननों मे सूर्य देवता के अवशेषों की प्राप्ति, अमेरिका महाद्वीप के सूर्य मन्दिर, सिन्धुघाटी सभ्यता की लिपि व चित्रित पशुओं आदि के तत्सम लिपियों व जीवों का लेटिन अमेरिका तक में होने जैसे अनेक प्रमाण, विश्व भर में एक साझी संस्कृति से युक्त एकात्म राष्ट्र की वैदिक उक्ति **''पृथिव्याये समुद्र पर्यन्ताया एक राडिति''** अर्थात 'पृथ्वी से समुद्र पर्यन्त यह भूमण्डल एक राष्ट्र को चरितार्थ करती है। राष्ट्र की यह अवधारणा राज्यों की भौगोलिक या भू–राजनैतिक सीमाओं से परे रही है। समान धर्म मर्यादाओं अर्थात् शाश्वत कर्त्तव्यपथ को निर्देशित करने वाले एकात्म संस्कृति से युक्त राष्ट्र के अन्तर्गत विविध शासन प्रणालियों के अनुगामी राज्यों से आवेष्ठित होने पर भी, यह समग्र भू–मण्डल अति प्राचीन काल से एक एकात्म राष्ट्र के रूप में देखा जाता रहा है, यथा

ऊँ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं माहाराज्यमाधिपत्यमयं संमतपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्वायुष आंतादापरार्धात्पृथिव्यै समुद्रपर्यताया एकराडिति।। 3 ।। तदप्येशः श्लोकोऽभिगीतो। मरूतः परिवेष्टारो मरूत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वे देवाः सभासद इति।।4।।

उक्त मन्त्र में एक सार्वभौम राष्ट्र के अन्तर्गत भिन्न–भिन्न भू–राजनैतिक क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न शासन प्रणालियों से युक्त राज्यों के सन्दर्भ हैं। इन राज्यों का संक्षिप्त परिचय देना भी यहाँ समीचीन होगा।

उक्त श्लोकान्तर्गत आने वाली शासन प्रणालियाँ :–

ऐतरेय ब्राह्मण की अष्टम पंचिका में विविध शासन–प्रणालियों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। साथ ही इनके शासकों के नाम भी दिए गए हैं। यह भी उल्लेख है कि ये प्रणालियाँ कहाँ प्रचलित थी।[2] ये प्रणालियाँ हैं –

1. **साम्राज्य** – इस प्रणाली के शासक को 'सम्राट्' कहते थे। यह प्रणाली पूर्व दिशा के राज्यों (मगध, कलिंग, बंग आदि) में प्रचलित थी।[3] सम्राट् एकछत्र अधिकारी होता था। वहाँ कोई सभा, समिति या संसद नहीं होती थी।

2. **भौज्य** – इस प्रणाली के शासक को 'भोज' कहते थे। यह प्रणाली दक्षिण दिशा के सत्वत् (यादव) राज्यों में प्रचलित थी। अन्धक और वृष्णि यादव–गणराज्य इस श्रेणी में आते हें। इस शासन–प्रणाली में जनहित और लोक–कल्याण की भावना अधिक रहती थी, अतः यह पद्धति अधिक लोकप्रिय हुई। यहाँ बुद्धिजीवियों की सभा होती थी, जो सब प्रकार के प्रमुख निर्णय लिया करती थी।

3. **स्वराज्य** – इस प्रणाली के शासक को 'स्वराट्' कहते थे। यह प्रणाली पश्चिम दिशा के (सुराष्ट्र, कच्छ, सौवीर आदि) राज्यों में प्रचलित थी। यह स्वराज्य या स्वशासित (Self-ruling) प्रणाली है। राजा स्वतंत्र रूप से शासन न करके अपनी सभा के निर्णयों से प्रतिबद्ध होता था।

4. **वैराज्य** – इस प्रणाली के शासक को 'विराट्' कहते थे। यह प्रणाली हिमालय के उत्तरी भाग उत्तर कुरू, उत्तर मद्र आदि राज्यों में प्रचलित थी। यह शासन–प्रणाली जनतंत्रात्मक या संघ शासन–प्रणाली है। इसमें प्रशासन का उत्तरदायित्व व्यक्ति पर न होकर समूह या सभा पर होता हैं। यह सभा प्रबल सामन्तों की होती थी।

5. **पारमेष्ठ्य राज्य** – इस प्रणाली के शासक को 'परमेष्ठी' कहते थे। महाभारत के शान्तिपर्व और सभापर्व में इसका विस्तार से वर्णन हुआ है।[4] यह गणतंत्र–पद्धति है। इसकी मुख्य विशेषता है – प्रजा में शान्ति–व्यवस्था की स्थापना और परमेश्वर को राज्य का अधिपति मानकर त्याग पूर्वक राज्य संचालन। इसमें सभी को समान अधिकार प्राप्त होता है। गणमुख्य योग्यता और गुणों के आधार पर होता है।[5] 'मेवाड़' अर्थात मेदपाट राज्य में भगवान शिव अर्थात एकलिंगनाथ को राजा मान कर महाराणा, उनके दीवान के रूप में शासन करते थे।

6. **राज्य** – इस प्रणाली में राज्य का उच्चतम शासक 'राजा' होता था। यह प्रणाली मध्यदेश में कुरू, पंचाल, उशीनर आदि राज्यों प्रचलित थी। राजा की सहायता के लिए मंत्रियों की परिषद् होती थी। शासनतंत्र के संचालन के लिए विभिन्न अधिकारियों की नियुक्ति होती थी।[1]

7. **महाराज्य** – इस प्रणाली के प्रशासक को 'महाराज' कहते थे। यह राज्य पद्धति का उच्चतर रूप है। किसी प्रबल शत्रु पर विजय प्राप्त करने पर उसे 'महाराज' उपाधि दी जाती थी।

8. **आधिपत्य समन्तपर्यायी** – इस प्रणाली से प्रशासक को 'अधिपति' कहते थे। इस प्रणाली को 'समन्तपर्यायी' कहा गया है। वह पड़ौसी जनपदों को अपने वश में कर लेता था तथा उनसे कर वसूल करता था। छान्दोग्य उपनिषद् में इस प्रणाली को श्रेष्ठ बताया है।[2]

9. **सार्वभौम** – इस प्रणाली के प्रशासक को 'एकराट्' कहते थे। ऐतरेय ब्राह्मण में इसका उल्लेख है।[3] यह सारी भूमि राजा की होती थी। इस प्रणाली को 'सार्वभौम प्रभुत्व' नाम दिया गया है।

10. **जनराज्य या जानराज्य** – यजुर्वेद, तैत्तिरीय संहिता और शतपथ ब्राह्मण आदि में 'महते जानराज्याय' महान् जनराज्य का उल्लेख है।[4] इससे ज्ञात होता है कि राजा का अभिषेक 'जनतंत्रात्मक प्रशासन' के लिए होता था। इसके प्रशासक को 'जानराजा' कहा जाता था।

11. **अधिराज्य** – ऋग्वेद और अथर्ववेद में इसका उल्लेख है।[6] इसके प्रशासक को 'अधिराज' कहते थे। इस प्रणाली में 'उग्रं चेत्तरम्' अर्थात् राजा उग्र और कठोर अनुशासन रखता था। राजा निरंकुशता का रूप ले लेता होगा, अतः यह प्रणाली आगे लुप्त हो गई।

12. **विप्रराज्य** – ऋग्वेद और अथर्ववेद में विप्रराज्य का वर्णन है।[7] इसमें यज्ञ, कर्मकाण्ड पर विशेष बल था।

13. **समर्यराज्य** – ऋग्वेद में समर्यराज्य का उललेख है।[1] समर्य का अर्थ है – सम्–श्रेष्ठ या संपन्न, अर्य–वैश्य। यह धनाढ्यों का राज्य था। इसमें व्यापार में उन्नति, धन–धान्य की समृद्धि और सैन्यशक्ति की वृद्धि का उल्लेख है।

राष्ट्र : एक प्राचीन हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा, वैदिक काल से ही प्रचलित रही है। भारत अपनी साझी सांस्कृतिक विरासत के कारण भारत एक अति प्राचीन सांस्कृतिक राष्ट्र है। विगत दो सहस्त्राब्दियों में बने अनेक **पाथिक** व भू–राजनैतिक राज्यों के बनने के पूर्व भारत की इस भू–सांस्कृतिक एकता, के वैश्विक व्याप के आज भी अनेक प्रमाण प्रकट हो रहे हैं। लेकिन, आज की भू–राजनीतिक सीमाओं से युक्त भारत की सघन सांस्कृतिक एकतावश निर्विवाद रूप से भारत भू–सांस्कृतिक दृष्टि से हिन्दू राष्ट्र है। देश की यह अनादिकालीन भू–सांस्कृतिक एकता, सामायिक वैश्विक परिवेश व परिवर्तनों से अप्रभावित रही है। हमारा हिन्दू राष्ट्र सांस्कृतिक एकात्मता से ही जाना जाता है, क्योंकि संस्कृति ही राष्ट्र के गठन का मुख्य आधार होता है।

अपना राष्ट्र जीवन बाह्मत : अनेक पंथोपपंथ, संप्रदाय तथा जाति–उपजातियों अथवा कभी–कभी अनेक राज्यों में विभक्त हुआ दिखने के बावजूद उनकी सांस्कृतिक एकात्मता युगों से अविच्छिन्न रही है। जिस मानव समुदाय का यह एकात्म प्रवाह रहा है, उन्हें हिन्दू के नाम से संबोधित किया जाता है। इसलिये भारतीय राष्ट्रजीवन ही हिन्दू राष्ट्रजीवन है।

1.3 राष्ट्र की संकल्पना अतिप्राचीन

हिन्दू विचार दर्शन में राष्ट्र का अर्थ

भारत में वैदिक वांग्मय में राष्ट्र शब्द की अत्यंत अर्थपरक व्याख्या की गयी है, जो अति प्राचीन भी है। वेदों का अतिप्राचीन होने से भारतीय हिन्दू संस्कृति में राष्ट्र अवधारणा भी अति प्राचीन सिद्ध होती है।

भारत में राष्ट्र की अवधारणा अति प्राचीन है। मानव के सार्वभौम कल्याण की प्रेरणा से एक साझी सांस्कृतिक विरासत के संवाहक के रूप में, तेज व ओज से युक्त एक साझे समाज–जीवन को अविरल बनाये रखने के भाव से राष्ट्र की अवधारणा वैदिक काल से ही प्रचलित रही है। यथा :–

भद्रं इच्छन्त ऋषयः स्वर्विदः तपो दीक्षां उपसेदुः अग्रे।
ततो राष्ट्रं बलं ओजश्च जातम्। तदस्मै देवा उपसं नमन्तु ।।

(अथर्व. 19/41/1)

''आत्मज्ञानी ऋषियों ने जगत का कल्याण करने की इच्छा से सृष्टि के प्रारम्भ में जो दीक्षा लेकर तप किया, उससे राष्ट्रनिर्माण हुआ, राष्ट्रीय बल और ओज भी प्रकट हुआ। इसलिए सब प्रबुद्धजन इस राष्ट्र के सामने नम्र होकर इसकी सेवा करें।'' लेकिन राष्ट्र कहलाने की पात्रता के लिये विद्वज्जनों की

विचारवान व लोकतांत्रिक सभा/समिति/पंचायतों आदि में सामूहिक निर्णय परम्परा के साथ आत्म रक्षार्थ समुचित बल समाज के संरक्षण व योगक्षेमं में सक्षमता के लिये भी आवश्यक है। यथा यजुर्वेद का मंत्र 22–22

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः भारऽइशव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योशा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो युवास्या यजमानस्य वीरो जायतां, निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्योनऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

इस सूक्त के अनुसार जन–समूह, जो एक सुनिश्चित भूमिखण्ड में रहता है, संसार में व्याप्त और इसको चलाने वाले परमात्मा अथवा प्रकृति के अस्तित्व को स्वीकार करता है, बुद्धि को प्राथमिकता देता है और विद्वज्जनों का आदर करता है, और जिसके पास अपने देश को बाहरी आक्रमण और आन्तरिक, प्राकृतिक आपत्तियों से बचाने और सभी के योगक्षेम की क्षमता हो, वह एक राष्ट्र है।

उपरोक्त सभी उद्धरणों के अनुसार भारतीय उपमहाद्वीप कहलाने वाला भारत अनादि काल से एक भू–सांस्कृतिक राष्ट्र रहा है। महाभारत कालीन सभी राज्यों की संस्कृति व राज्य संहिताएँ समान रही हैं। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में समस्त भारत के राज्यों ने एक समेकित राष्ट्र के अंगभूत राज्यों के रूप में भाग लिया है। इस प्रकार हिन्दू धर्म शास्त्रों में राष्ट्र की अवधारणा अति प्राचीन व सार्वभौम एक विधान की भी एक परम्परा रही है तदनुसार भारत तो अनादिकाल से हिन्दू राष्ट्र था और आज भी है। पूर्वोवत विवेचनों के अनुसार वेदों को आधुनिक इतिहासकार भी एक मत से न्यूनतम 5000 वर्षों से अधिक प्राचीन मानते हैं। अब तो महाभारत कालीन 5000 वर्ष प्राचीन द्वारिका नगरी के अवशेष भी समुद्र के अन्दर मिल चुके हैं। रामायण कालीन राम सेतु को नासा ने भी 17.5 लाख वर्ष पुराना माना है। वाल्मिकी रामायण में वर्णित चार दांत वाले हाथी आज के पुरातत्व विदों के अनुसार पृथ्वी पर से 10 लाख वर्ष पूर्व विलुप्त हो गये थे, जो 2.5 करोड़ वर्षों से होते आये हैं। यह चार दांत वाले हाथियों का उदाहरण रामायण काल को 10 लाख वर्ष से भी अधिक प्राचीन पौराणिक त्रेता युग कालीन सिद्ध करता है। वाल्मिकी रामायण में सुन्दर काण्ड में हनुमान जी द्वारा रावण की सेना के अवलोकन में चार दांत वाले हाथी देखे जाने का वर्णन आता है। हमारी पौराणिक गणनाओं के अनुसार त्रेता युग आज ईस्वी 2016 से 8,69,118 वर्ष पूर्व समाप्त हो गया था, जिसमें भगवान राम का अवतार हुआ था। इन सभी विवेचनों के अनुसार वेदों का काल तो महाभारत काल व रामायण काल से पीछे ही जायेगा। तदनुरूप आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार वेदों का काल 5000 वर्ष से भी प्राचीन व भारतीय पौराणिक गणनानुसार लाखों वर्ष पीछे जाता है। दोनों ही प्रकार से प्राचीन हिन्दू धर्म शास्त्रों में राष्ट्र की इतनी उन्नत संकल्पना विश्व के अन्य पंथों के उदय से बहुत पहले ही सपुष्ट रूप ले चुकी थी। हम जब हिन्दू राष्ट्र के पुनरूत्थान अथवा पुनःप्रतिष्ठापना की बात करते हैं, तब अपने समाज जीवन में इन हिन्दू जीवन मूल्यों को अच्छी तरह दृढ़ता पूर्वक पुनः स्थापित करना है, एवं प्रत्येक नागरिक में हिन्दुत्व की इस साझी सांस्कृतिक विरासत को सुदृढ़ कर पूरे देश को हिन्दुत्व के आचार–विचार युक्त पर एक मन, एक मत व एक मस्तिष्क वाला देश बनाना है। ऐसा इसका अपेक्षित अर्थ है। हिन्दुत्व का अर्थ है सर्वसाधारण रूप से हिन्दू संस्कृति के मूल्यों से आशय है। ईरान व अफगानिस्तान से इण्डोनेशिया पर्यन्त सहस्त्राब्दियों तक यहाँ एक साझी संस्कृति रही है। सब लोगों की विदेशी आक्रमणों की 1300 वर्षों की साझी अनुभूतियाँ भी रही हैं। हम जर्मनी का उदाहरण लें। दूसरे विश्व युद्ध के बाद जर्मनी का पूर्वी व पश्चिमी जर्मनी में विभाजन हो गया था। तब वह एक राष्ट्र व 2 राज्य थे लेकिन, साम्यवाद का पतन होते ही वह दो भाग या राज्य एक हो गये। अर्थात् वहाँ राज्य 2 थे पर राष्ट्र एक था अब पुनः एक राष्ट्र व एक राज्य है। भारत एक सार्वभौम हिन्दू राष्ट्र रहा है इसका विवेचन पूर्व में किया जा चुका है।

''पृथिव्यै समुद्र पर्यन्ताया एक राष्ट्र इति'' की वैदिक उक्ति के अनुसार 5 सहस्त्राब्दि से बहुत पहले, समस्त भू–मण्डल पर एक साझी हिन्दू संस्कृति के संवाहक एकात्म राष्ट्र के, अस्तित्व में होने का प्रमाण देती है। हमारी इस सांस्कृतिक एकात्मकता व हिन्दू जीवन दर्शन से युक्त राष्ट्र में, सभी भिन्न–भिन्न शासन प्रणालियों से युक्त राज्यों का वर्णन भी वेदों में प्रचुरता से आया है जिसका विवेचन किया जा चुका है। कालान्तर में वही सांस्कृतिक एकात्मकता युक्त राष्ट्र के भारतीय उपमहाद्वीप कहलाने वाले क्षेत्र में ही सीमित हो जाने के बाद भी इण्डोनेशिया से ईरान तक 7 वीं सदी तक, एक सांस्कृतिक हिन्दू राष्ट्र–जीवन के प्रचलन में होने के प्रचुर प्रमाण अवशिष्ट हैं।

आज का सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप ही हिन्दू राष्ट्र रहा है व इसकी हिन्दू संस्कृति को पाकिस्तान भी समान रूप से मान्यता देता रहा है। कुछ वर्ष पूर्व पाकिस्तान तक ने संस्कृत व्याकरणाचार्य पाणिनी का 2000वां जन्मदिन मनाया था। पाणिनी की अष्ठाध्यायी विश्व की उपलब्ध सभी व्याकरणों में प्राचीनतम है। पाणिनी का जन्म भी पाकिस्तान में हुआ था व वहीं उन्होंने अष्ठाध्यायी की रचना की थी। इसलिये पाकिस्तान को पाणिनी ने अपनी सांस्कृतिक विरासत का अंग माना था। भारतीय उपमहाद्वीप के तीनों देशों भारत, पाकिस्तान व बांग्लादेश को आबद्ध करने वाली इस संस्कृति की जड़ें बहुत गहरी है। इस बात को पाकिस्तान की स्थापना के तुरन्त बाद वहां के पुरातत्वीय परामर्शदाता आर.ई.एम. व्हीलर ने '5000 इयर्स ऑफ पाकिस्तान' (पाकिस्तान के पांच हजार वर्ष) नामक पुस्तक की रचना कर व्यक्त की थी। 1947 के पूर्व के पाक इतिहास में भी भारतीय संस्कृति का समावेश होना ही है। उस पुस्तक की भूमिका में पाकिस्तान ने तत्कालीन वाणिज्य एवं शिक्षामंत्री फ़ज़लुर्रहमान ने इसे स्वीकारा था।

आज के स्वाधीन भारत में भी, पूर्व में पूर्वोत्तर अर्थात कामरूप (आसाम क्षेत्र) से पश्चिम में द्वारिका तक और उत्तर में त्रिविष्टप अर्थात तिब्बत से कन्याकुमारी तक, प्राचीन हिन्दू संस्कृति अपने सघन रूप में विद्यमान है। सांस्कृतिक दृष्टि से भारत के इस, एक सांस्कृतिक राष्ट्र के रूप में संचालित समाज–जीवन है। वैसे दक्षिण पूर्व एशिया के जावा, सुमात्रा, स्याम, चम्पा, मलय आदि क्षेत्र जो आज इण्डोनेशिया, मलेशिया, थाईलैण्ड, वियतनाम आदि दस देशों के रूप में आबाद हैं, उन सभी में प्राचीन हिन्दू मन्दिरों से लेकर अनेक ऐसे पुरातात्विक अवशेष हैं जिनसे वे हिन्दू राष्ट्र का अंग रहे सिद्ध होते हैं। सम्पूर्ण यूरोप में सूर्य के उपासक ही रहते थे। ईसाईयत के प्रसार के पूर्व के 'सूर्य' अर्थात 'मित्र' के उपासकों पर Mitraism in Europe पर प्रचुर साहित्य मिलता है। अमेरिका में मेक्सिको के सूर्य मन्दिर व दक्षिण अमेरिका के कुछ शिलालेखों में मेक्सिको के सूर्य मन्दिर व दक्षिण अमेरिका के कुछ शिलालेखों का सिन्धु घाटी सभ्यता व तमिल ब्राह्मी लिपि में सम्बन्ध सम्पूर्ण भूमण्डल पर, इस्लाम व ईसाईयत के पहले हिन्दुत्व के प्रसार के ही प्रमाण हैं।

सार्वभौम एकता का दर्शन व सभी मत–पंथों के प्रति समान आदर की परम्परा – हिन्दुत्व का मूल : हिन्दुत्व एक ऐसी जीवन पद्धति है

जो सम्पूर्ण मानवता को जोड़ने वाली है। उपासना पंथों के आधार पर वैमनस्य, द्वैष व हिंसा को बढ़ावा देने के स्थान पर सभी विविध मत पंथों को समान आदर देते हुये समाज में सौहार्द व व्यवस्था को बनाये रखने या धारित करने को ही धर्म के रूप में परिभाषित करती है। इसका पूर्व में विवेचन किया जा चुका है। वैश्विक विविधताओं, सब व्यक्तियों की रूचि, परम्परा, विश्वास, बौद्धिक विकास आदि के अनुसार सभी उपासना मतों को समान मान्यता देती है। इसे अनेकान्त वाद कहते हैं। एक बगीचें में विविध पुष्प व फल ही उसकी शोभा होते हैं। विश्व में सारी पांथिक हिंसा उस पथ विशेष के एकान्तवादी विचार के कारण फैली है। मेरे मत को छोड़कर अन्य मत मिथ्या या कुफ्र, ऐसा कहकर भिन्न उपासना पंथों के अनुयायियों पर भयावह अत्याचार करने की जो कुछ पथों में परम्परा बन गयी है कि या तो हमारा पंथ स्वीकार करो अथवा मृत्यु के लिये तैयार रहो। यह एकान्त वादी जुनून ही 1400 वर्षों की जिहादी हिंसा का कारण है। ईसाई मत का भी यह आग्रह कि सब लोगों को ईसा मसीह की शरण में लाना ही धर्म है। मध्य युग में ग्यारहवीं सदी से सत्रहवीं सदी के बीच इस्लाम के प्रसार के जिहादी आक्रमणों व ईसाई प्रति आक्रमण ''क्रूसेड'' के बीच 2 करोड़ लोग मारे गये हैं।

सर्व पंथ समादर : सब पंथों का समान आदर

हिन्दूत्व में मानवता व उसके योगक्षेम को सर्वोपरि मानकर सभी उपासना पंथों को समान रूप से सच्चा माना है। हिन्दुत्व की विचारधारा में एक ही परिवार में ही सभी सदस्यों के भिन्न–भिन्न आराध्य देव हो सकते हैं। हमारी संस्कृति यह स्वीकार करती है, कि परमात्मा तक जाने के अनेक मार्ग हैं, क्योंकि लोगों की रूचियां भिन्न–भिन्न हैं, क्षमताएं भिन्न–भिन्न हैं। अतः सब एक ही पथ पर कैसे चल सकते हैं? शिवमहिम्न स्तोत्र सूत्र में कहा है–

रूचीनां वैचित्र्यादृजु कुटिलनानापथजुषां।
नृणामेको गम्यस्त्यवमसि पयसामर्णव इव।।

अर्थात् अपनी भिन्न–भिन्न रूचि के अनुसार भिन्न–भिन्न उपासना मार्गों पर श्रद्धापूर्वक चलते हुए सभी साधक, हे प्रभु तुम तक उसी प्रकार पहुंचेंगे जिस प्रकार उत्तर, दक्षिण, पूर्व पश्चिम किसी भी दिशा की ओर अत्यंत टेढ़े–मेढ़े मार्गों से बहने वाली सभी नदियां समुद्र तक पहुंचती ही हैं। श्री रामकृष्ण परमहंस कहते हैं, ''जतो मत ततो पथ' जितने मत हैं, भगवान तक पहुंचन के उतने ही पथ हैं' विनोबा भावे ने इसे भरतीय संस्कृति का विशिष्ट लक्षण बताते हुए इसको ''भी–वाद'' का नाम दिया है। इसका अर्थ हुआ कि यदि हम सब श्रद्धापूर्वक अपने–अपने मार्ग पर चल रहे हैं, तो लक्ष्य तक तुम्हारा मार्ग भी पहुंचेगा एवं मेरा भी। इस से धर्म या विचार के आधार पर संघर्ष या दमन इत्यादि की संभावना ही नष्ट हो जाती है। हमारे यहाँ शैव, वैष्णव या शाक्त सम्प्रदाय के अनुसार एक ही परिवार के सदस्यों के इष्ट देवता अलग–अलग हो सकते हैं। हम किसी को उसका इष्ट या आराध्य बदलने को 'जेहाद' जैसा कोई पांथिक युद्ध नहीं छेड़ते। सब पंथों का समान आदर करते हैं। स्वयंसेवकों द्वारा तो सर्व पंथ समादर मंच भी बनाया गया है। हिन्दुत्व सभी मत पंथों में वैमनस्य के स्थान पर अटूट एकात्मकता की स्थापना का साधन व साध्य है। हिन्दुत्व सभी विविध पंथों के महापुरूषों कों स्थान देता है। परम शैव माक्रण्डेय ऋषि का भी वही स्थान है जो गायत्री मंत्र के दृष्टा विश्वामित्र का है। रामायण के रचयिता ऋषि वाल्मिकी, भागवत–कथा के रचयिता वेद व्यास, गुरू नानक देव सहित सभी गुरूओं और बुद्ध व महावीर का भी वही सम्मान है। चार्वाकों के नास्तिक होते हुये भी उनके दर्शन की भी मान्यता है। ऐसे में देश के मुस्लिम व ईसाई भी मोहम्द पंथी हिन्दू व ईसा पंथी हिन्दू के रूप में अपने–अपने पंथों का पालन करते हुये अपने नागरिक धर्म व मानवोचित धर्म का पालन करें तो यह नागरिक धर्म व मानवीय सह अस्तित्व का सिद्धान्त ही हिन्दुत्व का द्योतक है।

ईसा पूर्व तीसरी सदी में कलिंग के राजा खारवेल हुए हैं। ये महाभारत कालीन चेदीराज शिशुपाल की वंश परम्परा के राजा रहे हैं उन्होंने अपने हाथी गुम्फा के शिलालेख में स्वयं को ''सभी उपासना मतों का आराधाक'' घोषित किया था। यथा ''सव पासंड पूजको''। इन्होंने सभी उपासना पंथो के देवालयों का भी पुनरुद्धारक कहा है। यथा ''सवदेवायतन सकार कारको''। इस प्रकार ईसा मसी के जन्म से 200–300 वर्ष पूर्व एवं इस्लाम के उदय के 800–900 वर्ष पूर्व भी रवारवेल ने ईसामसीह के अनुयायियों द्वारा सम्पूर्ण विश्व के 'ईसाई करण' से उनके पूर्व से विद्यमान संस्कृतियों को विनष्ट करने या इस्लामी जेहाद द्वारा सभी उपासना पंथों के संहार की बात नहीं कर सभी उपासना पंथों के सवाँरने की जो बात कही है, वह हिन्दु संस्कृति की उदारता पंथ निरपेक्ष विश्व बन्धुत्व रूपी कर्त्तव्य पथ अर्थात धर्म की विवेचना आधारित है। हिन्दू में व्यक्ति की रूचि, प्रकृति व प्रवृत्ति के अनुसार संस्कृति की उपासना पंथ के प्रति उदारता और ईश्वर के एकत्व का एक और सुभाषित निम्नांकित है :

''आकाशात पतितं तोयं यथा गच्छाति सागरम। सर्व देवनमस्कारः केशव प्रति गच्छाति।।''

भावार्थ : आकाश से गिरने वाला जल विविध नदियों के माध्यम से जिस प्रकार अन्ततः समुद्र में ही जा मिलता है, उसी प्रकार सभी देवों को किया प्रणाम एक ही परमात्मा को प्राप्त होता है।

भारतीय हिन्दू चिन्तन से अनुप्राणित इस हिन्दू राष्ट्र के सुदीर्घ जीवन में देश में जो समन्वयकारी व अनेकान्तवादी दर्शन व उस पर आधारित जो संस्कृति विकसित हुई है, इसके माध्यम से अपने समाज को समय, काल परिस्थिति और घटनाओं को देखने और उनका मूल्यांकन करने की एक विशिष्ट दृष्टि प्राप्त हुयी है। यही हिन्दू राष्ट्र की आत्मा है। इसे पं. दीनदयाल जी उपाध्याय ने राष्ट्र की 'चिति' का नाम दिया है, जो सभी कार्य व विचार राष्ट्र की चिति के अनुरूप होते हैं वे सारे समाज को अच्छे लगते हैं और जो काम चिति के विपरीत होता है, वह समाज को खराब लगता है। एक उदाहरण से इसको हम समझें। विभीषण ने अपने भाई को छोड़ा, और वह श्रीराम के साथ मिल गया। विभीषण के सहयोग से रावण परास्त हुआ और श्रीराम लंका पर विजय प्राप्त कर सके। विभीषण का यह काम धर्म व सामाजिक मूल्यों की स्थापना व नैतिकता की राष्ट्राकांक्षा और चिति के अनुरूप था। इसलिए विभीषण को कोई राजद्रोही नहीं कहता, उसे अच्छा मानते हैं, उसका आदर करते हैं।

हिन्दुत्व में धर्म की पंथ निरपेक्षता व मानवोचित कर्त्तव्य परायणता

'धर्म' शब्द केवल हिन्दू अर्थात भारतीय संस्कृति और हिन्दू दर्शन की प्रमुख संकल्पना है। इसलिये 'धर्म' शब्द का संस्कृत व भारतीय भाषाओं को छोड़कर किन्हीं पश्चिमी या विदेशी भाषाओं में कोई तुल्य शब्द मिलना बहुत कठिन है। साधारण शब्दों में धर्म के बहुत से अर्थ हैं जिनमें से कुछ ये हैं –

कर्तव्य, न्याययुक्त व्यवहार, सदाचरण आदि। वस्तुतः हिन्दू मतानुसार आध्यात्मिक पूजा उपासना तो व्यक्तिगत आस्था का विषय है। धर्म तो मानव मात्र के लिये धारण किया जाने वाला आचार–विचार है। धर्म की पालना अनिवार्य है और धर्म अर्थात समाज के शाश्वत नियमों का उल्लंघन करना दण्डनीय होता है। धर्म की सारी परिभाषाएं उपासना निरपेक्ष हैं। धर्म से आशय किसी एक उपासना पंथ की बाध्यता नहीं है, जैसा जेहादी इस्लाम मत या मिशनरी मतान्तरणकर्त्ता करते हैं। यथा, मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षणों में कही उपास्य या उपासना मत का सन्दर्भ ही नहीं है :

मनु ने धर्म के दस लक्षण बताये हैं :

धृतिःक्षमा दमोऽस्तेयं शौचमि न्द्रियिनग्रहः।
धीर्विद्यसत्यमक्रोधोदशकं धर्मलक्षणम्।।

धृति (धैर्य), क्षमा (दूसरों के द्वारा अनजाने में हुये अपराधों को क्षमा कर देना, क्षमशील होना), दम (अपनी वासनाओं पर नियंत्रण करना), अस्तेय (चोरी न करना), शौच (अन्तरङ्ग और बाह्य शुचिता इन्द्रिय निग्रहः (इन्द्रियों को वश में रखना), धी (बुद्धिमता पूर्वक कार्य करना) विद्या (अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित करना), सत्य (मन वचन कर्म से सत्य का पालन) और अक्रोध (क्रोध न करना); ये दस धर्म के लक्षण हैं।

हिन्दू विचार के अनुसार जो व्यवहार अपने अनुकूल न हो वैसा व्यवहार दूसरे के साथ न करना चाहिये – यह धर्म की प्रमुख कसौटी है।

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रतुवा चैव अनुवर्त्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानिपरेषां न समाचरेत।।

इसका भावार्थ है – धर्म का सर्वस्व क्या है, सुनो और सुनकर उस पर चलो! अपने को जो अच्छा न लगे, वैसा आचरण दूसरों के साथ नहीं करना चाहिये।

सदैव आचरणीय होने से व अनादि व सृष्ट्यारम्भ से चलन में होने से इसे हिन्दू धर्म सनातन धर्म भी कहते है। विश्व के सभी बड़े धर्मों में सबसे पुराना धर्म है। वेदों पर आधारित इस धर्म में कई अलग–अलग उपासना पद्धतियों, मतों, सम्प्रदाय और दर्शन का समावेश है। वस्तुतः हिन्दू विचार में धर्म को किसी एक पुस्तक या धर्मगुरू अर्थात पैगम्बर से नहीं बांध कर विगत अनगिनत सहस्त्राब्दियों में लाखों ऋषि–महर्षियों, अवतारों, महापुरूषों ने मानवता के हित में समय–समय पर उस काल से सुसंगत जो भी आचार–विचार व सिद्धान्त प्रतिपादित किये, वे सभी धर्म के अन्तर्गत समाहित किये जाते रहे हैं।

वैसे विश्व में हिन्दू मत को मानने वालों की संख्या तीसरे क्रमांक पर है। इस प्रकार यह सनातन धर्म आज विश्व का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है। इसके सर्वाधिक अनुयायी अब भारत में ही हैं। हिन्दुओं का विश्व का सबसे ज्यादा प्रतिशत नेपाल में है। हालांकि इसमें कई देवी–देवताओं की पूजा की जाती है, लेकिन तत्व रूप में यह एक ही सर्वशक्तिमान ईश्वर में विश्वास करता है। विविध देवी–देवता उस परमात्मा की अलग–अलग कार्यो में नियोजित शक्तियाँ हैं।

हिन्दी में इस धर्म को 'सनातन धर्म' अथवा 'वैदिक धर्म' भी कहते हैं। इंडोनेशिया में इस धर्म का औपचारिक नाम ''हिन्दू आगम'' रहा है। हिन्दू केवल एक धर्म या सम्प्रदाय ही नहीं है अपितु जीवन जीने की एक पद्धति है ''हिन्सायाम दूयते या सा हिन्दू अर्थात जो अपने मन वचन कर्म से हिंसा से दूर रहे वह हिन्दू है और जो कर्म अपने हितों के लिए दूसरों को कष्ट दे वह हिंसा हैं। यूरोप में यह मित्र उपासक सम्प्रदाय के रूप में व ईरान में यह पारसी मत के रूप में पाया जाता रहा है।

महाभारत में धर्म के गाम्भीर्य व ज्ञान की अगाधता के आधार पर उसे 'पंचम वेद' भी कह दिया जाता है। महाभारत में धर्म को अनेक स्थानों पर विवेचित किया गया है। उसमें दी गई धर्म की अगांकित परिभाषाएँ यहाँ ध्यातव्य हैं, जो उपासना निरपेक्ष मानवीय व वैश्विक दायित्व का निर्देश करती हैं :–

महाभारत के अन्तर्गत धर्म की पंथ निरपेक्ष परिभाषाएँ

उदार मेव विद्वांसो धर्म प्राहुर्मनीशणः। (वनपर्व महाभारत 33.53)

मनीषी जन उदारता को ही धर्म कहते हैं।

आरम्भो न्याययुक्तो यः स हि धर्म इति स्मृतः। (वनपर्व महाभारत 207.77)

जो आरम्भ (उपक्रम या योजना) न्यायसंगत हो वही धर्म कहा गया है।

स्वकर्मनिरतो वस्तु धर्मः स इति निश्चयः। (वनपर्व महाभारत 208.9)

अपने कर्म में लगे रहना निश्चय ही धर्म है।

नासो धर्म यत्र न सत्यमस्ति। (उद्योगपर्व महाभारत 35.58)

जिसमें सत्य नहीं वह धर्म, धर्म नहीं है।

यस्मिन यथा वर्तते यो मनुश्यस्तस्मिंस्तथा वर्तितव्यं सधर्मः। (उद्योगपर्व महाभारत 37.7)

जो जैसा व्यवहार करे ऋजु भी उससे वैसा ही व्यवहार करे, यह धर्म है।

धारणाद् धर्ममित्याहुधर्मो धारयेत प्रजाः। (कर्णपर्व महाभारत 69.58)

धर्म ही प्रजा को धारण करता है इसलिये ही उसे धर्म कहते हैं। अर्थात समाज जीवन में सौहार्द हेत जो आचरण धारण किये जाने योग्य है, वहीं धर्म है।

दण्ड धर्म विदुर्बुधाः। (शांतिपर्व महाभारत 15.2)

ज्ञानी जन दण्ड को धर्म मानते हैं। मन वाणी और शरीर की निरंकुशता को नियंत्रणपूर्वक संयम में रखना त्रिदण्ड का पालन है। मनुस्मृति में कहा है।

अद्रोहेणैव भूतानां यो धर्मः स संतान मतः। (शांतिपर्व महाभारत 21.11)

जीवों से द्रोह रहित रहता या जीव मात्र से द्रोह किये बिना जो कर्म किये जायें, संतो के मत में वही श्रेष्ठ धर्म है।

यः स्यात् प्रभवसंयुक्तः स धर्म इति निश्चयः। (शांतिपर्व महाभारत 109.10)

जिसमें कल्याण करने का सामर्थ्य है, वही धर्म है।

धर्मस्याख्या महाराज व्यवहार इतीश्यते। (शांतिपर्व महाभारत 121.09)

महाराज! धर्म का ही नाम व्यवहार है, अतएव उचित लोक व्यवहार ही धर्म है।

मानसं सर्वभूतानां धर्ममाहुर्मनीशिणः। (शांतिपर्व महाभारत 193.31)

मनीषी व्यक्तियों का कथन है कि समस्त प्राणियों के मानस या अन्तर्आत्मा की निश्छलता में धर्म है।

बुद्धिंसजननो धर्म आचारश्च सतां सदा। (शांतिपर्व महाभारत 142.5)

धर्म और सज्जनों का आचार व्यवहार दोनों बुद्धि से ही प्रकट होते हैं।

सदाचार : स्मृतिर्वेदारित्र विधं धर्मलक्षणम्। (शांतिपर्व महाभारत 259.3)

वेद (सकल ज्ञान), स्मृति (उस ज्ञान की सतत स्मृति) और सदाचार (और उस ज्ञान से युत सत्–आचार) ये तीन धर्म के लक्षण हैं।

अनेकांत बहुद्वारं धर्ममाहुर्मनीशिणः। (अनुशासनपर्व महाभारत 22.18)

मनीषी कहते हैं, धर्म के साधन और फल अनेक हैं। इसलिये किसी एक उपासना पंथ का आग्रह धर्म नहीं कहा जा सकता है।

धर्मं हि श्रेय इत्याहुः। (अनुशासनपर्व महाभारत 105.14)

धर्म को ही कल्याण प्रद कहते हैं या जो सबका कल्याण कारी है, उसे ही धर्म कहते हैं।

धर्म की उपासना मतों से भिन्नता

आज धर्म को रीलिजन तुल्य पंथ के रूप में जिस तरह प्रचारित एवं व्याख्यायित किया जा रहा है, वह उचित नहीं है। वास्तव में 'धर्म' आशय किसी संप्रदाय या पंथ या धर्ममत से नहीं है। मानव जीवन में हमें जो (आचार–व्यवहार) धारण करना चाहिए, वही धर्म एवं धर्म का पवित्र अनुष्ठान है जिससे चेतना का शुद्धिकरण होता है। धर्म वह तत्व है जिसके आचरण से ही प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को जीव मात्र के कल्याण की दृष्टि से चरितार्थ कर पाता है। यह मनुष्य में मानवीय गुणों के विकास की उदात्त प्रक्रिया है।

मध्य युग में विकसित पंथों के जुनूनी स्वरूप एंव जिहाद या क्रुसेड से अपने मत का बल पूर्वक प्रसार आदि की धारणाओं के प्रति आज के व्यक्ति की आस्था कम होती जा रही है। नयी पीढ़ी धर्म के पंथ निरपेक्ष स्वरूप का बेहतर अनुसरण कर सकती है। सनातन हिन्दू मतानुसार धर्म का अत्यन्त उदात्त स्वरूप रहा है। तद्नुरूप, उपरोक्त विवेचनानुसार केवल महाभारत में ही धर्म की ऐसी पंथ निरपेक्ष व उदात्त सार्वभौम मानवीयता केन्द्रित 15 परिभाषायें दी गयी हैं।

भारतीय हिन्दू परम्परानुसार राष्ट्र का भी इस विश्व में एक विशिष्ट जीवनोद्देश्य होता है, उसकी भी चेतना होती है जो हमारी एकात्म दृष्टि से प्राप्त हुयी है यथा –

1. यह हिन्दू विचार देश, समाज व मनुष्य को टुकड़ों मे नहीं अपितु मनुष्य को मन–बुद्धि–शरीर–आत्मा का समुच्चय मानता है, शरीर का सुख अधिक उपभोग में हो सकता है। बुद्धि पारिस्थितिकी तंत्र के सरंक्षण हेतु संयमित उपभोग का निर्देश देगी तो आत्मा समस्त जीवधारी प्राणी मात्र के सुख व अस्तित्व के प्रति संवेदनशील भी बनायेगी। व्यक्ति अपनी ही नहीं समस्त प्राणियों की चिन्ता रखेगा। हम दैनिक बलिवैश्व में चींटी, गाय, कुत्ता, पक्षी से अतिथि पर्यन्त हमसे अपने पोषण की अपेक्षा रखने वाले समस्त प्राणियों को पोषित करके ही अपना भोजन ग्रहण करें, अपने स्वंय सहित परिवार समाज, राष्ट्र, विश्व, समग्र जीव सृष्टि, प्रकृति, परमेष्ठी व परमात्मा पर्यन्त एकात्म दृष्टि रखें, यही हिन्दू दृष्टि है। सम्पूर्ण जगत में ईश्वर को व्याप्त देखने के ईशावास्योपनिषद ही हमारा पाथेय है।

   ईशावास्यमिदं सर्वं यतिकञ्च जगत्यांजगत्।
   तेन त्यक्तेन भुन्ञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।। (ईशोपनिषद् मंत्र)

   अर्थात : ''अखिल ब्रह्मांड में जड़–चेतन स्वरूप जो भी जगत् है, यह समस्त ईश्वर से व्याप्त है। उस ईश्वर को साथ रखते हुए त्यागपूर्वक (इसे) भोगते रहो, आसक्त मत होओ (क्योंकि) धन–भोग्य पदार्थ – किसका है, अर्थात् किसी का नहीं है।''
2. मनुष्य और समाज में परस्परानुकूलता व एक ही परम तत्व को सब में देखती है और,
3. मनुष्य और प्रकृति में परस्परावलम्बन देख कर प्रकृति के प्रति आदर भाव रखती है। उससे पोषण प्राप्त करती, उसका शोषण नहीं करती।

   इस आधार पर चलने से ही मानव का समग्र व पूर्ण विकास होगा, समाज सुखी होगा, प्रकृति स्वस्थ रहेगी और विश्व में शांति व आनन्द का साम्राज्य होगा।

इस जीवनोद्देश्य को सफल बनाने में सारा समाज लगेगा– तो राष्ट्र का विराट् जागेगा। तब भारत पुनः विश्वगुरू होगा और समाज वैभव सम्पन्न। यह है 'राष्ट्र–पुरूष' संकल्पना।

वसुधैव कुटम्बकम की संकल्पना

इस समन्वय वादी एकात्म दृष्टि को आघात पहुँचाने वाले सभी प्रयासों व षड़यन्त्रों को समाप्त व ध्वस्त करना भी धर्म है। सामाजिक सौहार्द को नष्ट करने वाले को दण्डित करना भी धर्म की संस्थापना के लिये गीता में आवश्यक कहा गया है। सम्पूर्ण वसुधा अर्थात पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोगों को अपने परिजन मानना यही हिन्दुत्व है। समस्त भू–मण्डल पर सौहार्द स्थापित करना हिन्दुत्व है। उस सौहार्द को नष्ट न होने देना हिन्दुत्व हैं वसुधा अर्थात पृथ्वी को एक कुटुम्ब के रूप में देख कहीं भी अन्याय, अव्यवस्था अनैतिकता, हिंसा व अराजकता को समाप्त करना भी हिन्दुत्व है। भगवान कृष्ण द्वारा नरकासुर व जरासंघ का सहाँर और भगवान राम द्वारा रावण, ताड़का व सुबाहु का दमन हिन्दुत्व था। गौतम बुद्ध द्वारा सम्पूर्ण एशिया में अहिंसा व बुद्धत्व का प्रसार हिन्दुत्व है। सम्पूर्ण वसुधा को कुटुम्ब के रूप में देखने का महा उपनिषद का यह वाक्य अत्यन्त समीचीन है।

अयं निजं परोवेति गणना लघु चेतसाम।
उदारचरितानां तु वसुधैव कटुम्बकम।। (महा उपनिषद)

अर्थात – यह मेरा है, यह उसका है, ऐसी सोच संकुचित विचार वाले व्यक्तियों की होती है, इसके विपरीत उदारचरित वाले लोगों के लिए तो यह सम्पूर्ण धरती ही एक परिवार जैसी होती है।

सृष्टि से एकात्मता – इस भू–मण्डल पर मानव के अतिरिक्त लाखों जीव प्रजातियों, उनके लिये आश्रय स्वरूप जमीन, जमीन की सतह पर मिट्टी की परत, जलसंसाधन, वायु, तापीय संतुलन, नीरवता एवं हमारे जीवन के लिये अनेक आवश्यक मूर्त व अमूर्त परिस्थितियाँ विद्यमान हैं। पर्यावरण के इस पारिस्थितिकीय तंत्र के बीच अनवरत् संतुलन परम आवश्यक है। आज के कई प्रकार के प्रदूषण, तापीय प्रदूषण, बढ़ता शोर गुल, विकिरण धर्मी प्रदूषण आदि से समुद्र का बढ़ता जल स्तर, प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि, जीव प्रजातियों का विलोपन, जल स्रोतों में कमी जैसी समस्याओं को भी दृष्टिगत रखना आवश्यक है। निजी उपभोग में सृष्टि में समन्वय की दृष्टि से संयम भी एकात्म दृष्टि से ही सम्भव है। भावी पीढ़ियों के लिये संसाधन बचाना, पर्यावरण की असहिष्णु प्रौद्योगिकी से दूरी रखना मानवता, जीव, सृष्टि व प्रकृति के लिये विक्षेम व संकटकारी तकनीकों व दुष्कृत्यों के प्रति भी संवेदनशीलता व प्रतिकार परमावश्यक है।

पर्यावरण में चैतन्यता के सूत्र सर्वत्र समान होने के कारण अस्तित्व का छोटे से छोटा घटक भी दूसरे घटकों से संबंधित है व विश्व के कारोबार में उसका भी कुछ न कुछ काम है। अतः विश्व अर्थात् परस्पर संबद्ध परस्परावलम्बी छोटी–बड़ी रचनाओं में अन्तर्जाल (network) यह हिन्दू जीवनदृष्टि की धारणा हैं।

युद्ध काल में भी धर्म की पालना हिन्दू धर्म की विशिष्टता : ई.पू. 305 में चन्द्रगुप्त मौर्य के राज दरबार में मेगस्थनीज नामक राजदूत था। उसने भारत में उसके आवास की अवधि के अनुभवों की एक पुस्तक ''इण्डिका'' लिखी थी। उसमें उसने युद्ध काल के भी धर्म पालन की परम्परा के बारे में लिखा है कि ''युद्ध में सैनिक–सैनिक से युद्ध करता था। एक राजा की सेना से दूसरे राज की सेना से युद्ध के समय में भी किसान परिवार अपने खेतों में निरापद हो खेती करते रहते थे।'' शत्रु सैनिक भी निहत्थे किसानों को उत्पीड़ित नहीं करते थे।'' इस प्रकार आठवीं सदी से प्रारम्भ हुये अरबों के विभत्स जेहादी आक्रमणों की भारतीय प्रजा को कोई कल्पना नहीं थी निहत्थी जनता को कत्ल करना, महिलाओं को बलात् उठा ले जाना, उपासना मत बदलने को बाध्य करना या कत्ल कर देना आदि धर्म प्रायण भारत में अकल्पनीय था। ईसाईयत के प्रसार के दौर में भी जो बलात् या प्रलोभन या कूट उद्देश्यों से ईसाईकरण की कल्पना भारतीय समाज में नहीं रही है। इसीलिये भारत विगत 1200 वर्षों में हुये जेहादी आक्रमणों, यूरोपीय कूटनीतिक विग्रहकारी आक्रमणों व मिशनरी मतान्तरण जैसे आघातों से विचलित हो गया था। लेकिन हमारे अन्तरबल से आज हम अपनी मूल संस्कृति को अक्षुण्ण रखे हुये हैं। जबकि यूरोप के ईसा पूर्व की संस्कृति व अरब में इस्लाम के पूर्व की सभ्यतायें सर्वथा निर्मूल ही हो गयी हैं।

भारत में धर्म प्रसार से आशय मानवोचित कर्त्तव्यों से रहा है। उपासना पंथ तो व्यक्ति की वैयक्तिक रुचि, प्रकृति व प्रवृत्ति का विषय रहा है। वह उदात्तता आज भी विद्यमान है।

अध्याय – 2

हिन्दुत्व की पहचान : समरसता पूर्ण समाज

हिन्दुत्व का चिन्तन समता मूलक व समरसता का प्रेरक है। आज के जातीय विभेद, ऊँच–नीच भेदभाव व अस्पृष्यता आदि का हमारे मौलिक चिन्तन में कोई स्थान नहीं रहा है। इसका विवेचन भी इस अध्याय में कर लेना परम आवश्यक है।

जीव मात्र के कल्याण दर्शन

हिन्दुत्व की अवधारणा सर्व जन हिताय, सर्वजन सुखाय के अनुरूप 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसे व्यापक जन कल्याण के उपनिषद वाक्यों के अनुरूप है। इसमें मानव ही नहीं जीव मात्र के त्रिविध कष्टों से निवृत्ति के साथ उसके योगक्षेम में, इस प्रकार अभिवृद्धि का निर्देश है, जिससे सम्पूर्ण जीव सृष्टि व पर्यावरण में भी सुस्थिर सामंजस्य रहे। यहाँ मानव मात्र के त्रिविध कष्टों से अभिप्राय समस्त मानव को शारीरिक, दैविक (प्रकृति या परिवेश जन्य) और भौतिक साधनों के अभाव जन्य कष्टों से मुक्ति व मानव मात्र के **योगक्षेम** से है, जो रामचरित मानस में इन शब्दों में व्यक्त है : ''दैहिक दैविक भौतिक तापा राम राज काहूहि नहीं व्यापा''। योगक्षेम में योग से आशय है अप्राप्त की प्राप्ति (जो अबतक प्राप्त नहीं हुआ है उसकी प्राप्ति) एवं क्षेम का अर्थ है, जो प्राप्त हो गया, उसकी सुरक्षा। यहाँ पर योगक्षेम से आशय भी सम्पूर्ण समाज के न्यायोचित योगक्षेम से है। अमर्यादित उपभोग योगक्षेम नहीं कहा जा सकता है। जितने न्यूनतम वैयक्तिक उपभोग से विश्व के सभी व्यक्तियों की न्यायोचित भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति बिना जीव सृष्टि के अन्य घटकों को उद्वेग दिये बिना सुदीर्घ काल तक चल सके वही विकास है। अर्थात यह संयमित उपभोग के विचार पर आधारित है। इसीलिये श्री मद्भागवत पुराण में कहा है कि **''यावद्भ्रियेत जठरं तावत् स्वत्वं ही देहिनाम। अधिक योऽभिमन्येत स स्तेन दण्डंर्हति।।'' अर्थात जितने उपभोग से व्यक्ति की उदर पूर्त्ति हो जाये या उसकी न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्त्ति हो जाये उतने पर ही उसका अधिकार है, उससे अधिक पर अपना अधिकार जताने वाला व्यक्ति चोर है, जो दण्डित किये जाने का पात्र होता है।** इसी कारण हिन्दू जीवन पद्धति में दैनिक बलिवेष्वदेव में विधान है कि प्रत्येक व्यक्ति उसके द्वारा अर्जित संसाधनों (व उपभोग्य सामग्रियों) से चींटी जैसे क्षुद्र प्राणी, कौआ, कबूतर आदि पखेरूओं, गौ व श्वान सहित सभी चौपायों सहित अभ्यागतों (कुछ भी प्राप्ति की आशा से उसके पास आने वाले मनुष्यों) के समग्र पोषण व उनकी आवश्यकताओं की अधिकतम सम्भव पूर्ति हेतु अपनी पूरी क्षमता से सहयोग करे।

हिन्दुत्व का विचार : ऊंच–नीच, अस्पृश्यता व छूआछूत रहित समरस समाज :

हिन्दू जीवन पद्धति व दर्शन में जीव मात्र में एक ही परमात्मा का निवास मानकर सब जीवों मात्र के कल्याण में रत रहने का निर्देश है। यथा गीता में कहा है – मुझ परमात्मा को वे ही प्राप्त करते है जो समस्त जीवों के हित में संलग्न रहते हैं।

ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः। अ. 12 श्लोक श्रीमद् भगवद्गीता।

इसी प्रकार ईशावास्योपनिषद के अनुसार समग्र ब्रह्माण्ड को एकमेव परमात्मा से ही परिव्याप्त देखने का निर्देश है, जहाँ ऊँच–नीच, भेदभाव व छूआछूत या अस्पृश्यता का कोई स्थान नहीं वरन यह महा पाप माना गया है। वस्तुतः अरबों के आक्रमण के बाद एवं उनके बाद मुगल शासन व अग्रेजों के औपनिवेशिक राज्य के अधीन देश में फैली ऊँच–नीच, भेद भाव व अस्पृश्यता का हिन्दू जीवन पद्धति में कोई स्थान नहीं था। अरब आक्रान्ताओं द्वारा बड़ी संख्या में ऐसे हिन्दू परिवारों को इस्लाम कबूलने को बाध्य करने हेतु उन पर असह्य 'जजिया' नामक कर (टेक्स) लगाने, दासों से भी अधिक यन्त्रणापूर्ण जीवन जीने को बाध्य करने और मैला उठाने सहित सभी प्रकार की अवमानना व अपमान जनक कार्य थोपे। मुगलों के काल में उसमें और भी वृद्धि हुयी। इससे देश में करोड़ों लोगों को इस्लाम भी कबूलना पड़ा। अन्यथा प्राचीन हिन्दू वाग्मय (धर्मशास्त्रों) में मानव ही नहीं पशु–पक्षी व वनस्पति पर्यन्त प्राणी मात्र के प्रति करूणा एवं अपने जैसा सभी को मानने का आग्रह रहा है।

अक्सर कभी–कभी कुछ विद्वान हिन्दू समाज की समीक्षा या समालोचना करते हुये इसे अवर्ण–सवर्ण में बाँट देते हैं। हिन्दुत्व जिसका मूलाधार है– **'वसुधैव कुटुम्बकम'** (सम्पूर्ण पृथ्वीवासी एक परिवार का अंग हैं) और आत्मवत् सर्वभूतेषु (अपने जैसा सभी प्राणी मात्र अर्थात मनुष्य पशु–पक्षी व वनस्पति जगत को अपने जैसा मानकर, सबके प्रति करूणा व अपनत्व का भाव रखना) वहाँ मानव मात्र में भेद सर्वथा निषिद्ध व निन्दनीय है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में प्राणी मात्र में एक ही परमात्मा को देखना और कष्ट में पड़े प्राणियों को साक्षात परमात्मा के रूप में मानकर उनकी सब प्रकार से सेवा करना, सबसे बड़ा धर्म बतलाया गया है। इस विषय को यहाँ विस्तार से न लेकर एक भ्रान्ति को यहाँ निर्मूल करना आवश्यक है कि प्राचीन हिन्दू शास्त्रों में कड़े अवर्ण–सवर्ण में भेद व शूद्रों की हेयता दर्शाने वाले वाक्य हैं।

भेद भाव रहित समाज :

मूल हिन्दू चिन्तन में ऊंच–नीच का कोई स्थान नहीं है। प्राचीन काल में शूद्र वर्ण उत्पादक वर्ग रहा है।

'शूद्र' शब्द क्षुद्र से नहीं बना है : सबसे प्रथम आक्षेप यह है कि शूद्र शब्द 'क्षुद्र' शब्द से बना है। यह सर्वथा तथ्यों से परे है। शूद्र शब्द हेय नहीं है और यह क्षुद्र से नहीं बना है।

अथर्ववेद के शब्दों की निरूक्ति (निर्वचन) में अपने श्रम के स्वेद (पसीने) से विविध उत्पादकीय कार्य में रत वर्ग को शूद्र कहा गया है। अर्थात परिश्रम पूर्वक विविध प्रकार की मूल्यवान वस्तुओं के उत्पादन में रत रहने वाले वर्ग को शूद्र कहा गया है। यथा शूद्र शब्द का निर्वचन निम्नानुसार है :–

श्रमस्य स्वेदेन उत्पादन रत एव शूद्रः

अर्थात अपने परिश्रम के पसीने से सब प्रकार की मूल्यवान वस्तुयें उत्पादित करने वाला शूद्र है। इसीलिये भारत पर हुये बाहरी आक्रमणों के पूर्व,

अपने उत्पादन कार्यों के प्रतिफल के फलस्वरूप शूद्र का समाज में आर्थिक व सामाजिक स्थान अत्यन्त उच्च रहा है। **इसीलिये कामन्दक नीतिसार में कहा है कि** राजा को नया नगर बसाते समय पर शूद्र, जो विभिन्न मूल्यवान वस्तुयें उत्पादित करते हैं उन्हें व वैश्य, जो उन वस्तुओं के व्यापार से आय उत्पन्न करके राजस्व बढ़ाते हैं, उन्हें अधिक संख्या में बसाना चाहिये। इस नीति ग्रन्थ में यहाँ तक कहा गया है कि ब्राह्मण व क्षत्रिय राज्योपजीवी हैं, उन्हें राज्य को जीविका व भृत्ति (वेतन आदि) देनी होती है। इसलिये उनकी संख्या परिमित रखनी चाहिये। चूंकि मूल्यवान वस्तुओं का उत्पादन करने वाला यह वर्ग सर्वत्र फैला हुआ था और वह इस प्रकार के उत्पादन कार्य में संसाधन भी लगाने होते थे, इसलिये ही ऋग्वेद में ''परिवार की उत्पादकीय सम्पत्ति या उत्पादन कार्य में लगी सम्पत्ति को पूंजी कहा है।'' आज की पूंजी की आधुनिक परिभाषा में ''पूंजी मानव द्वारा उत्पादित, उत्पादन के साधनों'' को कहा जाता है। इसमें परिवार का उल्लेख नहीं है। चूंकि ब्राह्मण को भिक्षा वृत्ति से ही जीवन यापन करना होता था। क्षत्रिय अर्थात क्षतात रक्षति इति क्षत्रिय (समाज को क्षति अर्थात अन्यायपूर्ण हिंसा से बचाये वह क्षत्रिय) को राजकोष से भृत्ति या वेतन मिलता था। सारी मूल्यवान वस्तुओं का उत्पादन करना शूद्र का ही कार्य था। सीसा जस्ता, ताम्बा सोना आदि धातुओं के उत्पादन उनसे विविध उपकरणों, बर्तन आदि का निर्माण, भूगर्भ से रत्न आदि निकालना, नौकाओं से लेकर शतरित्र (सौ–सौ चप्पूओं वाले जलयानों का निर्माण) का निर्माण वस्त्रोत्पादन, आभूषणों का उत्पादन रथादि वाहनों का निर्माण चर्म उत्पादों, धात्विक उत्पादों आदि का उत्पादन सब कुछ शुद्र वर्ग के अधीन था। इसीलिये प्राचीन धर्म शास्त्रों में शूद्रों की उनकी उत्पादन कार्य के अनुसार उत्पादन सापेक्ष 1200 से अधिक जाति या शिल्प श्रेणियों का उल्लेख मिलता है। ये सभी अपने श्रम से विविध मूल्यवान वस्तुओं के निर्माता या मूल्यवान सेवाओं के प्रदाता व राज्य की अर्थव्यवस्था के आधार थे। विदेशी आक्रमणों के दौर के पूर्व उनका समाज में आर्थिक वर्चस्व रहा है। अनेक श्रेणियों का यह उद्यम या पेशा तो ब्रिटिश शासन में छिना है, जब यूरोपीय उत्पादों को यहाँ राज्य प्रश्रय दिया जाने लगा व शिल्पियों के अंगूठे तक कटा देने जैसे प्रकरण बढ़े।

जातियाँ शिल्प श्रेणियों से बनी हैं :

सभ्यता एवं संस्कृति के उत्थान आरोह–अवरोह के क्रम में कार्य – विभाजन की उत्पत्ति हुई भी और कतिपय कलाओं एवं शिल्पकारों के उद्भव के कारण अनगिनत व्यवसायों पर आधारित बहुत–सी उपजातियों की सृष्टि होती चली गयी। इन जातियों में श्रेष्ठ या कनिष्ठ का भाव नहीं था। सूत शूद्र जाति है। लेकिन, सूत वंश परम्परा के लोग एक सहस्त्राब्दी से अधिक अवधि तक ऋषियों के पुराणों का उपदेश देते हैं।

वैदिक काल के अन्त होने के पूर्व 1200 से अधिक विविध शिल्प या उत्पाद या प्रदत्त सेवा के आधार पर आधारित जातियों का उद्भव हो चुका था। ये जातियाँ विभिन्न व्यवसायों एवं शिल्पों से सम्बन्धित थीं। इनकी श्रेष्टता या कनिष्ठता का प्राचीन काल में कोई भेद नहीं रहा है। वाजसनेयी संहिता, तैत्तिरीय संहिता, तैत्तिरीय ब्राह्मण काठक संहिता (**२७।२३**), अथर्ववेद, ताण्ड्य ब्राह्मण **(३।४),** ऐतरेय ब्राह्मण, छान्दोग्य, बृहदारण्यकोपनिशद् व बौद्ध साहित्य के आधार पर एक छोटी सूची यहाँ दी जा रही है : –

● अजापाल (बकरी पालनेवाला) ● चर्मम्न (चर्म उत्पादों का उत्पादक) ● भीमल ● अन्ध्र ● चाण्डाल (अन्त्येष्ठी स्थलाधिपति) ● अयस्ताप ● अम्भक ● मणिकार ● अयोगु या आयोगु ● ज्याकार ● मागध ● तक्षा ● मार्गार ● अविपाल (भेड़पालक या गड़रिया) ● दाश ● मूतिब ● आन्द धनुष्कार ● मृयगु ● या मैनाल ● इशुकार ● धन्वाकार ● राजयित्री (रगेरेज) या ● रज्जसर्ग या सर्ज ● डग्र ● धन्वकृत् ● रथकार ● कण्टककार या कण्टकीकारी ● धैवर ● राजपुत्र ● रेभ ● कर्मार ● निशाद ● वंशनर्ती ● वप (नाई) ● कितव ● पुंश्चलु ● विदलकारी या विदल ● व्रात्य ● किरात ● पूंजिष्ठ ● शबर ● कीनाश (खेतिहर) ● पुण्ड्र ● शाबल्य ● शैलूश ● कुलाल या कौलाल ● पुलिन्द ● स्वनी (श्वनित) ● केवर्त (नौकायन कार्य) ● पौल्कस ●संगृहीता ● कोशकारी (भाथी फूँकनेवाला) ● वैन्द (मछली पकड़ने वाला) ● सुराकार ● क्षत्ता ● सूत ● सेलग ● गोपाल (गुवाला) ● भिशक् ● हिरण्यकार

धर्मसूत्रों, प्राचीन बौद्ध ग्रन्थों एवं मेगस्थनीज के अपूर्ण उद्धरणों से पता चलता है कि ईसा के कई शताब्दी पूर्व कतिपय शिल्प व व्यवसाय आधरित जातियाँ विद्यमान थीं। मेगस्थनीज वृतान्त का भ्रान्तिपूर्ण कह देते हैं, किन्तु उसके कथन को हम नहीं टाल सकते। उसके अनुसार भारत के जन सात मुख शिल्प आधारित जातियों में विभाजित थे – (1) दार्शनिक, (2) कृषक, (3) गोपाल एवं गड़रिया, (4) शिल्पकार, (5) सैनिक, (6) अवेक्षक तथा (7) सभासद एवं करग्राही। अध्यक्ष एवं अमात्य, भी सम्भवतः तब जातिसूचक हो गये होंगे जो पद व्यवसाय के परिचायक हैं। सम्भवतः ये पद वशंपरम्परागत थे, अतः मेगस्थनीज ने इन्हें प्रमुख जातियों में गिना होगा।

विकेन्द्रित व शिल्प श्रेणीशः या उत्पाद श्रेणीशः जाति विभाजन : शूद्र जातियों में विभाजित विशाल उत्पादक वर्ग अपने–अपने मूल्यवान उत्पादों के उत्पादन में रत होने से उस परम्परानुसार ऋग्वेद ने **परिवारों की उत्पादकीय सम्पत्ति को पूंजी की परिभाषा दी है**। इसके साथ ही यह भी कहा है कि, किसी भी स्थिति में राजा भी किसी परिवार को उसकी पूंजी (परिवार की उत्पादन में संलग्न सम्पत्ति) से पृथक नहीं कर सकता है। इसीलिये चाणक्य ने भी अर्थशास्त्र की परिभाषा पूर्ण रोजगार आधारित प्रतिपादित की है। **मनुष्याणां वृत्तिरर्थ** : उसमें भी शिल्प श्रेणी केन्द्रित स्वरोजगार पर ही बल दिया गया है। ऋग्वेद में शूद्रों द्वारा एक से अधिक स्थानों पर पूंजी का निवेश कर उत्पादन क्रियाओं के सम्पादन और उनसे लाभ अर्जित कर उसे कई गुना करने के भी कई श्लोक हैं। ऐसा ईष्ट साधन करने वाली शूद्र की उत्पादकीय सम्पत्ति अर्थात पूंजी को ही 'इष्टका' कहा गया है। ऐसा इष्ट साधन करने वाली पूंजी से उत्पादन लाभ–हानि निरपेक्ष हो कर सतत लाभ देने वाला हो जाने पर उसे 'धेनु' सदृश निर्बाध लाभार्जन कराने वाला कहा गया है। **यथा इमामेऽ अग्न इष्टका धेनवः सन्त्वेका च दशं च दशं च शतं च शतं च।** इन्ही शूद्र वर्गों द्वारा दूर देश से वस्तु व्यवहार करने हेतु शतरित्र नामक जलयानों के निर्माण व उपयोग के भी वर्णन हैं। शतरित्र अर्थात 100 से अधिक चप्पुओं वाले जलयानों से उत्पादित वस्तुएँ लाने–ले जाने के कार्य में शूद्र व वैश्यों के ही सलंग्न होने के वर्णन प्राचीन वांग्मय में प्रचुरता में हैं। यथा, कामन्दक नीतिसार में लिखा है कि राजा को नगर बसाते समय शूद्र अधिक प्रमाण में बसाने चाहिये जो विविध मूल्यवान वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। वैश्य उन वस्तुओं का व्यापार कर राजा को कर (टैक्स) चुकाते हैं। इसलिये वैश्य भी अधिक संख्या में बसाने चाहिये। ब्राह्मण व क्षत्रिय राज्योपजीवी होते हैं। इसलिये उन्हें अल्प संख्या में बसाना चाहिये। द्वारिका में 7000 वर्ष प्राचीन व खम्भात में 12000 वर्ष प्राचीन बन्दरगाहों के अवशेष राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान के सामुद्रिक पुरातात्विक इकाई द्वारा खोजे गए हैं। दोनों ही स्थानों पर प्रचुरता में हजारों की संख्या में उस काल के जलयानों के बड़े लंगर पानी में जलमग्न अवस्था में हैं।

वस्तुतः देश की 1200 से अधिक शिल्प सापेक्ष श्रेणियों या जातियों के श्रम के स्वेद (मेहनत का पसीना) से उत्पादित उत्कृष्ठ व मूल्यवान उत्पादों के उत्पादन व व्यापार की सुदीर्घ परम्परावश ही 18वीं सदी तक भारत का सम्पूर्ण विश्व के विनिर्माणी उत्पादन (वर्ल्ड मैन्यूफेक्चरिंग) में 22 प्रतिशत का योगदान रहा है। ईस्वी वर्ष 1 से 1500 ईस्वी तक तो विश्व के सकल घरेलू उत्पाद में भारत का 33 प्रतिशत योगदान था (देखें तालिका 1)। वर्तमान औद्योगिक देशों के संगठन OECD (Organisation for Economic Cooperation & Development) जो यूरोप, अमेरिका आदि 24 औद्योगिक देशों का संगठन है; उसके आग्रह करने पर ब्रिटिश आर्थिक इतिहास लेखक ''एंगस मेड्सिन'' ने खोज पूर्वक यह बात कही है। बेल्जियम की राजधानी, ब्रुसेल्स में स्थित OECD के मुख्यालय से एगंस मेड्डिसन की पुस्तक ''वर्ल्ड इकोनॉमिक हिस्ट्री–ए–मिलेनियम पर्सपेक्टिव'' प्रकाशित हुयी है। उक्त पुस्तक के अनुसार 1700 ईस्वी तक और औररगजेब के आमानुषिक अत्याचारों के बाद भी विश्व के सकल घरेलू उत्पाद में भारत का अंश 22 प्रतिशत था। यह देश के शिल्प कुशल उत्पादनरत शूद्रों के अति मूल्यवान उत्पादों का ही योगदान था जिससे कि भारत 1500 ईस्वी तक विश्व का क्रमांक एक की आर्थिक शक्ति बना रहा। यह स्थिति विगत 10,000 वर्षों से भी अधिक समय से रही है। इसका प्रमाण द्वारिका व खम्भात आदि अनेक स्थानों के प्राचीन बन्दरगाह हैं। द्वारिका व खम्भात में पुरातत्वविदों ने क्रमशः 9000 व 12000 पुराने बन्दरगाहों के अवशेष खोज निकाले हैं। दोनों ही स्थानों पर जहाजों के सहस्रदिक लंगर मिले हैं।

तालिका : शून्य ए.डी. से बीसवीं सदी तक विश्व अर्थव्यवस्था में भारत का स्थान
GDP (PPP) in millions of dollars

Country/ Region	1	1000	1500	1600	1700	1820	1990
Western Europe	14,433	10,925	44,183	65,602	81,213	159,851	36 7,466
Eastern Europe	1,956	2,600	6,696	9,289	11,393	24,906	50,163
Russia	1,560	2,840	8,458	11,426	16,196	37,678	83,646
USA	272	520	800	600	527	12,548	98,374
Total Latin America	2,240	4,560	7,288	3,763	6,346	14,921	27,311
Japan	1,200	3,188	7,700	9,60Ø	15,390	20,739	5,393
China	26,820	26,550	61,800	96,000	82,800	228,600	189,740
India	33,750	33,750	60,500	74,250	90,750	111,417	134,882
World	105,402	120,379	248,445	331,562	371,428	694,598	1,110,951

ऋग्वेद में शतरित्र अर्थात बड़े जलयानों से समुद्र–पार दूर देशों से प्रचुर मात्रा में व्यापार की ऋचाएँ (मंत्र रूप में वर्णन) हैं। हाल ही में तमिलनाडु के काडूमनाल नामक स्थान पर 2500 वर्ष प्राचीन औद्योगिक नगर के अवशेष मिले हैं। वहाँ पर प्राचीन वस्त्रोद्योग, (Textile Industrial) रत्न प्रविधेयन (Gem Processing) स्पात उत्पादन (Steel Manufacturing) उद्योगों के अवशेष मिले हैं। स्पात व विशेष कर स्वल्प कार्बन युक्त स्पात (Low Carbon Steel) उत्पादन में प्रयुक्त विट्रीफाइड क्रुसीबल भी मिले हैं। आज हम कहते हैं कि यह विट्रीफाइड टाइलें (Vitrifed Tiles) व विट्रीफिकेशन तकनीक यूरोप में विकसित हुयी। लेकिन हमारे शूद्र जाति के उत्पादक कौशल विशेषज्ञ जो उस काल के उत्पादक थे, उनकी पारिवारिक सम्पत्ति जो उत्पादन में प्रयुक्त होती थी, वही ऋग्वेद के अनुसार पूंजी की श्रेणी में आती थी और यह 2 हजार वर्ष पूर्व अतीत की अनेक सहस्त्राब्दियों में भारत की प्राचीन समृद्धि का आधार रहा है।

उपरोक्त विवेचन से देश में उत्पादन की प्रचुरता एवं वह समग्र उत्पादन शिल्प–सापेक्ष शूद्र जातियों या श्रेणियों द्वारा ही किया जाना, और उसके आधार पर ही राजकोष से भी अधिक धन शूद्र जातियों के पास होता था। इसीलिये राज्य के अतिथियों का आतिथ्य भी महाभारतकाल में शूद्रों पर अवलम्बित था। महाभारत में शूद्र का धर्म अतिथियों के सत्कार व उनके भोजन–आवास आदि बता कर उन्हें अत्यन्त महत्व प्रदान किया है जिसका निम्न श्लोक में स्पष्ट कथन है।

सशूद्रः संशिततपा जितेन्द्रियः। सुश्रुर्तिथिं तपः संचिनुते महत्।। (महाभारत–अनुशासन पर्व)

एगंस मेड्सिन के अनुसार विश्व का एक तिहाई उत्पादन भारत में होने व हमारे प्राचीन वांग्मय के अनुसार समग्र उत्पादन का दायित्व शूद्रों के नियन्त्रण में होने से ही शूद्र राज्य की अर्थ व्यवस्था का भी प्राचीन काल में आधार होते थे। उसके कारण ही कामान्दक नीतिसार आदि धर्मशास्त्रों में राज्य में ऐसे उत्पादन आय से धनी शूद्रों को ही अधिक संख्या में रखे जाने की अनुशंसा की गयी है। कामन्दक नीतिसार में लिखा है कि राजा को नवीन नगर बसाते समय उसमें शूद्रों का अधिक संख्या में बसाना चाहिये, जो विविध मूल्यवान वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। वैश्य भी बड़ी संख्या में बसाने चाहिये, जो इन वस्तुओं के व्यापार के ऊपर राजकोष में कर चुकाते हैं। ब्राह्मण व क्षत्रिय राज्योपजीवी (अपने पारिश्रमिक आदि के लिये राज्य पर अवलम्बित) होते हैं। इसलिये इनकी संख्या कम रखनी चाहिये। इस प्रकार कामन्दक नीतिसार जैसे प्राचीन ग्रन्थ में उस काल में शूद्र को, उसके द्वारा उत्पादित की जाने वाली वस्तुओं के आधार पर अर्थ व्यवस्था का प्रमुख आधार माना गया है। इस आधार पर पुराणों के इस वचन की भी पुष्टि होती है कि शूद्रों के सर्वाधिक धनी होने के कारण उनकी मकान व भूमि के मापन का फीता या सूत्र स्वर्ण का हुआ करता था।

यहीं कारण है कि पुराणों व प्राचीन वास्तु ग्रन्थों आदि में शूद्र के भवन निर्माण आदि में प्रयुक्त, नापने वाला सूत्र, फीता या डोरी को स्वर्ण निमित तक होना बतलाया है। जबकि ब्राह्मण का कुशा नामक घास का, क्षत्रिय का मुंज की डोरी का, वैश्य का कपास का व शुद्र का सुवर्णमयी डोर का।

ब्राह्मणस्य सूत्र दर्भजं, मौजन्तु त क्षत्रियस्य।
कार्पासं च भवैद्वैष्ये, स्वर्णनिर्मितं शूद्रस्य सूत्रम्।।

इसे अतिशयोक्ति भी नहीं कहा जा सकता है क्योंकि सारी लोक कथाओं में ब्राह्मण को निर्धन ही बतलाया गया है। क्षत्रिय को भी मित साधन वाला ही बतलाया जाता रहा है। अंग्रेजों द्वारा ब्रिटेन से लाये गए माल से ही देश के शूद्र के नाम से जाने वाले वर्ग का उद्यम चौपट हुआ है। वस्तुतः शूद्रों को अछूत तो 1574 ईस्वी (सम्वत 1631) में रामचरित मानस लिखे जाने के समय भी नहीं माना था। रामचरित मानस के उत्तरकाण्ड में तुलसीदासजी ने 441 वर्ष पूर्व 1574 ईस्वी में लिखे रामचरित मानस में व उससे अनेक सहस्त्राब्दियों पूर्व रचित बाल्मिकी रामायण में भी चारों वर्णों के लोगों द्वारा साथ–साथ जल भरने, स्नानादि के वर्णन हैं। यथा –

राज घाट बांधेऊ परम मनोहर। तहाँ निमज्जिउ वरण चारिउ नर।।

इसी प्रकार सूत जाति, जिन्हें स्व–उद्यम रत शूद्रों की जाति में गिना जाता रहा है, उन्हीं सूत जी को द्वापर युग के अन्त व कलि के प्रारम्भ में पुराणवेता कहा है, जो ऋषियों को पुराणों का ज्ञान देते रहे हैं। ऋषियों के सम्मुख सभी पुराणों का विवेचन सूत जी ही करते, पुराणों में यह बतलाया गया है। रामायण में सुमन्त दशरथ के, महाभारत में संजय व इसी प्रकार, हर वाल में सूत गण राजाओं के मंत्री तुल्य पारिवारिक सलाहकार हुआ ही करते थे। विवाह कर्म में दूल्हे का सूत्रधार, सलाहकार या यों कहें तो संरक्षक जैसी स्थिति में केवल नाई जाति का बन्धु ही होता आया है। द्रौपदी सैरिन्धी की भूमिका में राजा विराट की पत्नी की कर्मचारी होते हुये भी उनकी निकटतम सखी रही है।

वेदाध्ययन के सन्दर्भ में भी सबसे मुख्य आक्षेप या आरोप यही आता है कि वेदों में शूद्रों के वेदाध्ययन का निषेध है। यह सर्वथा असत्य है। चारों में से किसी भी वेद में शूद्रों के लिये वेदाध्ययन के निषेध का कोई श्लोक नहीं है। इसके विपरीत यजुर्वेद 26(2) मात्र में शूद्रों को भी वेदाध्ययन कराने का निर्देश है।

वेद में भी शूद्र को वेदाध्ययन का समान अधिकार : शूद्र किसी से हेय नहीं है। यह भ्रान्ति भी निर्मूल है कि वेदों में शूद्र को समान अधिकार नहीं दिये। यथा –

''यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याज्या शूद्रायचार्याय च स्वाय चारण्याय।

प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयज्मे कामः समृद्धतामुपमादो नमतु।।'' यजुर्वेद अ. 26 मंत्र 2

अर्थ : मैंने (परमात्मा ने) जिस प्रकार यह वेद रूपी वाणी आपको (ऋषियों) को दी है, उसी प्रकार आप सभी इसे ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य व शूद्र सभी को पढ़ाओ। अपने परिवारों में (स्वाय) अरण्यों (वनों) में रहने वाले (च अरण्याय) आदि सभी को वेद पढ़ाओ। इस प्रकार वेदाध्ययन किसी के लिये निषिद्ध नहीं था।

प्राणी मात्र के प्रति भेदभाव रहित अपनत्व हिन्दुत्व की कसौटी :

हिन्दुत्व में मनुष्य ही नहीं प्राणी मात्र के प्रति अगाध सद्भाव का निर्देश है। अपने से भिन्न किसी मत मतान्तर वालों के प्रति भी हिंसा का निर्देश नहीं है। हाँ, ऐसे दुराचारियों से समाज की रक्षार्थ संनद्ध रखना अवश्य धर्म कहा गया है। प्राणी मात्र के प्रति इसी प्रकार के सद्भाव की वरूण से प्रार्थना की गयी है यथा –

ते दृहं मा मित्रस्य मा चक्षुषा, सर्वाणि भूतानिसमीक्षन्ताम्।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानिसमीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥यजुर्वेद 36/18

भावार्थ : हे परमेश्वर! हम सम्पूर्ण प्राणियों में अपनी ही आत्मा को समाया हुआ देखें, किसी से द्वेष न करें और जिस प्रकार एकत्रित एक मित्र दूसरे मित्र का आदर करता है वैसे ही हम भी सदैव सभी प्राणियों का सत्कार करें।

सम्पूर्ण समाज आपस में परस्पर भेदभाव रहित व समरस व्यवहार करें, यह हमारे अथर्ववेद में स्पष्ट व असंदिग्ध निर्देश है। यथा

समानी प्रपा सहवोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सहवो युनज्मि। सम्यंचेःग्निं सपर्य तारा नाभिमिकाभितः।। अथर्व. 3.30.06

भावार्थ : तुम्हारी जल शाला एक हो, अन्न का विभाजन साथ–साथ हो, एक ही जुए में तुम जुड़े हुए हो। जैसे पहिये के अरे ना में चारों ओर जुड़े होते हैं, वैसे ही तुम सब प्रजाजन मिलकर ज्ञान रूप प्रभु की पूजा करो।

वेदों व उपनिषदों के मानव मात्र की भलाई की भावना रखना, सब के हित को अपना हित समझकर तद्नुकूल आचरण करना धर्म कहा गया है। उपनिषदकार के शब्दों में :–

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत॥

अर्थात – इस संसार में सबकी सबके प्रति सद्भावना रहे। सभी सुखी हों, सभी निरोग हों, सभी आत्म–कल्याण को प्राप्त करें और किसी को दुःख न हो। यह शुभ कामनायें ही सद्जीवन का मूल है। इसमें प्राणी मात्र का हित समाया हुआ है।

इसी प्रकार सनातन धर्म या शाश्वत धर्म की अत्यन्त सरल शब्दों में हिन्दू धर्म ग्रन्थों में जो व्याख्या की है, वह मानवता के चिरकालीन सुख व सौहार्द का मार्गदर्शन है। उसके अनुसार पराया धन मिट्टी की तरह मान कर उसके प्रति लालायित होकर उसे हस्तगत करने का विचार नहीं करना। परस्त्री को माता की तरह देख कर मन में कभी दुर्भाव नहीं लाना और समस्त प्राणियों को अपने जैसा देखते हुये उनके प्रति करूणा (दया) का भाव रखना ही सनातन ध्यार्म कहा गया है। उसके प्रति यथा –

परदृव्येषु लोष्ठवत, परदारेषु मातृवत। आत्मवत सर्वभूतेषु एष सनातन धर्मः।।

जातियाँ उन्नत अर्थव्यवस्था का आधार : समग्र उत्पादन कार्य व उसकी प्रौद्योगिकी उत्पादन में रुचिशील शूद्रो के अधीन थी व व्यापार व वाणिज्य वैश्य वृत्ति

में रुचिवान व्यक्तियों के अधीन होता था। जिस अथर्ववेद में अपने श्रम के स्वेद (पसीने) से मूल्यवान वस्तुओं के उत्पादक को शूद्र नाम दिया है उसमें सारी उत्पादन प्रौद्योगिकी भी सूत्रबद्ध है। शब्दों के वैदिक निर्वचन तक में भी उत्पादन प्रौद्योगिकी के सूत्र हैं। ''यशद'' अर्थात जस्ता के उत्पादन में प्राचीन काल में (2000 वर्ष पूर्व और अति प्राचीन काल में भी) भारतवासी अति दक्ष थे। उदयपुर के दक्षिण में 40 कि.मी. दूर जावर की जस्ते की खानों में 5000 वर्ष पुराने जस्ते के खनन व परिद्रवण के अवशेष आज भी विद्यमान हैं। अलवर के पास खेतड़ी में ऐसे ही ताम्बे के खनन व उत्पादन के अवशेष हैं।

उत्पादक उद्यमों में ब्राह्मणों व शूद्रों की पारस्परिकता का भी एक उदाहरण यहाँ पर उद्धृत कर देना आवश्यक है। जिसे प्राचीन ज्ञान–विज्ञान के आधार शब्दों के निर्वचन के शास्त्र में पाणिनी व यास्क आदि ब्राह्मणों ने लिपिबद्ध किया है। वस्तुतः सभी धातुओं का खनन खनिकों द्वारा, परिद्रवण परिद्रावकों द्वारा और उनसे वस्तु निर्माण कंसेरा आदि शूद्र जातियों अर्थात जो ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य से अलग थे वे करते थे। कांसे पीतल आदि मिश्रित धातुओं का कार्य कंसेरा वर्ग करता था। पीतल आदि मिश्र धातुओं के उत्पादन में जस्ता, यशद या जिंक का उपयोग होता है। प्राचीन काल में यशद उत्पादन का कार्य भारत में ही होता रहा है। यशद से देश को विगत 5000 वर्षों में अथाह धन प्राप्त होता रहा है। उदयपुर जिले में जावर नाम स्थान पर 5000 वर्श से भी पूर्व में जस्ते का परिद्रवण होता रहा है। जस्ते का परिद्रवण अत्यन्त जटिल व संवेदनशील होने से सम्पूर्ण विश्व के लिये जस्ते का उत्पादन प्राचीन काल में व मध्यकाल तक भारत ही करता रहा है। जस्ते का परिद्रवण 820 डिग्री सेण्टीग्रेड पर होता है और 910 डिग्री पर उसका आक्सीकरण हो जाता है और वह जिंक से जिंक (Zn) का आक्साइड (ZnO) अर्थात जिंक आक्साइड बन जाता है। प्राचीन भारतीय विद्वानों को विदित था कि ताम्र (कॉपर) अवकारक ;त्मकनबपदह हमदजद्ध है। इसलिये, तब के यशद व मिश्रधातु कांसा, पीतल आदि के उद्यम में लगे शूद्र यशद परिद्रवण में यशद अयस्क ;पदब त्मद्ध अर्थात खनिज यशद को नीचे से गरम कर ऊपर ताम्बे की पट्टिका से ढक देते थे। इससे यशद का आक्सीकरण नहीं होता था। इसीलिये जस्ते का नामकरण यशद किया गया। इसका अर्थ है ''ताम्रः यश प्रदायते इति यशदः''। चूंकि संस्कृत में प्रत्येक शब्द की गूढ़ अर्थ परक व्युत्पत्ति है उदाहरणतः ''मननात् त्रायते इति मन्त्रः'' जिसका अर्थ है 'मनन करने वाले की रक्षा करे वह मंत्र'। इसी प्रकार ''शं तनोतु इति शंकरः'' का अर्थ है संकटों का शमन या निवारण करें वह शंकर। यदि ठीक से समीक्षा करें तो सूर्य के जो पर्यायवाची शब्द हैं वे उसके होने वाली फ्यूजन फिशन आदि क्रियाओं के सूत्र हैं। ब्रह्म जानाति ते ब्राह्मणा ''ज्ञान को लिपि बद्ध करने वाला ब्राह्मण। इस प्रकार ताम्र की पट्टिका के अवकारक गुण (Reducing activity) को ध्यान में रख कर खनिज परिद्रावक व कंसेरा आदि अपने श्रम के स्वेद से मूल्यवान वस्तुओं का उत्पादक वर्ग इस प्रौद्योगिकी का उपयोग कर मूल्यवान यशद का उत्पादन करता था। उसी ज्ञान का संचय व संकलन ब्राह्मण वर्ग यथा पाणिनी व यास्क आदि उसे लिपिबद्ध करते थे वैश्य उसका व्यापार कर राजा को राजस्व चुकाता था और उस राजस्व से निर्मित राजकोष से ही राजा सेना आदि रख कर कानून व्यवस्था पूर्वक राज्य की बाह्य आक्रमण आदि से सुरक्षित रखता था। इसमें ऊंच–नीच, भेदभाव या अस्पृश्यता का कोई भाव नहीं होता था।

हमारे यहाँ विविध प्रकार की शासन प्रणालियां रहीं हैं, जिनका वर्णन प्रथम अध्याय में किया गया है। इनमें से साम्राज्य, राज्य, भोज्य, वैराज्य आदि कुछ शासन प्रणालियों का उल्लेख विगत अध्याय में किया है। उससे स्पष्ट है कि सम्पूर्ण भूमण्डल पर धर्म मय संविधान का अनुसरण करते हुये विविध प्रकार की शासन व्यवस्था यें संचालित की जाती थीं। इनका तैत्तिरीयोपनिषद व कई ब्राह्मण ग्रन्थों और नीति ग्रन्थों में, उनके रचना काल की परम्पराओं के अनुरूप वर्णन हुआ है। तब भोज की श्रेणी में आने वाले लोक कल्याणकारी राजा से लेकर विराट की श्रेणी में आने वाले परम प्रबल सामन्तों की सभा वाले राजा तक सभी को पंचजनीय समितियों की अनुशंसाओं के अनुसार ही शासन संचालन करने के वेद वाक्य हैं। ऋग्वेद व ऋग्वेदीय ब्राह्मण ग्रन्थों आदि में पाँचों वर्गों यथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र व अरण्यवासियों की समितियों व परिपदों का पंचजनाः कहा गया है। इस प्रकार राज्य व समाज की रचना में सभी वर्गों, वर्णों, श्रेणियों व जातियों का समान स्थान रहा है। पंचजनों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र व अरण्य वासी अर्थात जनजाति लोगों की शासकीय सभा, समिति व परिषदें होती थीं।

जातियों में पेशे या व्यवसाय जनित आरोह–अवरोह : जब जिस जाति के व्यवसाय या पेशे का उत्कर्ष, अवसान या विलोपन हुआ अथवा जब जिस जाति को विशेष राज्याश्रय प्राप्त हुआ या छिना अथवा सत्ता में स्थान बना या छिना उससे जातियों का आर्थिक व सामाजिक परिवेश बदलता रहा है। इसके कुछ उदाहरणों से स्पष्ट हो जायेगा कि हिन्दू जीवन पद्धति और आचार–व्यवहार में स्थायी रूप से कोई स्थायी रूप से श्रेष्ठ या कनिष्ठ नहीं रहा है। इसके अतिरिक्त अनेक हिन्दू ग्रन्थों में अंग्रेजों के काल में प्रक्षेप या कूट रचित श्लोक रचना से ऊंच–नीच का भेद, ईसाई मतान्तरण के लिये भी किया या धन लोलुप संस्कृतज्ञों से करवाकर उन्हें प्रसारित किया गया है। अनेक ग्रन्थों में वे प्रक्षिप्त (जोड़े गये) श्लोक उनके विन्यास, छन्द, शब्द प्रयोग आदि से पृथक लगते हैं। ऐसे कुछ प्रकरणों का यहाँ उल्लेख समीचीन है :

(अ) बनजारा समुदाय : 'बंजारा', 'बनजारा' या 'वणजारा' शब्द मूलतः 'वाणिज्य' शब्द से उद्भूत 'वाणिज्यारा' शब्द का रूपान्तर है। बंजारा लोग प्राचीन अन्तर्देशीय व्यापारी व वाणिज्कि वर्ग से हैं। ये लोग, जब आवागमन के आधुनिक साधन नहीं थे, तब बैलों पर विविध प्रकार का सामान ढोकर उनका व्यापार करते थे। कई सौ बेलों पर विविध स्थानों से माल क्रय कर उनका अन्य स्थानों पर विक्रय करते थे। इण्डोनेशिया से अरब तक इन बणजारों की बनायी अनगिनत झीलें इसकी साक्षी हैं। यथा मारवाड़ व मेवाड़ के बीच अजमेर में तो बंजारों की बनायी झील का नाम ही ''बणजारी झील'' है। उदयपुर की विश्व प्रसिद्ध झील पीछोला, जिसकी पाल पर ही सम्पूर्ण राजमहल बना है, और जिसके अन्दर व तटों पर विश्व के सर्वोत्कृष्ट होटल बन हुये हैं, बणजारों की बनायी हुयी है। अफगानिस्तान के गौर, पाकिस्तान के लाहोर, पेशावर में भी ऐसी झीलें हैं और इनकी संख्या अनगिनत है, क्योंकि उनका मौखिक इतिहास उस स्थान की जनश्रुति में ही है। मेवाड़ में 15 दिन तक प्रतिदिन छः घण्टे चलने वाले ''गौरी नृत्य नाटिका'' में राजा व नगर सेठ से भी अधिक धनी बणजारा को दिखलाया जाता है। उसे प्रत्येक राज्य के दाणी अर्थात् तत्कालीन कस्टम अधिकारी को अनेक प्रलोभन दिखाकर अपने व्यापारिक काफिले को निकालते दिखाया जाता है। आज अनेक राज्यों में बंजारे लोग अनेक शारीरिक श्रम आधारित काम करते देखे जाते हैं। कई राज्यों में वे अन्य पिछड़ा वर्ग में व कुछ में अनुसूचित जाति में हैं, आधुनिक वाणिज्य के दौर में उनकी अन्तर्देशीय व्यापार पद्धति अप्रासंगिक हो गयी। कारखाना उत्पादों, जो प्रारम्भ में 18वीं व 19वीं सदी में इंग्लैण्ड से आते थे, के कारण भी लाखों–करोड़ो हस्त शिल्पी, बुनकर, लुहार आदि बेरोजगार हुये हैं। अनेक ऐसे कारीगर जजिया व जेहाद से विस्थापित भी किये गये थे। अंग्रेजों के शासन में नगरों के अप्रत्याशित विस्तार, नगरों में रोजगारों के संकेन्द्रण और नगरी समाजों के स्तरीकरण, शासकीय स्तरों के विभेद आदि में भी समाज में ऊँच–नीच का व्यवहार बढ़ता गया जो कहीं–कहीं अस्पृश्यता की सीमा तक चला गया।

(ब) पासवान या दुसाध कुरू वंश से संबंधित होने के वर्णन आते हैं और मगधराज महानन्द को शूद्र भी बतलाया जाता है। राजस्थान के कई भागों में मीणा जनजाति के राज्य रहे हैं। मेवाड़ के राज्य चिन्ह में राजपूत महाराणा के साथ भीलों के राजा ''भीलू राणा'' को आमने–सामने चित्रित कर संयुक्त रूप से प्रस्तुत किया जाता रहा है, जिसका 1200 वर्षों के राज्य का अक्षुण्ण लिखित वंशक्रम पूर्वक इतिहास है। विदेशी मुस्लिम आक्रमणों के दौर में अनेक शासक व सैन्य वर्ग के लोग मतांतरण के भय से वनों में चले गये व उनकी कई पीढ़ियाँ वहीं निकलने के बाद वे वनवासी जनजातियों में ही रच बस गये। अन्यथा हमारे यहाँ प्राचीन काल में हिन्दू समाज में कहीं ऊँच–नीच जैसा व्यवहार नहीं रहा है। इसलिये रामचरित मानस में उत्तरकाण्ड में राम राज्य के वर्णन में लिखा है। ''राजघाट बांधेऊ परम मनोहर। तहाँ निमज्जिउ वरण चारिऊ नर।। इसका पूर्व में विवेचन किया जा चुका है। खिलजी के आक्रमण के दौर में अनेक वीरो व विद्वानों को वनांचलों में जाना पड़ा था। अब उनकी वर्तमान पीढ़ियाँ भी जनजाति की तरह रहती हैं।

चूंकि अंग्रेजों के आने के बाद भारत में जो समृद्धि, धर्म परायणता और समाज में सुव्यवस्था व सुसंगठन देखा, उससे उन्हें लगता था कि भारत देश में ईसाईकरण सम्भव नहीं है, जो अफ्रीका या लेटिन अमेरिका या उत्तरी अमेरिका में सम्भव हो गया। इसलिये उन्होंने अपने आक्रमणों के दौर में सर्वाधिक ग्रन्थागारों को जलाया जो कई–कई दिनों या महीनों उनकों जलाने पड़े थे। वृन्दावन लाल वर्मा की लिखी 'महारानी लक्ष्मीबाई' में उन्होंने झांसी जैसे छोटे से राज्य के पुस्तकालय के जलाये जाने का उल्लेख किया है। बड़ी संख्या में अंग्रेजों व यूरोपीयनों ने उन दिनों संस्कृत ग्रंथों वेदों आदि की समीक्षा अपने ढंग से व हिन्दू धर्म ग्रन्थों की विकृत व्याख्या की हैं आज अनेक ग्रन्थों के भाष्य उन्हीं के उपलब्ध हैं। हमारे पारम्परिक भाष्यों को अग्नि के भेंट चढ़ा कर उन्होंने बड़ी संख्या में अनर्गल व्याख्या की है। यथा उन्होंने 'ते उभे चतुर्पदे सम्प्रसारयान' वेद वचन की अत्यन्त अश्लील व्याख्या कर दी। जबकि इसका ठीक अर्थ है कि वे उभे = वे दोनों अर्थात राजा व प्रजा, 'चतुर्पदे' = चारों पैर अर्थात धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष रूपी चारों पुरूषार्थ, ''सम्प्रसारयाव'' = का सर्वत्र प्रसार करें। प्राचीन हिन्दू वांग्मय की अनर्गल व्याख्या के कुत्सित प्रयासों पर पूरा स्वतंत्र ग्रन्थ लिखा जा सकता है। इसकी किसी अन्य ग्रन्थ में समीक्षा की जायेगी।

हिंदू संस्कृति उदार व खुलेपन वाली है :

सनातन हिन्दू धर्म व अन्य मत पंथों में यह अंतर सबसे महत्वपूर्ण है कि जब कोई भी नया व युगानुकूल विचार उभरता या विकसित होता है और यदि वह उस काल व पारिस्थिति से सुसंगत व सर्वथा उपयुक्त और लोक हित में आचरण योग्य प्रतीत होता है, तो हिन्दुत्व उसे आत्मसात कर लेता है। परिवर्तन सृष्टि का नियम है। परिवर्तनों से कालांतर में यदि उसमें कमियां दृष्टिगोचर होने लगती है, ऐसे में इस पूर्ववर्ती विचार का युगानुकूल परिष्कार भी कर लिया जाता है, पुनः वह एक संशोधित विचार के रूप में चलता रहता है। आगे चलकर इस परिष्कृत विचारधारा को परिवर्द्धित करने वाला और भी अधिक समयोचित कोई तीसरा विचार विकसित होता है तो उसका भी समावेश हो जाता है। इस प्रकार से यह सनातन विचार समय के साथ–साथ परिस्थिति सापेक्ष संशोधनों परिर्वद्धनों को निरंतर आत्मसात कर लेता है। एक ही समय में कई उपासना पंथों का विकास व अनुसरण आम बात रही है। हिन्दू धर्म की विशेषता यही है कि यह धर्म किसी एक व्यक्ति द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त मात्र संचय न होकर विगत अनगिनत (लाखों) सहस्त्राब्दियों में अनेकानेक व्यक्तियों के ज्ञान, शोधों व विचारों का अनवरत वर्द्धमान सम्मुच्चय है व हिन्दू मतानुसार करोड़ों वर्षों से यह सब परिवर्द्धन–संशोधन होता रहा है। उदाहरणतः जब समाज में हिंसा की वृत्ति बढ़ने लगी तो गौतम बुद्ध व वर्द्धमान महावीर ने समाज में पुनः अहिंसा व करूणा का भाव जगाया दोनों ही महापुरूषों का अवतरण ईस्वी पूर्व 6ठीं शताब्दी में मगध में हुआ। बौद्ध मत का प्रसार भारत से ही सम्पूर्ण ऐशिया में हुआ। गौतम बुद्ध का अवतार आज विष्णु भगवान के 24 अवतारों में एक है। सभी सनातन परम्परा के हिन्दू अपने दैनिन्दिन संकल्प में कलि प्रथम चरणे बौद्धावतारे'' उच्चारण कर इस काल को बौद्धावतार का काल खण्ड घोषित करते हैं। जहाँ सनातन परम्परा में ऋषभदेव विष्णु के चतुर्थ अवतार के रूप में पूज्य हैं उसी प्रकार श्रमण परम्परा में ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर के रूप में पूज्य हैं। इस प्रकार भारत में सभी उपासना परम्पराओं में कई अवतारों व महापुरूषों की साझी पूजा उपासना की परम्परा रही है। इस प्रकार से हिन्दू धर्म एक खुलेपन की जीवन पद्धति है जो वैचारिक कट्टरता नहीं अपितु समयोचित विवेक से विकसित, काल सुसंगत विचारों के संयोजन से पल्लवित व पुष्पित हुआ है। इसके विपरीत कुछ पंथ एक तंग गली की तरह बंद हो जाते हैं जो एक व्यक्ति या महापुरूष मात्र के विचारों पर ही केन्द्रित हैं और जो यह मानकर चलते है कि समय अपरिवर्तित रहता है और व्यक्ति का विवेक भी ठहरा हुआ ही रहता है। इन पथों में विचारों के विकास व परिशोधन का कोई स्थान या महत्व नहीं है। यही कारण है कि इन अनेक मत–पथों में एकाकी आग्रह अथवा वैचारिक कट्टरता पाई जाती है। सभी एकान्तवादी पंथ अत्यन्त व अन्य मत–पंथों के प्रति अनुदार हिंसात्मक और कट्टर हो जाते हैं। हिन्दू मत भी उतना ही कट्टर होता जितने एकान्तवादी पंथ हैं, यदि इसमें समायोचित विभिन्न सद्विचारों व शिक्षाओं के समावेश का स्थान नहीं होता। हिन्दू काल गणना (देखें अध्याय 3 में) के खरबों वर्षों के दौरान विविध अवतारों, महापुरूषों, ऋषियों, मुनियों के उद्बोधनों व आत्मसाक्षात्कार का संचय हिन्दू धर्म ग्रन्थों में है। एक ही परिवार में सभी सदस्यों के आराध्य भी भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। एक ही व्यक्ति परमात्मा की भिन्न–भिन्न शक्तियों के प्रतीक देवी–देवताओं का आराधक हो सकता है। वेद, पुराण, उपनिषद, गृह्य सूत्र, नीति ग्रंथ रामायण, महाभारत, विशाल श्रमण साहित्य, बौद्ध साहित्य, आदि – ग्रन्थ गुरूग्रन्थ सहिब, कबीर पंथ, दादू पंथ रूणीजा के राम देव जी की पूजा–परम्परा, हरे कृष्ण सम्प्रदाय, आर्य समाज ये सभी समस्त देशवासियों के लिये प्रेरणा के साझे स्रोत हैं।

वेद अनादि हैं, अपौरूषेय हैं और सब प्रकार के ज्ञान–विज्ञान से युक्त हैं। यहाँ तक कि जर्मन विद्धान मेक्स मूलर ने वेदों के प्रारम्भिक अध्ययन में इसे अनगढ़ स्तुतियों का गठजोड़ कहा, उसे भी अपने जीवन के अन्तिम कालखण्ड में कहना पड़ा कि वेद किसी दिव्य चेतना के अधीन रचे गये हैं। वेदों में आधुनिकतम विज्ञान से लेकर अत्यन्त उन्नत राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र व खगोल विज्ञान का ज्ञान भरा है। वेदों में विज्ञान की चर्चा इस पुस्तक का विषय नहीं है लेकिन, कुछ उदाहरणों की चर्चा से सनातन हिन्दू धर्म की समग्रता का परिचय हो जायेगा, जिसकी अन्य एकाकी आराधना वाले पंथों से कोई तुलना भी नहीं की जा सकती है। मौसमी नदियाँ व छोटे बड़े तालाब सूखते–भरते रहते हैं। लेकिन समुद्र, जिसमें वर्षानुवर्ष अनगिनत नदियाँ समाती रहती है, अक्षुण्ण रहता है और उसमें कोई अन्तर नहीं दिखलायी देता है। हिन्दुत्व किसी संकुचित उपासना पर केन्द्रित नहीं होकर यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और सभी प्रकार के ज्ञान–विज्ञान की विवेचन प्रस्तुत करता है। यहाँ तक कि नास्तिक मत के चार्वाक दर्शन को भी इस ज्ञान के समुद्र में एक विचारों की सरिता के रूप में विवेचित किया है। चारों वेद, 5 उपवेद 18 पुराण, 18 उप–पुराण, 1008 उपनिषद जिनमें 108 उपनिषद प्रमुख हैं, शतपथ व ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, 6 दर्शन (यथा सांख्य, वेदान्त, वैशेषिक, न्याय, मीमास्य व योग दर्शन), 6 वेदांग (कल्प, शिक्षा, व्याकरण, निरूक्त, छन्द, खगोल–ज्योतिष या त्रिस्कंध ज्योतिष) सूत्र ग्रन्थ (स्मार्त सूत्र, गृह्य सूत्र, योग सूत्र, न्याय सूत्र, शुल्व सूत्र, धर्म सूत्र आदि) इतिहास (रामायण, महाभारत आदि)।

आगम आदि ग्रन्थों की रचना अलग–अलग काल खण्ड में लिपिबद्ध हुये हैं। इन ग्रन्थों में इस मध्य युग में अनेक प्रक्षेप भी हुये हैं। उनके शुद्ध पाठ में कहीं भी

भेदभाव का स्थान नहीं है। समय–समय पर उनमें कुछ दुराग्रही लोगों ने अनुचित प्रकरण भी जोड़े हैं। अन्यथा आठवीं सदी के आक्रमणों के पूर्व हिन्दू संस्कृति में जाति भेद का कोई स्थान नहीं रहा है।

जातियाँ – हमारे यहाँ जातियों में ऊंच–नीच की कोई संकल्पना नहीं रही है। चारों वर्ण परमात्मा की समान रूप से सन्तान हैं, यथा 'सब मम उपजाये' पेशे वे जीवन वृत्ति (occupation) से ये शिल्प समूह (Craft Guilds) रही हैं और परिवार के बच्चे उनमें प्रशिक्षु (Apprentice) होते थे। जिसे वह कौटुम्बिक प्रशिक्षु वृत्ति नहीं करनी होती थी वह गुरूकुलों में अध्ययन हेतु जाने को स्वतंत्र थे। महीदास, जाबाला पुत्र सत्यकाम, इतरा के पुत्र ऐतरेय (ऐतरेय ब्राह्मण व ऐतरेय उपनिषद आदि के रचयिता) आदि के कई उदाहरण रहे हैं।

अस्पृश्यता – बाहरी आक्रमणों से आरोपित विकृति

अरबों के आक्रमणों के पूर्व हम एक समरस समाज थे। जिहादी आक्रमणों की उसी तरह की वीभत्सता जो आज हम इस्लामिक स्टेट (ISIS) या अन्य जिहादी व तालिबानी आक्रमणों में देखते हैं। महिलाओं व बच्चों नृशंस हत्याओं, सिरच्छेद व दुराचार आदि से आतंकित कर मतान्तरण आदि के संचार माध्यमों के आज के दृष्यों जैसे ही 1200 वर्षों के जिहादी आक्रमणों के उस दौर में जेहादी मतान्तरकर्त्ताओं के चुंगुल मे फंस कर उनके वीभत्स आतंक से घबरा कर करोड़ों लोग मतान्तरित हुये। लेकिन, धर्म के प्रति दृढ़–मूल लोग धर्म पर अडिग रहे व मतान्तरित नहीं हुये। उन्हें मैला उठाने से लेकर कई अन्य ऐसे ही हेय काम करने को बाध्य कर देना उनको कारोबार विहीन कर देना जजिया लगा कर उनका धन हर लेना आदि तब आम बात थी। मुस्लिमों में पर्दा प्रथा के चलते मैला उठाने के काम की उत्पत्ति हुयी और ऐसे कामों से अस्पृश्यता आदि का जन्म हुआ। अंग्रेजों के राज्य में नगरों के प्रशासन में स्तरीकरण, उच्च व निम्न पदों की रचना करना, उनमें औपनिवेषिक विभेद करना, प्रशासनिक व कार्मिक पदों का स्तरीकरण आदि ने पूरी एक जातीय स्तरीकरण की परम्परा खड़ी कर दी। ये सभी वे लोग हैं, जिन्होंने जिहाद व जजिया अथवा मिशनरी प्रलोभनों से अविचलित रह कर अपनी संस्कृति को अक्षुण्ण रखा है।

विदेशी मुस्लिम आक्रान्ताओं द्वारा गुलाम बनाना, आतंकपूर्वक मुसलमान बनाने के लिये सब प्रकार के अत्याचार करना तब आम बात हो गयी थी। आठवीं सदी से 18 वीं सदी तक हुये ये अत्याचार कितने लोमहर्षक व विभत्स थे। अलाउद्दीन खिलजी के काल में एक बार तो ऐसा समय आ गया था कि कश्मीर से कन्या कुमारी तक कहीं भी हिन्दू शासन नहीं बचा था। सीसौद से आकर हम्मीर द्वारा चित्तौड़ को मुक्त कराने के बाद दक्षिण में भी हिन्दू राज्यों का पुनःजागरण हुआ और अन्ततः आज हम एक सबल–समर्थ राष्ट्र हैं। विदेशी मुस्लिम आक्रान्ताओं का मुसलमान बनाने के लिये कैसे आतंक का दौर था, इसका एक विवरण ही यहाँ पर्याप्त है।

औरंगजेब द्वारा 1675 में गुरू तेग बहादुर द्वारा मुसलमान बनना स्वीकार नहीं करने पर उनका सिर काट देना। उससे पहले उनके तीन शिष्यों नृशंसतापूर्वक वध करना। भाई मतिदास को जीवित आरे से चीरा गया, भाई दयालदास को उबलते तेल में भून देना और भाई सतीदास की बोटी–बोटी काट कर हत्या करना आदि इस्लाम मतान्तरण के लिये डाले जाने वाले दबाव के ही प्रमाण हैं। मुगलों द्वारा ही सन् 1716 में बन्दा सिंह के 4 वर्ष के पुत्र की बोटी–बोटी काट कर उसका कलेजा बन्दा सिंह के मुख में ठूंसना और फिर उसकी एक–एक कर आंखे निकाल देना, एक–एक कर हाथ–पाँव काट देना और फिर उसके शरीर से उसका माँस नोच देना आदि उन नरक से भी बदतर यातनाओं के उदाहरण हैं, जिनसे बुरा कर लोगों को मुसलमान बनाया या उनके पारम्परिक शिल्प व कारोबार से अलग कर कई प्रकार के हेय कार्य करने को बाध्य किया गया। मुस्लिम शासन में हिन्दुओं को किस दृष्टि से देखा जाता था। इसके अलाउद्दीन खिलजी (1296–1316) व औरंगजेब (1658–1707) के काल के निम्न 2 ऐतिहासिक तथ्य भी पठनीय है। (प) खिलजी के राज्य में हिन्दुओं के प्रति दृष्टि : उस काल में जो हिन्दू परिवार वीभत्स अत्याचारों के दौर में अडिग रहे, उन्हें कई हेय कार्य करने को बाध्य किया गया, उनका पैतृक व्यवसाय छीन लिया उन पर जजिया नामक नृशंस कर आतंक परक कर या टैक्स लगाया गया। वह जजिया भी उन्हें बहुत अपमानित करते हुये लिया जाता था। अलाउद्दीन खिलजी व काजी अला उल मुल्क का यह संवाद पठनीय है। जब दिल्ली की गद्दी पर खिलजियों की हुकूमत हुई तो अलाउद्दीन खिलजी 1296–1316 ने अपनी काजी अता उल मुल्क से पूछा कि 'मैं हिन्दुओं से कैसा व्यवहार करूँ,' काजी बोला 'तुम हिन्दुओं को सिर्फ नजराना और शुकराना देने वाला समझो।' यानि जब कोई हिन्दू किसी मुस्लिम पदाधिकारी के सामने जाये तो उसे नजराना के रूप में कुछ धन दे और जब अधिकारी जाने लगे तब भी शुकराना के तौर पर कुछ धन फिर से दे, अगर मुस्लिम अधिकारी हिन्दू से चांदी का सिक्का मांगे तो हिन्दू उसे सोने का सिक्का देकर उसे खुश करे, यदि अधिकारी थूकना चाहे, तो हिन्दू अपना मुंह खोल दे और उसे मुंह में थूकने दें। खिलजी बोला 'काजी तुझे इस्लाम का पूरा ज्ञान है'। ;पपद्ध तारीखे फिरोजशाही – जिया उद्दीन बरनी : इसी तरह शेख हमदानी ने अपनी किताब ''जखिरतुल मुल्क'' में लिखा है औरंगजेब ने जब 1679 में जजिया लागू किया तो, आदेश दिया कि हिन्दू कोई नया बुतखाना नहीं बना सकते और न उसकी मरम्मत कर सकते हैं, अगर हिन्दू किसी सम्बन्धी की मौत पर जोर–जोर से रोयेंगे तो जुर्माना लगेगा, शंख बजने, घंटा बजने पर भी टैक्स लगेगा, अगर हिन्दू जजिया नहीं दे सकें तो उनके मंदिरों को तोड़कर जजिया वसूला जायेगा या उनकी लड़कियों को कनीज बना लिया जायेगा, मुसलमान इसीलिए औरंगजेब की तारीफ करते हैं, व मुसलमानों का आदर्श है। मुसलमानों ने इसी जजिया की ताकत से देश में कई मुसलमान बना दिए थे। इरान में सन 1884 और ट्यूनिसिया और अल्जीरिया में सन 1855 तक जजिया लिया जाता था। इसके कारण वहां के गैर मुस्लिम या तो पलायन कर गए या विवश होकर मुसलमान बन गए। इस प्रकार जिहाद की तरह जजिया भी भयावह आतंक के रूप में प्रयुक्त किया गया।

सम्पूर्ण समरसता पूर्ण या समरस समाज – हमारी दीर्घ परम्परा व आज की अनिवार्य आश्यकता

हमारे यहाँ बाह्य आक्रमणों से उपजी ऊंच–नीच व अस्पृश्यता की विकृति को मानवता के प्रति अन्याय व अपराध के रूप में ही देखा जाना चाहिये। जल स्रोतों से लेकर मन्दिर, श्मशान आदि सभी स्थानों पर सबका समान रूप से प्रवेश होना चाहिये। शादी विवाह में घोड़ी पर बैठने से लेकर सभी मंगल कार्यों में सभी लोगों का पूर्ण अधिकार व सम्मान बना रहना चाहिये।

मांगलिक कार्यों में जाति भेद रहित होकर सबका सबके यहाँ आना–जाना होना चाहिये।

सब हिन्दू एक ही भारत माता की सन्तान हैं। सबके प्रति हमारा समान आत्मीय भाव रहे। हजारों वर्षों से हम यहाँ साथ रहते आये हैं। हम सभी ने मिलकर इस देश के इतिहास को उज्जवल बनाया है। यह हमारा साझा इतिहास है, साझे पूर्वज हैं और सुख–दुःख की अनुभूतियाँ भी साझी हैं।

बाहर के मुट्ठी भर आक्रमणकारियों ने फूट डालकर स्थानीय राजा–महाराजाओं में धर्म की रक्षार्थ वांछित परस्पर सहयोग व एकता के अभाव में

और हमारे में अन्य आधारों पर फूट डाल कर ही राज्य किया है। जातिगत भेद–भाव व ऊंच–नीच के नाम पर मिशनरियों ने भी बड़े स्तर पर मतान्तरण किये हैं। मतान्तरण से अब अल्प संख्यक बहुसंख्यक के भेद से अलगाववाद को बढ़ावा देने के प्रयास किये जा रहे हैं। मतान्तरण में भय वे प्रलोभन का भी सर्वाधिक उपयोग किया है। इसलिये समरसतापूर्ण हिन्दुत्व हमें जोड़ता है और भेदभाव तोड़ता है।

लेकिन, आज जो अलगाव की दीवारें हमें बाँट रही हैं, उनको हमें ही निर्मूल करना है। हमें वर्ण भेद, जाति भेद, अस्पृश्यता व भाषाई भेदभाव को समूल दूर करना होगा। वैसे यह बुराई समाज के एक बड़े भाग से में विरल हो चुकी है या दूर हो चुकी है। सारे भारतवासियों के पूर्व साझे हैं। कहीं–कहीं कुछ लोग अभी भी यदि भेद करते है तो उन्हें सही मार्ग पर लाना है। उनमें भाव परिवर्तन करना है। आज–कल जिस मात्रा में बस्तियों में साथ–साथ रहना और जाति निरपेक्ष परस्पर व्यवहार बढ़ा है, उससे जाति भेद व अस्पृश्यता अब शीघ्र ही समाप्त होनी ही है। हमें इसके लिये पूरे प्रयास करने हैं। समाज के सभी तर्कशील, समझदार, प्रभावी व नेतृत्ववान लोगों को इसमें आगे आना चाहिये। समाज के किसी भी वर्ग को कोस कर उनमें विद्वेष उत्पन्न करना, किसी को जातिगत अपमानित करना, वैमनस्य रखना, परस्पर कोई दुर्भावना रखना सर्वथा अनुचित है। किसी जाति या वर्ग के सभी लोगों को अत्याचार की प्रतिमूर्त्ति कह कर वैमनस्य उत्पन्न करना, अत्याचार की कल्पित कहानियाँ गढ़ना भी अनावश्यक सामाजिक अलगाव उत्पन्न करते हैं।

देश में ऊंच–नीच का भेदभाव व अस्पृश्यता का प्रसार अरबों के आक्रमणों के बाद विगत 1300 वर्षों के जेहादी आक्रमण, व अंग्रेजी राज्य उत्तरदायी रहे हैं। लेकिन इस घोर बुराई के विरूद्ध देश में सभी प्रकार व सभी श्रेणी के लोगों ने प्रयास भी किये हैं। देश में अस्पृश्यता निवारण एवं ऊंच–नीच का भेदभाव मिटाने में विगत एक हजार वर्षों के प्रयासों पर दृष्टि करें तो 1000 वर्ष पूर्व विशिष्टाद्वैत के आचार्य अभिनव गुप्त ने तब अथक प्रयास किये थे। उन्होंने ही भेदभाव मिटाने हेतु सर्व प्रथम 'हरिजन' शब्द का प्रयोग कर सभी जाति–वर्णों को मंत्र दीक्षा देने और भेदभाव रहित व्यवहार का प्रतिपादन किया। इस प्रकार अस्पृश्यता व ऊँच–नीच के भेद को मिटाने में एक हजार वर्ष पूर्व अभिनव गुप्त, 500 वर्ष पूर्व चैतन्य महाप्रभु, उसके बाद परमहंस रामकृष्ण, स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्री फुले, दादा बा पाण्डुरंग, राम बालकृष्ण, आत्माराम पाण्डुरंग, डा. भण्डारकर व न्यायमूर्त्ति रानाडे जैसे संवेदनशील समाज सुधारकों का बड़ा योगदान रहा है। छत्रपति शाहू महाराज व सांगली के ब्राह्मण राजा साहब का भी उन्नीसवीं सदी में समरसता निर्माण में अमिट योगदान रहा है। उन्होंने तब सत्यशोधक समाज के लिये रूपये 35 का सहयोग भी दिया था। रामकृष्ण परमहंस ने तो शूद्रातिशूद्र का शौचालय साफ कर ऐसी समरसता को परमहंस कहलाने में पहली सीढ़ी बतलाया है। एक हजार वर्ष पूर्व आचार्य अभिनव गुप्त जैसे विद्वानों ने भी ऊँच–नीच को निर्मूल करने हेतु अथक प्रयास किये हैं। बाबा साहब अम्बेडकर के विद्यालयीन ब्राह्मण शिक्षक अम्बेडकर से लेकर बड़ौदा के महाराजा तक सभी ने बाबा साहब की सब प्रकार से सहायता की थी। उस काल में अनेक ब्राह्मण भी भेदभाव निवारण में सक्रिय रहे हैं। उन्नीसवी सदी में 1848 में पुणे के भिड़े बाड़े में ऐसे अस्पृष्य समाज की बालिकाओं के लिये महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा आरम्भ किये विद्यालय में सहयोगी सखाराम यशवन्त परांजपे, सदाशिव गोविन्द साठे, सदाशिव गोविण्डे आदि सभी कथित उच्च वर्णीय लोग थे। इस विद्यालय को 1851 में पुनः चिपलूणकर बाड़े में फिर से प्रारम्भ करने पर अनेक सहयोगी ब्राह्मण थे। इसकी समिति में 8 में से 6 ब्राह्मण थे। भिड़े द्वारा अपने बाड़े में स्थान देने से लेकर उस विद्यालय में सभी शिक्षक ब्राह्मण थे। इस प्रकार स्वप्रेरणा से समाज सुधार के प्रयास 19वीं सदी से ही प्रारम्भ हो गये थे और उनमें सभी वर्ण के लोग सहयोगी बनते रहे हैं। बाबा साहब ने अपने अनुभवों में उनके कई ब्राह्मण शिक्षकों यथा उनके हाई स्कूल शिक्षक श्री पेण्डसे, गणिति शिक्षक श्री जोशी, प्रधानाध्यापक कृष्णा जी अर्जुन केलुस्कर आदि द्वारा उनको दिये संरक्षण का श्रृद्धा पूर्वक उल्लेख किया है। उनके महाड़ सत्याग्रह में श्री बापूराव जोशी का सहयोग और इसी क्रम में उनके सहपाठी रहे प्रोफेसर अश्वथामाचार्य बालाचार्य, गजेन्द्र गढ़कर के, बाबासाहब के आग्रह पर पीपुल्स एज्यूकेशन सोसायटी के सिद्धार्थ कॉलेज, बोम्बे में प्राचार्य पद स्वीकारना आदि ऐसे कई समरसता निर्माण हेतु आगे आने वाले लोगों के उदाहरण भी हैं। इस प्रकार हर काल खण्ड में भेदभाव मूलक व्यवहार के साथ ही समता के प्रयास करने वाले पावन संकल्प युक्त लोग भी रहे हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपनी 1925 में स्थापना के समय से ही जाति व पंथ भेद रहित समरसता के ध्येय से ही कार्य प्रारम्भ किया। संघ के स्थापक पूजनीय डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी ने हिन्दू समाज की पारम्परिक एकता को पुनर्स्थापित करने के लिये ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना करने का निश्चय किया था। उनके विचारों में हिन्दू समाज की इस पारम्परिक एकता के विरल होने से ही देश पर एक के बाद एक विदेशी आक्रमण होते चले गये। इसलिये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 1925 में स्थापना के समय से ही संघ में जाति निरपेक्ष समरसता के आधार पर ही, सब लोग परस्पर व्यवहार करते थे। इस संबंध में बाबा साहब अम्बेडकर का अनुभव भी यहाँ उद्धरणीय है। बाबासाहेब को भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में व अस्पृष्यता निवारण के प्रयासों की थी।

सन् 1939 में पूणे में लगे संघ शिक्षा वर्ग में शाम के कार्यक्रम में बाबासाहब आये। पूज्य आद्य सरसंघचालक डा. हेडगेवार जी भी वहाँ थे। लगभग सवा पाँच सौ पूर्ण गणवेशधारी स्वयंसेवक संघ स्थान पर थे। बाबासाहब ने डा. हेडगेवार से पूछा – 'इनमें अस्पृश्य कितने हैं? डाक्टर साहब 'चलो, घूम कर देखते हैं।' बाबासाहब बोले – 'इनमें अस्पृश्य तो कोई दिख नहीं रहा'। डा. हेडगेवार ने कहा – 'आप पूछ लें'। बाबासाहब ने पूछा – 'आप में से जो अस्पृश्य हों, वे एक कदम आगे आ जाये।' उस पंक्ति में से एक भी स्वयंसेवक आगे नहीं आया। बाबासाहब ने कहा – 'ये देखिये'। इस पर डा. हेडगेवार ने कहा– 'हमारे यहाँ यह बताया ही नहीं जाता की आप अस्पृश्य हैं। आप अपनी अभिप्रेत जाति का नाम लेकर उनसे पूछें'। तब बाबासाहब ने स्वयंसेवकों से प्रश्न किया

'इस वर्ग में कोई हरिजन, मांग, चमार हो, तो एक कदम आगे आये'। ऐसा कहने पर कई स्वयंसेवकों ने कदम आगे बढ़ाया। उनकी संख्या सौ से ऊपर थी। अपने बाबासाहब व्यवसाय के निमित्त एक बार दापोली गये थे, तब वहाँ की संघशाखा पर गये और खुलेमन से स्वयंसेवकों से चर्चा की। महात्मा गांधी की हत्या के पश्चात् सरकार ने द्वेषवश संघ पर प्रतिबंध लगाया था, तब संघ के इन्हीं सब सद्प्रयासों को दृष्टिगत कर व संघ की उसमें संलिप्तता नहीं होने के कारण उसे उठाने के लिये बाबासाहब ने सरदार पटेल व श्यामाप्रसाद मुखर्जी के साथ मिलकर प्रयत्न किये थे। जुलाई 1949 में संघ पर लगा प्रतिबंध हटने के बाद उनके द्वारा किये गये प्रयासों के लिए उनका आभार मानने के निमित्त सितम्बर 1949 में श्री गुरूजी उनसे दिल्ली में मिले थे।

आगे चलकर द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरूजी के प्रयत्नों से उडुपी में सारे धर्माचार्य का सम्मेलन हुआ। 12 दिसम्बर, 1969 को उक्त सम्मेलन के अन्तर्गत विश्व हिन्दू परिषद की विद्धत् सभा में सारे धर्माचार्यों ने घोषणा की कि 'अस्पृश्यता धर्मसम्मत' नहीं है। न हिन्दू पतितो भवेत। हिन्दवः सहोदरा सर्वे का स्पष्ट निर्णय दिया।

डा. साहब के बाद श्री गुरूजी ने भी उसी समरसता को आधार बनाकर कार्य को आगे बढ़ाया। तृतीय सरसंघचालक बाला साहब देवरस का बसंत व्याख्यान इस संबंध में उत्कृष्ट मार्गदर्शन प्रदान करता है। संघ के वर्तमान व छठें सरसंघचालक मोहनराव जी भागवत का सर्वाधिक बल भी इस बात पर है कि कहीं भी मंदिर, जलस्थान, श्मशान आदि में प्रवेश व उपयोग में हिन्दू समाज में कोई भेदभाव नहीं रहे। संघ के प्रचारक दत्तोपंत जी ठेंगड़ी ने भण्डारा के

उपचुनाव में जिस प्रकार अम्बेडकर जी का सहयोग कर, उस चुनाव क्षेत्र से अनुसूचित जाति के मतों से कहीं ज्यादा अधिक मत दिलाने का सहयोग किया। उस घटना से प्रभावित होकर बाबा साहब ने भी जाति के स्थान पर सर्वस्पष्ट राजनीति पर अधिक बल देना प्रारम्भ किया। वस्तुतः जब बाबा साहब अम्बेडकर को भण्डारा के उप चुनाव में उस चुनाव क्षेत्र के अनुसूचित जाति के मतों से कहीं अधिक मत ठेगंड़ी जी के सहयोग से मिले, तो उन्होंने अपने तत्कालीन राजनीतिक दलै cheduled Caste Federation के स्थान पर Republic Party of India के गठन की भी पहल कर दी थी। तब उनका यही कहना था कि अब जाति आधारित राजनीति का समय नहीं है। वीर सावरकर व गायत्री परिवार के संस्थापक पण्डित राम शर्मा आचार्य के भी अस्पृष्यता निवारण में अथक प्रयास रहे हैं। ऐसे इन सभी अनगिनत महापुरूषों के भगीरथ प्रयासों से आज हम बड़े प्रमाण में ऊंच–नीच को समाप्त कर समरस राष्ट्र निर्माण की ओर बढ़ रहे हैं। यह देश में बहुसंख्य समाज का चिन्तन समरसता मूलक होने से भी संविधान में आरक्षण के प्रावधान से लेकर अस्पृष्यता को अपराध घोषित करने जैसे अनेक समता मूल अधिनियमों के विधेयक में देश की राष्ट्रीय चिति भी आज समरसता की पक्षधार है।

वस्तुतः समर्थ भारत व सशक्त भारत निर्माण हेतु हिन्दू समाज की, जाति भेद से परे समरसता पूर्ण एकता ही एक मात्र विकल्प है। यहाँ हम सब हिन्दू हैं। कोई शोषक व शोषित हो ऐसा नहीं है। हम सबको भेद–भाव रहित हिन्दू एकता के लिये काम करना है। हिन्दू चिन्तन प्रणाली प्राणी मात्र में एक ही परमात्मा को देखती है। समस्त भारतवासियों के पूर्वज हिन्दू थे। इसलिये देश में आज किसी की भी पूजा या उपासना पद्धति कुछ भी हो, हम सभी हिन्दू हैं। हमारा साझा इतिहास व साझी स्मृतियाँ हैं, यह हमें हिन्दू समाज को एक जन व एक समाज का बोध करा एक समरस हिन्दू समाज व सशक्त हिन्दू राष्ट्र का निर्माण करना है। हिन्दू में कोई ऊँचा या नीचा नहीं कहा जा सकता है।

हमारे लिये करणीय कार्य :

1. सबके साथ समान व्यवहार
2. जातीय दृष्टि से कोई ऊँचा या नीचा नहीं है
3. सभी जातियों के बन्धु–बहिन एक समरस हिन्दू समाज के अंग हैं। परस्पर एक दूसरे के दुःख–दर्द व प्रसन्नता के पलों में सहभागिता
4. मन्दिर, श्मशान, जलस्रोत, धर्मस्थल, धर्मशालाओं आदि में समान भाव से सबका प्रवेश
5. अभाव व आपत्ति के समय सबको अपने परिवार के सदस्य से भी बढ़कर अपना मानते हुये उसमें बिना किसी दाता–भाव के सहभागी बनना
6. कोई हिन्दू परिजन कहीं परित्यक्ता या उपेक्षित अनुभव नहीं करें। अस्पृश्यता जैसा आसुरी भाव एवं जातीय ऊँच–नीच का भाव एवं उसकी अहमन्यता किंचित मात्र भी नहीं रहे।
7. सभी पंथों के भारतीयों को भी यह स्मरण दिलाकर देश के प्रति उनमें यह निष्ठा जगाना कि, कभी हुये मतान्तरण के पूर्व या उनके पंथ की स्थापना के पूर्व उनके पूर्वज भी हिन्दू ही थे। इसलिये उनमें भी हिन्दुत्व की इस विरासत के प्रति संवेदना उत्पन्न करना और उनमें भी अतीत के हिन्दूपन का बोध जाग्रत हो और बना रहे। इससे उनमें भी राष्ट्र गौरव का भाव अक्षुण्ण रूप में बना रहें।

भारत में अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही हिन्दू जीवन पद्धति व हमारी एकात्मता हमें एकता से आबद्ध रखती आयी है व रखेगी। सब हिन्दू उत्कृष्ट परम्परा युक्त एक संगठित राष्ट्र है। हमारा लक्ष्य हिन्दुओं का कोई संगठन खड़ा करना नहीं, वरन समस्त हिन्दुओं में संगठन स्थापित करना है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति आबाल–वृद्ध व मातृशक्ति पर्यन्त बिना किसी विभेद के पारस्परिक सद्भाव, सम्मान व एकजुटता पूर्ण जीवन जीयें।

आज, अब कहीं पर स्वल्प मात्रा में भी कोई हिन्दू मानव–मानव में भेद नहीं करें। सम्पूर्ण हिन्दू समाज पूर्ण समरस होकर अभेद्य एकता युक्त हिन्दू राष्ट्र का अंगभूत रहे, यह सर्वाधिक आवश्यक है। हम सभी स्वयंसेवकों का यहीं परम लक्ष्य होना अनिवार्य है।

अध्याय – 3

हमारा प्राचीन गौरव

हिन्दुत्व की प्राचीनता : हिन्दूत्व का विचार सनातन अर्थात अनादि है जिसको आदि व अन्त अर्थ से रहित कहा गया है। पुराणों के अन्तर्गत सर्ग (सृष्टि रचना) प्रतिसर्ग (प्रलय) सहित जिन पाँच प्रमुख प्रकार के विषयों का प्रतिपादन किया गया है उनमें सर्ग अर्थात सृष्टि व उसकी रचना के सम्बन्ध में यह विवेचन आता है कि इस ब्रह्मण्ड का व्याप असीम है और मन की गति से अर्थात प्रकाश की गति से भी द्रुत गति से भ्रमण करने पर भी उसका कही अन्त दृष्टिगोचर नहीं होता है। पुराणों यथा देवी भागवत पुराण या रामायण में भी हमारे चारों ओर असीम या अनन्त आकाश गंगाओं के वर्णन मिलते हैं और निरंतर अनेक नयी–नयी आकाश गंगाओं की उत्वत्ति व विलोपन के भी वर्णन मिलते हैं। ब्रह्माण्ड में आकाश गंगाओं की उत्पत्ति व विलोपन का क्रम अबाध गति से चल रहा है। पुराणों के इस विवेचन का आज का आधुनिक खगोल विज्ञान अक्षरशः पुष्टि कर रहा है। आधुनिक अन्वेषणों के अनुसार भी ब्रह्माण्ड में हजारों अरब प्रकाश वर्ष पर्यन्त ग्रह नक्षत्र युक्त आकाश गंगाओं प्रसार है और इनका निर्माण व विलोपन अनवरत जारी है।

आज के आधुनिक खगोल शास्त्र व अनुसन्धानों के अनुसार भी पृथ्वी से 12000 अरब प्रकाश वर्ष की दूरी पर भी आकाश गंगायें है। इसके आगे भी हो तो अभी ज्ञात नहीं है। प्रकाश 1.76 लाख मील प्रति सैकण्ड की गति से बढ़ता है, तब भी वहाँ से प्रकाश के पृथ्वी पर पहुंचने में 12000 अरब वर्ष लग जाते हैं। ब्रह्मण्ड में अरबों आकाश गंगायें हैं और प्रत्येक आकाश गंगा में अरबों तारें हैं। हमारी आकाश गंगा, जिसके अन्दर हमारी पृथ्वी है उसका विस्तार लाख प्रकाश वर्ष है। दो आकाश गंगाओं के बीच औसत लाख प्रकाश वर्ष का अन्तराल है। हमारी पृथ्वी अपनी धुरी पर एक दिन मे एक बार 360 डिग्री गोल घूमने के अतिरिक्त 1,08,000 कि.मी. प्रति घण्टा की गति से सूर्य की परिक्रमा कर रही है व सूर्य 7.75 लाख कि.मी. प्रति घण्टा की गति से अपनी कक्षा में एक कृष्ण विवर (ब्लेक हॉल) की परिक्रमा कर रहा है। पृथ्वी की यह गति 2000 वर्ष पूर्व रचित आर्य भट्टीय में दी हुयी है। सूर्य भी 32 हजार योजन प्रति छटी (प्रति 24 मिनट) की गति से एक महासूर्य की परिक्रमा कर रहा है, ऐसा देवी भागवत आदि पुराणों में लिखा है। आधुनिक खगोल शास्त्रों के अनुसार सूर्य को 7.75 लाख कि.मी. प्रति घण्टा की गति से अपनी कक्षा में एक परिक्रमा पूरी करने में 2.1 करोड़ 60 लाख वर्ष लगाते हैं। तद्नुसार हमारी आकाश गंगा का व्याप या विस्तार कितना विशाल है। हमारी इस आकाश गंगा या इससे कई गुना बड़ी अरबों आकाश गंगायें इस ब्रह्मण्ड में विस्तीर्ण हैं। इस सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड का नियन्ता एक ही परमात्मा है। उसी परमात्मा का ही व्याप ईशावास्योपनिशद सहित सभी प्राचीन सनातन हिन्दू ग्रन्थों ने बतलाया है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के इस अनन्त विस्तार की इतनी सटीक व्याख्या अन्य किसी भी मत के ग्रन्थों में नहीं है।

हिन्दुत्व के प्राचीनतम ग्रन्थ वेद हैं। ये विश्व की भी प्राचीनतम पुस्तकें हैं। विश्व के सभी विद्वान एक मत से मानते हैं कि, वेदों की रचना 5000 वर्षों से पहले हो गयी थी। पाँच हजार वर्षों के भी पहले कितने वर्ष पूर्व हुई, इसकी सीमा तय नहीं की जा सकती है। हिन्दू मतानुसार वेद अनादि हैं। यूनेस्को ने भी ऋग्वेद को विश्व विरासत में रखा है। वेद कर्मकाण्डों के ही नहीं वरन आधुनिकतम ज्ञान, विज्ञान, राज्य शास्त्र, समाजशास्त्र अर्थशास्त्र व उच्च प्रौद्योगिकी के भी स्रोत हैं।

हिन्दू संस्कृति की अतीत में सार्वभौम व्याप्ति के कारण ही केवल भारतीय हिन्दू तिथियों की कालगणना ही सार्वभौम सन्दर्भ देने योग्य हैं। पृथ्वी के अयन चलन की एक परिक्रमा 25,765 वर्षों में पूरी होती है। उसे दृष्टिगत रख कर काल गणनार्थ समय–समय पर मासों का नामकरण भी बदला जाता रहा है। इस हेतु इस अवधि में मासों की पूर्णिमाओं की भिन्न नक्षत्रों में पूर्णता के अनुसार उनका नामकरण भी तद्नुरूप बदलता रहा है। इससे हिन्दुओं में अति प्राचीन काल से ही खगोल सापेक्ष सटीक काल गणना के प्रमाण मिलते हैं। इसका संक्षिप्त विवेचन अग्रानुसार है।

3.1 हिन्दू काल गणना की सार्वभौमिकता व खगोल शुद्धता

विश्व में प्रचलित सभी काल गणनाओं में भारतीय तिथियाँ ही सार्वभौम सन्दर्भ योग्य दिनक्रम प्रदान करती हैं। इन तिथियों का आरम्भ व समाप्ति काल पृथ्वी पर सभी स्थानों पर एक समान होने से उनका सन्दर्भ सार्वभौम होता है। दूसरी ओर आंग्ल तारीखें मध्य रात्रि से बदलती हैं जिसका (मध्य रात्रि का) समय स्थान विशेष पर अलग–अलग होता है व भिन्न–भिन्न स्थानों पर उसमें 24 घण्टे तक का अन्तर आ जाता है। उदाहरणतः भारत व अमरीका में मध्य रात्रि में साढ़े बारह घण्टे तक का अन्तर होने पर भी हिन्दू कालमान की तिथियों में परिवर्तन तो एक ही समय होता है। लेकिन, तारीख बदलने में सदैव 12 घण्टे 30 मिनट तक का अन्तर आ जाता है, और अन्तर्राष्ट्रीय तारीख रेखा के पूर्व एवं पश्चिम में तो तारीखों में सदैव ही एक दिन का अन्तर रहता है। भारतीय तिथियों की दृष्टि से यदि अभी ईस्वी सन् 2014 के हिन्दू नववर्ष के प्रथम दिन का ही विचार करें तो, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (एकम) का प्रवेश रविवार, मार्च 30 को भारत में मध्य रात्रि के बाद, मार्च 31 प्रारम्भ हो जाने के 14 मिनट (अर्थात रात्रि 12 बजकर 14 मिनट) पर होगा। इस समय पृथ्वी पर चाहे कहीं रात्रि हो या दिन, अथवा प्रातःकाल हो या सायंकाल, चैत्र शुल्क प्रतिपदा उसी समय, सभी स्थानों पर एक साथ प्रारम्भ होगी। इस क्रम में सोमवार, मार्च 31 को रात्रि में 10 बजकर 27 मिनट पर चाहे कही दिन हो या रात अथवा प्रभात हो या सायंकाल, प्रतिपदा समाप्त हो कर द्वितीया भी एक साथ ही प्रारम्भ होगी। इसी अनुरूप मंगलवार, अप्रैल 1, 2014 को रात्रि 9.11 बजे तृतीया प्रारम्भ हो जायेगी। सम्पूर्ण पृथ्वी पर हिन्दू कालमान की तिथियों का परिवर्तन समसामयिक (एक साथ व एक ही समय) होने से ये तिथियाँ अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ के लिये सर्वाधिक उपयुक्त हैं। यथा – यदि, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन भारत से भेजे किसी फेक्स या ईमेल में या अन्य भी किसी घटना के सन्दर्भ में भारतीय समयानुसार उस दिन, 31 मार्च 2014 को प्रातः 7 बजे का समय देना है तो भारत में रात्रि 12 बजकर 14 मिनट पर जब प्रतिपदा प्रारम्भ होती है उसके 6 घण्टे 44 मिनट बाद का समय होने से यदि, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के प्रवेशोपरान्त 6 घण्टे 44 का सन्दर्भ दे दिया जाये तो वह सर्वाभौम सन्दर्भ बन जायेगा, जिसका निर्वचन, व्याख्या या सन्दर्भ सर्वत्र समान रूप से व तत्काल बोधगम्य हो जायेगा। दूसरी ओर यदि आंग्ल तारीख को सन्दर्भित कर यह लिखा जाये कि मार्च 31, 2014 को भारतीय समयानुसार प्रातः 7 बजे, तो उस समय अमेरिका में 30 मार्च सायंकाल 6.30 बजे का समय होगा, इग्लैण्ड में 30 मार्च का मध्य रात्रि 1.30 का समय होगा, बेकर द्वीप पर 30 मार्च का मध्यान्ह 1.30 का समय व थाइलैण्ड में 31 मार्च का प्रातः 10.30 बजे का सन्दर्भ आयेगा। यह अत्यन्त उलझाने वाला होता है।

हिन्दू काल गणना की ये तिथियाँ, सूर्य व चन्द्रमा के बीच प्रति 12° कोणीय दूरी बढ़ने या घटने पर एक–एक कर बदलती हैं। पृथ्वी पर कहीं से भी चन्द्रमा व सूर्य के बीच की कोणीय या चापीय दूरी नापी जाये, वह सदैव एक समान ही दिखलायी देती है या नापने में आती है। अतएव, सम्पूर्ण भू–मण्डल पर प्रत्येक हिन्दू तिथि एक साथ या एक ही समय परिवर्तित होती है। दूसरी ओर चन्द्रोदय में भी स्थान भेद से एक दिन तक का अन्तर होने से अरब हिजरी तिथियों में भी विविध स्थानों की तिथियों व पर्वों या त्यौहारों में एक दिन तक का अन्तर आ जाता है। हिन्दू गणनाओं के अन्तर्गत सम्पूर्ण भू–मण्डल पर अमावस्या का आरम्भ व अन्त एक ही समय होता है, उसमें 1 मिनट का भी अन्तर स्थान भेदवश नहीं आता है। तिथियों में अमावस्या को सूर्य व चन्द्रमा एक ही रेखांश पर होते हैं। वहाँ से उनके (सूर्य व चन्द्र के) बीच कोणीय अन्तर 12° तक होने तक शुक्ल प्रतिपदा रहती है व 12° से 24° होने तक द्वितीया, 24° से 36° कोणीय दूरी होने तक तृतीया व इसी प्रकार 168°–180° के बीच पूर्णिमा व उसके बाद 1800–1920 तक कृष्ण प्रतिपदा। पृथ्वी से सूर्य व चन्द्र की दूरी इतनी अधिक है कि सूर्य व चन्द्रमा के बीच की कोणीय दूरी कही से भी नापने पर वह एक समान ही दिखायी देती है।

भारतीय काल गणना में मासों की रचना व नामकरण भी, वर्ष भर में आने वाली 12 पूर्णिमाओं के नक्षत्रों को दृष्टिगत रखकर पूर्ण वैज्ञानिकता के आधार पर किया गया है। यथा चित्रा नक्षत्र में पूर्णिमा वाले मास का नामकरण चैत्र, विशाखा में पूर्णिमा वाले मास का नाम वैशाख, ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्णिमा वाले मास का ज्येष्ठ, उत्तराषाढ़ा में पूर्णिमा वाले मास का आषाढ़, श्रवण नक्षत्र में पूर्णिमा आने पर श्रावण, अश्विनी में पूर्णिमा आने पर अश्विन और इसी प्रकार फाल्गुन पर्यन्त बारह मासों के नाम उन मासों की पूर्णिमा वाले दिन के नक्षत्र के अनुसार निर्धारित किये गये हैं। आठवें मासों में तो ज्यूलियस सीजर ने एक मास का नाम अपने नाम पर जुलाई कर दिया तो उसके भतीजे अगस्टस ने सम्राट बनने पर 'सेक्सटिनिल' नामक मास का नाम अपने नाम पर अगस्त कर लिया। जुलाई में 31 दिन होते थे तो उसने भी 'मैं किसी से कम नहीं' के भाव से अगस्त में भी 30 के स्थान पर 31 दिन करवा दिये। इसके लिये फरवरी में तब 29 दिन होते थे, वे घटा कर 28 करवा दिये। रोमन सम्राट क्लाडियस ने भी मई मास का नाम परिवर्तन करा कर अपने नाम पर क्लाडियस और नीरो ने अप्रैल मास का नाम अपने नाम पर नीरोनियस भी करवा लिया था। लेकिन, ये नाम अधिक दिन नहीं चल पाये और वापस अप्रैल व मई के नाम से ही सम्बोधित किये जाने लगे। हिन्दू मासों के नाम के प्रणेता ऋषियों ने इन सभी मासों के नाम खगोलीय संयोग के अनुरूप चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आशाढ़, श्रावण, भाद्रपद आदि भी इन मासों की पूर्णिमाओं के नक्षत्रों के अनुसार भी पिछले 1000 वर्षों में तब ही किये, जब इन महीनों की पूर्णिमाएँ इन नक्षत्रों में आने लगी थीं। वस्तुतः प्रति 25,765 वर्षों में अयन चलन की एक आवृत्ति पूरी होती है। अयन चलन वस्तुतः पृथ्वी के घूर्णन की धुरी में, अन्य ग्रहो के आकर्षण के कारण आने वाला लघु वृत्ताकार विचलन है, और इसी कारण प्रतिवर्ष बसन्त सम्पात कुछ विकलाओं में पीछे सरकता जाता हैं। अयन चलन के कारण ही निरयन ग्रह गणनाओं में मकर संक्रान्ति 22 दिसम्बर से 14 जनवरी तक आगे बढ़ गयी है, और उसके बाद 15,16, व 17 जनवरी इसी क्रम में और आगे बढ़ती जायेगी। पाश्चात्य खगोलज्ञ आरम्भ में अयन चलन से अनभिज्ञ थे। लेकिन, बाद में उन्होंने मान लिया है कि अयन चलन होता है व भारतीयों द्वारा प्रयुक्त अयन चलन का मान खगोल शुद्ध है। उस अयन चलन के कारण जब ये पूर्णिमायें चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा आदि मासों में आने लगी तब ही इस खगोलीय क्रम के अनुसार विद्वान ऋषियों ने खगोलीय घटना चक्र के अनुरूप मासों का चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ आदि नामकरण किया है। इससे पूर्व वैदिक काल में चैत्र, वैशाख आदि मासों के नाम मधु, माधव, शुक्र, नभ, नभस्य, इश, ऊर्जा, सह, सहस्य, तप, तपस्या आदि प्रचलित थे। इसीलिये प्राचीन यजुर्वेद वाजसानेयी संहिता और तैत्तिरीय संहिता आदि में मासों के यही नाम मधु माधव आदि मिलते हैं। यही कारण है कि रामचरित मानस में भी चैत्र मास में राम नवमी के दिन भगवान राम के जन्म के मास का नाम 'मधु' मास लिखा है यथा – ''नौमी तिथि मधुमास पुनीता, शुक्ल पच्छ अभिजित हरि प्रीता'' इस चौपाई में चैत्र मास के स्थान पर वैदिक कालीन व रामायण कालीन मास–नाम मधु मास लिखा है।

3.2 हिन्दू जीवन की प्रागैतिहासिक प्राचीनता

चूंकि श्री राम का जन्म त्रेता युग में हुआ था। भारतीय काल गणनानुसार वर्तमान में 4,32000 वर्षमान के कलियुग के 5115 वर्ष हुये हैं और उसके पूर्व 8,64,000 वर्षमान का द्वापर युग व्यतीत हुआ था, जिसके अन्त में और आज से 5240 वर्ष पूर्व श्री कृष्ण का जन्म हुआ था। द्वापर युग के पूर्व 12,96,000 वर्ष का त्रेता युग व्यतीत हुआ है, जिसके अन्तिम चरण में श्री राम का जन्म हुआ है। इस प्रकार त्रेता युग 8,69,115 वर्ष पूर्व समाप्त हो गया था। इसे लेकर आधुनिक इतिहासकार आक्षेप करते हैं कि, वर्तमान सृष्टि व सभ्यता ही इतनी प्राचीन नहीं है। महाभारत काल को वे ईसा से मात्र 1000 वर्ष प्राचीन व रामायण काल को वे ईसा से 1500 वर्ष प्राचीन ही ठहराते हैं, जबकि रामायण में वाल्मिकी जी ने 4 दाँत वाले हाथियों का वर्णन किया है। वैसे चार दाँत वाले हाथियों के 15–20 लाख वर्ष प्राचीन जीवाश्म व कंकाल आज बड़ी संख्या में उत्तरी अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, रूस, अफ्रीका व श्री लंका, पाकिस्तान आदि में आज मिल रहे हैं। पुरातात्विक उत्खननों के आधार पर आधुनिक पुरातत्वविद कहते हैं कि पृथ्वी पर ये 4 दाँत वाले हाथी 2.5 करोड़ वर्ष पहले से होते आये हैं और वे 10 लाख वर्ष पूर्व पूरी तरह से विलुप्त हो गये थे। यदि चार दाँत वाले हाथी 10 लाख वर्ष पूर्व विलुप्त हो गये, रामायण में उनका वर्णन आता है और हमारी काल गणनानुसार त्रेता युग, जिसमें श्री राम का जन्म हुआ था, उसकी अवधि 21,25,115 वर्षों से लेकर 8,69,115 वर्षों के बीच रही है, तो यह श्री राम, श्रीमद्वाल्मिकीय रामायण और त्रेता युग के काल–मान का सर्वाधिक सटीक प्रमाणीकरण है। चूंकि चार दाँत वाले हाथी 10 लाख वर्ष पूर्व ही विलुप्त हो गये थे। इसलिये महाभारत में कहीं भी 4 दाँत वाले हाथियों का सन्दर्भ ही नहीं है। लेकिन, जैसी हमारी मान्यता है कि द्वापर युग के अन्त में 5240 वर्ष पूर्व श्री कृष्ण का जन्म हुआ था, तदनुरूप श्री कृष्ण की द्वारिका के पुरातात्विक अवशेष आज समुद्र में 120 फीट नीचे जल में इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ ओशियनेग्राफी ने खोज लिये हैं। वे रेडियो कार्बन काल निर्धारण प्रक्रिया में 5000 वर्ष पुराने सिद्ध हुये हैं। उनमें प्राचीन द्वारिका की समुद्र से रक्षार्थ बनायी 30 फीट चौड़ी शहरकोट (नगररक्षा प्राचीर) के अवशेष और उस समय के भवनों, बर्तनों आदि के महत्त्वपूर्ण अवशेष मिले हैं, जो 5000 वर्ष पुराने सिद्ध हुये हैं। इसके अतिरिक्त वहाँ खम्भात में 7500 वर्ष प्राचीन बन्दरगाह के भी अवशेष मिले हैं, जिनमें जहाजों के लिये 150 से अधिक लंगर, बन्दरगाह की जेटी आदि प्रमुख हैं। पुरातात्विक अवशेषों की दृष्टि से अभी तमिलनाडु में कोडूमनाल में जिस 2500 वर्ष प्राचीन औद्योगिक नगर के पुरातात्विक अवशेष मिले हैं, वहाँ तो उच्च गुणवत्ता का लोहा व स्पात बनाने के उद्योगों, वस्त्रोद्योग व रत्न प्रविघेंयन आदि के महानुमाप उत्पादन के प्रचुर प्रमाण मिले हैं। वहाँ पर पश्चिम के रोम (इटली) व मिश्र के और पूर्व में थाइलैण्ड के सिक्के भी मिले हैं। अर्थात ढ़ाई से तीन हजार वर्ष पूर्व हमारा व्यापार वहाँ तक फैला हुआ था। वहाँ उत्तर भारत व दक्षिण भारत के नामों के संयुक्त लेख भी मिले हैं, वे आर्य–द्रविड़ विभाजन को निर्मूल सिद्ध करते हैं। आज जिन 'यूरो विट्रीफाइड टाइलों' का विकास हम 21

वीं सदी में यूरोप में हुआ मानते हैं, वैसे स्पात उत्पादन के 2500 वर्ष पुराने विट्रीफाइड क्रुसिबल (कड़ाह) भी कोडूमनाल में मिले हैं। इनके साथ ही वहाँ पद्मासन की अवस्था में मिले प्राचीन 2500 वर्ष पुराने नर कंकाल उस काल में योग के प्रचुर चलन का भी प्रमाण देते हैं। आज हमारे प्राचीन शास्त्र, वाल्मिकी रामायण में वर्णित 10 लाख वर्ष प्राचीन चार दाँत वाले हाथियों के वर्णनों से लेकर कोडूमनाल तक के औद्योगिक अवशेषों के अध्ययन साथ–साथ कोडूमनाल की तमिल ब्राह्मी लिपि से लेकर सिन्धुघाटी सभ्यता में मिली लिपि और दक्षिण अमेरिका में पेरू, चिली व बोलिविया के प्राचीन शिलालेखों की लिपि में यत्किंचित साम्यता के जो प्रारम्भिक अध्ययन हुये हैं उन्हें भी आगे बढ़ाने की आवश्यकता हैं। इनसें हम वैदिक, पौराणिक, रामायण कालीन, महाभारत कालीन और उसके परवर्ती कालीन इतिहास पर अधिक प्रकाश डाल सकेंगे। ढ़ाई हजार वर्ष पुराने कोडूमनाल की तमिल ब्राह्मी लिपि व सिन्धु घाटी की 5000 वर्ष पुरानी लिपि में सम्बन्ध तो, महाभारत काल से हमारी सभ्यता की निरन्तरता को भी प्रतिपादित करेगा।पुनः हिन्दू काल गणना की वैज्ञानिकता पर आते हुये यदि मासों पर विचार करें तो चन्द्र मासों के साथ–साथ हमारे प्राचीन ऋषियों ने राशियों के नाम पर सौर मासों यथा संक्रान्ति से संक्रान्ति पर्यन्त राशि, अंश, कला व विकला में सौर मास व मास के दिनक्रम के अन्तर्गत 24–24 मिनट की घटियों तक के समय तक का अंकन एक साथ करने की जो परम्परा विकसित की थी वह आज की आंग्ल दिनांक से भी अधिक व्यवस्थित व सूक्ष्म पद्धति रही है। यह अंकन आज भी पंचागों व जन्म पत्रिकाओं में महादशा व अन्तर्दशा के आरम्भ व समाप्ति काल को इंगित करने हेतु किया जाता है। पुनः इन सौर मासों से चन्द्र मासों का सन्तुलन करने के साथ–साथ करोड़ों वर्ष बाद भी चन्द्र मासों का ऋतु चक्र से कुसमायोजन या पृथक्करण नहीं हो जाये, इस हेतु संक्रान्ति रहित मास को 'अधिक–मास' की संज्ञा देकर प्रति तीन वर्ष में एक अधिक मास का प्रावधान कर दिया। इससे हमारे सभी पर्व व त्यौहार एवं वर्षों का प्रारम्भ करोड़ों वर्षों से सदैव उसी ऋतु में होता रहा है व आगे भी होता रहेगा। अरब हिजरी वर्ष मान भी 354 दिन का ही होने से प्रति तीन वर्ष में हिजरी नववर्ष व सभी त्यौहार लगभग, एक माह आगे बढ़ जाते हैं और 9 वर्ष में एक ऋतु से दूसरी ऋतु में चले जाते हैं। इस प्रकार 1393 सौर वर्षों में हिजरी वर्ष 1435 आ गया है। पृथ्वी जो सूर्य की परिक्रमा करती है, उसकी सटीक परिभ्रमण गति को भी पृथ्वी की दैनिन्दिन गति के रूप में आर्य भट्ट ने 2000 वर्ष पूर्व 'आर्य भट्टीय' में दे दिया था। अर्थात प्राचीन काल से ही भारतीयों को यह ज्ञान था कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है। पृथ्वी की गति के सम्बन्ध में ऐतरेय ब्राह्मण में भी लिखा है कि सूर्य न उदित होता है और न अस्त होता है। सूर्य पृथ्वी के एक भाग को आलोकित करता है, तब दूसरे में अन्धकार व जब दूसरे को आलोकित करता है, तब पहले में अन्धकार होता हैं। यही नहीं पुराणों में वर्णित प्रमुख पाँच विशयों सर्ग (सृष्टि) प्रति सर्ग (प्रलय) आदि में सर्ग या सृष्टि खण्ड में यह भी वर्णन आता है कि सूर्य भी एक महा सूर्य की परिक्रमा 32 हजार योजन प्रति–घटी की गति से कर रहा है। आधुनिक खगोलवेत्ताओं के अनुसार, सूर्य हमारी इस आकाश गंगा में एक अति शाक्तिशाली कृष्ण विवर (Super massive black hole) की लगभग 7.75 लाख किमी. प्रति घण्टा की गति से परिक्रमा कर रहा है और 21 करोड़ 60 लाख वर्ष में वह उसकी एक परिक्रमा पूरी करता है। इतनी अवधि में पृथ्वी पर 50 चतुर्युगियाँ व्यतीत हो जाती हैं। अर्थात हमारी धरती पर सतयुग से कलियुग पर्यन्त चारों युगों की ठीक 50 आवृत्तियाँ पूरी हो जाती हैं। चार युगों के पूरा होने की अवधि को ही एक 'चतुर्युगी' कहते हैं। हमारी पौराणिक काल गणनाओं के अनुसार 43.20 लाख वर्ष में एक चतुर्युगी पूरी होती है, जिसमें 4.32 लाख वर्ष का कलियुग, 8.64 लाख वर्ष का द्वापर, 12.96 लाख वर्ष का त्रेता और 17.28 लाख वर्ष का सतयुग होता हैं। इकहत्तर चतुर्युगियों का एक मन्वन्तर और 14 मन्वन्तर अर्थात 1000 चतुर्युगियों का ब्रह्मा जी का एक दिन, ऐसे 360 दिन का ब्रह्मा जी का एक वर्ष व 100 वर्ष की एक ब्रह्मा जी की आयु होती है। एक ब्रह्मा के बाद दूसरे ब्रह्मा जन्म लेते हैं व सृष्टिक्रम चलता रहता है। इस क्रम में हमारी आकाशगंगा की, इस सृष्टि के ब्रह्माजी के 51 वें वर्ष के श्वेतवाराह कल्प के वैवस्वत मन्वन्तर का 28 वाँ कलियुग चल रहा है। तदनुसार हमारी इस आकाशगंगा की वर्तमान सृष्टि का यह 195,58,85,115 वाँ वर्ष पूर्ण हो गया है। हमारे पुराणों के अनुसार हमारी इस सृष्टि से युक्त यह जो आकाश गंगा अर्थात तारा मण्डल हमें दिखायी देता है वैसे असंख्य तारा मण्डल या आकाश–गंगायें अनन्त ब्रह्माण्ड में विस्तीर्ण हैं। देवी भागवत में आद्या शाक्ति द्वारा त्रिदेवों को या रामायण में भगवान राम द्वारा काकभुशुण्डि को मन की गति से भ्रमण कराते हुये एक के बाद एक आकाश गंगाओं का कहीं अन्त नहीं होने के दिग्दर्शन का वर्णन किया गया है। इन वृत्तान्तों की अब वैज्ञानिक पुष्टि हो रही हैं कि ब्रह्माण्ड में 100 अरब से अधिक आकाशगंगायें हैं, एक आकाश गंगा का विस्तार लगभग 1,00,000 प्रकाश वर्ष है। दो आकाश गंगाओं के बीच औसत दूरी 2 लाख प्रकाश वर्ष हैं। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार ब्रह्माण्ड और भी अनन्त हो सकता है अभी 12,000 अरब प्रकाश वर्ष पर्यन्त आकाश गंगाओं के विस्तार के प्रमाण मिल चुके हैं। प्रकाश 1.76 लाख मील प्रति सेकण्ड की गति से एक वर्ष में 60 खरब मील तय करता हैं। ऐसे 60 खरब मील का एक प्रकाश वर्ष और ऐसे 12,000 अरब प्रकाश वर्ष पर्यन्त ब्रह्माण्ड के विस्तार के प्रमाण से अन्त रहित (नेतित्रऩ्इति) ब्रह्माण्ड में अनन्त आकाश गंगाओं का पौराणिक वर्णन हिन्दू काल गणनाओं एवं ब्रह्माण्ड या जगत के आदि व अन्त रहित होने के विवरणों की पूर्ण वैज्ञानिकता को सिद्ध करता है।

इस संबंध में नासदीय सूक्त में इस आदि–अन्त रहितता का अच्छा संकेत है।

नासदीय सूक्त, ऋग्वेद

ब्रह्माण्ड एक अनन्त असीम व उन्मुक्त रूप से खुला स्थान है, जिसकी कोई सीमायें ज्ञात नहीं हैं, और कहीं उसका कोई अंत नहीं है। इसकी लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई और गहराई अनंत है। ऐसा आधुनिक खगोल विज्ञान के अनुरूप विवरण नासदीय सूक्त जो कि सृष्टि की रचना के मंत्र के रूप में भी जाना जाता हैं, में भी दिया गया है।

नासदीय सूक्त ऋग्वेद के 10वें मंडल कर 129 वां सूक्त है। इसका सम्बन्ध ब्रह्माण्ड विज्ञान और ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के साथ माना जाने से और यह सूक्त ब्रह्माण्ड के निर्माण के बारे मे काफी सटीक तथ्य बतलाने वाला होने के कारण विश्व में भी यह प्रसिद्ध हुआ है।

नासदासीन्नो सदासात्तदानीं नासीद्रजो नोव्योमा परोयत्।

किमावरीवः कुहकस्य शर्मन्नंभः किमासीद् गहनंगभीरम् ॥1॥

अर्थ : उस समय अर्थात् पूर्व सृष्टि का प्रलय होने के बाद व नवीन सृष्टि की उत्पत्ति से पहले उस प्रलय की दशा में असत् अर्थात् अभावात्मक तत्त्व नहीं था। सत् अर्थात भाव तत्त्व वाला किसी प्रकार का अस्तित्व भी नहीं था, रजः = स्वर्गलोक, मृत्युलोक और पाताल लोक भी नहीं थे, अन्तरिक्ष नहीं था और

उससे परे जो कुछ है वह भी नहीं था। वह आवरण करने वाला तत्त्व कहाँ था और किसके संरक्षण में था। उस समय गहन=कठिनाई से प्रवेश करने योग्य गहरा क्या था, अर्थात् वे सब नहीं थे। इसका आशय है कि सृष्टि निर्माण व प्रलय के इस सतत चलने वाले क्रम में प्रलय की अवस्था अस्तित्व विहीनता वाली होती है। आधुनिक सृष्टि विज्ञान के अनुरूप ही यह विवेचन किया गया है।

न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रांया अह्न आसीत्प्रकेतः।

अनीद वातं स्वधया तदेकं तस्मादधान्यन्न पर किं च नास ॥2॥

अर्थ – उस प्रलय कालिक समय में मृत्यु नहीं थी और अमृत अर्थात् मृत्यु का अभाव भी नहीं था। रात्री और दिन का ज्ञान भी नहीं था। उस समय वह ब्रह्म तत्व ही केवल प्राण युक्त था जो क्रिया से शून्य और माया के साथ जुड़ा हुआ एक रूप में विद्यमान था, उस माया सहित ब्रह्म से भिन्न कुछ भी नहीं था और उस से परे भी कुछ नहीं था। अर्थात उस समय बस एक अनादि परम तत्व था जिसे प्रकृति या आद्या शक्ति कहा है, जिससे अनन्त आकाश गंगायें बनती व विलोपित होती रहती हैं।

तम आसीतमसा गूहळमग्रे प्रकेतं सलिलं सर्वाऽइदम्।
तुच्छयेनाभ्वपिहितं यदासीतप्रसस्तन्महिनाजायतैकम् ।।3।।

सृष्टि के उत्पन्न होने के पूर्व शुरू में सिर्फ अंधकार में लिपटा अंधकार और वो जल की भांति अनादि पदार्थ या जिसका कोई रूप नहीं था, अर्थात जो अपना आयतन न बदलते हुए अपना रूप बदल सकता है।

फिर उस अनादि पदार्थ में एक महान निरंतर तप से वो 'रचयिता' (परमात्मा/भगवान) प्रकट हुआ।

कामस्तदग्रे सामवर्ततााधि मनसो रेत प्रथम यदासीत्।
सतो बन्धुमसति निरविन्दन्हदि प्रतीष्या कवयो मनीषा ।।4।।

सबसे पहले रचयिता को कामना/विचार/भाव/इरादा आया सृष्टि की रचना का, जो कि सृष्टि उत्पति का पहला बीज था, इस तरह रचयिता ने विचार कर अस्तित्व और अनस्तित्व की खाई पाटने का काम किया।

तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासी३दुपरि स्विदासी३त्।

रेतोधा आसन्महिमान आसन्त्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात् ॥5॥

अर्थ : पूर्वोक्त मन्त्रों में नासदासीत् कामस्तदग्रे मनसारेतः में अविद्या, काम–सङ्कल्प और सृष्टि बीज–कारण को सूर्य–किरणों के समान उनमें बहुत व्यापकता विद्यमान थी। यह सबसे पहले तिरछा था या मध्य में या अन्त में? क्या वह तत्त्व नीचे विद्यमान था या ऊपर विद्यमान था? वह सर्वत्र समान भाव से भाव उत्पन्न था इस प्रकार इस उत्पन्न जगत् में कुछ पदार्थ बीज रूप कर्म को धारण करने वाले जीव रूप में थे और कुछ तत्त्व आकाशादि महान रूप में प्रकृति रूप थे। स्वधा=भोग्य पदार्थ निम्नस्तर के होते हैं और भोक्ता पदार्थ उत्कृष्टता से परिपूर्ण होते हैं।

को आद्धा वेद क इह प्र वोचत्कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः।

अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथा को वेद यत आबभूव ॥6॥

अर्थ : कौन इस बात को वास्तविक रूप से जानता है और कौन इस लोक में सृष्टि के उत्पन्न होने के विवरण को बता सकता है कि यह विविध प्रकार की सृष्टि किस उपादान कारण से और किस निमित्त कारण से सब ओर से उत्पन्न हुयी। देवता भी इस विविध प्रकार की सृष्टि उत्पन्न होने से बाद के हैं अतः ये देवगण भी अपने से पहले की बात के विषय में नहीं बता सकते। इसलिए कौन मनुष्य जानता है कि जिस कारण यह सारा संसार उत्पन्न हुआ।

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।

यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद ॥7॥

अर्थ : यह विविध प्रकार की सृष्टि जिस प्रकार के उपादान और निमित्त कारण से उत्पन्न हुयी इसका मुख्य कारण है ईश्वर के द्वारा इसे धारण करना। इसके अतिरिक्त अन्य कोई धारण नहीं कर सकता। इस सृष्टि का जो स्वामी ईश्वर है, अपने प्रकाश या आनंद स्वरुप में प्रतिष्ठित है। हे प्रिय श्रोताओं! वह आनंद स्वरुप सबका कारण रूप परमात्मा ही इस विषय को जानता है, उस के अतिरिक्त (इस सृष्टि उत्पत्ति तत्व को) कोई नहीं जानता है।

इससे ब्रह्माण्ड रचना के व उसकी आदि–अन्त रहित अनन्तता के बारे में बोध का पता चलता है।

हमारे पुराणों में दी गई काल गणना में दिये एक रूपक के अनुसार 43 लाख 20 हजार वर्षों की एक चतुर्युगी जैसे 1000 चतुर्युगियों के बितने पर ब्रह्मा जी का एक दिन पूर्ण होता है। ऐसे 360 दिन ब्रह्मा जी का एक वर्ष और ऐसे एक सौ वर्षों में एक ब्रह्मा जी का जीवन पूरा होता है। एक ब्रह्मा जी के उपरान्त दूसरे व दूसरे के बाद तीसरे ब्रह्मा जी यह क्रम अनादि काल से चल रहा है। पुराणों के अनुसार लोमेश ऋषि का जीवन अत्यन्त सुदीर्घ है। उनके पूरे शरीर पर सघन रोम या बाल हैं। एक ब्रह्मा जी के मरणोंपरान्त उनका एक बाल गिरता है और जब उनके सारे बाल गिर जायेंगे तब उनका अन्त होगा। उन्हें भी भगवान शंकर के वरदान से ऐसा सुदीर्घ जीवन प्राप्त हुआ है। अन्यथा पुराणों के अनुसार यह सृष्टि आदि – अन्त रहित है। आधुनिक खगोलविदो के अनुसार भी ऐसी स्थिति पृथ्वी से 12,000 अरब प्रकाश वर्ष पूर्व रही होगी। इसी प्रकार हिन्दू धर्म शास्त्रों में आज के खगोल ज्ञान का ठीक–ठीक सटीक वर्णन और सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड की सटीक व्याख्या हिन्दूत्व की सनातनता ईसाईयत व इस्लाम के जन्म के पूर्व की उसकी सार्वभौमिकता को प्रमाणित करती है।

हमारे अनेक तीर्थ भारत के बाहर, बांग्लादेश, पाकिस्तान, इण्डोनेशिया, कोरिया, थाइलैण्ड, मलेशिया, वियतनाम, तिब्बत, चीन व अन्य कई देशों में भी फैले हुये हैं।

भारत व हिन्दू संस्कृति के भारत और विश्व के अन्य भू–भागों में इतने विस्तृत क्षेत्र में, अति प्राचीन इतिहास वाले तीर्थ स्थान भी अन्य किसी पंथ के नहीं हैं। इण्डोनेशिया व बर्मा से भारत तक व पाकिस्तान सहित अफगानिस्तान, ईरान व इराक और आगे यूरोप व अमेरिका में भी मन्दिरों के पुरावशेषों के आधार पर यह धारणा भी गलत नहीं कही जा सकती है कि कभी सम्पूर्ण भू मण्डल पर हिन्दू प्राचीन संस्कृति व अनगिनत हिन्दू तीर्थ स्थान रहे हों। वर्ष 2012 में यूरोप में स्पेन में एक 2500 वर्ष प्राचीन मन्दिर भूमि में दबा मिला है इसके बारे में ऐसा अनुमान है कि इसे लगभग 1500 वर्ष पूर्व किन्ही अन्य मतावलम्बियों के आक्रमण के भय से स्थानीय उपासकों ने मिट्टी में दबा कर यहाँ से पलायन कर दिया होगा। यूरोप में तो सर्वत्र मित्र–सम्प्रदाय अर्थात् सूर्योपासक सम्प्रदायों का फैलाव था, जिसके पुरावशेष सम्पूर्ण यूरोप में फैले हैं। इण्डोनेशिया का प्रम्बनन मन्दिर संकुल विश्व के सबसे सुन्दर मन्दिरों में गिना जाता हैं। प्रम्बनन – जिसका मूल नाम परब्रह्म रहा है। विदेशों के ऐसे मन्दिरों का यहाँ किया गया संक्षिप्त विवेचन, भारत के बाहर भी अति प्राचीन काल में रही हिन्दू जीवन पद्धति को प्रमाणित करते हैं। वस्तुतः विदेशों में स्थित ऐसे स्थलों का प्रस्तुत पुस्तक में विवेचन कर देने से इस बात को विशेष बल मिलता है।

3.3 प्राचीन शास्त्रों में करोड़ों वर्षों के भौगोलिक परिवर्तनों का संकेत

सभी तिर्थों में पुष्कर को आदि तीर्थ या सृष्टि का आदि का माना गया है जो कि अरावली की पर्वत श्रृंखलाओं में स्थित है। आधुनिक भूगोलवेत्ताओं के अनुसार अरावली की पर्वत श्रृंखलायें विश्व की प्राचीनतम पर्वत श्रृंखलायें मानी जाती हैं। हिमालय की पर्वत श्रृंखलायें विश्व की नवीनतम श्रृंखलायें मानी जाती हैं। आधुनिक भूगोलवेत्ताओं के अनुसार 12 करोड़ वर्ष पूर्व अर्थात विगत मन्वन्तर में हिमालय के स्थान पर 'टेथिस' नाम का एक समुद्र था। आज की भांति सभी महाद्वीप अलग न होकर परस्पर जुड़े हुये थे। आधुनिक भूगोलवेत्ताओं के अनुसार गंगा नदी का उद्भव भी हिमालय पर्वत के उद्भव के बाद के काल में माना जाता ;ळंदहं पे ˙ च्वेज भ्पउंसंलंद तपअमतद्ध है। भारतीय पुराणों के अनुसार भी गंगा का उद्भव त्रेतायुग में माना जाता है। हरिद्वार आदि के मैदानी भागों का भी हिमालय के उद्भव एवं गंगा का अवतरण के बाद हुआ माना जाता है। इसलिये भारतीय पुराणों में भी हरिद्वार को नवीनतम तीर्थ बतलाया गया है, जबकि पुष्कर को आदि का प्राचीनतम तीर्थ बतलाया है।

इसी प्रकार पुराणों में द्वारिका का निर्माण श्रीकृष्ण द्वारा 5200 वर्ष पूर्व किया गया, बताया जाता है। आज गुजरात के तट पर समुद्र के गर्भ में, वर्तमान द्वारिका के पास उस कृष्ण कालीन द्वारिका के अवशेष भी मिल गये हैं। ये अवशेष रेडियोकार्बन डेटिंग व थर्मोन्युमिनिसेण्ट डेटिंग में 5000 वर्ष पूर्व के ही सिद्ध हुए हैं। पुराणों में कृष्ण का जन्म 5241 वर्ष पुरातन बतलाया जाता है। उसकी वैज्ञानिक पुष्टि द्वारिका के इन पुरावशेषों से होती है। आधुनिक इतिहासकार महाभारत काल को 2500–3000 वर्ष पुराना ही कहते आये हैं। वह अब अप्रामाणिक हो गया है। महाभारत काल अब वही सिद्ध हो रहा है जो कि पुराणों में है। इससे शेष कालावधियों की भी पुष्टि हो जाती है। इसी प्रकार पिछली अनेकों सहस्त्राब्दियों में घटित घटनाओं से सम्बन्धित सभी स्थान आज देश में व देश के बाहर भी विद्यमान हैं। इन सभी तीर्थ स्थानों की यात्रा भी विगत अनेक सहस्त्राब्दियों से हो रही है। इस प्रकार आध्यात्मिक पर्यटन की परम्परा भारत में लाखों वर्ष पुरातन सिद्ध होती है। बदरी वन अर्थात् बेर के वृक्षों से युक्त वह वन, जहाँ बद्रीनारायण धाम स्थित है का वर्णन रामायण में भी आया है। रामेश्वर धाम की स्थापना भी रामायणकालीन होने से 10 लाख वर्ष से अधिक प्राचीन है।

आधुनिक भूगोलवेत्ता भी सिन्धु व नर्मदा आदि नदियों को गंगा से प्राचीन सिद्ध करते हैं। पुराणों में भी ऐसा ही है और गंगा की उत्पत्ति परवर्ती काल की होने से ऋग्वेद में भी, इसीलिये गंगा के सन्दर्भ नहीं हैं। पूर्व मन्वन्तर में जब गंगा नदी नहीं थी, तब नर्मदा तट पर बड़े धार्मिक आयोजन होते थे। इसीलिये बलि द्वारा सम्पन्न यज्ञ को नर्मदा तट पर भृगु–कच्छ नामक स्थान पर हुआ बतलाया जाता है। भृगु–कच्छ का नाम ही अब अपभ्रंश हो कर भरूच हो गया है। इसी प्रकार केरल का प्रदेश भी भार्गव प्रदेश रहा है। इसे परशुराम जी द्वारा समुद्र के जल के नीचे उतरने से प्राप्त भूमि पर विकसित किये जाने के विवरण हैं। एतदर्थ केरल की मृदा रचना व धरातलीय रचना भी सागर तल से पुनर्प्राप्त भू भाग ;तमबसंपउमक तिवउ˙मं इमकद्ध जैसी ही है। इन सभी तीर्थ वृत्तान्तों से हिन्दू संस्कृति की समानता ही प्रमाणित होती है।

प्राचीन हिन्दू धर्म शास्त्र कोई कर्मकाण्डों व उपासना पंथों तक ही सीमित नहीं होकर उनमें सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान व इतिहास व्यवस्थित रूप में समाहित है। इनमें विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र आदि सभी विषयों का अत्यन्त उन्नत चिन्तन है। इनमें से विविध शासन प्रणालियों का संक्षिप्त उल्लेख पिछले अध्याय में व कुछ विवरण तीसरे व चौथे अध्याय में 'यशद' शब्द की व्युत्पत्ति, कोडूमनाल के पुरातात्विक विवेचनों एवं शतरित्र आदि के विवेचन में किया जा चुका है, तथापि यहाँ 4 उद्धरण और समीचीन होंगे।

वही पुनः ''पृथिव्याये समुद्र पर्यन्त एक राडतिति'' पृथ्वी से समुद्र पर्यन्त एक राष्ट्र की वैदिक उक्ति एवं ''वसुधैव कुटुम्बकम'' सभी पृथ्वी वासी एक कुटुम्ब की तरह है व ''विश्व भवत्येकनीड़म'' सम्पूर्ण विश्व एक नीड़ या घोंसले के प्राणियों की तरह व्यवहार करे जैसे पौराणिक व औपनिषदिक उक्तियों के अनुरूप जीव मात्र के लिये सुख व सौहार्द का मार्ग प्रशस्त करेगा। अस्तु! ऐसा ही हो, इस हेतु हम सभी सक्रिय होवें। इस प्रकार वेदों व अन्य प्राचीन शास्त्रों में एक सार्वभौम दृष्टि पायी जाती है।

3.4 वेदों व अन्य हिन्दू धर्मग्रन्थों में उन्नत ज्ञान–विज्ञान

(i) **यजुर्वेद में हृदय के अग्रभाग में विद्युत स्पन्दनों का उल्लेख** : यजुर्वेद के 39 वें अध्याय के आठवें मंत्र में हृदय के अग्रभाग में विद्युत अर्थात अशनि को धारित करने का उल्लेख, उस काल में अत्यन्त उन्नत व विज्ञान सम्मत जैव–कार्यकि का संकेत करता है। आज हृदय गति कम हो जाने पर 'पेस मेकर' के माध्यम से ही वहाँ विद्युत ऊर्जा को अभिवर्द्धित किया जाता है।

यथा : अग्नि ऽ हृदयेनाशनि ऽ हृदया ग्रेण पशुपतिंकृंस्न हृदयेन भवँय्यक्कना

(ii) **ऋग्वेद में प्रकाश की गति** : इसी प्रकार ऋग्वेद से उद्भूत मंत्र में प्रकाश की गति का उल्लेख एक निमेष (0.216 सेकण्ड) के आधे भाग (0.108 सेकण्ड) में 2202 योजन गमन करने वाला बतलाया है, जिससे प्रकाश की गति 1,76,300 मील प्रति सैकण्ड निकलती है।

यथा : योजनानां सहस्त्रे द्विद्विशते द्विच योजने।
एकेन निमिषार्द्धेण क्रममाण नमोऽस्तुते।।

(iii) **भू–चुम्बकत्व व उत्तर दिशा में सिर** : आज कुछ न्यूरोफिजिशियन्स द्वारा यह पता लगाया गया है कि भू–चुम्बकत्व (geo-magnetism) के प्रभाव के कारण नित्य उत्तर दिशा में सिर रख कर सोने से मस्तिष्क का कार्य प्रणाली पर प्रतिकूल प्रभाव होता है। ऐसा उन्होंने मस्तिष्क के ई.ई.जी अर्थात EEG (एनसिफेलो इलेक्ट्रा ग्राफ) के अंकनों के आधार पर निष्कर्ष निकाला है। आज के विज्ञान ने तो अब उत्तर दिशा में सिर रख कर सोने के परिणाम का पता लगाया है। हमारे पुराणों व वास्तु ग्रन्थों में चारों दिशाओं में सिर रखने के परिणामों का विवेचन करते हुये भूल कर भी उत्तर में सिर नहीं करने का निर्देश किया है।

यथाः प्राक्शिरः शयने विद्याद्दक्षिणे सुख सम्पदः। पश्चिमें प्रबला चिन्ताः हानिमृत्यो यथोत्तरे।। न कदाचित उदक्शिराः।

(iv) **योग की वैज्ञानिकता पर अनुसंधान** : विविध योग क्रियाओं यथा आसन, प्राणायाम, मुद्राओं, बन्ध आदि के शरीर व स्वास्थ्य पर होने वाले परिणामों पर भारत के बाहर विश्व के सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में अनुसंधान हो रहे हैं। देश में भी अनेक केन्द्रों पर अनुसंधान चल रहे है। इसी क्रम में नोबल पुरूस्कार विजेता एलिजाबेथ ब्लेक बर्न ने तो केवल 90 दिन तक, प्रतिदिन 12 मिनट गहरे श्वसन के अभ्यास में पाया कि इससे तनाव जन्य वृद्धावस्था के कारण टेलोमरेज का संकेन्द्रण 43 प्रतिशत कम हो गया।

(v) **प्राचीन ज्ञान की वैज्ञानिक पुष्टि** : इसी प्रकार आज योग पर आयुर्वेद षट दर्शन, ब्राह्मण ग्रंथ वेद, उपनिषद मंत्रों के ध्वनि स्पन्दनों पर चेतना से प्रकाश निर्माण के सम्बन्ध में हमारे मस्तिष्क पर होने वाले भू–चुम्बकत्व के प्रभावों आदि के हमारे प्राचीन शास्त्रों की वैज्ञानिकता के असंख्य प्रमाण सामने आ रहे हैं। इस प्रकार हिन्दू जीवन पद्धति विश्व की अनादि एवं उन्नत ज्ञान–विज्ञान आधारित पद्धति है। इस संबंध में पं. राम शर्मा आचार्य द्वारा लिखित ''आध्यात्म के वैज्ञानिक प्रतिपादन'' श्रेणी की पुस्तकें भी पठनीय हैं। हमारे प्राचीन खगोल व गणित के ग्रंथ भी पठनीय हैं, जिनसे अरबियों व यूनानियों ने गणित सीखा है और इस विषय पर अथाह सामग्री है।

(vi) **ऋग्वेद में आधुनिक व्यावसायिक प्रबन्ध के सूत्र** : ऋग्वेद में आज के कम्पनियों के पॉर्टफोलियों प्रबन्ध जैसे प्रबन्ध के कई श्लोक हैं, जिनमें विश्व में अनेक स्थानों पर ईष्ट साधन करने वाली पूंजी (इष्टका) से दैनिक दोनों समय धेनु को दुहने की भांति लाभार्जन आदि का विवेचन है यथाः

इमा मे ऽ अग्न इष्टका धेनवः सन्त्वेका च दशं च दशं च शतं च शतं च।
सहस्त्रैं च सहस्त्रैं चायुतं चायुतं च नियुतैं च नियुतैं च ।।2।।

इस श्लोक का अर्थ है कि पूर्व में सिर रखकर सोने से विद्याध्ययन में रूचि बढ़ती है। दक्षिण में सिर रखकर सोने से अधिक धनार्जन की ओर रुचि बढ़ती है। पश्चिम में सिर रखने से चिंता में वृद्धि होती है व उत्तर में सिर रखने से आयुक्षीर्ण होती है। भूलकर भी उत्तर में सिर नहीं रखना चाहिए।

अर्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तश्च परार्धश्च ।
एता में अग्न इष्टका धेनवः सन्त्वमुत्रामुष्मिँल्लोके ।।3।।

उपरोक्त श्लोक के अनुसार एक से अधिक स्थानों पर निवेशित पूंजी से संचालित व्यवसाय से उसी प्रकार अनवरत, नियमित लाभ होवे, जैसे गौ प्रतिदिन नियमित दोनों समय दूध देती है। वह लाभ उत्तरोत्तर बढ़कर दस गुना, सौ गुना ..... अरब, खरब, नील, पद्म व शंख गुना होवे। यह मंत्र उन्नत व्यवसाय का द्योतक होने के साथ – साथ हजारों वर्श पूर्व हमारे यहां दाशमिक प्रणाली के उपयोग की भी जानकारी कराता है। यहाँ पर, जिस प्रकार सतत व निर्बाध लाभ देने वाले पूंजी को धेनु कहा है, उसी प्रकार अमेरिकी बास्टन कन्सल्टेंसी ग्रुप पोर्टफोलियो प्रबन्ध में कम्पनियों का वर्गीकरण – केश, काऊ, स्टार, डॉग आदि नामों का प्रयोग करता है।

ऐसे हजारों उद्धरण हमारे वेदों व अन्य प्राचीन ग्रन्थों में हैं। इनमें जीव विज्ञान, गणित, खगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र आदि सबका ज्ञान है। वैदिक काल में अर्थव्यवस्था इतनी उन्नत थी कि तब केवल धन सम्पदा के विविध प्रकारों व उनके लिये आज से अधिक पर्याय थे। धन,सम्पदा व पूंजी के कुछ पर्याय यहाँ दिये जा रहे है। पण्डित वीरसेन वेदश्रमी द्वारा धन सम्बन्धी कुछ शब्दों की निम्न व्याख्या की गयी है :–

धेनु : व्यवसाय में लाभार्जन कराने वाला धन, द्रव्य एवं व्यवहार्य धन ये सब 'धेनु' संज्ञक है। इनसे अन्य प्रकार के द्रव्यों का क्रय–विक्रय होता है और उसको पुनः इसी कार्य में लगाकर द्रव्योपार्जन होता है। अतः जिस मूलभूत पूंजी से अर्जन होता है वह धेनु संज्ञक है। आज भी हम शेअर बाजार में तेजड़िया को बुल (ठनसस) कहते हैं।

इष्टका : व्यवसाय में निवेशित मूल पूंजी का नाम 'इष्टका' (Capital Employed) है। अपने व्यापारिक इष्ट साधन के लिए इसका प्रयोग होता है। जैसा कि– 'इमा मे अग्न धेनवः' (यजुर्वेट ।17 2) में दोनों शब्दों का प्रयोग हुआ है।

ब्रह्म : इष्टकाओं–मूलपूंजी से जब लाभ होना प्रारम्भ होता है तब वह धेनु हो जाती है। उस धेनु से बढ़ी हुई राशि 'बृहत्वाट्र ब्रह्म' संज्ञक है। जैसा कि– 'इन्द में ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमष्नुताम्।' (यजुर्वेद 32 । 16) में ब्रम्ह शब्द श्री से ही सम्बन्धित है। बढ़ी हुई राशि श्रीयुक्त, श्रीसम्पन्न होनी चाहिए।

वेद : निवेशित पूंजी पर अर्जित लाभांश ही 'वेद' संज्ञक है।

वृद्धि : यह लाभांश या वेद की राशि ही 'वृद्धि' है।

वित्त : ब्रह्म आज राशि में से जो भाग चुकाने के लिए है उसे वित्त कहते हैं। 'वित्यते त्यज्यते अनेनेति वित्तः।' अर्थात् जो भाग छोड़ा जाता है अर्थात दिया जाता है, वह 'वित्त' संज्ञक है।

बन्धु : ब्रह्म राशि में से लाभांश का जो भाग पुनः इष्टका रूप में मूल पूंजी बनाकर लगाया जाता है (Re-employed Profits) वह 'बन्धु' संज्ञक द्रव्य है।

द्युम्न : राधः संज्ञक धन–राशि से हम जिन स्वर्ण, हीरा, मोती आदि बहुमूल्य पदार्थो को खरीदते हैं, मकान आदि बनवाते हैं, भूसम्पत्ति आदि, बाग बगीचा बनाना या खरीदना, मकान में सजाने का कीमती सामान, किसी भी सम्पत्ति को खरीदते है वह 'द्युम्न' है। इसी को मघ, रायः, भागः रै, विभव, भूतिः, संभूति, श्री, लक्ष्मी व ऐश्वर्य नामों से सम्बोधित करते हैं।

वसुः : व्यक्ति द्वारा भू–सम्पत्ति एवं मकान आदि की जो निवास योग्य सम्पत्ति है, वह 'वसु' संज्ञक है।

भोग : यह वह राशि है जिससे हम सुखों की प्राप्ति करते है यही 'भोग' संज्ञक है।

श्रवः : जिस धन का दानादि में विनियोग हो या यज्ञादि कार्यो का जिस धन से विस्तार होता है वह 'श्रवः' संज्ञक है। इसी को यशः एवं राः भी कहते हैं।

गयः : जिस धन या सम्पत्ति को हम अपनी सन्तानों के लिए प्रजा के कल्याणार्थ या राज्य के विस्तार के लिए लगाते हैं वह 'गयः' संज्ञक है।

क्षत्र : जिस धन को हम अपनी रक्षा एवं आपातकालीन स्थिति के लिए लगाते है। वह 'क्षत्र' संज्ञक है जैसा कि – 'इदं में ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम्'– में ब्रह्म और क्षत्र विशिष्ट–विशिष्ट अर्थ राशि वाचक भी है।

मीढु : अकस्मात् प्राप्त धनराशि को (Contingent gains) 'मीढु' कहते है।

मेधा : बिना पूंजी के अपने बुद्धि–कौशल से अर्जित राशि 'मेधा' संज्ञक हैं। 'या मेधां देवगणाः' (यजुः 32 । 14) में मेधा शब्द धनवाची है। आजकल इसे बौद्धिक सम्पदा अधिकार जनित (IPR driven) आय कहते है।

श्वात्र : अनेक व्यापारों में लगा धन या जो धन अल्प समय के लिए दिया जावे वह 'श्वात्र' संज्ञक है।

वैध या लब्धव्य : जो धनराशि किसी से अपनी लेनी शेष है उसे 'वैध या लब्धव्य' कहते है।

रेक्ण : वैध या लब्धव्य राशियों में से जो संशयित राशि है अर्थात जिसकी प्राप्ति की आशा कम है वह 'रेक्ण' कहलाती है।

द्रविण : उपार्जित राशि में से जो लाभ राशि हमारे व्यक्तिगत कार्य के लिए है उसे 'द्रविण' कहेंगे। इसी राशि को स्वक् या स्वापतेय राशि भी कहते हैं।

राधः : इस स्वापतेय द्रविण में से जो भाग बच कर अपनी निधि को बढ़ाता है उसे 'राधः' कहते है।

रयि : क्रय करने से लेकर द्रविण तक के गतिशील धन की 'रयि' कहते है।

वरिवः : अपने व्यापारिक प्रभुत्व को स्थापित करने हके लिए जो राशि विज्ञापन, प्रसिद्धि आदि के लिए व्यय की जाती है वह 'वरियः' संज्ञक है।

वृत : जो राशि हम उधार रूप में किसी से प्राप्त करते हैं वह 'वृत' संज्ञक है। यही राशि ऋण संज्ञक है।

वृत्र : वह राशि जिसको हम किसी को देकर उसके व्यापार या स्वामित्व की सम्पत्ति पर अपना प्रभुत्व स्थापित करते हैं वह 'वृत्र' संज्ञक है। वस्तुतः चारों वेद, वेदांग, पुराणों व महाभारत में भी कुल मिला कर धन सम्पदा आदि के विविध रूपों के 400 से अधिक शब्द हैं। ऋग्वेद में सौ चप्पुओं वाले जलयानों (शतरित्र) से सामुद्रिक व्यापार के वर्णन प्राचीन काल में भारत में एक उन्नत अर्थव्यवस्था का संकेत करते हैं। इस प्रकार अनेक सहस्त्राब्दियों पूर्व हमारे यहाँ उन्नत आर्थिक व व्यावसायिक प्रबन्ध विकसित था।

(vii) वैदिक काल की उन्नत शासन व्यवस्था, लोकतंत्र व चुनाव आदि :

वैदिक काल में आज की भाँति चुनाव एवं चुने हुये राष्ट्राधिपति को पदमुक्त किये जाने के भी पर्याप्त सन्दर्भ हैं। भारत में चुनावों की परम्परा अति प्राचीन है। ऋग्वेद के मंत्र क्रमांक 10–173–1 के अनुसार वैदिक युग में भी देश में राष्ट्र के अधिपति के चुनाव होते रहे हैं। इसी मंत्र में इस चुने हुए राष्ट्राधिपति से शासन में स्थायित्व के साथ जनप्रिय बने रहने की अपेक्षा भी की गई है । **यथा – 'आत्वा हर्षिमंतरेधि ध्रुव स्तिष्ठा विचाचलिः विशरत्वा सर्वा वांछतु मात्वधं राष्ट्रमदि भ्रशत्।' ऋक 10–174–1।** भावार्थ – हे राष्ट्र के अधिपति! मैं तुझे चुन कर लाया हूं। तू सभा के अन्दर आ, स्थिरता रख, चंचल मत बन, घबरा मत, तुझे सब प्रजा चाहे। तेरे द्वारा राज्य पतित नहीं होवें। उक्त मंत्र से यह भी विदित होता है कि राष्ट्राधिपति को संसद जैसी किसी सभा में भी आना पडता था। शायद स्थानीय स्वशासन हेतु भी कोई (नगरों/ग्रामों या प्रांतो की) पंचायतें हुआ करती थीं। इनसे भी उस चुने हुए राष्ट्राधिपति का अनुमोदन आवश्यक था, ऐसा प्रतीत होता है और ये पंचायतें शायद राष्ट्राधिपति को हटाने में भी सक्षम थी। इसके अतिरिक्त राष्ट्राधिपति का चुनाव तो प्रत्यक्ष प्रणाली से होता रहा होगा। ऐसा अथर्ववेद में मंत्र क्रमांक 3–4–2 के इन शब्दों कि 'देश में बसने वाली प्रजाएं तुझे चुनें।' से प्रतीत होता है लेकिन ये ग्राम/नगर/प्रादेशिक पंचायतें शायद जनता से न चुनी जाकर विद्वत् परिषदों के रूप में होती रही होंगी। ऐसा इस मंत्र के शब्दार्थ से प्रतीत होता है। **यथा 'त्वां विशेष वृणता राज्याय त्वामिमाः प्रदिशः पंचदेवीः। वष्मन राष्ट्रस्य कुकदि श्रयस्व ततो व उग्रो विमजा वसूनि।' अथर्व । वेद 3–4–2।** भावार्थ – देश में बसने वाली प्रजाएं शासन के लिए तुझको राष्ट्रपति या प्रतिनिधि चुने। ये विद्वानों की बनी हुई उत्तम मार्गदर्शक, दिव्य पंचदेवी (पंचायते) तेरा वरण करें अर्थात् अनुमोदन करें। तत्पश्चात् तू उग्र तेजस्वी व प्रभावशाली दण्ड को न्याय बल के साथ सम्भाल और हमको जीवनोपयोगी धनों एवं अधिकारों का न्यायपूर्वक समान रूप से विभाजन कर।

राष्ट्र का नेतृत्व कैसा हो ? इसका भी निरूपण अथर्व वेद में किया गया है **यथा– 'स्वस्तिदा विशान्पति बृत्रहा बिमृधो वशी। वर्षेन्द्रः पुर एतु नः सोमपा अभयंकरः।' अथर्व । वेद 1–21–1: ।** इसका अर्थ है (प्रजा का या हमारा) कल्याण करने वाले हिंसा या आतंक का निरोध कर सके ऐसा बलवान सोमपा (अर्थात् ब्रह्मज्ञानी, ऐश्वर्ययुक्त, न्यायप्रिय, यज्ञकर्ता, क्षत्र तेज सम्पन्न व प्राण बल का पान करने वाला) शत्रुओं को नष्ट कर प्रजा को अभय प्रदान करने वाला हमारा नेता बने। यानि कि आज देश के विभिन्न भागों यथा–कश्मीर मे जैसा हिंसा का वातारण रहा है पूर्वोत्तर में जो आतंकवाद व अलगाववाद फैला है, अन्यत्र जो बम विस्फोट आदि से हत्याएं और जो अन्य प्रकार की अराजकता फैली है, उससे जनता को अभय दे सके, ऐसे नेतृत्व की कामना अथर्व वेद में की गई है। कश्मीर और पूर्वोत्तर आदि में जहां जनता आतंक से त्रस्त थी या भ्रष्टाचार के विभिन्न घोटालों में जो यू.पी.ए. के नेता फंसे हुए थे ऐसे नेताओं को निर्मूल करने की भी कामना के संकेत है। **यथा –'यौनः पूषन्नथो वृको दुःशेव आदि देशाति। अपस्मतं पथो जहि। ऋग्वेद । 1–42–2 ।** भावार्थ – हे पूशन! प्रभो, यदि पापी व दुखदायी हम पर शासन करें, तो उसे हमारे पथ से दूर कर कांटे की शांति उखाड कर फैक दे। इसी प्रकार ऋग्वेद के मंत्र 1–42–3 में परिपंथी, चोर व कुटिल जनों को दूर करने का आग्रह है। इससे यह स्पष्ट होता है आज से सहस्त्राब्दियों पूर्व भी हमारे देश में आज से भी उन्नत लोकतंत्र सुस्थापित था। ये सभी विवरण यही सिद्ध करते हैं कि भारत एक अनादि व प्राचीन हिन्दू राष्ट्र है, जहाँ अत्यन्त उन्नत जन जीवन व ज्ञान–विज्ञान का प्रसार रहा है। यह ज्ञान आज से भी अत्यन्त उन्नत व व्यवस्थित रहा है।

(viii) बुद्धिमत्ता पूर्ण प्ररचना सिद्धान्त (इण्टैलिजेण्ट डिजाइन थ्योरी) :

वैज्ञानिकों का एक बहुत बड़ा वर्ग आजकल मानता है और इन वैज्ञानिकों ने अनगिनत प्रमाणों के साथ यह प्रतिपादित करने का सफल व विश्वसनीय प्रयास किया है कि इस अति विशाल व व्यवस्थित रूप से संचालित ब्रह्माण्ड एवं प्रत्येक जीव प्रजाति की रचना बेतरतीब तत्वों के संयोजन से नहीं हो कर अत्यंत बुद्धिमत्तापूर्वक की गयी है। इन वैज्ञानिकों का प्रथम तर्क है कि ब्रह्माण्ड में अनवरत भ्रमणशील अरबों आकाश गंगायें, प्रत्येक आकाश गंगा में व्यवस्थित रूप से अपनी धुरी पर भ्रमणरत व अपनी–अपनी कक्षा में भ्रमणरत अरबों ग्रह नक्षत्र और उनके भी अपने–अपने सौर मण्डल या नक्षत्र मण्डल सुव्यवस्था के साथ संचालित हो रहे हैं। वह सभी बुद्धिमत्तापूर्ण की गयी योजना से ही संभव है। इसी प्रकार सभी जीव प्रजातियों के विकास में भी एक सप्रयोजन बुद्धिमततापूर्ण योजना ही अन्तर्निहित प्रतीत होती है। क्छ। से जीवन निर्माण का जो डिजीटल कोड है वह अनियोजित नहीं सप्रयोजन नियोजित सिद्ध होता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के क्रिया–कलापों में और सभी जीव प्रजातियों के जीवन चक्र में एक प्रकार की परिपूर्णता युक्त जटिलता सामने आती है। इन जटिलताओं के अत्यंत स्वल्प अंश को भी निकाल देने पर संपूर्ण तंत्र ढह जाता है। इसे 'Irreducible complexity' का सिद्धांत कहा जाता है। इसी प्रकार ब्रह्माण्ड व सभी जीव प्रजातियों में पाई जाने वाली सारी जटिलताएँ सौदेश्य या सप्रयोजनपूर्वक नियोजित हैं। इनमें सारी जटिलताएं निर्देशित हैं, संयोगजन्य नहीं। इस प्रकार की अलघुकरणीय जटिलताओं (जिन्हें कम नहीं किया जा सके ऐसी जटिलतायें) और सप्रयोजन या निर्देशित जटिलताओं के पीछे बुद्धिमत्तापूर्ण रचना का होना स्वाभाविक है। इस पूरे विषय पर अनेक ग्रंथ रचे गए हैं जो उद्विकास (evolation) के स्थान पर नियोजित सृजन के सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं। इसे इन दिनों 'Creationism in place of evolution' कहा जा रहा है। इस संबंध में यजुर्वेद में राष्ट्र की परिभाषा के अन्तर्गत भी यह स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि भारत में रहने वाला जन समाज संसार में व्याप्त और इसको चलाने वाले परमात्मा अथवा प्रकृति के अस्तित्व को स्वीकार करता है (देखें अध्याय 1)। पाठक इस विषय में लेखक के 'Intellegent designed theory' पर प्रकाशित लेखों का अध्ययन भी कर सकते हैं। हमारे पुराणों के प्रतिपाध्य 5 विषयों में से ''सर्ग'' अर्थात ''सृष्टि रचना'' के खण्ड में बुद्धिमततापूर्ण प्ररचना सिद्धांत (Intelligent Design Theory) में अत्यंत साम्य दिखलाई देता है।

3.5. अनगिनत पुरातात्विक प्रमाण

विगत 40–50 वर्षों में हुये अनेक पुरातात्विक अनुसंधान भी इस दृष्टि से पठनीय हैं। इस संबंध में निम्न 2 उद्धरण पठनीय हैं :

(i) 2500 वर्ष प्राचीन औद्योगिक नगर :

विगत 20 वर्षों में तमिलनाडु में कोडूमनाल स्थान पर उत्खनन में वहाँ एक प्राचीन 2800 वर्ष पुरानी औद्योगिक नगरी मिली है। वहाँ पर ऐसे टपजतपपिमक ब्तनबपइसमे मिले हैं, जिनका उपयोग इस्पात (Steel) बनाने में होता था। वहाँ अत्यन्त उन्नत व स्वल्प कार्बनयुक्त स्पात (Low Carbon Steel) का उत्पादन होता था। आज चाहे सब कहते हैं कि, विट्रीफाईड टाईल्स का आविष्कार अभी हाल ही में यूरोप में हुआ है। लेकिन, कोडूमनाल में 2800 साल पुराने विट्रीफाइड क्रुसिबल्स (Vitrified Crucibles) मिलने से भारत में विट्रीफिकेशन प्रक्रिया की प्राचीनता को सिद्ध करते हैं। उड़ीसा की भट्टियों में तैयार इस्पात (जंग न लगने वाला) 2000 वर्ष पूर्व भारत की स्टील उत्पादन प्रौद्योगिकी की कहानी कह रहा है। अशोक की लाट कहलाने वाला गरूड़ स्तम्भ–महरौली, दिल्ली में इसका प्रमाण है। कोडुमनाल में 2500 वर्ष पुरानी वस्त्र उद्योग, रत्न संवर्द्धन व स्पात उद्योग हमारे प्राचीन गौरव का प्रमाण हैं। कोडूमनाल में पुरानी सभ्यताओं यथा मिश्र (अरब देश), रोम (इटली) और थाईलैण्ड (दक्षिण–पूर्व एशिया) के सिक्के निकले हैं। ये सिद्ध करते हैं कि, भारत प्राचीन समय से ही समृद्ध एवं दूर देशों से विश्व–व्यापार में व प्रौद्योगिकी विकास में भी अग्रणी रहा है।

(ii) सोलहवीं सदी तक विश्व का सबसे सम्पन्न देश :

इस बात की पुष्टि हाल ही में यूरोप से प्रकाशित विश्व के सहस्त्राब्दीगत आर्थिक इतिहास ग्रन्थ (World Economic History - A Millennium Perspective) में भी कही गयी है। औद्योगिक देशों के संगठन OECD, जिसमें अमेरिका जापान व यूरोप आदि सदस्य हैं के आग्रह पर ब्रिटिश आर्थिक इतिहासकार 'एंगस मेडिसन' ने हाल ही में विश्व का 2000 वर्ष का इतिहास लिखा है। उसमें उसने लिखा है शून्य A.D से लेकर 1000 A.D तक भारत का सकल घरेलू उत्पाद अर्थात GDP विश्व में सर्वोच्च 33 प्रतिशत था, अर्थात पूरे विश्व का तृतीयांश उत्पादन भारत में ही होता था। यहाँ तक कि मुगलकालीन अत्याचारों, जजिया आदि के बाद भी 1700 A.D तक भी यह 24 प्रतिशत रहा है। लगभग 1200 वर्षों के विदेशी आक्रमणों, अंग्रेजों की लूट–खसौट व कुटिल नीतियों के बाद भी जब भारत स्वाधीन हुआ, उसके बाद भी यदि हम ठीक दिशा में चलते तो आज विश्व की शीर्ष अर्थव्यवस्था होते। वर्ष 1947–48 में भी

विश्व के सकल घरेलू उत्पाद में भारत की हिस्सेदारी 3.8 प्रतिशत थी। नेहरू–इन्दिरा युग के समाजवादी दुराग्रह–जनित नीतियों के परिणामस्वरूप 1991 में यह घट कर 3.2 प्रतिशत रह गयी। इसके बाद डा. मनमोहन सिंह ने अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष व विश्व बैंक के दबाव में, 1991 से जिस वाशिगंटन सहमति के दबाव में बाजारवादी नीतियों के अधीन आयात व विदेशी पूंजी निवेश को बढ़ावा देना प्रारम्भ किया, उसके कारण इन 23 वर्षों में अपनायी आयात व विदेशी निवेश उदारीकरण की नीतियों के कारण अब विश्व के सकल घरेलू उत्पाद ;छवउपदंस ळक्व्द्ध में, विनिमय दर के आधार पर (On the Basis of Rupee-Dollar Exchange Rate) हमारा योगदान और घटकर मात्र 2.5 प्रतिशत रह गया है।

3.6 स्वाधीनता के समय की समृद्धि

स्वाधीनता के समय 1947–48 में भी भारत की अर्थव्यवस्था की अन्तर्निहित सामर्थ्य, तुलनात्मक दृष्टि से अच्छी थी। तब 1947 में 1 डालर मात्र 3.5 रुपये तुल्य था। हमारी मुद्रा के अवमूल्यन के कारण ही आज रुपये का मूल्य प्रति डालर 62 रुपये तक गिर गया है। यह अवमूल्यन नहीं होता तो आज हमें 1947 की विनिमय दर पर 100 डालर के खनिज तेल (Crude Petroleum) के आयात पर 350 रुपये ही खर्च करने होते वहीं अवलमूल्यन के कारण आज 100 डालर के आयात पर 6200 रुपये व्यय करने पड़ते हैं। स्वाधीनता के समय 1947 में, विश्व व्यापार में भारत का अंश 2 प्रतिशत था, जो घटकर सन् 2000 में 0.6 प्रतिशत रह गया था। पिछले दिनों आर्थिक सुधारों के प्रारम्भिक दौर में 90 के दशक में हम जिस विश्व बैंक व मुद्रा कोष (IMF) की आर्थिक सहायता पर अवलंबित हुये हैं, उन्हीं दोनों संस्थाओं की स्थापना के समय से 1958 तक हम विश्व बैंक व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के पांच सबसे बडे अंशधारी (Quota Holders) में एक थे और 1963 तक हमारा एक–एक स्थायी निदेशक (Permanent Director) विश्व बैंक व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष दोनों के संचालक मण्डल में रहा है। यह भारत की अर्थव्यवस्था की तब की आन्तरिक सामर्थ्य का प्रभाव था। लेकिन, आज हमारी अर्थव्यवस्था अनेक संकटों व पराभव की शिकार हो रही है। आगामी अध्याय में उन्हीं की चर्चा की जा रही है। लेकिन, आज के सुधारों के पूर्व, स्वाधीनता के तत्काल बाद 40 वर्ष तक नेहरू–इन्दिरा गांधी युग के समाजवादी दुराग्रहों के कारण अर्थव्यवस्था की विकास की जो सहज गति बाधित हुयी थी उसका विवेचन यहाँ आगे किया जायगा।

3.7 समावेशी विकास की भारतीय अवधारणा व हमारी उज्जवल आर्थिक परम्परा

प्राचीन भारतीय वागंमय में विकास की अवधारणा मानव मात्र के योगक्षेम पर आधारित रही है, जो उपनिषदों के उद्घोष 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के अनुरूप प्रकृति के साथ समन्वयपूर्वक, मानव मात्र के सुस्थिर योगक्षेम पर केन्द्रित है। इसलिये कौटिल्य अर्थशास्त्र में चाणक्य ने आर्थिक लोकतंत्र के आधार पर मानव मात्र के योगक्षेम पर बल देते हुये लिखा है कि, मनुष्यों को आजीविका प्रदान कर उनके सुख–चैन की व्यवस्था करने का शास्त्र अर्थशास्त्र है। **यथा "मुनुष्याणां वृत्तिरर्थः। मनुष्यवती भूमिरित्यर्थः तस्य पृथिव्याये लाभ पालनोपाय शास्त्रमर्थशास्त्रमिति।** अर्थात सम्पूर्ण भूमण्डल पर आवासित मानव मात्र के लिये लाभपूर्ण आजीविका से उसके योगक्षेम को सुनिश्चित कर, सबके लिये स्थाई सुखचैन की व्यवस्था का शास्त्र ही अर्थशास्त्र है। इसी हेतु ऋग्वेद में परिवार की उत्पादकीय सम्पत्ति को 'पूंजी' कहते हुये इस बात पर सर्वाधिक बल दिया गया है कि परिवार की यह उत्पादकीय सम्पत्ति अर्थात पूंजी, जो उसके योगक्षेम का अवलम्बन है, कभी भी पृथक नहीं की जाये। अर्थात 'विकेन्द्रित उत्पादन' को आर्थिक रचना–योजना का आधार माना है। दूसरी ओर आधुनिक अर्थशास्त्र पूंजी की मानवीय सन्दर्भ से विरहित समष्टिगत परिभाषा देता है– 'Produced means of Production is Capital' और आज तो देश का विकास विदेशी पूंजी निवेश–केन्द्रित ही बना दिया गया है। रोजगार व मानव का योगक्षेम लगभग गौण ही है। इसलिये, आज हम रोजगार विहीन आर्थिक वृद्धि (श्रवइसमे ळतवूजी) के दौर में चले गये हैं। हमारे आर्थिक चिन्तन की सर्व समावेशी विकास की अवधारणा व विकेन्द्रित उत्पादन व नियोजन का सिद्धान्त इस पर बल देता रहा है कि प्रत्येक व्यक्ति व परिवार का योगक्षेम ही विकास व आर्थिक वृद्धि का आधार होना चाहिये। योगक्षेम शब्द में 'योग' से आशय है 'अप्राप्त की प्राप्ति' (अर्थात् जो अबतक प्राप्त नहीं हुआ है उसकी प्राप्ति) एवं 'क्षेम' का अर्थ है, 'जो प्राप्त हो गया, उसकी सुरक्षा'। यहाँ पर योगक्षेम से आशय भी सम्पूर्ण समाज के न्यायोचित योगक्षेम से है और किसी व्यक्ति के असीमित व अमर्यादित लाभार्जन व पर्यावरण विनाश की कीमत पर असीम उपभोग को योगक्षेम नहीं कहा जा सकता है। भारत के लिए वैभव का मार्ग स्वदेशी, तकनीकी व आर्थिक स्वावलम्बन और विकेन्द्रित नियोजन व उत्पादन का मार्ग है। इसका आगामी अध्याय 5 में विवेचन किया जा रहा है।

अध्याय – 4

अतीत की ऐतिहासिक गलतियाँ

आठवीं सदी में मुस्लिम आक्रान्ताओं के जेहादी आक्रमणों के काल से स्वाधीनता के बाद तक भी देश के शासकों की गलतियों का नुकसान देश ने सहा है। इसका संक्षिप्त विवेचन यहाँ किया जा रहा है।

4.1 मध्ययुगीन चुकें – एकता का अभाव

मध्ययुगीन विदेशी आक्रमणों के दौर में, आठवीं सदी में मोहम्मद बिन कासिम के सिन्ध पर आक्रमण से लेकर अंग्रेंजों के आगमन तक देश में विविध राज्यों अर्थात् राजाओं के बीच एकता के आभाव में देश–विदेशी आक्रांताओं द्वारा शोषित किया जाता रहा है। इसी कारण देश में इन वर्षों में आर्थिक पराभव, सामाजिक अलगाव एवं सांस्कृतिक क्षरण हुआ है। मोहम्मद बिन कासिम द्वारा सिन्ध पर आक्रमण के समय शेष भारत में राजा दाहरसेन का सहयोग करने के लिये कोई आगे नहीं आया। इसी प्रकार महमूद गजनवी और मुहम्मद गौरी के विरूद्ध भी हिन्दू राजाओं ने एकजुट होकर विरोध नहीं किया। अलाउद्दीन खिलजी ने भी एक–एक कर हिन्दू राज्यों पर जिहादी आक्रमण कर यहाँ की प्रजा का पांथिक आधार पर भयावह दमन किया है। लेकिन, राज्यों के आपसी असहयोग, स्पर्धा व फूट के कारण एवं हिन्दुत्व की सामूहिकता के भाव के अभाव में एक–एक कर सभी राजा पराजय की प्रतीक्षा करते प्रतीत हुए। खिलजी के समय दो या तीन राजा या राज्य भी एकजुट हो जाते तो खिलजी को सिन्धु पार खदेड़ा जा सकता था। वह मेवाड़, मारवाड़, रणथम्भोर, जालौर, बिहार के पाल वंश, बंगाल के सेन वंश, वारांगल में काकतिया राज्य, दक्षिण में इसी प्रकार चोल वंश, पाण्ड्य वंश, आदि के राज्यों को परास्त करता चला गया। मुगलकाल में तो हिन्दू राजाओं का उपयोग करके ही अकबर से औरंगजेब पर्यन्त मुगलशासकों ने भारतीय राजाओं व उनकी प्रजा का दमन किया। अंग्रेजी राज्य की नींव रखने के लिये क्लाइव द्वारा भी बंगाल पर आक्रमण के समय उसकी सेना में 600 अंग्रेज व 2700 भारतीय सैनिक थे, दूसरी ओर नवाब सराजुद्दौला की सेना में 50 से 60 हजार सैनिक होते हुए भी उसका सेनापति मीरज़ाफर बिना लड़े ही क्लाइव से मिल गया। इस प्रकार 1757 ई. में प्लासी के युद्ध में क्लाइव की जीत के बाद 1947 तक अंग्रेजों ने भारत पर शासन किया।

4.2 स्वाधीनता के उपरान्त की हमारी चूकें

स्वाधीनता के बाद समाजवाद के नाम से देश में आर्थिक वृद्धि पर अनेक अंकुश लगाये रखने के बाद 1991 में किये आयात उदारीकरण व विदेशी निवेश प्रोत्साहन का देश की अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ा है –

(i) **समाजवादी दुराग्रह –**

स्वाधीनता के तत्काल बाद, तत्कालीन साम्यवादी सोवियत संघ के दबाव में हमारे प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू एवं तदुपरान्त प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी द्वारा अपनायी समाजवादी नीतियों के कारण देश के विकास की सहज गति ही अवरूद्ध हो गयी थी। विकास को बाधित करने वाली इन समाजवादी नीतियों के कारण 1947 से 1991 तक देश की अर्थव्यवस्था इतनी जर्जर हो गयी कि 1991 में देश का सोना गिरवी रखकर, ऋण लेना पड़ा तथा उसके बाद 1991 में ही अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण लेने के बदले उनकी शर्तों पर देश में सारे आयात खोलकर, विदेशी निवेश को बढ़ावा देने को बाध्य होना पड़ा। विगत 22 वर्षों में किये आयात उदारीकरण से आज देश के उत्पादक उद्योग जर्जर हो कर बन्द होते जा रहे हैं या विदेशी कम्पनियों द्वारा अधिग्रहीत किये जा रहे हैं व देश आज आयातित विदेशी वस्तुओं के बाजार मात्र में बदल गया है। इसी प्रकार विदेशी पूंजी के निवेश को बढ़ावा देते चले जाने से देश के उत्पादन तंत्र के 2/3 पर विदेशी कम्पनियों का अधिकार हो गया है।

विकास में बाधक समाजवादी प्रतिबन्ध : इनमें से सर्वप्रथम यदि, जवाहर लाल नेहरू व इन्दिरा गाँधी के काल की समाजवादी नीतियों पर दृष्टिपात करें तो पूर्व सोवियत संघ के दबाव एवं प्रभाव में वर्ष 1948 से ही आरोपित विकासरोधी एवं प्रतिबन्धकारी नीतियों के कारण देश की अर्थव्यवस्था 1991 तक आते–आते जर्जर होती चली गयी। उदाहरण के लिए 1948 व 1956 के औद्योगिक नीति प्रस्तावों के माध्यम से सरकार ने 40 प्रमुख उद्योगों को न्यूनाधिक रूप में सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित कर लिए। शेष उद्योगों की स्थापना पर भी औद्योगिक (विकास व नियमन) अधिनियम 1951 जैसे अनगिनत प्रतिबन्धात्मक कानूनों व प्रावधानों के माध्यम से निजी क्षेत्र में उद्योग स्थापना पर कई प्रतिबन्ध एवं कोटा व लाईसेंस की बड़ी बाध्यताएँ लगा दी गयीं। बिड़ला की दो पीढ़ियां निकल गई पर एक स्टील प्लांट का लाईसैंस नहीं मिला व टाटा की दो पीढ़ियाँ निकल गयी पर कार उत्पादन का लाईसैंस उन्हें नहीं मिला। विडम्बना यह रही कि देश को 1947 से 1981 के बीच 30,000 करोड का लोहा व स्पात आयात करना पड़ा, जबकि उसके लिए कच्चा माल (प्तवद वतमद्ध भारत से निर्यात होता था। यद्यपि विश्व का पाँचवाँ बड़ा लोह अयस्क ;प्तवद वतमद्ध उत्पादक भारत है। फिर भी हम कच्चा खनिज व अन्य देशों को निर्यात करते और उन देशों से लोहा व स्पात आयात करते थे। इस लोहा व स्पात के उत्पादन से रोजगार सृजन, उत्पादन शुल्क की आय एवं प्रौद्योगिकी समुन्नयन सभी कुछ उन देशों में होता था। हमें तो इसके लिये भारी मात्रा में विदेशी मुद्रा चुकानी पड़ती थी। यदि देश में हमने समाजवाद के नाम पर निजी क्षेत्र के केवल एक स्पात (Steel) उत्पादन पर ही रोक नहीं लगायी होती तो 1981 तक जो 30,000 करोड़ रूपये के लोहे व स्पात के आयात से देश बाहर गयी, इतनी बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा बचती इससे तब जो देश पर 18,000 करोड़ रूपयों का विदेशी कर्ज चढ़ गया था, उसके स्थान पर हमारे पास 12,000 करोड़ रूपये की विदेशी मुद्रा का अतिरेक (Surplus) होता। इस प्रकार प्रतिबंधकारी समाजवादी नीतियों के कारण ही देश में चीनी से लेकर सीमेण्ट कार, ट्रैक्टर, स्कूटर, लोह उत्पाद तक हर चीज का अभाव बना रहा। समाजवादी नीतियों के नाम पर सरकार नये कारखाने के लाईसेंस या तो देती ही नहीं थी अथवा देती भी तो इतनी कम क्षमता का कि वे उद्योग अनार्थिक हो जाते और देश में सब वस्तुओं के अभाव बना रहता, उद्यमी को भी लाभ नहीं हो पाता, प्रौद्योगिकी विकास रूका रहा और सब वस्तुओं में कालाबाजारी होती थी। देश में किसी वस्तु की जितनी आवश्यकता थी उतने उत्पादन के लाइसेन्स भी नहीं दिये जाने से उनका निर्यात तो दूर देश के उद्योगों को घरेलू मांग जितनी मात्रा में भी वस्तुओं के उत्पादन में स्वतंत्रता नहीं थी। इसलिये अनुसन्धान व विकास पर भी उद्योगों का व्यय नगण्य रहा और वे स्पर्द्धा क्षमता विहीन ही रहे। जिस उद्यम को जितनी क्षमता का लाइसैंस

दिया जाता, उससे अधिक उत्पादन करने पर जुर्माना लगता था। इस प्रकार देश में अधिकांश वस्तुओं में अभावग्रस्त हो गया। उत्पादन करने की च्तपअंजमै मबजवत को छूट न होने से देश आयातों पर अवलंबित होता चला गया।

अति प्रगतिशील करारोपण से पूंजी निर्माण में बाधा व विदेशी ऋणजाल : समाजवाद के नाम पर सारे ही कानून अव्यावहारिक बना दिये गए थे। मध्य 1970 के दशक में देश में आय कर की अधिकतम दर (Highest Rate of Income Tax) 97.3 प्रतिशत तक भी टैक्स चुकाना होता था। इससे कर चोरी (Tax Evasion) की प्रवृत्ति बढ़ी। कालाधन विकसित हुआ। स्विस बैंकों में धन छिपाने की वृत्ति शुरु हुई। एक ईमानदारों के देश को कर चोरों व काला बाजारियों में बदलने वाली नीतियां लागू की जाती रहीं समाजवादी नीतियां। इतनी ऊंची कर दरों (Tax Rates) के कारण सम्पन्न वर्ग की अधिकांश आय कर चुकाने में चली जाती और वे कर बचाने के लिये, उस आय को घोषित नहीं करते तो वह काले धन में बदल जाती। दोनों ही दशाओं में देश में पूंजी निर्माण रूक गया। निवेश के लिये पूंजी नहीं होने से विकास तो अवरूद्ध होना ही था। इसलिये देश का धन काले धन में बदलता चला गया और देश धन होते हुये भी निवेश आदि के लिये विदेशी ऋणों के जाल में फँसता चला गया। दूसरी ओर पूंजी निर्गमन नियन्त्रक कानून से लेकर एकाधिकार व प्रतिबन्धात्मक व्यापार व्यवहार अधिनियम जैसे ऐसे अनेक प्रतिबन्धात्मक कानून थे। जो देश का विकास रोकने में अडिग समाजवादी दीवार बने रहे। तथापि 1977 में मोरारजी देसाई के नेतृत्व में बनी सरकार ने अर्थ व्यवस्था को सुचारू करने के प्रयास में तब एक बार तो देश को अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के ऋणों से तब मुक्त कर लिया था। लेकिन, तीन वर्ष में ही वापस श्रीमती गाँधी ने पुनः प्रधानमंत्री बनते ही मुद्रा कोष से अनेक अपमान जनक शर्तों पर कर्ज ले लिया।

(ii) उदारीकरण के नाम पर आयात व विदेशी पूंजी को प्रोत्साहन के दुष्परिणाम

स्व. राजीव गांधी के समय में व यूरोपियन बैंकों से परिवर्तनशील ब्याज दरों (Floating Interest Rate) पर लिये अल्पावधि ऋणों (Short Term Loans) के कारण 1991 के आते–आते देश का आर्थिक संकट गहरा गया। विदेश व्यापार घट कर 7 अरब डालर तक जा पहुँचा। तत्कालीन स्व. चन्द्रशेखर – सरकार को देश का 2600 टन सोना गिरवी रखना पड़ा और उसके अतिरिक्त, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष को 7.2 अरब डालर के एक और ऋण का आवेदन करना पड़ा। 21 जून, 1991 को नरसिंह राव प्रधानमंत्री बने। 24 जून को उनकी सरकार ने उसी 7.2 बिलियन डालर के ऋण आवेदन जो चन्द्रशेखर सरकार ने किया था उस पर ऋण स्वीकृत करवाने के लिये तत्कालीन वित्त मंत्री डा॰ मनमोहन सिंह ने बातचीत शुरु की। तब अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष व विश्व बैंक दोनों ने कहा कि भारत के सम्बन्ध में पहले से ही 2 रिपोर्टें तैयार कर रखी हैं। एक तो India : A Strategy for Trade Reforms तथा दूसरी India: An Industrializing Economy in Transition. इसलिए उन्होंने कहा कि आप इन्हें लागू करना आरम्भ करें तब ऋण दिया जा सकेगा। मुद्रा कोष के प्रतिवेदन – India : A Strategy for Trade Reforms के अनुसार तब हमसे कहा गया कि अपने रुपये का कम से कम 21 प्रतिशत अवमूल्यन करिए। तब 1 जुलाई, 1991 को हमने रुपये का 11 प्रतिशत अवमूल्यन किया जिस पर मुद्रा कोष के असन्तोष व्यक्त करने पर पुनः 3 जुलाई को हमें दुबारा अवमूल्यन कर 21 प्रतिशत अवमूल्य की शर्त को पूरा करना पड़ा। उसके बाद 5 जुलाई को नयी आयात नीति घोषित की, जिसमें देश आयात खोले और 24 जुलाई, 1991 को नयी औद्योगिक नीति (Industrial Policy) घोषित कर विदेशी निवेश प्रोत्साहन की नीति प्रारम्भ की गयी। प्रारम्भ में 34 प्रमुख उद्योगों में 51 प्रतिशत तक प्रत्यक्ष (FDI) विदेशी निवश को स्वतः अनुमोदन (Automatic Approval) की छूट दी गई। उसके बाद धीरे–धीरे उत्तरवर्त्ती सरकारों ने कुछ 3–4 उद्योगों को छोड़ कर सभी उद्योगों में शत प्रतिशत विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (100 प्रतिशत FDI) को स्वतः अनुमोदन की छूट दे दी गयी। परिणामतः देश में जूते की पॉलिश, शीतल पेय व मंजन (टूथ पेस्ट) से लेकर स्कूटर, मोटर साइकिल, कार, टी.वी., फ्रिज, सीमेण्ट और दूर संचार (टेलीकॉम) पर्यन्त सभी उत्पादक उद्योग विदेशी कम्पनियों के स्वामित्व व नियन्त्रण में चले जा रहे है। आयात उदारीकरण से देश का विदेश व्यापार घाटा जो 1991–92 में 2.6 अरब डालर ही था, वह अब बढ़कर 118 अरब डालर तक पहुँच गया और देश के उत्पादक उद्योग बन्द होते चले जाने से आज देश विदेशी वस्तुओं जिनमें अब प्रमुखतः चीनी वस्तुओं के बाजार में बदल गया है। आयात शुल्क व उत्पाद शुल्क घटाते जाने से सरकार के राजस्व के स्रोत सूखते चले गये। इसलिये आज सरकार शिक्षा, चिकित्सा, सड़क निर्माण सभी का निजीकरण या पब्लिक प्राईवेट पार्टनरशिप में देने को बाध्य हो रही है और कृषि, लोक कल्याण व रक्षा जैसे क्षेत्रों के लिये भी समुचित वित्तीय प्रावधान नहीं कर पा रही है। रक्षा व्यय में तो आज हम 1963 के पहले के स्तर पर अर्थात् सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का 2 प्रतिशत ही व्यय कर पा रहे हैं।

यहाँ पर यह भी उल्लेखनीय है कि शुरु में तो नये उद्यमों में ही विदेशी प्रत्यक्ष निवेश छूट दी थी, इसलिये तब नया उद्यम लगाकर ही विदेशी निवेश करना सम्भव होता था। बाद में 'ब्राउन फील्ड' विदेशी निवेश खोल दिया, इससे विदेशी निवेशकों को किसी के भी चलते हुये भारतीय उद्यम को अधिगृहीत करने की भी छूट मिल गयी। इन विदेशी निवेश प्रोत्साहन की नयी नीतियों से एक नये प्रकार का आर्थिक संकट शुरु हो गया। देश के अर्थ तंत्र पर विदेशी स्वामित्व व नियन्त्रण होना प्रारम्भ हो गया। उदाहरण के लिये सन् 2000 से पहले सारे सीमेन्ट के कारखाने भारतीयों के स्वामित्व में थे। अब जब उदारीकरण के दौर में टाटा के ज्पेबव के सीमेन्ट के कारखाने फ्रांस की कम्पनी लार्फाज़ ने ले लिये। 'गुजरात अबुंजा' और 'एसीसी' को हाल ही में स्विटजरलैंड की होलसीम कंपनी ने ले लिया। इस प्रकार से कुल मिलाकर सीमेन्ट उद्योग का 65–70 प्रतिशत हिस्सा छः बड़ी यूरोपीय कम्पनियों के स्वामित्व व नियन्त्रण में चला गया है। इस प्रकार हम देखते है कि मंजन (Tooth-paste) से लेकर जूते की पॉलीश और शीतल पेय से लेकर टी.वी., फ्रीज, मोटरसाईकिल, कारें और उसके बाद टेलिकम्यूनिकेशन व पावर जनरेशन प्लान्ट निर्माण तक में विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का वर्चस्व बढ़ता चला गया है। प्रश्न यह उठता है कि देश के उत्पादन के साधनों पर किसका स्वामित्व व नियन्त्रण रहेगा, भारतीयों का या विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का?

आर्थिक सुधार लागू किए, उस समय हमारे यहां रुपये डालर की विनिमय दर 19 रुपये से आज 66 रुपये तक पहुंच गया।

विगत 25 वर्षों में आर्थिक सुधारों के अन्तर्गत आयातों में उदारीकरण से आज देश जहाँ आयातित वस्तुओं के बाजार में बदल गया है, वहीं विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) को प्रोत्साहन देते चले जाने से देश के संगठित क्षेत्र के उत्पादन तंत्र के दो तिहाई पर विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का स्वामित्व व नियन्त्रण होता चला गया है। तालिका 1–3 से स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार देश के प्रमुख उद्योगों में विदेशी कम्पनियों का वर्चस्व बढ़ा है। इसी प्रकार देश के वित्तीय बाजार भी आज विदेशी संस्थागत निवेशकों (FIIs) के ही नियन्त्रण में जाते चले जा रहे हैं। बोम्बे स्टाक एक्सचेंज पर सूचीबद्ध

शीर्ष 500 स्वतंत्र (BSE 500) कम्पनियों में उनके प्रवर्तकों के अंशों को छोड़ कर स्वतंत्र क्रय–विक्रय हेतु उपलब्ध शेयरों के 42 प्रतिशत पर आज विदेशी सस्थागत निवेशकों का ही नियन्त्रण हो गया है।

(अ) **व्यापार घाटा व रूपये की कीमत में गिरावट :** इन सुधारों के कारण 1991 से 2014 के बीच हमारा विदेश व्यापार घाटा 50 गुना हो गया है, जबकि हमारा विदेश व्यापार 21 गुना ही हुआ है। बढ़ते विदेश व्यापार घाटे के कारण रूपये की कीमत 18 रूपये प्रति डालर से गिर कर लगभग 68 रूपये प्रति डालर हो गयी अर्थात् लगभग एक चौथाई के निकट पहुँच गयी है।

तालिका : सुधारों से बढ़ता भारत का विदेश व्यापार घाटा (अरब डालर में)

वर्ष	1992	1999	2000	2005	2007	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016
विदेश व्यापार घाटा	2.6	13.9	17.7	20.15	75.9	125	162	202	154	144.7	137	116

(ब) **रूपया डालर विनिमय दर :** वर्ष 1949 में भी सितम्बर में अवमूल्यन के पूर्व रू. 3.49 बराबर 1 डालर था। आज 67 रू. बराबर एक डालर आर्थिक सुधार लागू करने के पूर्व 1991 में रूपये की विनिमय दर हो गया है। विगत कुछ वर्षों की विनिमय दर नीचे दी गयी है।

वर्ष	1947	1950	1966	1990–91	1996–97	2000–01	2010–11	2012–13	2016	2016
प्रति डालर रूपये	3-49	4-76	7	17-9	24-47	35-5	45-6	45-57	54-4	66-70

Table 1. Market Share of Foreign MNCx

	Share of foreign Brands	Major/Foreign Brands		Indian Brands + Minor Foreign Brands	
TVs, Flat Panels (Rs. 25,000 cr)	73% +	Sony	22%	Videocon	14%
		LG	21%	Others	13%
		Samsung	21%		
		Panasonic	9%		
Refrigerators	63% +	Whirlpool	20%	Godrej	18%
		LG	23%	Videocon	16%
		Samsung	20%	Others	3%
ACs	58% +	LG	20%	Voltas	19%
	(72%)	Samsung	23%	Others	23%
		Hitachi	10%		
Microwaves	62% +	LG	29%	Godrej	11%
	(71%)	Samsung	27%	Others	17%
		Whirlpool	16%		
Major Brands	LG, Nokia, Philips, Samsung, Whirlpool, Carriege, Hitachi, Toshiba, Sharp			Voltas, Videocon, Blue Star, Godrej	
Cars etc.	85%	Maruti	46%	Mahindra	9.28%
		Hyundai	16%	Tata	4.86%
		Honda	7.29%		
		Toyato	4.94%		
		Ford	3.25%		
		Chevrolet	2.7%		
		Skoda, V V	4.4%		
		Nissan	4.49%		
		Renault Fiat			

Table 2 : Market Share of Foreign Brands in Some FMCG Products

Tooth Paste	87%
Soft Drink	89%
Shoe Polish	82%

Table 3 : FMCG Market and Foreign Brands

FMCG (Fast Moving Consumer Goods Sales in 2012)	$36 billion or Rs. 2,15,000 Cr.
Projected Sale of FMCG in 2018	$74 billion or Rs. 4,70,000 Cr.
Foreign Share	62 of Top Brands owned by 15 foreign MNCs 27 Brands by Anglo Dutch Co. Hindustan, Unilever Ltd.

(स) **भारत सहित विश्व के संसाधनों पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का बढ़ता नियंत्रण** : विश्वभर में विशेष कर विकासशील देशों में लागू करवाये सुधारों से विश्व के दो तिहाई से अधिक उत्पादन पर केवल बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का ही नियंत्रण हो गया है। विश्व के कुल 84 खरब डालर के कुल सकल घरेलू उत्पाद के आधे पर विश्व की 1700 कम्पनियों का ही नियंत्रण है। विश्व की शीर्ष 500 कम्पनियों के मुख्यालय विश्व के कुल 204 देशों में से केवल 17 देशों में ही परिमित हैं। शीर्ष 400 कम्पनियाँ केवल 7 देशों से सम्बन्धित हैं। विश्व की शीर्ष 500 कम्पनियों में से 132 अमेरिकी, 89 चीनी, 62 जापानी, 31 फ्रांसिसी, 27 जर्मन, 27 ब्रिटिश, कोरिया की 14 व भारतीय कम्पनियाँ मात्र 6 हैं।

विश्व के कुल सकल घरेलू उत्पाद का बड़ी कम्पनियों में संकेन्द्रण होने से विश्व के देशों की प्रति व्यक्ति आय में विषमता बढ़ती ही जा रही है। विगत 25 वर्षों में विविध देशों के बीच अधिकतम व न्यूनतम प्रति व्यक्ति आय में अंतर निम्नानुसार बढ़ा है –

वर्ष	निर्धनतम व धनाढ्यतम देश की प्रति व्यक्ति आय में अन्तर
1984*	1:17
2016	1:300

* 1984 से ही Early Intensive Adjustment Lending Nations (EIAL देशों) में मुद्रा कोष ने आर्थिक सुधार प्रारम्भ करवाये थे।

इस प्रकार विश्व के निर्धनतम व धनाढ्यतम देश की प्रति व्यक्ति आय में 1991 में 1:75 का अंतर था वह आज 1:300 से भी आगे निकल गया।

(द) **राजस्व संकट** : इन सुधारों के अन्तर्गत ही आयात शुल्क में भारी कटौति की गयी है शीर्ष आयात शुल्क दर 320 प्रतिशत घटा देने से आज अधिकांश मदों पर आयात शुल्क 15 प्रतिशत रह गया है। इसके साथ ही उत्पाद शुल्क में भी तद्नुरूप कमी करने से परोक्ष कर राजस्व में हुयी भारी क्षति से देश के लिये आज सुरक्षा, लोक कल्याण एवं अन्य अवसंरचना (Infrastructure) विकास के लिये भारी धनाभाव उत्पन्न हो गया है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 1991–92 में अप्रत्यक्ष करों का अनुपात 9.8 प्रतिशत था जो घट कर 4.9 प्रतिशत ही रह गया है। देश के सकल घरेलू उत्पाद में करों का कुल अनुपात आज मात्र 16.6 प्रतिशत ही है। अन्य विकासशील देशों में यह 22–34 प्रतिशत तक है। केन्द्र का करानुपात तो 10 प्रतिशत से भी कम हो गया है।

तालिका : विश्व के कुछ प्रमुख देशों के सकल घरेलू उत्पाद में करानुपात (Tax-GDP Ratio) के प्रतिशत

आस्ट्रिया	ब्राजिल	चीन	डेनमार्क	फ्रांस	जर्मनी	इजरायल	इटली	द.कोरिया	नोर्वे	इंग्लेण्ड	अमेरिका	जिम्बाबे
43.4%	34.4%	29%	50.8%	47.9%	40.6%	36.8%	43.5%	26.8%	43.6%	34.4%	29.9%	27.2%

(य) **कृषि पर विदेशी नियन्त्रण** : देश की कृषि पर भी आज विदेशी कम्पनियों का शनैः शनैः नियन्त्रण हो रहा है। उदाहरण के लिए बाजार में नेचर फ्रेश नाम का आटा कारगिल नामक अमेरिकन कम्पनी का है। कृषि का अधिग्रहण कैसे हो रहा है, इसका भी एक उदाहरण यहाँ पर दे देना उचित ही होगा। कारगिल एक अमेरिकी प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी है सीमित नियंत्रण वाली कम्पनी है। उसका विश्व में 136 अरब डॉलर का वार्षिक कारोबार है। भारत में 4 अरब डालर (रुपये 24,000 करोड़ रुपये) का उसका कारोबार है। अपना आटा बाजार में लाने के लिये उसने मध्य प्रदेश के किसानों की 6000 हेक्टयर जमीन ठेके पर ली, किसान जो जमीन का मालिक था वो बटाइदार (Share Cropper) हो गया। ये किसान खेती कारगिल के लिए करते हैं और कम्पनी गेहूँ, या सोयाबीन व मक्का का बीज देती है और वे उसका गेहूँ आदि बोते हैं, फसल सारी कारगिल उठाती है उसकी आटा व पशु आहार के लिये बड़ी–बड़ी आटा मिलें हैं। इससे कई रोलर फ्लोर मिलें, पंजाब और मध्य प्रदेश में बंद हुई। हिन्दुस्तान में लघु उद्योगों की श्रेणी में तीसरे स्थान पर सर्वाधिक लघु उद्योग आटा चक्कियाँ हैं लेकिन अब क्या होता है। चाहे वह आशीर्वाद आटा आई.टी.सी. का हो, या नेचर फ्रेश आटा कारगिल का हो, हम उन विज्ञापनों से उस आटे की तरफ जाते हैं। इससे खेत खलिहान से किचन तक की पूरी खाद्य आपूर्त्ति श्रृंखला फूड सप्लाई चैन ;थ्ववक ैनचचसल बिंपद) कारगिल या आई.टी.सी. टेकओवर कर रही है यानी की 'मेक इन इण्डिया' तो है गेहूँ की खेती हम कर रहे हैं, आटा भी हम पीस रहे हैं, खा भी हम रहे हैं, लेकिन हमारी कुल खाद्य आपूर्त्ति श्रृंखला (टोटल फूड सप्लाई चैन) व पशु आहार से दूध व दूध के उत्पाद तक की खाद्य श्रृंखला विदेशी अधिग्रहीत कर रहे हैं। किसान ब्राण्ड का टामेटो सॉस हो या लेहर चिप्स, उन सभी के लिये विदेशी कम्पनियों के लिये ठेके पर खेती हमारा किसान कर रहा है।

(ऱ) **संस्कृति पर आघात** : विदेशी निवेशक भारत में उद्यम लगाकार या अधिग्रहीत कर जो कुछ वे अपने उत्पादों व ब्राण्डों का उत्पादन हमारे यहाँ कर रहे हैं उसके सांस्कृतिक दुष्प्रभाव भी भारी हैं। एक प्रकरण ऐसा भी है कि कोरिया की एक कम्पनी में कुछ वर्ष पूर्व उसकी महिला कर्मचारियों को यह आदेश दिया गया कि उनके वहाँ गणवेश या आफिशियल वियर स्कर्ट है और इसलिए उन्हें साड़ी या सलवार सूट पहन के स्थान पर स्कर्ट पहन कर आना हे। बहुत सारी महिलायें ऐसी भी होती हैं जो घर से स्कर्ट पहन के नहीं जाती तो वे चेजिंग रूम में जाकर कपड़े बदलती हैं। जब यह प्रावधान लागू किया था तब कई महिला संगठनों ने इसका विरोध भी किया था। तब उन्होंने लिखित में इसकी अनिवार्यता तो समाप्त कर दी पर वह परोक्ष सन्देश रहता ही है कि अगर वहाँ कैरियर में ग्रो करना है और अपना कैरियर बनाना है या प्रमोशन लेने हैं तो उनके आफिशियल वियर या ड्रेस कोड को भी प्राथमिकता देनी ही होती हैं। इस प्रकार जब देश का उत्पादन तंत्र विदेशी नियंत्रण में जाता है, तब संस्कृति भी वह विदेशी ही आरोपित करते हैं।

आज जब देश का उत्पादन तंत्र विदेशी नियंत्रण में जा रहा है, तो वे संस्कृति को भी अपने ढंग से परिवर्तित करने के भी प्रयत्न ही रहे हैं। हमारे देश में रेडीमेड फूड (अर्थात् तैयार खाद्य) का चलन नहीं है। अधिकांश लोग संयुक्त परिवार में रहते हैं। इसलिये खाद्य या आहार घर में ही तैयार हो जाते हैं। जबकि पश्चिमी देशों परिवारों में विघटन व अलगाव के कारण परिवार के अधिकांश सदस्यों को अपना नाश्ता व भोजन स्वयं तैयार करने की विवशता के कारण रेडीमेड आहार अधिक खरीदने होते हैं। इसलिये वहाँ रेडीमेड फूड का चलन अधिक है। इसी प्रकार संयुक्त परिवार में साथ में रहने व सामूहिकता के कारण अपने देश में एक टी.वी. और एक फ्रीज से पूरे परिवार का काम चल जाता है। जबकि पाश्चात्य देशों में परिवार में व्यक्तिवाद व अलगाववादिता के कारण परिवार का प्रत्येक सदस्य उसके अपने कक्ष में उसका अपना अलग टी.वी. व फ्रीज रखना पसन्द करता है। इसलिये, कुछ विदेशी निवेशकों व उनके परामर्शदाताओं (Consultants) का यह भी मानना है कि देश में परिवारों में अलगाववाद का बीजारोपण होने से रेडीमेड फूड व उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं की बिक्री में तीव्रता से वृद्धि हो सकती है। उनमें कुछ विशेषज्ञों के अनुसार जन संचार माध्यमों पर पारिवारिक अलगाव के प्रसंगों के सतत महिमा मंडन से ऐसा सरल है। आजकल हम देखते हैं कि ऐसे सीरियल प्रायोजित किये जा रहे हैं जिनमें पति–पत्नी को झगड़ते हुए दिखाया जाता है, फिर उनको तलाक लेते हुए दिखाया जाता और उनके तलाक लेने के बाद अलग–अलग पुनर्विवाह करते दिखाया जाता है। इससे आज एक युवक या युवती 24–25 वर्ष का होते–होते हजारों विवाहित जोड़ों को झगड़ते हुए व उन्हें तलाक लेते हुए भी देख लेता या देख लेती है। तलाक लेने के बाद पुर्नविवाह करते हुए भी देखते हैं। जहाँ दम्पत्ति का तलाक व अलग होना एक अकल्पनीय बात थी, उसे अब सहज जीवन के अंग के रूप में दिखाया जा रहा है। हमारे देश में चालीस साल पहले कोई सोच ही नहीं सकता था, तलाक लेकर वापस नई शादी की जानी चाहिये, आज चार वर्ष का बच्चा या बच्ची चौबीस या अट्ठाइस वर्ष का होने तक मीडिया पर 10 से 15 हजार तलाक और पुनर्विवाह देख चुका या देख चुकी होगी। उनके जीवन में जिस समय दाम्पत्य में 2–3 दिन का भी छोटा–सा तनाव होगा, तब उनको लगेगा, कि इस रोज–रोज की झंझट से तो बेहतर होगा कि तलाक ले कर फिर कहीं पुनर्विवाह या री–मैरिज कर लेना ठीक रहेगा। अब उनका एक छोटा बच्चा या बच्ची है, कहीं अन्यत्र पुनर्विवाह किया (रीमैरिज की) तो उस बच्चे या बच्ची को उस नये परिवार में सौतेली माँ या सौतेला पिता मिलेगा। अगर उसने पुनर्विवाह नहीं किया (रीमैरिज नहीं की) तो सिंगल पैरेन्ट मिलेगा अर्थात अकेली माँ या अकेले पिता का ही साथ रहेगा। आज यूरोप और अमेरिका में आधे से अधिक बच्चे ऐसे हैं जो या तो सिंगल पैरेन्ट के साथ रह रहे हैं या सौतेले पिता और सौतेली माँ के साथ रह रहे हैं। अब प्रश्न यह है कि, यदि ऐसा चलन भारत में भी बढ़ा तो हमारा भावी समाज शास्त्र कैसा होगा? अब इससे आगे और चलिये अधिकांश टी.वी. सीरियल्स में बहुसंख्य विवाहित महिलाओं का एक पुरुष मित्र दिखाना, और बहुसंख्य विवाहित पुरुषों की एक महिला मित्र दिखलाना, फिर विवाहित दम्पत्ति को झगड़ते हुए दिखाना, झगड़ने के बाद दो महीने के लिए, पत्नी को विवाहित अपने पुरुष मित्र के यहाँ भेज देना, पति अर्थात उस विवाहित पुरुष को अपनी महिला मित्र के यहाँ रहने भेज देना, और वापस दोनों का साथ ले आना। यह सब नैतिक वर्जनाओं को समाप्त करने के लिये है और योजना पूर्वक है।

सीरियल्स में संवाद लेखन (Dialogue Writing) में भी यही ध्यान रखा जाता है। आप यह पायेंगे कि किसी भी सीरियल में सकारात्मक संवाद ;ब्वउचसमउमदजंतल क्पंसवहनमेद्ध 16 से 20 प्रतिशत से ज्यादा नहीं रखे जाते हैं। नोन–काम्प्लीमेन्ट्री डायलाग जैसे मान लो पिता जी ने बच्चे से पूछा, अरे तू परसो फिल्म देखने गया था, मुझे बताया नहीं? ऐसे में 20 साल पहले का संवाद लेखक (Dialogue writer) उससे बुलवाता था कि, पिताजी मैं डर रहा था, इसीलिए नहीं बताया या मैं भूल गया था या मैं नहीं गया था और आपको किसी ने गलत सूचना दी। आज का संवाद लेखक उससे सही जवाब नहीं दिलवाता है। अब वह प्रति प्रश्न (Counter Question) करवायेगा कि आप बताओ आपको किसने कहा? पिताजी कहेंगे तू मुझसे पूछ रहा है?पहले तूं बता, और दोनों विवाद में उलझ जायेंगे और इसलिए मूल बात रह जायेगी और उनमें एक दूसरे की गरिमा का लिहाज समाप्त हो जायेगा। आज आप 15–16 प्रकार के नकारात्मक संवाद ही अधिकांशतः पायेंगे। हम यहाँ इनमें से 3–4 प्रकार के उदाहरण पर्याप्त होंगे चार प्रमुख नकारात्मक या Non-Complementary संवाद है : (i) प्रति प्रश्न करना (Counter Question) (ii) आरोप मढ़ देना (Allegation) (iii) उपहास करना (Ridicule) या (iv) चेतावनी (Warning) के संवाद। अर्थात् प्रतिप्रश्न नहीं तो आरोप लगाना, तुम ऐसे हो, तुमने ये नहीं किया?तुमने मेरे लिए क्या किया? चाहे पति–पत्नी के बीच बातचीत हो। माँ–बाप और बच्चों के बीच बातचीत हो, दादा–दादी व पोते–पोती (ग्रैण्ड पैरेन्ट्स और ग्रैण्ड चिल्ड्रेन) के बीच बातचीत हो या दो भाई–बहिनों या दो बहिनों के दो भाईयों के बीच बातचीत हो। आरोप नहीं तो बातचीत में दूसरों का उपहास उड़ाना, अपमानकारी टिप्पणी करना और उससे भी काम नहीं चला ता चेतावनी देना – मेरे काम में टांग अड़ाने की जरूरत नहीं है (Don't poke your nose into my matters)। सदैव ऐसे 15–16 तरह के नकारात्मक संवाद इसलिये रखे जाते हैं कि समाज–जीवन या पारिवारिक जीवन में भी लोग उसी भाव से बात करें। जबकि पारिवारिक बातचीत में ऐसे संवाद अप्रासंगिक ही नहीं असभ्यता परक होते हैं। इसलिये, विदेशी निवेश से बचते हुये जब तक हम 'मेड बाई इण्डिया' का अनुसरण नहीं करेंगे, तो हमारी संस्कृति, हमारा परिवार, हमारा अर्थतंत्र, हमारे आर्थिक संसाधन, हमारी राजनीति, हमारा भोजन, वेश–भूषा, भाषा ये सारी की सारी विदेशी प्रभाव में जा रही हैं।

(iii) विश्व व्यापार संगठन के निर्माण में नरसिंह राव सरकार का समर्पण

डब्ल्यू.टी.ओ. : विकासशील देशों के हाथ बांधने का तंत्र : उदारीकरण के अधीन विकासशील देशों में आयात व विदेशी निवेश खुलवाने के बाद जब औद्योगिक देशों को लगा कि ये सभी देश सम्प्रभुत्व सम्पन्न देश हैं। ये देश कभी भी अपने यहाँ आयात व विदेशी निवेश को पुनः प्रतिबन्धित कर सकते हैं, और यदि औद्योगिक देशों का माल इनके बाजारों में नहीं बिकेगा तो उन्हें विदेशी मुद्रा कहां से मिलेगी? ऐसा नहीं हुआ तो ये देश पेट्रोलियम, गैस,

कच्चे माल, फल, सब्जियां, अनाज आदि कहां से खरीदेंगे? विश्व में स्विटजरलैंड की प्रति व्यक्ति आय 81,276 डालर होने से तीसरे स्थान पर सर्वोच्च है, वहां न कोई खनिज है, न कोई एग्रीकल्चर डाइवर्सिटी, न कोई बायोडायवर्सिटी है। इसलिये उन सब देशों को लगा कि विकासशील देशों के बाजार व अर्थतंत्र पर उनकी पकड़ नहीं रही तो वे तो गरीब देशों जैसे हो जायेंगे एवं आज के विकासशील देश धनी व औद्योगिक देश बन जायेंगे। इसलिये उन्हें लगा कि आर्थिक उदारीकरण व वैश्वीकरण की बात इस तरह लागू करनी चाहिए कि ये विकासशील देश अपने यहाँ भविष्य में भी पुनः आयात व विदेशी निवेश पर रोक नहीं लगा सकें और सरल या लचीले पेटेण्ट कानूनों से पुनः स्वावलम्बी विकास के मार्ग पर नहीं बढ़ने लग जायें। वस्तुतः उदारीकरण से लगभग 70–80 विकासशील देशों के तीन चौथाई उत्पादन तन्त्र पर औद्योगिक देशों की जिन बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का स्वामित्व हो गया था वह सुस्थिर हो जाये। इसलिए गैट (GATT) वार्त्ताओं के आठवें दौर में वे विश्व व्यापार संगठन (WTO) के निर्माण और उसके अधीन ऐसे बहु पक्षीय व्यापारिक समझौतों (Multilateral Trade Agreements) के प्रस्ताव लेकर आगे आए, जिनके माध्यम से विकासशील देशों के हाथ स्थायी रूप से बांधे जा सकें। उदाहरणार्थ WTO के अधीन आने वाले विविध बहुपक्षीय व्यापारिक समझौतों (Multilateral Trade Agreements) में एक agreement है General Agreement on Trarriffs and Trade (GATT) 1994, जिसमें प्रावधान है कि किसी भी देश की सरकार अपने देश में किसी भी वस्तु के आयात व निर्यात पर रोक नहीं लगा सकती हैं। इसी कारण हमारे यहाँ जिन 2300 वस्तुओं के आयात पर जो मात्रात्मक प्रतिबन्ध (Quantitrative Restrictions) थे, उन्हें हमें खोलना पड़ा।

इस प्रकार अर्थ व्यवस्था व देश की जनता के साथ पहला अन्याय तो स्वाधीनता के बाद समाजवाद के नाम पर किया गया, देश के आर्थिक स्वावलम्बन के विरूद्ध अभेद्य दीवार खड़ी करके किया था, जिसकी चर्चा की जा चुकी है। वस्तुतः 1950–1976 तक देश के संविधान में 'समाजवाद' शब्द का प्रयोग नहीं होते हुये भी तत्कालीन, कम्यूनिस्ट सोवियत संघ के दबाव में समाजवादी प्रतिबन्धों से देश की अर्थव्यवस्था के विकास में अनेक बाधायें खड़ी की गयी थी। उन 44 वर्षों के समाजवादी प्रतिबन्धों से जर्जर अर्थ व्यवस्था में, अचानक सुधारों के नाम पर नरसिंह राव सरकार में वित्तमंत्री मनमोहन सिंह ने आयात, उदारीकरण व विदेशी निवेश प्रोत्साहन से अर्थ तंत्र को एक नव उपनिवेशवाद के दुष्चक्र में उलझा कर दूसरा आर्थिक अन्याय किया। ये सारी बाजारवादी नीतियाँ, जो समाजवाद की प्रतिलोम कही जाती हैं, तब अपनायी गयीं जब देश के संविधान में आपातकाल के समय 1976 में प्रस्तावना में जोड़ा हुआ 'समाजवाद' शब्द विद्यमान है। इसके बाद तीसरा व सबसे बड़ा अन्याय 1993 के 15 दिसम्बर को विश्व व्यापार संगठन (WTO) के समझौतों का अनुमोदन करके एवं अप्रैल 15, 1994 को मर्राकेष में विश्व व्यापार संगठन के निर्माण सहित राष्ट्रीय हितों के विरूद्ध अनेक बहुपक्षीय व्यापार समझौतों (Multilateral Trade Agreements) पर हस्ताक्षर करके किया गया। वर्ष 1993 में ही केन्द्र सरकार ने विदेशी निवेशकों के हितों की रक्षार्थ 'मीगा' के अभिसमय Multilateral Investment Guarranty Agency Convention पर हस्ताक्षर किये थे। विश्व व्यापार संगठन के अन्तर्गत आने वाले समझौतों के कारण आज चाह कर भी सरकार देश से किन्हीं भी वस्तुओं के निर्यात व किन्हीं भी वस्तुओं के आयात पर रोक लगाने को स्वतंत्र नहीं है। अपने इस अधिकार को समर्पण, सरकार प्रशुल्क व व्यापार विषयक सामान्य समझौते – 1994 (GATT-1994) के अधीन कर चुकी है। इन सबका विवेचन लेखक की विश्व व्यापार संगठन पर लिखी पुस्तक में है। देश हित में विदेशी निवेशकों पर देश में उत्पादन की अनिवार्यता से मुक्ति व लाभांश सन्तुलनकारी प्रावधानों को लागू करने के सम्प्रभु अधिकारों का समर्पण केन्द्र सरकार ने विश्व व्यापार संगठन के ''व्यापार सम्बन्धी निवेश प्रावधान'' सम्बन्धी समझौते (Agreement on TRIMS अर्थात् Trade Related Investment Measures) पर हस्ताक्षर करके कर दिया था। इन समझौतों के कारण केन्द्र सरकार पर मात्रात्मक प्रतिबन्धों को लेकर, लाभांश सन्तुलनकारी प्रावधानों पर आपत्तियों को लेकर और पेटेण्ट में एकाकी विक्रयेकाधिकारों को लेकर, 'विश्व व्यापार संगठन' के 'विवाद निवारण तंत्र' (Dispute Settlement Machanism) में मुकदमें चल चुके हैं। इनमें भारत सरकार के हार जाने पर केन्द्र सरकार व संसद को नहीं चाहते हुये भी देशहित के विरूद्ध निर्णय लेने पड़े हैं और तत्सम्बन्धी विधेयक पारित करने पड़े हैं।

देश की सम्प्रभुता, विश्व व्यापार संगठन से किस प्रकार प्रभावित हुयी है, यह पिछली यू.पी.ए. सरकार की दूर–संचार उत्पादन नीति (Telecom Manufacturing Policy) निरस्त किये जाने के एक ही उदाहरण से स्पष्ट हो जायेगा। भारतीय संविधान के अनुसार भारत एक सम्प्रभुत्व सम्पन्न देश है। ऐसे में लम्बे समय से देश के दूर संचार मंत्रालय को लग रहा था कि देश में प्रयोग में आने वाले दूर–संचार उपकरण अधिकांशतः विदेशी हैं। इसलिये देश, दूर–संचार व इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादन के क्षेत्र में पूरी तरह से पराश्रित हो गया है। अतएव दूर–संचार मंत्रालय ने 2012 में बनायी अपनी 'दूर–संचार उत्पादन नीति' (Telecom Manufacturing Policy) में प्रावधान किया कि देश में प्रयुक्त होने वाले सभी दूर–संचार साज समानों में न्यूनतम 30 प्रतिशत अंश हिस्से पुर्जे स्थानीय रूप से उत्पादित होने चाहिये, ताकि देश में दूर–संचार व इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में उत्पादन को कुछ प्रोत्साहन मिले। लेकिन तत्काल वाणिज्य मंत्रालय ने बतलाया कि भारत ने अपना यह अधिकार विश्व व्यापार संगठन के ''व्यापार सम्बन्धी निवेश उपायों के समझौतें'' अर्थात "Agreement on Trade Related Investment Measures" एग्रीमेण्ट आन ट्रिम्स P में समर्पित कर रखा है। इसलिये भारत को ऐसी कोई नीति बनाने का अधिकार नहीं है। अतएव इस नयी दूर–संचार उत्पादन नीति के अन्तर्गत यह 30 प्रतिशत स्थानीय हिस्से पुर्जों के उपयोग की शर्त के विरूद्ध भारत पर WTO में मुकदमा चला तो हम हार जायेंगे। इस प्रकार विश्व व्यापार संगठन के अनेक समझौतों में देश हित में निर्णय के कई अधिकार 1994 में विश्व व्यापार सम्बन्धी समझौतों पर हस्ताक्षर करते समय समर्पित कर दिये थे। यह एक प्रकार से देश की सम्प्रभुता का ही सौदा था। इस प्रकार विश्व व्यापार संगठन, मीगा, विश्व बौद्धिक सम्पदा संगठन, नव पादप प्रजाति सरक्षण संघ और विविध मुक्त व्यापार समझौतों के अन्तर्गत बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हितार्थ देश के हितों का जो आत्मसमर्पण किये हुये हैं, उन चुनौतियों का संक्षिप्त विवेचन WTO पर लिखी पुस्तक में किया गया है। इसलिये इन समझौतों में संशोधन करवाना भी हमारी प्राथमिकता में होना चाहिये। इसमें हम समर्थ हैं। इसका उल्लेख इस अध्याय के अन्त में है। इस वर्ष 2016 में ही भारत सरकार द्वारा भारत में उत्पादित सौर ऊर्जा पेनलों को प्राथमिकता देने की नीति को भी अमेरिका द्वारा विश्व व्यापार संगठन में चुनौति देने पर भारत दो बार हार चुका है।

इसी तरह WTO के ही समझौते Agreement on Agriculture ds Minimum Market Access के एक प्रावधान के अधीन हमें आवश्यकता नहीं होने पर भी अपने वार्षिक कृषि उपभोग (Agriculture Consumption) के 5 प्रतिशत तक कृषि उत्पादों का हम विदेशों से आयात कर लेते हैं। इसलिए चाहे वह मक्का जैसा मोटा अनाज हो, चाहे पाउडर का दूध हो, उसके लिए Tarriff Rate Quata घोषित करके सरकार उनकी एक घोषित मात्रा, 66 के स्थान

पर 15 प्रतिशत आयात शुल्क पर आयात की अनुमति (Market Acces) देती है। इसी तरह हमने विश्व व्यापार संगठन के Agreement on Trade Related Investment Measures में हस्ताक्षर कर रखे हैं, और उसके अधीन हम किसी भी निवेशक के ऊपर यह शर्त नहीं लगा सकते कि वह कुछ प्रतिशत पुर्जे स्थानीय उपयोग करे या स्थानीय स्तर पर बनाये। इसी के अधीन पूर्व में भी हमें लाभांश सन्तुलनकारी प्रावधान (Dividend Balancing Clause) व उत्पादन के क्रमिक स्थानीयकरण (Phased Indigenisation in Manufacturing) जैसे प्रावधानों को हमें समाप्त करना पड़ा है।

दवाईयों के सम्बन्ध में WTO की चुनौतियाँ और भारत की सामर्थ्य : विश्व के 190 देशों में दवाईयाँ हमारी तुलना में 10 से 100 गुना महंगी हैं। Medicines are cheapest in India क्योंकि हमारे यहाँ 2005 तक जो पेटेंट कानून लागू था वह मानवोचित आधार पर बना हुआ था और हम अब तक दवाओं व कृषि रसायनों के सम्बन्ध में केवल प्रक्रिया पेटेण्ट (Process Patent) देते थे। इसलिए दुनिया में कोई भी दवाई जब भी आयी हमने भी 2 से 4 साल में हमने उसके निर्माण की वैकल्पिक विधि खोज (Alternative Process of Synthesis Develop) कर उनका अल्प मूल्य पर उत्पादन आरम्भ कर लिया। वर्ष 2005 तक हमारे देश में प्रक्रिया पेटेण्ट का ही प्रावधान होने से, भारत में दवाईयाँ विश्व के सभी देशों की तुलना में अत्यन्त सस्ती रही हैं। हमारे अलावा सभी देशों में दवाईयाँ 10 से लेकर 100 गुनी तक महंगी हैं। उदाहरण के लिए Cfran या Ciflox जैसी Ciprofloxacin आधारित दवाई कई लोगों ने खरीदी होंगी, जो हमारे यहाँ 3 रूपए से 8 रूपए के बीच मिल जाती है। हमारे देश में उसका जो Basic Compound Ciprofloxacin है उसे 90 कंपनियाँ बनाती हैं और वह थोक में 1800 रुपए प्रति किलोग्राम में मिलता है। इसलिये 500 मिलीग्राम की एक टेबलेट में 90 पैसे का सिप्रोफ्लोक्सासिन लगता है और 500 मिलीग्राम की अलग–अलग ब्राण्ड की एक टेबलेट 3 रुपये से 8 रुपये में मिल जाती है। दूसरे देशों में कहीं भी इसकी कीमत 350 रुपये से कम नहीं है। 95 रुपये से कम में तो कहीं भी उपलब्ध नहीं है, जबकि उसके पेटेन्ट की अवधि भी खत्म हो चुकी है। अब हमारे देश में भी 2005 से हमने WTO की बाध्यता के कारण नया पेटेंट कानून लागू किया है। इसलिए अब 2005 से ही 1995 के बाद की आविष्कृत जितनी दवाईयाँ हैं और जितने कृषि रसायन (Agrochemical molecules) हैं वे सभी बहुत महंगे हैं। यथा Bayer-AG (जर्मन कम्पनी) के लीवर व किडनी केन्सर के इंजेक्शन Nexavar की कीमत वर्ष 2012 तक 2 लाख 80 हजार रुपये थी। हमारे देश की एक Natco कंपनी है, उसने चीफ कन्ट्रोलर ऑफ पेटेन्ट से Compulsory Licence प्राप्त कर इस दवा को 8800 रुपये में बनाकर बेचना प्रारम्भ किया है। जिस पर वह 6 प्रतिशत रॉयल्टी उसके Original Inventor, Bayer-Ag को भी देती है। लेकिन, जिस Chief Controller of Patents Sh P.H. Kurian ने यह Compulsory License दिया, उनको 2 महीने बाद ही उस पद से उनके कार्यकाल का ढाई वर्ष बाकी होने पर भी विदेशी कम्पनियों के दबाव में स्थानान्तरित कर दिया गया। उसके बाद नये कण्ट्रोलर ने ऐसे ही एक अन्य मामले में अनिवार्य लाईसेंस देने का साहस नहीं किया। ऐसी 1995 के बाद आविष्कृत बीसों दवाईयाँ हैं, जो अत्यन्त महंगी हैं, और अनिवार्य लाइसैंस मिलने पर भारतीय कम्पनियाँ उन्हें अत्यन्त सस्ती बना कर बेच सकती हैं। रोश कम्पनी का कैन्सर रोधी इंजेक्शन हरसेप्टिन (रु. 1,35,000) मर्क कम्पनी की दवा अर्बीटक्स (Erbitux) रु. 87,920 ब्रिस्टल मायर्स की इक्सेम्प्रा रु. 66,460 आदि। अगर हमने 2005 में उत्पाद पेटेण्ट का प्रावधान नहीं किया होता तो इनके उत्पादन के लिये कम्पल्सरी लाइसेन्स लेने की आवश्यकता नहीं होती।

यह अनिवार्य अनुज्ञा (Compulsory License) का प्रावधान कैसे आया इसका भी संघर्ष का इतिहास है। वर्ष 1997–98 के आस पास जब AIDS की दवाईयाँ विश्व में अत्यन्त महंगी थी। एक AIDS के मरीज का खर्च 15 हजार डालर प्रतिवर्ष आता था, तब भारतीय कंपनियों ने दुनिया के दूसरे देशों से कहा कि हम 500 डालर प्रतिवर्ष में आपको निर्यात करने को तैयार हैं, बशर्ते आप Compulsory License ns दें। तब ब्राजील और द.अफ्रीका जैसे कई देशों ने यह कदम उठाया। तो जैसे ही द. अफ्रीका ने भारत से एड्स की सस्ती दवाईयाँ आयात करने के लिये Compulsory License का विधान बनाया तो वहाँ के सुप्रीम कोर्ट में अमरीकी कम्पनियों ने स्टे लेने की याचिका दायर की। दूसरी ओर अमेरिकी सरकार ने ब्राजील की सरकार के Compulsory License के कानून के विरूद्ध WTO की Dispute Settlement Body में मुकदमा दर्ज किया। इस बीच में भारतीय कंपनियों ने कहा कि हम तो one dollar a कंल आपकी Treatment लागत आये, ये दवाईयाँ इतनी कम कीमत पर भी बेचने को तैयार हैं। अर्थात यूरो–अमेरिकी कम्पनियों की कीमत की लगभग 2 प्रतिशत कीमत पर बेचने का प्रस्ताव दिया। इस पर केपटाउन (द. अफ्रीका की राजधानी) में वहाँ के नागरिकों ने सुप्रीम कोर्ट से लेकर अमेरिकी दूतावास तक एक बड़ा उग्र प्रदर्शन किया। वह प्रदर्शन इतना उग्र था कि अमेरिकी कंपनियाँ डर गईं और उन्होंने द. अफ्रीका में वह मुकदमा वापस ले लिया। इस दक्षिण अफ्रीकी प्रकरण के बाद अमेरिकी प्रशासन भी डर गया कि कहीं पूरे लैटिन अमेरिका और अफ्रीका में पेटेंट के विरुद्ध ऐसे अभियान चल गये तो WTO ही संकट में आ जाएगा। इसलिये, अमेरिका ने भी ब्राजील के खिलाफ जो मुकदमा WTO dh Dispute Settlement Body में लगा रखा था उसको भी इस द. अफ्रीकी प्रदर्शन के बाद वापस ले लिया।

उसके बाद दोहा (कतर देश) में WTO का 2001 का सम्मेलन हुआ। एड्स की व अन्य महंगी दवाओं वाले विषय पर सभी विकासशील देश भारत, मैक्सिको, ब्राजील, द.अफ्रीका व मलेशिया के नेतृत्व में एकजुट हो गए और उन्होंने कहा कि दवाओं के पेटेण्ट के मामले में हम इस तरह के शोषण नहीं सहेंगे व उन्होंने उन पेटेण्ट प्रावधानों का घोर विरोध किया। यह सम्मेलन ही संकट में आ गया, दोहा में ऐसी स्थिति पैदा हो गई। तत्काल WTO के इतिहास में पहली बार हुआ कि एक Supplementary Declaration पारित किया जिसमें कहा गया कि अगर विकासशील देशों में कोई भी जन स्वास्थ की समस्या (Public Health Problem) या महामारी (Epidemic) की समस्या आएगी, तब उन विकासशील देशों को ब्वउचनसेपअम स्पबमदेम देने का अधिकार होगा। उसी दोहा के Supplementary Declaration से ही भारत के पेटेण्ट कानून में इस अनिवार्य लाइसेन्स का प्रावधान करना सम्भव हुआ और नेक्सावर का अनिवार्य लाइसेन्स 2012 में देना सम्भव हुआ।

भारत की अजेय सामर्थ्य : उसके बाद अगला विषय आया–सिंगापूर मुद्दों का। उन सिंगापुर मुद्दों का जब भारत ने विरोध किया तब दूसरे विकासशील देशों को लगा कि इससे उनको क्या लेना देना। वे सिंगापुर मुद्दों पर तटस्थ हो गए तो भारत अकेला रह गया। अमेरीका व यूरोपीय देशों का दबाव था कि सिंगापुर मुद्दे पर Immediate action programme Doha declarification में शामिल किया जाए। लेकिन, तब भारत अकेले ही उनके विरोध में डट गया। भारत के वाणिज्य मंत्री मुरासोली मारन ने कह दिया था – "If Singapore issues are included in the Doha Declaration, India shall stand out of Doha declaration" तो जो सम्मेलन 5 दिन चलना था, 18 घंटे विलम्बित हो गया। किन्तु जब मारन अड़िग हो गये तो अमेरिका व यूरोप को अगले द्विवार्षिक सम्मेलन तक सिंगापुर मुद्दों पर बातचीत को स्थगित करना पड़ा। केवल भारत के विरोध पर दोहा के घोषणा–पत्र में यह लिखा गया कि अगले

सम्मेलन में सभी देशों के बीच व्यक्त सर्व सम्मति (Explicit Consensus) होगी तब ही सिंगापुर मुद्दों पर बातचीत प्रारम्भ होगी। अगले 2 वर्ष में भारत ने जब अन्य विकासशील देशों को समझाया तो अधिकांश विकासशील देश सिंगापुर मुद्दों के विरूद्ध हो गये। इस पर एक जी 16 समूह बन गया और 2003 के सम्मेलन में कुल 69 देशों ने अलग–अलग WTO के डाइरेक्टर जनरल को लिखकर दे दिया कि My country does not want to have negotiations upon Singapore issues hence there is no explicit consensus, याने सर्व सम्मति नहीं है। Therefore negotiations should not commence upon these Singapore issues और इसलिए सिंगापुर मुद्दे अपनी मौत मर गए। इसने सिद्ध किया कि भारत अकेला भी इस प्रकार के अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर कोई भी न्याय संगत जंदक लेकर एक प्रभावी परावर्तन या यू–टर्न ला सकता है। वर्ष 2014 में भी एन.डी.ए. सरकार ने जुलाई में खाद्य सुरक्षा के मुद्दे पर जो दृढ़ता दिखलाई तो 160 देशों के विश्व व्यापार संगठन में अकेले भारत की असहमति पर औद्योगिक देशों को सभी देशों के लिए असीमित समय तक शांन्ति प्रावधान की छूट देनी पड़ी है। अतएव, हमें हमारे विकास में अवरोध बन कर आने वाले अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों में संशोधन पर भी दृष्टि रखनी चाहिये।

4.3 – चीन, तिब्बत व कश्मीर समस्या

चीन में 1949 में कम्यूनिस्ट शासन की स्थापना और 1947 में पाकिस्तान के अस्तित्व में आने के समय से ही चीन व पाकिस्तान भारत के विरूद्ध निरंतर शत्रुतापूर्ण कार्यवाहियों में लिप्त रहे हैं। चीन ने 1962 में भारत पर आक्रमण करके लगभग पूरे स्विट्जरलैंड के क्षेत्रफल (41,000 वर्ग किमी.) जितने 38,000 वर्ग किमी क्षेत्रफल के अक्साई–चिन पर अधिकार कर लिया था, जो आज तक उसी के अधिकार में है। इसके साथ ही आज वह प्रतिवर्ष 300 से 400 बार हमारी सीमा में घुसपैठ करता है और इन्हीं घुसपैठों के माध्यम से इंच दर इंच आगे बढ़ते हुए हमारे कई अत्यंत उर्वरा चारागाह क्षेत्रों पर अधिकार व अक्साई वाले रणनीतिक महत्व के क्षेत्रों पर अधिकार करता जा रहा है। दूसरी ओर पाकिस्तान के साथ भारत के 1947, 1965, 1971 और 1999 में खुले युद्ध हो चुके हैं। पाकिस्तान प्रेरित आतंकवाद से आज कश्मीर सहित पूरा देश युद्ध से भी अधिक गम्भीर रक्तपात का सामना कर रहा है।

भारत ने 1950 में सरदार पटेल द्वारा तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू को पत्र लिखकर चीन के खतरों के प्रति, तब ही सावधान कर दिया था। उसके बाद भी भारत द्वारा तिब्बत को चीन का संरक्षित राज्य मान लेता बहुत बड़ी भूल थी। यदि 1949 की भूटान के साथ की गई संधि के अनुसार ही तिब्बत के साथ भी भारत ने वैसी ही संधि कर ली होती तो भारत व चीन के बीच तिब्बत एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में होता। ऐसी ही गलती जवाहरलाल नेहरू ने पाक अधिकृत कश्मीर को पाकिस्तान के नियंत्रण में छोड़कर युद्ध विराम की घोषणा कर दी और जम्मू कश्मीर की 68,000 वर्ग किमी भूमि पाकिस्तान के नियंत्रण में छोड़ दी।

(i) **कश्मीर समस्या** : गलती पर गलती : हमारे प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की कश्मीर पर पहली गलती यह थी कि जम्मू–कश्मीर के विलय का प्रस्ताव लेकर अन्य 541 रियासतों की तरह सरदार पटेल व वी.पी. मेनन को कश्मीर नहीं भेज कर वहाँ माउण्टबेटन की जिद पर भारत की और से प्रस्ताव लेकर माउण्टबेटन को भेजा, जो जम्मू–कश्मीर का विलय पाकिस्तान में कराने का वचन जिन्ना को दे चुके थे, इसलिये उन्होंने कश्मीर के महाराज हरिसिंह को जम्मू–कश्मीर का विलय पाकिस्तान में करने का सुझाव दिया था व दूसरे विकल्प की दशा में उनके जीवन को खतरे का भय दिखाया। उस बात पर महाराजा हरिसिंह ने स्वतंत्र रहने का निर्णय किया था। अन्यथा सरदार पटेल को विलय प्रस्ताव लेकर कश्मीर जाने दिया होता तो कश्मीर का विलय पहले ही भारत में हो जाता।

भारत की दूसरी गलती यह थी कि कश्मीर पर 1947 में पाकिस्तान के आक्रमण के बाद भारत की आगे बढ़ती सेनाओं को रोक कर जवाहर लाल नेहरू ने अकारण युद्ध विराम घोषित कर दिया था। इससे ही आज पाक अधिकृत कश्मीर के रूप में देश की 68 हजार वर्ग किलोमीटर भूमि पाकिस्तान के अधिकार में है। इसमें से 5139 वर्ग किलोमीटर पाक अधिकृत कश्मीर का क्षेत्रफल पाकिस्तान ने चीन को दे दिया है। चीन को दिये इसी क्षेत्र में से निकल रहे कारकोरम राजमार्ग के माध्यम से ही चीन व पाक के बीच सीधे धरातलीय संपर्क एवं सड़क मार्ग का निर्माण संभव हुआ है। यदि जवाहर लाल नेहरू ने अदूरदर्शिता पूर्वक राष्ट्रीय हित की अनदेखी करके जम्मू कश्मीर का यह पाक अधिकृत क्षेत्र पाकिस्तान के अधिकार में नहीं छोड़ा होता तो, पाकिस्तान व चीन के बीच यह धरातलीय सम्बन्ध व सड़क संपर्क कदापि संभव नहीं होता। इसके विपरीत, भारत व अफगानिस्तान के बीच सीधा धरातलीय व सड़क मार्ग से सीधा सम्पर्क हो सकता था। तब अफगानिस्तान के रास्ते भारत का मध्य एशियाई गणराज्यों के साथ यथा तुर्कमेनिस्तान, किर्गिजस्तान, उजबेकिस्तान, कजाखिस्तान, आर्मेनिया व रूस पर्यन्त व पश्चिम में ईरान व ईराक तक सीधे सड़क मार्ग से सम्पर्क भी संभव था। वहां से आगे भारत अरब, अफ्रीका व यूरोप से सीधे सड़क मार्ग से सम्पर्क जोड़ सकता था।

स्मरण रहे कि 1947 में जब भारतीय सेना द्रुत गति से पाकिस्तानी सेना को कश्मीर से खदेड़ रही थी और पीछे हटते पाक सैनिकों के प्राण भी संकट में थे, तब अंग्रेज गर्वनर जनरल लॉर्ड माउंटबेटन के बहकावे में आकर हमारे तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने अपने मंत्रीमण्डलीय सहयोगियों की राय की भी अनदेखी कर, देश की वह अत्यन्त महत्व की 68,000 वर्ग किमी. भूमि पाकिस्तान के नियंत्रण में ही छोड़कर युद्ध विराम की घोषणा कर दी थी। माउंटबेटन जम्मू कश्मीर पाकिस्तान को दिलाना चाहते थे और जवाहर लाल नेहरू स्वाधीनता के बाद भी अकारण ही माउंटबेटन की आज्ञा में चलते रहे। इसलिये जवाहर लाल नेहरू की अदूरदर्शिता और उनके माउंटबेटन के जम्मू–कश्मीर भारत विरोधी षडयंत्रों का शिकार बन जाने के कारण गिलगिट, बालटिस्तान सहित जम्मू–कश्मीर का इतना बड़ा भाग पाकिस्तान के नियन्त्रण में छोड़ देने के कारण ही चीन के लिए वहां से सीधे ग्वादर बंदरगाह तक पहुंचना संभव हुआ है, जहां चीन अपना नौसैनिक अड्डा बनाकर अरब सागर में भारत के लिए सुरक्षा चुनौतियां खड़ी कर रहा है। अन्यथा चीन कभी भी अरब सागर में भारत के लिए सुरक्षा चुनौतियां खड़ी नहीं कर सकता था। माउण्टबेटन के दबाव में ही जवाहरलाल नेहरू ने जम्मू–कश्मीर का मुद्दा संयुक्त राष्ट्र संघ में संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर के सातवें अध्याय में पाकिस्तान को एक आरोपी न बना कर उसे छठे अध्याय में उठा कर पाकिस्तान को जम्मू–कश्मीर विवाद में भारत के विरूद्ध एक पक्षकार का सम्मानजनक स्थान दिलाया। छठे अध्याय में दो राष्ट्रों के बीच ऐसे विवाद के शान्तिपूर्ण हल का आग्रह किया जाता है, जिसका समाधान उन्हें ही स्पष्ट न हो। चूंकि पाकिस्तान आक्रमणकर्त्ता देश था और उसने शान्ति भंग की थी। शान्ति के लिये संकट उपजाने वाले, शान्ति भंग करने वाले और आक्रमण के दोषी

हैं, ऐसे आरोपी देशों के मामले चार्टर के सातवें अध्याय में उठाये जाते हैं। नेहरू ने यह मामला सातवें के स्थान छठे अध्याय में उठाकर अकारण पाकिस्तान को एक पक्षकार का स्थान दे, भारत का पक्ष कमजोर किया।

(ii) चीन व तिब्बत के सम्बन्ध में गलती : चीन में जब 1949 में कम्यूनिस्ट शासन बना था, तब भारत उन 6–7 राष्ट्रों में प्रमुख था, जिसने संयुक्त राष्ट्र संघ में चीन को सदस्यता दिलाने में सर्वाधिक वकालत की थी और चीन की जो तिब्बत के साथ सन्धि हुई थी, वह भी भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री ने ही 1951 मई में करायी थी। जब तिब्बत पर चीन का बराबर दबाव बढ़ा रहा था, तब तिब्बती लोग, भारत पर अधिक विश्वास करते थे। इसलिए उन्होंने भारत से मैत्री सन्धि करनी चाही व जवाहरलाल नेहरू से यह आग्रह किया कि वे तिब्बत को भारत का 'प्रोटेक्टरेट' बनाना चाहते थे। तिब्बती लामा चाहते थे कि भारत ने जैसी मैत्री सन्धि भूटान से की है, जिससे भूटान की रक्षा व विदेश सम्बन्ध, भूटान के भारत को सौप दिये थे, वैसी ही सन्धि भारत–तिब्बत के साथ भी कर लेवे। परन्तु पंडित नेहरू ने, तब उन्हें इसके विपरीत यह कहा कि नहीं, तुम चीन से मैत्री सन्धि कर चीन के प्रोटेक्टरेट बन जाओ। तुम्हारे 'एक्सटरनल' रिलेशन्स और तुम्हारा 'डिफेन्स' इन दो बातों का दायित्व चीन लेगा, तुम्हारी सुरक्षा की जिम्मेवारी चीन लेगा और मै आश्वस्त करता हूँ कि तुम्हारी आन्तरिक स्वायतता बनी रहेगी। ऐसा पंडित नेहरू ने आश्वस्त किया तब उन्होंने मई, 1951 की संधि पर चीन के साथ हस्ताक्षर किये थे। सम्भवतः जवाहरलाल नेहरू रूस के अत्यधिक प्रभाव में थे कि उन्होंने कम्यूनिस्ट रूस को प्रसन्न करने के लिये तिब्बत को कम्यूनिस्ट चीन की झोली में डाल दिया। वस्तुतः 1914 की भारत, चीन व तिब्बत की त्रिपक्षीय सन्धि के अनुसार तिब्बत एक स्वतंत्र राष्ट्र था। यदि वर्ष 1950 का तिब्बती लामाओं का प्रस्ताव मान कर जवाहरलाल नेहरू ने, भूटान की भांति तिब्बत को भी भारत का संरक्षित राष्ट्र (च्तवजमबजवतंजम) बना लिया होता और उसे यदि चीन को उपहार स्वरूप नहीं सौंप दिया होता, तो तिब्बत भारत–चीन के बीच एक प्रभावी सुरक्षा दीवार सिद्ध होता। ब्रह्मपुत्र सहित, विश्व के 11 देशों को जलापूर्त्ति कर रही वे 10 नदियाँ चीन के नियन्त्रण मे नहीं जाती जो आज चीन के नियन्त्रण मे हैं। उन नदियों के जल को आज चीन हड़पने जा रहा है। हमारे सिरी जेप क्षेत्र में प्ट तक नियन्त्रण रेखा से 5 किमी. अन्दर तक चीन ने सड़क बना दी है। अरूणाचल प्रदेश के भारतीय भू–भाग पर चीन अपना हेलीपेड बना चुका है और परम्परा से अरूणाचल प्रदेश के चरवाहे जितनी ऊंचाई तक पशु–चराने जाते थे, उन्हें, चीनी सैनिकों ने मनाही कर दी है।

इस प्रकार हमारे प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु का जो भ्रम था कि हम अगर पड़ौसी चीन को नई–नई सुविधाएँ देंगे और उसे तिब्बत को हड़प लेने में भी सहयोग कर देंगे तो उससे हमारे सम्बन्ध अच्छे होंगे। इसलिए 1950 में जब तिब्बतियों ने भारत के साथ रहने और भारत का प्रोटेक्टोरेट बनने की इच्छा व्यक्त की थी तब हमने वह सन्धि चीन के साथ करा दी। 1949 में भूटान ने भारत से सन्धि कर वह भारत का संरक्षित (Protectorate) राष्ट्र बन गया था लेकिन बाद में 2004 में भारत सरकार ने उसका भी समय पर नवीनीकरण नहीं किया, और बाद में उसे विरल कर दिया, वह एक अलग विषय है। 1949 में भूटान के रक्षा व विदेश मामलों का दायित्व भारत ने ले लिया था तब तिब्बत भी भारत से ऐसी ही मैत्री सन्धि करना चाहता था। तब इसके विपरीत हमारे तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल जी ने तिब्बती लामाओं को परामर्श दिया कि आप लोग भारत नहीं चीन के प्रोटेक्टोरेट बनिये और उन्होंने 1951 में एक सन्धि करवाई जिसमें जवाहरलाल जी ने आश्वासन दिया कि आपकी (तिब्बत की) आंतरिक स्वायत्तता व संस्कृति और आंतरिक स्वशासन कायम, रहेगा यह में आश्वस्त करता हूँ। आप चीन के साथ सन्धि कर उसकी सम्प्रभुता स्वीकार कर लीजिये। तब जाकर तिब्बतियों के नेतृत्व ने, नेहरू जी के भरोसे वह 17 सूत्री संन्धि की थी। इसके पूर्व, तिब्बत एक स्वतन्त्र राष्ट्र था। उसके बाद 1955 से चीन ने वहाँ अपनी सैन्य उपस्थिति बढ़ानी शुरू कर दी और वर्ष 1959 में तो चीन ने तिब्बत पर पूरी तरह से कब्जा कर लिया। तब पूज्य दलाईलामा को भारत में शरण लेनी पड़ी थी।

इससे पहले 1951 से 1955 तक चाऊ एन लाई, जवाहरलाल जी को बराबर कहते थे कि चीन व भारत के बीच कोई सीमा विवाद नहीं है। हमारी सीमाएँ बिल्कुल स्पष्ट हैं। लेकिन, तिब्बत पर पूर्ण अधिकार करते ही 1955 से चीन ने कुछ ऐसे नक्शे जारी करने शुरू किये, जिनमें भारतीय भू–भाग को चीन का बताना आरम्भ किया और 1959 में तिब्बत पर पूर्ण नियन्त्रण होते ही उन्होंने कह दिया कि हमारे (भारत व चीन के) बीच गम्भीर सीमा विवाद है और चीन की एक लाख, चार हजार वर्ग किलोमीटर जमीन आपने (भारत ने) दबा रखी है। इस प्रकार जब तक तिब्बत को हड़पने के लिये भारत का सहयोग चीन को चाहिये था, तब तक कहा कि हमारे (चीन–भारत) बीच कोई सीमा विवाद नहीं है। जैसे ही उसने तिब्बत को पूरी तरह से अधिग्रहीत कर लिया एकदम कह दिया कि भारत ने चीन की एक लाख, चार हजार वर्ग किलोमीटर जमीन दबा रखी है। स्मरण रहे उसके पूर्व, जब चीन संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य नहीं था, तब कम्यूनिस्ट देशों को छोड़ कर भारत ही एक मात्र देश था, जिसने चीन की सदस्यता के लिये सर्वाधिक प्रबल समर्थन दिया था। इन सारे उपकारों को भुलाकर अन्ततः 1962 में तो भारत पर आक्रमण कर के हमारी 38,000 वर्ग किमी. भूमि चीन ने बलात् अधिग्रहीत कर ली। इस प्रकार चीन से शान्ति खरीदने की भ्रान्तिवश तिब्बत को चीन को सौंपने की जो बहुत बड़ी भूल तब भारत ने की थी, उसके कारण एक ओर तो चीन सीधे हमारा पड़ौसी बन कर आज सीमा पर अनुचित दबाव बना रहा है। यदि वहाँ स्वतन्त्र तिब्बत होता तो उत्तर से हम पूरी तरह सुरक्षित होते।

तिब्बत कभी भी चीन का अंग नहीं रहा है। यह भिन्न बात है कि मध्य युग में थोड़े समय तिब्बत और चीन दोनों ही कभी मंगोल साम्राज्य में रहे हैं और मंगोलिया से जिस समय चिंगीज हान् जिसको अक्सर इतिहासकार कह देते है, चंगेज खान, और यह भ्रान्ति हो जाती है कि वह एक मुसलमान था, जबकि चिंगीज हान बौद्ध था और उसने बौद्ध होने के कारण भारत के प्रति स्वभाविक सम्मान के कारण, तब आक्रमण नहीं किया था और अरब तक वह गया था। दूसरा पारम्परिक व प्राचीन इतिहास की दृष्टि से देखें तो, तिब्बत यानि कि 'त्रिविष्टप', भारत का अंग ही रहा है। तिब्बत स्थित कैलाश–मान सरोवर भारत के अभिन्न अंग रहे हैं।

कैलाश–मान सरोवर के वर्णन और यहां तक कि रामायण और महाभारत में, भी चीन और 'त्रिविष्टप' का वर्णन आता है और शालिवाहन द्वारा प्रवृत्त शक संवत के चलन के समय ईस्वी वर्ष 78 में 1925 वर्ष पूर्व भारत की सीमा अर्थात् उस समय भारत के साम्राज्य की सीमा, चीन के 'सिंकियाँग' प्रान्त तक थी और इधर अफगानिस्तान से आगे, उज्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, कजाकिस्तान, तुर्कमीनिस्तान, ये सब भारतीय साम्राज्य के भाग थे और तब देश की राजधानी पेशावर (अब पाकिस्तान) में थी, वहां बनाये 700 फीट ऊँचे स्तूप अवशेषों को, मो. गौरी के साथ आये मुस्लिम इतिहासकार अल–बेरूनी ने भी देखे

थे और उसने ही दसवीं शताब्दी में अपने लिखे 'तवारीख अल हिन्द' ग्रन्थ में इसका वर्णन किया है कि पहली सदी के पेशावर में भारत की राजधानी के उन अवशेषों को 10वीं सदी में भारत आने के समय उसने देखे हैं। दक्षिण एशिया से रोम को जोड़ने वाले सिल्क रुट पर भारत का नियन्त्रण था। तब भारत का विस्तार तिब्बत व चीनी प्रान्त सिंकियांग तक रहा है। लेकिन हिमालय की 'वाटर–फाल लाइन' हिमालय की सर्वोच्च चोटियों से जहां से पानी इधर (दक्षिण में) गिरता है, के दक्षिण में चीन का कभी भी नियंत्रण नहीं रहा है। वह भारतीय हिस्सा कहलाता है, इस भारतीय क्षेत्र पर, चीन का कभी भी साम्राज्य नहीं रहा। तिब्बत के स्वतंत्र राज्य की अवधि में तिब्बत का भी नहीं रहा है। वर्ष 1954 की सन्धि होने तक तिब्बत में मान सरोवर तक डाक तार केन्द्र व सुरक्षा चौकियाँ थीं। इन्हें पंचशील के समझौते के बाद हमने हटाया है।

सिक्किम को तो भारत का अंग मानने की चीन, अनौपचारिक तथा औपचारिक घोषणा कर चुका है। फिर भी पिछले 3–4 वर्षों से पुनः उसे विवादास्पद क्षेत्र बताया जा रहा है। चीन, बयान बदल कर बोल रहा है। तो इस प्रकार से उसका दबाव हम पर बना हुआ है। अब इस दबाव के साथ–साथ उसने भारत की एक प्रकार से घेराबंदी शुरू कर दी है। भारतीय उपमहादीप व हिन्द महासागर क्षेत्र में जितने छोटे–छोटे देश हैं, उन सबका वह संरक्षक बनता जा रहा है, ताकि भारत से इन देशों की कूटनीतिक दूरी बढ़े तथा जो देश अब तक भारत के निकट रहे हैं, समर्थक रहे हैं, वे चीन के निकट समर्थक बनें, भारत के विरोध में खड़े हों, इस प्रकार की घेराबन्दी कर रहा है। उसने चीन–पाक के बीच 'कारा–कोरम' हाईवे बना रखा है। पाकिस्तान ने अभी उसी कारा–कोरम हाईवे से चीन को चार लिंक रोड़ दिये हैं और उसने पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान में 'ग्वाडर' नामक स्थान पर 'नेवल बेस' अर्थात नौ सैनिक अड्डा बना लिया है। वहां से वह पूरी फारस की खाड़ी और हिन्द महासागर में अपनी नौ सैनिक उपस्थिति बढ़ा रहा है वहां से वह खनिज तेल परिवहन मार्ग पर अपना अंकुश रख सकेगा।

दूसरी तरफ, म्यानमार के साथ इसकी सीमा लगती है, उसके पूरे 'रीवर सिस्टम' को उसने नियन्त्रित कर रखा है। अन्दर बड़ी मात्रा में रोड़ तथा रेल लाइन का नेटवर्क बनाया है और अब सीधा वह बंगाल की खाड़ी में भी आ गया है। इस तरह दोनों और से भारत की घेराबन्दी की है। इधर उसने बांग्लादेश के चटगांव में अपना 'नेवल बेस' बनाया है और अण्डमान द्वीप के पास में बर्मा के 'कोको द्वीप' पर पूरा 'सर्विलेंस सिस्टम' सैन्य निगरानी तंत्र बना दिया है और वहाँ रडार स्थापित कर चीन ने भारत के पूर्वी तट की पूरी निगरानी करनी प्रारम्भ कर दी हैं।

अभी इन्टरनेट के क्षेत्र में 1 लाख नये साइबर यौद्धा (Cyber warriers) तैयार किये हैं। इन 1 लाख साइबर वारियर्स के माध्यम से वह विश्व भर में अन्य देशों के इण्टरनेट नेटवर्क में सेंध लगाता है। उसके सायबर वारियर्स महत्वपूर्ण साइट्स हैक करते हैं और महत्वपूर्ण सूचनाऐं प्राप्त करते हैं। दूसरी ओर धरातलीय सीमा का वह वर्ष में 300–400 बार अतिक्रमण करता है। तब भी हम आज देश में चीन का 5 लाख करोड़ का माल आयात कर उसका आर्थिक सशक्तिकरण कर रहे हैं।

आज देश में सर्वाधिक टेलीफोन एक्सचेंज व इलेक्ट्रॉनिक संचार सामग्री चीन की है। सर्वाधिक पर्सनल कम्प्यूटर (PC) चीनी 'लीनोवो' बिक रहे हैं। उनके माध्यम से हम पर कोई भी साइबर आक्रमण करना उसके लिये अत्यन्त सहज होगा। उसने लेह–लदाख में तो कुछ समय पूर्व ही 1.5 किलोमीटर तक उसकी सेना घुस आई और चट्टानों पर 'चाईना' लिख दिया। उसकी घुसपैठ की जो रणनीति है, वही है जो 1962 के आक्रमण से पहले अपनाई थी। चीनी सैनिकों का बार–बार आना और तत्काल चले जाना, जिससे हमारी सैना और सरकार को यह लगता है कि ये तो आते है, चले जाते है, कोई खास बात नहीं है और हम निश्चिंत हो जाते हैं। तब वे आते हैं और वहीं जम जाते हैं और वापिस नहीं जाते हैं। अक्साई–चिन पर जो कब्जा किया उसकी रणनीति यही रही थी। चीन वहां बार–बार घुसपैठ करता रहा, आता रहा, जाता रहा, वहाँ सड़क बना ली और फिर उसने भांप लिया कि हम असावधान है, तो कब्जा कर लिया और जब हमने अपना ट्रूप–मूवमेन्ट शुरू किया तो कुछ क्षेत्रों में वह पीछे भी हट गया। दूसरी ओर, आज चीन ब्रह्मपुत्र नदी का पानी मोड़ने की कोशिश कर रहा है। ब्रह्मपुत्र सहित तिब्बत से 10 बड़ी नदियाँ निकलती हैं और जिनसे 11 देशों को जलापूर्त्ति होती है, चीन उन नदियों के जल को मन चाहे ढंग से मोड़ रहा है। यदि तिब्बत पर चीन का अधिकार नहीं होने दिया होता तो यह जल संकट नहीं उपजता।

चीन की प्रमुख शत्रुतापूर्ण कार्यवाहियाँ

चीन की शत्रुतापूर्ण कार्यवाहियों पर दृष्टिपात करें तो, उसकी अनगिनत शत्रुतापूर्ण कार्यवाहियां हैं। इनमें प्रमुख निम्न हैं :–

- ✔ 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण कर 38000 वर्ग किलोमीटर भूमि पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया। इसके बाद 1963 में हमारे शत्रु पाकिस्तान ने पाक अधिकृत कश्मीर की 5183 वर्ग किलोमीटर भूमि चीन को दे दी। अब चीन सम्पूर्ण पाक अधिकृत कश्मीर में व्यापक गतिविधियाँ संचालित कर रहा है। पाक अधिकृत जम्मू कश्मीर का 68 हजार वर्ग किमी. वाले भू–भाग में आज चीन अनेक प्रकार के सैन्य निर्माण कर रहा है। वहाँ से वह अपने राजमार्ग निकाल रहा है। भारत के कठोर विरोध के उपरान्त पर भी चीन वहाँ अपनी उपस्थिति बढ़ाता ही जा रहा है। वहीं से वह 46 अरब डालर के निवेश वाला चीन पाक आर्थिक गलियारा भी निकाल रहा है।

- ✔ भारत के आर्थिक हितों को हानि पहुंचाने के लिए चीन ने अफ्रीका में 'मेड इन इण्डिया' ब्राण्ड की वस्तुएं विशेष कर दवाईयाँ भी प्रवेश कराने का दुस्साहस किया था। इसका स्पष्ट उद्देश्य अफ्रीका में भारतीय वस्तुओं को बदनाम करना था।

- ✔ पाँच वर्ष पूर्व चीन ने भारत के सूती वस्त्र उद्योग को चौपट करने के लिए देश में उत्पन्न अधिकांश कपास को अत्यन्त ऊँचे दाम पर खरीद लिया था। जब देश में कपास का मूल्य 4000/– रूपये क्विटल था तब उसने 7000/– रूपये प्रति क्विंटल से खरीद कर भारतीय वस्त्र उद्योग को चौपट करने का प्रयत्न किया था।

- ✔ आज देश में अनेक उद्योग चीन से बढ़ रहे आयातों के कारण बन्द हो चुके हैं और बड़ी संख्या में और भी उद्योग बन्द होने को हैं। इनमें विद्युत

साज–सामान, बल्ब उद्योग, टायर उद्योग, मोबाइल फोन, स्मार्टफोन उद्योग, इलेक्ट्रोनिक साज–सामान के उद्योग, कम्प्यूटर हार्डवेयर उद्योग, पेन आदि स्टेशनरी सामानों के उद्योग, खिलौना उद्योग, औषधि उत्पादन उद्योग आदि हैं।

- ✔ चीन आज अरूणाचल प्रदेश सहित देश की 90,000 वर्ग किलोमीटर भूमि पर अपना दावा जता कर सीमा चौकियाँ आगे बढ़ाते हुए घुसपैठ करके हमारे निर्माण कार्यों में बाधा डाल रहा है। हर वर्ष वह 400 बार तक सीमा का अतिक्रमण करता है और सीमावर्ती गांवों के निवासियों को आतंकित कर वहाँ अपने अस्थायी कैंप स्थापित देता है।

- ✔ चीन द्वारा जम्मू–कश्मीर को अपने नक्शों में भारत का अंग नहीं दिखाया जाता है। अरूणाचल प्रदेश को चीन का अंग दिखाकर वहाँ के नागरिकों को बिना पासपोर्ट वीजा के चीन आने का आमन्त्रण दिया जाता है।

- ✔ पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा अरूणाचल को ''हमारा सूरज का प्रदेश'' कहने पर चीन हमारी महिला राजदूत को रात्रि 2 बजे उठाकर कड़ा विरोध व्यक्त करते हुए चेतावनी देता है। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के अरूणाचल प्रदेश के तवांग जिले में प्रवेश नहीं करने की धमकी देता है और मनमोहन सिंह वहां की यात्रा निरस्त कर देते हैं।

- ✔ चीन ने आणविक आपूर्ति समूह (Nuclear Supplier Group) में भारत के प्रवेश पर आपत्ति करते हुए यह शर्त लगा दी है कि पाकिस्तान जैसे आतंकवादी देश को जबतक इस समूह में प्रवेश नहीं मिलेगा तब तक वह भारत को भी इसमें प्रवेश नहीं लेने देगा।

- ✔ चीन ने हमें आहत करने हेतु लश्कर–ए–तोयबा के आतंकवादी व जैश–ए–मोहम्मद के संस्थापक मसूद अजहर को अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवादी घोषित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रस्तुत भारत के प्रस्ताव सहित 2009 से अनेक बार वीटो उपयोग कर भारत का विरोध किया।

- ✔ भारत की उड़ी में पाकिस्तान समर्थित आतंकवादियों के विरूद्ध सैन्य कार्यवाही के विरोध में पाकिस्तान के प्रति अपनी मित्रता का प्रदर्शन करते हुये चीन ने जेंगबो नामक ब्रह्मपुत्र की सहायक नदी का पानी अवरूद्ध कर भारत को परोक्ष में यह चेतावनी दी है कि भारत द्वारा पाकिस्तान के विरूद्ध आतंकवाद विरोधी कार्यवाही करने और पाकिस्तान को सिन्धु नदी के जल से वंचित करने पर वह ब्रह्मपुत्र नदी के जल से भारत को वंचित कर देगा। चीन तिब्बत में ब्रह्मपुत्र नदी की उपरोक्त सहायक नदी का पानी रोकने के लिये ही वहाँ एक हाईड्रो प्रोजेक्ट लगा रहा है। भारत क लिए यह भारी चिंता की बात है क्योंकि चीन के इस कदम से भारत समेत कई देशों में ब्रह्मपुत्र के पानी के बहाव पर असर पड़ सकता है। इससे भारत की 10 करोड़ से अधिक जनसंख्या को जल संकट का सामना करना पड़ सकता है।

- ✔ चीन ने यह काम ऐसे वक्त में किया है जब उड़ी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान से सिन्धुजल समझौते के तहत होने वाली बैठक रद्द कर दी थी। साथ ही इस समझौते की समीक्षा करने का भी फैसला किया था। भारत ने यह निर्णय पाक पर आतंकवाद को बढ़ावा देने के विरूद्ध दबाव बनाने के लिए किया था। ऐसे में चीन का यह कदम पाकिस्तान के साथ मिलकर उल्टा भारत पर दबाव बढ़ाने की धमकी के रूप में उपयोग कर रहा है। तिब्बत में 'यारलुंग जेंगबो' नाम से जानी जाने वाली ब्रम्हपुत्र की एक सहायक नदी पर चीन ने इस प्रोजेक्ट पर करीब 750 मिलियन यूएस डॉलर का निवेश किया है। यह प्रोजेक्ट तिब्बत के जाइगस में है। यह जगह सिक्किम के नजदीक पड़ती है। जाइगस से ही ब्रह्मपुत्र नदी अरूणाचल प्रदेश में बहते हुए दाखिल होती है।

- ✔ चीन अपने इस अत्यन्त महंगें प्रोजेक्ट को 2019 में पूरा कर लेना चाहता है। इस पानी रोकने से भारत और बांग्लादेश जैसे देशों में ब्रह्मपुत्र के बहाव पर व्यापक असर पड़ेगा पिछले वर्ष भी चीन ने तिब्बत में ब्रह्मपुत्र में डेढ़ बिलियन की लागत वाला सबसे बड़ा हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट शुरू किया था। इस पर भी भारत ने चिंता जताई थी। लेकिन, चीन ने इसकी अनदेखी कर दी है। चीन की 12वीं पंचवर्षीय योजना से इस बात के संकेत मिलते हैं कि तिब्बत के स्वायत क्षेत्र में चीन तीन और हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट केवल भारत का जल हड़पने के लिये लाने वाला है। इससे सम्पूर्ण पूर्वोत्तर में गम्भीर जल संकट पैदा होगा और चीन इन बांधों का पानी कभी भी छोड़कर पूर्वोत्तर में जलप्लावन का संकट खड़ा कर सकता है।

- ✔ चीन वर्ष में 300–450 बार भारतीय सीमा में घुसपैठ करता है।

- ✔ चीन ने भारतीय सीमा पर परमाणु मिसाइलें तैनात कर दी है जिनके मारक क्षेत्र में सम्पूर्ण भारत आता है।

- ✔ भारत की चारों ओर से घेराबन्दी की दृष्टि से चीन ने पाकिस्तान (ग्वादर बंदरगाह), नेपाल, म्यांमार, बांग्लादेश (चटगांव बंदरगाह) एवं श्रीलंका में सैन्य गतिविधियों का विस्तार किया।

- ✔ हमारे देश के अतिसंवेदनशील स्थानों पर विविध परियोजनाओं में निर्माण के ठेके अत्यन्त कम दरों पर भरकर देश के अन्दर चीन अपनी उपस्थिति एवं गतिविधियाँ बढ़ा रहा है।

- ✔ चीन ने दैनिक उपयोग की लगभग प्रत्येक घटिया वस्तु को भारत के बाजारों में सस्ते मूल्य में पहुंचा कर स्थानीय उद्योगों को बन्द कराने की स्थिति में पहुंचा दिया है। चीन से भारत को आयात लगभग 4.5 लाख करोड़ रूपये वार्षिक तो घोषित है और बिना बिल का या अल्प मूल्य के बिल से आ रहे सामान को जोड़ देवें तो यह राशि 7 लाख करोड़ रूपये वार्षिक तक पहुँच सकती है। क्या हमें चीन जैसे हमारे साथ शत्रुतापूर्ण कार्यवाही करने वाले देश का इतना माल खरीद कर उसका 6–7 लाख करोड़ का आर्थिक सशक्तिकरण करना चाहिये?यदि इस पर न्यूनतम 10 प्रतिशत भी कर (टैक्स) की राशि चीन की सरकार को जाती है तो हम भारत में रहते हुये अपने शत्रु देश की सरकार को 60–70 हजार करोड़ रूपये की कर अर्थात टेक्स की आय में योगदान दे रहे हैं इसलिये हमें तत्काल ही चीनी वस्तुओं का क्रय करना बन्द करना चाहिये। आज हमारे लिये राजस्व

संकट के चलते थल सेना के बारम्बार आग्रह के बाद भी भारत को भारत–तिब्बत सीमा के लिये पर्वतीय आक्रामक सेना को शस्त्र सज्जित करने में कठिनाई आ रही है। यदि हम चीनी माल खरीदना बन्द कर दें तो ये 60–70 हजार करोड़ रूपये चीनी सरकार के हाथ पड़ने से रूक सकेंगे। दूसरी ओर यही माल भारत में निर्मित होकर इस माल को हम भारतीय खरीदेंगे तो देश की सरकार को इस माल का 16 प्रतिशत की दर से 1 लाख करोड़ से अधिक का कर राजस्व मिलेगा। हमारे लिये पर्वतीय आक्रामक सेना के लिये कुल ही 60,000 करोड़ रूपये मात्र की और आवश्यकता है।

- ✔ चीन का रक्षा बजट 200 अरब डालर है जबकि भारत का रक्षा बजट मात्र 40 अरब डालर है। इसे हम भारतीय माल खरीद कर अपना कर राजस्व बढ़ा कर ही बढ़ा सकेंगे।
- ✔ 14 अप्रैल, 2013 की रात्रि में बिना टेंकों या तोपखाने के 40 चीनी सैनिकों ने हमारी सीमा में 19 किमी. तक घुसपैठ कर दौलत बेग ओल्डी में तम्बू गाड़ दिये। भारत सरकार उन्हें बाहर धकेलने के स्थान पर उनसे ब्लेकमेल होती चली गयी और उन्हें बाहर जाने को मनाने के लिये हमारे द्वारा अपनी ही सीमा में अपनी सेना को सीमा में 38 किमी. पीछे ले जाना पड़ा और हमारी सीमा में अपनी रक्षा संरचनाएँ यथा सेना के बंकर आदि अपने ही हाथों से तोड़ने पड़े थे।

इसलिये हमें कम से कम चीनी वस्तुओं को खरीदना बन्द कर उसका आर्थिक हित तो बन्द करना ही चाहिये।

अध्याय 5

हमारा उज्वल भविष्य और उसका मार्ग चित्र

विगत 1400 वर्षों की चूकों के बाद भी भारत आज अत्यन्त सामर्थ्यवान राष्ट्र है। स्वदेशी, स्वावलम्बन, समरसता व राष्ट्र भाव जागरण से भारत आज अपने उस प्राचीन वैभव और गौरवमय स्थान को सहज में पुनः अर्जित कर सकता है। प्रस्तुत अध्याय में भारत की इस वैश्विक सामर्थ्य, नैतिक प्रभाव एवं उसकी परिपूर्णता युक्त वैचारिक चिन्तन का विवेचन किया जा रहा है। इनमें सर्वोपरि लक्ष्य, सर्वप्रथम हमें देश व समाज को समरसता के भाव से एकजुट करना है। सम्पूर्ण समाज के आर्थिक उत्कर्ष हेतु सर्वप्रथम कृषि पर निर्भर देश की आधी से अधिक जनसंख्या के जीवन आधार स्वरूप कृषि के विकास सहित समग्र अर्थव्यवस्था को अत्यन्त सुदृढ़ आधार व वैश्विक व्यवस्था में उसे अग्र स्थान दिलाना होगा। इसके साथ ही पर्यावरण के प्रति हमारे प्राचीन हिन्दू जीवन मूल्यों से अनुप्राणित धारणक्षम व समावेशी विकास (ैनेजंपदंइसम ंदक प्दबसनेपअम क्मअमसवचउमदज) हेतु प्रभावी समाधान प्रस्तुत कर, उस दिशा में भी समेकित प्रयास करने होंगे। इस हेतु भारतीय जीवन मूल्यों से अनुप्राणित एकात्म मानव दर्शन की जो 51 वर्ष पूर्व, 1965 में पं. दीनदयाल उपाध्याय ने जो काल–सुसंगत पुनर्व्याख्या की थी, वह भी हमारा इस दिशा में श्रेष्ठ समाधान प्रस्तुत करती है। हमारी एकात्म मानव दर्शन की वेदान्त की विचारधारा ही आज समग्र विश्व को उत्कर्ष, शान्ति व सौहार्द का मार्ग दिखा सकती है। आज विश्व में फैलते आतंकवाद, बढ़ती आर्थिक विषमता, तेजी से हो रहे पर्यावरण विनाश को देखते हुए हिन्दुत्व की इस सम्पूर्ण सृष्टि को एकात्म भाव से देखने की दृष्टि, आज की सभी प्रमुख समस्याओं से विश्व को मुक्त कर सकती है। हमारे इस एकात्म भाव से विश्व कल्याण के चिन्तन को आगे बढ़ाने के लिए भारत को, अपने युग–युगीन वैश्विक दायित्व के निर्वाह हेतु आगे बढ़ना होगा। विश्व में सामर्थ्यवान व नैतिक बल से युक्त व्यक्तियों, समाजों व राष्ट्रों की बात का ही बल होता है। भारत के पास एकात्म मानव दर्शन का वह चिन्तन व इसे आगे बढ़ाने का सामर्थ्य है। आज हम अपने विश्व मंगल के वैश्विक दायित्व के निर्वाह के लिये प्रयत्नशील व सक्रिय होवें, इसका अभी सबसे उपयुक्त अवसर है। इन्हीं सभी अनुकूलताओं एवं सही दिशा में अग्रसर होने के मार्गचित्र (रोडमेप) की समीक्षा यहाँ की जा रही है।

हमारा स्वरूप व सामर्थ्य

भारत आज अपनी 132 करोड़ जनसंख्या के साथ, चीन के बाद विश्व का दूसरा सर्वाधिक जन शक्ति वाला देश है जो विश्व का विशालतम लोकतंत्र भी है। विश्व में 100 करोड़ से अधिक जनसंख्या वाले 2 देशों, भारत व चीन के बाद केवल 9 देशों की जनसंख्या 10 से 100 करोड़ के बीच है। कुल विश्व के 36 देशों की जनसंख्या आज 1 से 10 करोड़ के बीच है। विश्व के 204 में से 157 देशों की जनसंख्या 1 करोड़ से भी कम है। उदाहरणतः सिंगापुर की जनसंख्या मात्र 48 लाख (भारत की 1/265) व क्षेत्रफल मात्र 710 वर्ग किमी (भारत का 1/4642) है। भारत के पास आज विश्व की सर्वाधिक, 18 करोड़ हैक्टैर खेती योग्य जमीन व सर्वाधिक 6 करोड़ हैक्टेर सिंचित क्षेत्रफल है। यदि देश में सघन कृषि अपनायी जाये तो भारत, विश्व की 450 करोड़ जनसंख्या की खाद्य आवश्कताओं की पूर्ति कर, विश्व की खाद्य–शक्ति बन सकता है।

आज देश के 13.96 लाख विद्यालयों में 31.5 करोड़ छात्र अध्ययनरत हैं जो अमेरिका की जनसंख्या के बराबर है। देश के 788 विश्वविद्यालयों व तत्सम उपाधि प्रदाता स्वायत्त संस्थानों और 45000 महाविद्यालयों में कुल मिलाकर 3.3 करोड़ छात्र उच्च व तकनीकी शिक्षा में अध्ययनरत हैं। यह संख्या पूरे कनाडा की जनसंख्या के बराबर है। हाल के जनसांख्यिकीय अनुमानों के अनुसार अमेरिका, जापान, यूरोप, चीन व दक्षिण पूर्व एशिया सहित विश्व के सभी प्रमुख औद्योगिक देशों में वृद्धों के बढ़ते अनुपात के कारण इन देशों में विविध ज्ञान आधारित उद्योगों में नियोजन हेतु युवा जनशक्ति का भारी अभाव हो जाएगा। वस्तुतः इन देशों में आगामी 7 वर्षों में होने वाली सेवानिवृत्तियों से सभी प्रमुख ज्ञान आधारित रोजगार–क्षेत्रों में नियोजन के लिये लगभग 5 करोड़ 70 लाख लोगों का जनाभाव उत्पन्न होगा। ऐसी दशा में भारत की आधी जनसंख्या 25 वर्ष से अल्प आयु की होने से इस वैश्विक जनाभाव में लगभग 4 करोड़ 30 लाख की पूर्ति भारत के उच्च व तकनीकी शिक्षा प्राप्त युवा करेंगे।

आज भी विश्व के प्रमुख औद्योगिक देशों के ज्ञान आधारित व बौद्धिक सम्पदा केन्द्रित क्षेत्रों में भारत की उच्च शिक्षा प्राप्त प्रतिभाएँ ही बड़ी संख्या में उनकी आर्थिक संवृद्धि व सामाजिक सेवाओं में उत्कृष्ट योगदान कर रही है। विश्व की अधिसंख्य बौद्धिक सम्पदा–आधारित शीर्ष कम्पनियों के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (Chief Executive Officer) सहित अधिकांश सामाजिक सेवाओं में आज भी बड़ी संख्या में शीर्ष पदों पर भारतीय ही महती भूमिकायें निर्वाह कर रहे हैं। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, एडोब, कॉग्निजेण्ट, ग्लोबल फाउण्ड्रीज, हर्मन इण्टरनेशनल, नेट–एप, पेप्सीको, मास्टर कार्ड, बर्कशायर हाथवे इन्श्योरेन्स, सॉफ्टबैंक आदि विश्व की अनगिनत व सर्वाधिक प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के मुख्य कार्यपालक अधिकारी भारतीय हैं, जिनके वार्षिक वेतन 900 करोड़ रूपये तक (विश्व में तीसरे स्थान पर सर्वाधिक) भी हैं। जनशक्ति की दृष्टि से केवल आई.बी.एम. में ही, उनके भारत व अमेरिका में कार्यरत 2.12 लाख सॉफ्टवेअर इन्जिनीयर्स में से 1.55 लाख भारतीय हैं, जिनमें से 1.12 लाख भारत में व 0.43 लाख अमेरिका में कार्यरत हैं। विश्व की अधिकांश अग्रणी बौद्धिक सम्पदा आधारित कम्पनियों में भारतीय प्रतिभा की आनुपातिक बहुलता की यही स्थिति है। इस प्रकार आज की सामयिक वैश्विक प्रगति में भारतीयों का योगदान अप्रतिम है।

लेकिन, अब भारतीय प्रतिभा केवल यूरो–अमरीकी प्रगति की साधक ही न बनी रह कर भारत के उत्कर्ष में सापेक्षता या उसकी सहभागिता उत्तरोत्तर अधिक से अधिक बढ़े, इस दृष्टि से हमारे प्रधानमंत्री के मेक इन इण्डिया, मेड बाई इण्डिया, स्किलिंग कार्यक्रमों से जनित कौशल विकास और स्टार्ट अप इण्डिया से स्टैण्ड अप इण्डिया पर्यन्त, स्वावलम्बन के सतत आवाहनों के परिणामस्वरूप अब वह दिन दूर नहीं रह जायेगा, जब हम अपनी प्रतिभावान युवा शक्ति की बौद्धिक ऊर्जा के अभिनिवेश से भारतीय उद्यमों, उत्पादों व ब्राण्डों को विश्व में प्रभावी बनायें और देश के प्राचीन वैभवपूर्ण गौरव को लौटा लायें। इन आवाहनों की प्रेरणा से ही भारत आज विश्व का तीसरा सर्वाधिक स्टार्टअप्स वाला देश बन गया है।

यह वर्ष महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी द्वारा राष्ट्रीय नवोन्मेष हेतु स्थापित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा सत्रारम्भ का भी शताब्दी वर्ष है। ब्रिटिश शासन में भी उनके पावन संकल्प–युक्त प्रयासों का ही परिणाम है कि आज बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एशिया का विशालतम आवासीय

विश्वविद्यालय है। महामना मालवीय जी का लक्ष्य तो बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय को विश्व के विश्वविद्यालयों में सर्वोच्च स्थान पर स्थापित करने का एवं भारत को विश्व गुरू के पद पर पुनर्प्रतिष्ठापित करने का था। इसलिये उन्होंने उस समय के कालजयी वैज्ञानिकों यथा अर्नेस्ट रदरफोर्ड, सर आर्थर एड्डिगंटन व अल्बर्ट आइंस्टीन जैसे अनेक ख्यातनाम विद्वानों तक को बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय में लाने के अथक प्रयास किये थे। उनके आग्रह पर 1940 में अल्बर्ट आइंस्टीन ने तो एक बार बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में आकर पद ग्रहण करना स्वीकार भी कर लिया था। लेकिन, उन दिनों मालवीय जी प्रवास पर थे व उनके बनारस लौटने पर तब की अफसरशाही व लालफीताशाही–जनित लापरवाही के कारण आइन्सटीन का पत्र अत्यंत विलम्ब के बाद उनके सम्मुख रखा गया। तब तक और मालवीय जी द्वारा उनके पत्र का उत्तर उन (आइन्सटीन) तक पहुँचने के पहले ही आइंसटीन अमेरिका में बसने हेतु जहाज में सवार हो गये थे। इसलिये, उन्होंने मालवीय जी से क्षमा याचना कर ली थी। आज हम एक स्वाधीन, सर्वाधिक युवा प्रतिभा वाले और सर्वोच्च आर्थिक वृद्धि दर वाले देश हैं, अतएव महामना मालवीय जी के स्वप्न को साकार करने का सबसे समीचीन अवसर आज है। देश आज उस दिशा में द्रुत गति से अग्रसर है। अन्तरिक्ष विज्ञान से नेनो प्रौद्योगिकी और सूचना प्रौद्योगिकी से जैव प्रौद्योगिकी तक सभी क्षेत्रों में शिक्षा व शोध के क्षेत्र में भारत विश्व के अग्र पंक्ति के देशों में से एक है। देश के विश्वविद्यालयों व उच्च शिक्षा संस्थानों में इन दिनों अनुसंधान, प्रकाशन व पेटेण्ट आवेदनों में आ रही तेजी भी हमें द्रुतगति से विश्व के अग्रणी देशों में स्थापित करने जा रही है।

भारत अपनी क्षमता का उपयोग कर विश्व में क्रमांक एक की अग्रशक्ति बन सकता है। आज यदि देश को विकसित देशों की अग्र–पंक्ति में खड़ा करना है तो स्वदेशी, स्वावलम्बन व समरसता के भाव को अपनाना होगा। देश में भारतीय उद्योगों के उत्पादों व उनमें भी रोजगार प्रधान कुटीर, लघु व मध्यम आकार के उद्यमों को प्राथमिकता देते हुये भारत के व भारतीय उत्पादों को अपनाना व बढ़ावा देना होगा। भारतीय उद्यमों के 'मेड बाई इण्डिया' उत्पादों व ब्राण्डों को लोकप्रिय करना होगा। अपने उद्यम, अपने उत्पाद, अपने ब्राण्ड अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को बढ़ावा देना चाहिये। आज विश्व के औद्योगिक राष्ट्र तो तकनीकी राष्ट्रवाद अर्थात् टेक्नो–नेशनलिज्म (Techno-Nationalism) और इकोनामिक नेशनलिज्म (Economic-Nationalism) अर्थात् आर्थिक राष्ट्रवाद एवं म्बवदवउपब.च्ंजतपवजपेउ अर्थात् उच्च राष्ट्र निष्ठा के माध्यम से तकनीकी व आर्थिक स्वावलम्बन की ओर बढ़ रहे हैं। हमें उस ओर और द्रुतगति से बढ़ना होगा। यदि देश में सब लोग विदेशी ब्राण्डों के स्थान पर स्वदेशी वस्तुओं का ही क्रय व उपभोग करें तो देश के उद्योग प्रगति करेंगे। यह चाहे जूते का पॉलिश व टूथपेस्ट हो अथवा स्कूटर, टी.वी., फ्रिज, कारें व मोबाइल फोन हो, सब में स्वदेशी ब्राण्ड ही अपनाने होंगे। हमें केवल ''मेड इन इण्डिया'' उत्पाद नहीं ''मेड बाई इण्डिया'' उत्पाद खरीदने चाहिये। आज चीन भी उसका डप्4 स्मार्टफोन देश में एसेम्बल कर उस पर ''मेड इन इण्डिया'' लिख रहा है।

भविष्य की रीति–नीति

प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम चार अध्याय में विवेचित हमारे उस प्राचीन गौरव को आज लौटा लाने के लिये संपूर्ण देश व समाज में समरसतापूर्ण एकजुटता परमावश्यक है। इसके साथ ही विदेशी उत्पादों व विदेशी कम्पनियों के बढ़ते प्रभाव को नियंत्रित कर स्वावलम्बी और समावेशी आर्थिक विकास के लिये कृषि उन्नयन, स्वदेशी व स्वावलम्बन की रीति–नीति विकसित करनी होगी। इसी क्रम में चीन से मिल रही आर्थिक चुनौती के सम्बन्ध में भी उचित प्रतिकार की सुदृढ़ नीति विकसित करनी होगी। पारिवारिक जीवन मूल्यों और पर्यावरण संरक्षण के लिये भी जीवन दृष्टि में यथेष्ट परिवर्तन लाना होगा। इन सभी का संक्षिप्त विवेचन अग्रानुसार है :

I. समाज के प्रति समरसतापूर्ण एकात्म दृष्टि व पारिवारिक सौहार्द : देश जो जाति भेद, ऊँच–नीच, अस्पृश्यता और भाषा–प्रान्त के भेदभाव से उबार कर ही देश को एक जुटता पूर्वक आगे बढ़ाया जा सकता है। इस हेतु निम्न दो उपाय परमावश्यक हैं :

(अ) **समाज में समरसता की प्रतिष्ठा** : समर्थ व सशक्त भारत के निर्माण हेतु सम्पूर्ण हिन्दू समाज को जाति भेद, ऊँच–नीच, व अस्पृश्यता को पूरी तरह निर्मूल कर भेदभाव रहित हिन्दू एकता के लिये काम करना होगा। समस्त भारतवासियों के पूर्वज हिन्दू थे। समस्त भारतवासियों का इतिहास साझा व सुख–दुख की सांझी स्मृतियाँ हैं। हमें सम्पूर्ण हिन्दू समाज को एक जन व एक समाज का बोध करा एक समरस हिन्दू समाज और एकजुट व सशक्त हिन्दू राष्ट्र का निर्माण करना होगा। किसी काल में मतान्तरण को विवश हुए भारतवासियों में भी उनके पूर्वजों की पावन स्मृतियों को पुनर्जीवित करना होगा। समस्त देशवासियों को एक समता–मूलक समाज के रूप में एकजुट करने हेतु निम्न करणीय प्रयास हैं :–

1. सबके साथ समान व्यवहार होना चाहिये। जाति, भाषा, लिंग, प्रान्त सम्पन्नता आदि किसी आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिये।
2. जातीय दृष्टि से कोई ऊँचा या नीचा नहीं है। सब हिन्दू सहोदर भाई बहिन हैं। प्राणी मात्र में एक ही परमात्मा का निवास है। अभावग्रस्त व संकट ग्रस्त लोगों का सहयोग व सेवा ही ईश्वर की सेवा है।
3. सभी जातियों के बन्धु–बहिन एक समरस हिन्दू समाज के अंग हैं। परस्पर एक–दूसरे के दुःख–दर्द व प्रसन्नता के पलों में सहभागिता होनी चाहिये।
4. मन्दिर, श्मशान, जलस्रोत, धर्मस्थल, धर्मशालाओं आदि में समान भाव से सबका प्रवेश हो, इस हेतु सभी को प्रयास करने चाहिये। इससे जाति भेद का कोई स्थान नहीं है।
5. अभाव व आपत्ति के समय समाज में सभी को अपने ही परिवार के सदस्य से भी बढ़कर अपना मानते हुये उसमें बिना किसी दाता–भाव के सहभागी बनना।
6. कोई हिन्दू परिजन कही परित्यक्त या अपेक्षित अनुभव नहीं करें। अस्पृश्यता जैसा आसुरी भाव एवं जातीय ऊँच–नीच का भाव एवं उसकी अहमन्यता किंचित मात्र भी नहीं रहे। मानव के प्रति अस्पृश्यता का भाव रखना सबसे बड़ा पाप है। एक हजार वर्ष पूर्व अस्पृश्यता के अंकुर देख कर विशिष्टाद्वैत के आचार्य अभिनव गुप्त ने मनुष्य मात्र को 'हरिजन' कह कर समतामूलक समाज निर्माण का उपदेश किया था। सब लोग एक ही हरि अर्थात परमात्मा की सन्तान है।

7. सभी पंथों के भारतीयों को भी यह स्मरण दिलाकर देश व समाज के प्रति यही निष्ठा जगाना कि, कभी हुये मतान्तरण के पूर्व या उनके पंथ की स्थापना के पूर्व उनके पूर्वज भी हिन्दू ही थे। इसलिये उनमें भी हिन्दुत्व की इस विरासत के प्रति संवेदना उत्पन्न करना और उनमें भी अतीत के हिन्दूपन का बोध जाग्रत होवे और बना रहे। इससे उनमें भी राष्ट्र गौरव का भाव अक्षुण्ण रूप में बना रहे। इससे सभी देशवासियों में मानवीयता पूर्ण सौहार्द विकसित होगा व उसमें स्थिरता आयेगी।

भारत में अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही हिन्दू जीवन पद्धति व हमारी एकात्मता हमें एकता से आबद्ध रखती आयी है व रखेगी। सब हिन्दू उत्कृष्ट परम्परा युक्त एक संगठित राष्ट्र है। संघ का लक्ष्य हिन्दुओं का कोई संगठन खड़ा करना नहीं, वरन समस्त हिन्दू को संगठित करना है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अबाल–वृद्ध व मातृशक्ति पर्यन्त बिना किसी विभेद के पारस्परिक सद्भाव, सम्मान व एकजुटतापूर्ण जीवन जीयें।

आज, अब कहीं पर स्वल्प मात्रा में भी कोई हिन्दू कभी भी मानव–मानव में भेद नहीं करे। सम्पूर्ण हिन्दू समाज पूर्ण समरस होकर अभेद्य एकता युक्त हिन्दू राष्ट्र का अंगभूत बने, यह सर्वाधिक आवश्यक है। हम सभी देशवासियों का यही परम लक्ष्य होना अनिवार्य है।

(ब) पारिवारिक सौहार्द व सामाजिक संस्कार :

आज के चलचित्रों (फिल्मों), धारावाहिकों एवं तथाकथित प्रगतिशील साहित्य में पारिवारीक विघटन, अलगाववाद, असहिष्णु संवादों के प्रभाव से समाज को बचाना एवं इन सभी में नैतिकता एवं हमारे सांस्कतिक मूल्यों को प्रतिष्ठापित करना होगा। अपने संयुक्त परिवार में सम्पूरकता का भाव सकारात्मक संवाद, सहकारिता पारस्परिक स्नेह, कृतज्ञता का भाव, सहयोग वृत्ति, बड़ों का सम्मान, परस्पर दुःख–सुख में सहभाग का होना ही हिन्दुत्व की कसौटी है, व मानवीयता की कसौटी है। प्रत्येक गृहस्थ व्यक्ति चींटी जैसे क्षुद्र प्राणी से लेकर पशु–पक्षी तक व अतिथि से लेकर अनजान अभ्यागत तक सभी की आवश्यकतायें पूरी करके ही स्वयं भोजन करने का विधान है। इसका ध्येय बोध यही है कि हम परिवार व समाज के अधिकाधिक हित साधन में संलग्न रहें।

II. परिमित उपभोग व पर्यावरण के प्रति एकात्मकता मूलक चिन्तन :

आज की विकास उपभोग आधारित परिभाषा के कारण सभी देश व व्यक्ति अधिकाधिक उपभोग की ओर बढ़ रहे हैं। इससे पर्यावरण की अपूरणीय क्षति हो रही है। बढ़ते उपभोग से हो रहे पर्यावरण विनाश को देखते हुये जलवायु परिवर्तन पर कार्यरत अन्तर्राष्ट्रीय पैनल की चेतावनी आज विश्व के संपूर्ण जनजीवन और समस्त जीव सृष्टि के लिये गंभीर संकटों के प्रति आगह करने वाली है। विश्व के 120 देशों के प्रतिनिधि के रूप में कार्यरत इण्टर गर्वमेन्टल पैनल ऑन क्लाइमेट चेन्ज, ने विश्व के बढ़ते तापमान, पिघलते हिमनदों और बढते सामुद्रिक जलस्तर के बारे में गंभीर चेतावनी दी है। विश्व के बढते तापमान के कारण दक्षिणी गोलार्द्ध में कृषि फसलों के जल्दी पक जाने से फसलों की उत्पादकता में भारी गिरावट आ सकती है और भारत सहित दक्षिणी गोलार्द्ध के कई देशों में खाद्य संकट उपजने की संभावनाएँ बढ़ जायेंगी। इस अन्तर्राष्ट्रीय पैनल के ताजा प्रतिवेदन के अनुसार पिछले 50 वर्षों में पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध में बर्फ की मात्रा आधी रह गई है। ऐसे भी अनुमान है कि आगामी 20 से 25 वर्षो में तापमान इसी तरह बढ़ता रहा तो, हिमालय के हिमनद पिघल सकते हैं और गंगा नदी मौसमी नदी में बदल सकती है। यह भी उल्लेखनीय है कि जहाँ 20 वीं शताब्दी में वातावरण के तापमान में वृद्धि के कारण समुद्र का जलस्तर प्रतिवर्ष 1.8 मि.मी. बढ़ रहा था, वहीं हाल के वर्षों में समुद्र का जलस्तर अब 3.2 मि.मी. वार्षिक की दर से बढ़ रहा है। बढ़ते तापमान से वायु मण्डल की नमी या आर्द्रता को धारण करने की क्षमता बढ़ जाती है। प्रति एक डिग्री तापमान वृद्धि से वायुमण्डल में आर्द्रता 7 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। हाल ही में उड़ीसा व आन्ध्र प्रदेश में आये हुए चक्रवातों से लेकर अनेक पर्यावरणीय आपदाऐं इस बढ़ते हुए तापमान का ही परिणाम है।

वैश्विक वातावरण में बढ़ रही इस विषमता के परिणामस्वरूप जन जीवन व सम्पूर्ण जीव सृष्टि के लिये उपजते संकटों के प्रति आज सारा विश्व गम्भीर रूप से चिन्ताग्रस्त है। इन्हीं चिन्ताओं के चलते दिसम्बर 2009 में विश्व के 192 राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने कोपेनहेगन में मिलकर समाधान खोजने का भी प्रयत्न किया था। लेकिन आधुनिक विकास में पिछड़ जाने के भय से दो सप्ताह चला यह सम्मेलन भी लगभग विफल रहा। उसके बाद दोहा से लेकर वारसा तक में हुये संयुक्त राष्ट्र के वातावरण परिवर्तन पर हो रहे आधारभूत सम्मेलनों (यू.एन., फ्रेमवर्क कन्वेशन ऑन क्लाइमेट चेन्ज) में कोई सार्थक समझौता नहीं हो पाया है। अनियंत्रित उपभोग एवं उत्पादन केन्द्रित आर्थिक वृद्धि की होड़ में, बढ़ रहे ऊर्जा व अन्य संसाधनों के उपभोग से, आज जल, थल एवं वायु सभी गम्भीर रूप से प्रदूषित हो रहे हैं एवं धरती पर विद्यमान अधिकांश प्राकृतिक संसाधन आगामी चालीस से सत्तर वर्षो में चुकते चले जायेंगे। कार्बन डाइआक्साइड सहित विविध ग्रीन हाउस गैसों के बढ़ते उत्सर्जन से वातावरण का तापमान बढ़ रहा है, श्वसन तंत्र सम्बन्धी रोग बढ़ रहे हैं एवं पृथ्वी की रक्षा कवच रूपी ओजोन की परत का क्षरण हो रहा है। वायुमण्डल की ओजोन परत के क्षरण से सूर्य की पराबैंगनी किरणें वातावरण के तापमान को और तेजी से बढ़ायेंगी और चर्म कैंसर सहित कई नवीन रोगों को जन्म देंगी। इस बढ़ते तापमान से गलते हिमनद व पिघलती ध्रुवीय हिम परत एक ओर तो समुद्र के जल स्तर को इतना बढ़ा देंगी कि कई नगर एवं द्वीप जल मग्न हो जायेंगे। दूसरी ओर हिमनदों के पिघल जाने से गंगा जैसी सदानीरा नदियाँ सूखती चली जायेंगी और उच्च तापमान पर, फसलों के अल्पावधि में ही पक जाने से उनकी उपज घटेगी और इससे गम्भीर खाद्य संकट उत्पन्न होगा।

गम्भीर प्रदूषण के कारण विगत पूरी शताब्दी (1901 से 2000) की तुलना में पिछले एक दशक (2005–2015) की ग्रीष्म ऋतु, सर्वाधिक गरम रही है। वर्षा में अनियमितता जनित क्रमिक अकाल व बाढ़ें, समुद्री तूफानों की बढ़ती आवृत्ति व व्यापकता, महासागरों से लेकर छोटे–छोटे जलाशयों एवं भू गर्भीय जल पर्यन्त सभी जल संसाधनों का बढ़ता प्रदूषण, रासायनिक कृषि से बंजर होती भूमि एवं त्वरित निर्वसनीकरण आदि सम्पूर्ण जीव सृष्टि के अस्तित्व के लिये चुनौती बनते जा रहे हैं। विगत 50 वर्षों में 120 करोड़ हैक्टैर कृषि योग्य भूमि, जो पृथ्वी के कुल धरातलीय क्षेत्रफल का लगभग 9 प्रतिशत है, ऐसी बंजर भूमि में बदल गयी है जिसमें अब किसान के लिये खेती करना सम्भव नहीं रहा है। अकेले 1990–95 के बीच छः वर्ष की अवधि में ही 5.6 करोड़ हैक्टैर क्षेत्रों का निर्वसनीकरण हुआ है। आज विकासशील देशों में 80 करोड़ व विकसित देशों में 3.4 करोड़ लोग खाद्य असुरक्षा में जूझ रहे हैं। भारत में भी 34 करोड़ लोग आज खाद्य संकट से ग्रस्त हैं। विगत 25 वर्षो में प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता में भी 30 प्रतिशत की कमी आयी है और वर्ष 2050 तक विश्व की 42 प्रतिशत जनसंख्या जल की अपर्याप्त उपलब्धि की शिकार हो जायेगी। विश्व के कुछ प्रमुख देशों में औसत जल उपलब्धि किस प्रकार घटेगी यह तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट है। इस घटती जल उपलब्धि से ही कृषि, उद्योग सहित सभी प्रमुख आवश्यकताओं की पूर्ति होनी है।

तालिका क्रमांक 1
विश्व के प्रमुख देशों में प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता

देश	घटती प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता		
	वर्ष 1975	वर्ष 2000	वर्ष 2025
भारत	3100	1900	1400
चीन	3000	2200	1900
पाकिस्तान	5600	2700	1600
इंग्लैण्ड	1300	1200	1200
अमरीका	11300	8900	7600
बांग्लादेश	15800	9400	6800

विश्व में कुल 140 करोड़ घन किमी जल है इसमें से केवल 2.7 प्रतिशत या 3.7 करोड़ घन किमी ही शुद्ध जल है, जिसका भी अधिकांश भाग ध्रुवीय क्षेत्र या गहरे जल स्त्रोतों के रूप में है। भारत की जनसंख्या विश्व की 15 प्रतिशत है, लेकिन हमारे शुद्ध जल के स्त्रोत विश्व के शुद्ध जल के 4 प्रतिशत ही है। भारत की वार्षिक जल उपलब्धता 40 करोड़ हैक्टैर मीटर है। इसमें भी लगभग 7–10 करोड़ हैक्टैर मीटर हिमपात से प्राप्त होता है, और 30 करोड़ हैक्टैर मीटर मानसून से प्राप्त होता है। एक ओर बढ़ती उष्मा से जिस गति से हिमालय के हिमनद पिघल रहे हैं, हिम–जल के स्त्रोत घटते जायेंगे। कुछ वैज्ञानिक आकलन ऐसे भी हैं, कि 2035 तक ये हिमनद पूरी तरह गल सकते हैं। ऐसे में गंगा व यमुना जैसी सदा नीरा नदियाँ वर्षाकाल के बाद सूख सकती हैं, एवं देश के जल स्त्रोत का एक चौथाई चुक सकता है। देश के कुल जल संसाधनों का 83 प्रतिशत सिंचाई में प्रयुक्त होता है।

अनियन्त्रित उपभोग पर अंकुश : आज पर्यावरण विनाश का प्रमुख कारण, विकास की परिभाषा अधिकतम उत्पादन व उपभोग पर आधारित है। यथा जिस देश में प्रति व्यक्ति ऊर्जा व खनिज सहित विविध उत्पादों का जितना अधिक उत्पादन व उपभोग है, उसे उतना ही विकसित माना जाता है, अर्थात् जो देश इन सबके उत्पादन व उपभोग में सर्वाधिक पर्यावरण विनाश करता है, वही सर्वाधिक विकसित माना जाता है। आज अमेरिका में प्रति 1000 व्यक्ति पर 765 व यूरोप में 300 वाहन हैं। चीन में 2005 तक प्रति हजार व्यक्तियों पर 24 कारें थी जो आज बढ़कर 40 हो गयीं हैं। 2010 के अन्त तक चीन अब विश्व का सबसे बड़ा कार उत्पादक व उपभोग वाला देश भी बन गया है। बढ़ते वैश्विक तापमान का मुख्य कारण ग्रीन हाउस गैसों का बढ़ता उत्सर्जन है। चीन आज सर्वाधिक ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन करता है। अमेरिका चीन के बाद है, मगर चीन का उत्सर्जन अमेरिका के दुगने से भी अधिक है।

वस्तुतः जिस देश का ऊर्जा व अन्य संसाधनों का जितना अधिक उपभोग है, वह उतना ही अधिक पर्यावरण विनाशकर्त्ता है। इसलिये यदि प्रति व्यक्ति विद्युत उपभोग की दृष्टि से भी देखें तो भारत का प्रति व्यक्ति विद्युत उपभोग मात्र 631 किलोवाट हावर (Kwh) है। जबकि कनाडा, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, जापान, फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैण्ड, रूस व इटली का प्रति व्यक्ति विद्युत उपभोग क्रमशः 17,179 Kwh, 13ए338 Kwh, 11,126 Kwh, 8076 Kwh, 7689 Kwh, 7030 Kwh, 6206 Kwh, 5642 Kwh, व 17,179 Kwh हैं। विद्युत उत्पादन भी एक प्रमुख प्रदूषणकारी क्रिया है। इसलिये प्रत्येक सामर्थ्यवान व्यक्ति द्वारा अपना उपभोग न्यूनतम व नवकरणीय (Renewable) संसाधनों तक ही परिमित करने से पर्यावरण संरक्षण सम्भव है। आज जो व्यक्ति व देश आर्थिक दृष्टि से जितने सम्पन्न हैं, वे उतना ही अधिक संसाधनों का उपभोग कर वातावरण का विना"ा कर रहे हैं। साधनों के उपभोग में यदि विश्व के 20 प्रतिशत धनाढ्यतम व निर्धतनम व्यक्तियों के बीच के अन्तर पर एक दृष्टिपात करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि सम्पन्नतम वर्ग का अनियन्त्रित उपभोग ही आज पर्यावरण के विनाश का कारण है।

आर्थिक विषमता का निवारण : विश्व की धनाढ्यतम 20 प्रतिशत जनसंख्या आज गैर सरकारी क्षेत्र के कुल उपभोग का 87 प्रतिशत उपभोग कर रही है। वहीं विश्व के 20 प्रतिशत निर्धनतम लोग गैर सरकारी क्षेत्र के कुल उपभोग का मात्र 1.32 प्रतिशत ही उपभोग कर रहे हैं। विश्व की 20 प्रतिशत सर्वाधिक धनी जनसंख्या कुल ऊर्जा का 56 प्रतिशत व निर्धनतम 20 प्रतिशत केवल 4 प्रतिशत उपभोग कर रही है। विश्व के कुल कागज उत्पादन का 84 प्रतिशत विश्व की 20 प्रतिशत धनाढ्यतम व मात्र 1.3 प्रतिशत का 20 प्रतिशत निर्धनतम जनसंख्या उपभोग कर रही है। कारों के उपयोग की दृश्टि से 86 प्रतिशत कारें 20 प्रतिशत सम्पन्नतम लोगों के पास व 1.4 प्रतिशत कारें विश्व के 20 प्रतिशत निर्धनतम लोगों के पास हैं। उपभोग में यह विषमता विगत 4 दशकों में बढ़ती ही चली गयी है। विश्व के सबसे धनी 20 प्रतिशत व सबसे निर्धन 20 प्रतिशत के बीच उपभोग व्यय अनुपात 1970 में 30:1 था, जो बढ़कर 77:1 हो गया एवं नव उदारवादी आर्थिक नीतियों के चलते धनी व निर्धन के बीच यह खाई बढ़ती ही जा रही है। इसलिये वैश्विक प्रदूषण की दृष्टि से भी कार्बन डाई आक्साइड के उत्सर्जन की दृष्टि से 56 प्रतिशत उत्सर्जन विश्व के सबसे धनी 20 प्रतिशत का व 3.1 प्रतिशत उत्सर्जन सबसे निर्धन 20 प्रतिशत का है।

प्रति व्यक्ति उत्पादन व प्रति व्यक्ति उपभोग आधारित विकास की आधुनिक परिभाषाओं के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति व राष्ट्र में अपने उत्पादन व उपभोग को अधिकतम करने की स्पर्द्धा, पर्यावरण के इस क्षरण को अधिकाधिक विषमता की ओर ही ले जायेगी। प्रति व्यक्ति उपभोग व उत्पादन में वृद्धि के इस स्पर्द्धात्मक दौर में जहाँ एक ओर तो देश व विश्व के अधिकांश खनिज संसाधन आगामी 30 से 60 वर्षों के चुक ही जायेंगे, सारे सघन वन विरल होते–होते नाम मात्र के रह जायेंगे। पर्वतीय क्षेत्रों की मिट्टी की परत नष्ट होकर वे सभी क्षेत्र स्थायी रूप में हरीतिमा विहीन हो जायेंगे। रासायनिक कृषि से कृषि योग्य भूमि बंजर होती चली जायेगी। वायुमण्डल इतना विशाक्त हो जायेगा कि बिना मास्क के खुले में चलना–फिरना कठिन हो सकता है। कीटनाशकों व रसायनों से भू–गर्भीय जल सहित सारे जल स्त्रोत इतने प्रदूषित हो जायेंगे कि रिवर्स ऑस्मोसिस से फिल्टर किये बिना जल पीना सम्भव नहीं रह जायेगा। आगामी पीढ़ियों के लिये हम न तो कोई संसाधन छोड़ कर जायेंगे एवं नहीं ही उनके लिये यह धरती निवास व जीवन निर्वाह के लिये वैसी ही निरापद रहेगी, जैसी हमें हमारे पूर्वजों से हमें प्राप्त हुयी है।

धारणक्षम विकास के लिये परिमित या धारणक्षम उपभोग (Sustainable Development) : धारणक्षम या टिकाऊ विकास (Sustainable Development) हेतु आवश्यक है कि हम अपने उपभोग को ''धारणक्षम उपभोग (Sustainable Consumption) की सीमा में परिमित करे, अर्थात् हम उपभोग को इस प्रकार परिमित करें कि, समस्त संसाधनों की उपलब्धी अनन्तकाल तक भावी पीढ़ियों के लिये सुलभ रहे। इसे सुनिश्चित करने हेतु हमें स्व. पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित विकास के ''एकात्म मानव दर्शन'' के विचार को अपनाना होगा।

धारणक्षम उपभोग या संधारणीय उपभोग (Sustainable Consumption) : यदि हम अपना प्रति व्यक्ति उपभोग बढ़ाते चले गये और उसमें भी अ–नवकरणीय (non-renewable) संसाधनों का ही उपभोग करते चले गये तो यह अधिक समय तक नहीं चल पायेगा। इसी प्रकार नवकरणीय साधनों का भी उनके 'नवकरण की गति' (Rate of renewal) से अधिक गति से किया तो वे भी नष्ट हो जायेंगे। यथा ताम्बा, लोहा, सीसा, जस्ता, कोयला, पेट्रोलियम व अन्य खनिज आदि अ–नवकरणीय हैं। जल, जल विद्युत, वायुजनित ऊर्जा, वनस्पति जगत आदि नवकरणीय है जो पुनः प्राप्त हो सकते हैं। इन नवकरणीय साधनों का उपभोग भी उनके पुनर्जनन की गति से अल्प या धीमी गति से करने पर ही वे भावी पीढ़ियों के लिये सुलभ रहेंगे। आज विश्व में वाहनों व अन्य धात्विक उत्पादों का जो प्रति व्यक्ति उपभोग है उसकी पूर्ति प्रति व्यक्ति 12–15 टन वार्षिक टन की दर से भू–गार्भिक खनिजों का 'खनन व प्रविधेयन (Mining and Processing) से ही होती है। अब यदि हम जितना इनका उपभोग बढ़ायेंगे उतनी ही धरती जर्जर होकर अन्ततः संसाधन विहीन होती चली जायेगी। चीन में 2005 में प्रति एक हजार जनसंख्या पर 24 कारें थीं अब 40 हो गयी हैं। चीन आज विश्व का सबसे बड़ा कार उत्पादक देश बनने जा रहा हैं। यूरोप में प्रति 1000 जनसंख्या पर 300 व अमेरिका में 765 वाहन हैं। क्या पूरे शेष विश्व में 100 या 50 कार प्रति हजार छोड़ 20 कार प्रति हजार की संख्या भी धारणक्षम हो सकेंगी? इसी प्रकार अन्य उत्पादों का भी विचार करिये। इस प्रकार अ–नवकरणीय (Non-renewable) साधनों के प्रति व्यक्ति उपभोग में प्रत्येक वृद्धि हमारे कल को उजाड़ने वाली ही है। नवकरणीय साधनों के उपभोग में वृद्धि की वर्तमान दर भी विश्व की इतनी अधिक है कि उनका पुनर्जनन सम्भव नहीं होने से हमारे भावी विकास को चौपट करेगी। आज विश्व में कई पादप व जन्तु प्रजातियां भी लुप्त हो गयी हैं।

इस सम्पूर्ण विनाशकारी विकास क्रम का आभास हमारे मनीषियों को लाखों वर्ष पूर्व में ही था। इसलिये ईशावास्योपनिशद में कहा है कि यह सम्पूर्ण विश्व ''परब्रह्म परमे''वर से व्याप्त है, इसका त्याग पूर्वक भोग करो''। यथाः

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्व स्विद्धनम।।

यदि हम अकारण विद्युत का अपव्यय करते हैं, तो कहीं न कहीं ताप विद्युत गृह में कोयले का दहन होगा, कार्बनडाइ आक्साइड व अन्य गैसें वायुमण्डल को प्रदूषित करेंगी और कोयले के भण्डार चुकेंगे। प्रत्येक वस्तु या सेवा के उपभोग में हमें यही देखना होगा कि इससे पर्यावरण की कितनी क्षति हो रही है? हम कितने ''कार्बन फूट प्रिण्ट'' या ''कार्बन पग चिन्ह'' या ''प्रदूषक पग चिन्ह'' छोड़ रहे हैं। इसलिये परिमित उपभोग या धारणक्षम उपभोग (Sustainable Development) पर विचार आवश्यक है।

III. समन्वित कृषि विकास हेतु समुचित निवेश व अनुसंधान संवर्द्धन (Research and Investment for Integrated Agriculture Development) :

विश्व की सर्वाधिक कृषि योग्य भूमि, सर्वाधिक पशुधन, और सर्वाधिक विविधतापूर्ण 127 प्रकार के कृषि जलवायु क्षेत्र भारत के पास हैं। इसे ध्यान में रखते हुये ही प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि के लिये 15 प्रतिशत और कृषि व सिंचाई पर संयुक्त रूप से 31 प्रतिशत निवेश (Investment) का प्रावधान रखा गया जो उसके बाद घटता ही गया है। प्रथम पंचवर्षीय योजना काल के बाद से ही कृषि में सार्वजनिक की उपेक्षा से आज देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान 50 प्रतिशत से घटकर 14 प्रतिशत रहा गया है और हमारी प्रति एकड़ उत्पादकता अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के 1/3 से भी न्यून है। देश के पास विश्व की सर्वाधिक 16 करोड़ हैक्टैर कृषि योग्य भूमि एवं विश्व का सर्वाधिक 5.95 करोड़ हैक्टैर, सिंचित क्षेत्रफल है। देश को प्रतिवर्ष हिमपात व वर्षा से कुल 40 करोड़ हैक्टैर मीटर जल प्राप्त होता है। उसका अनुकूलतम उपयोग करके हम देश की सम्पूर्ण कृषि योग्य भूमि को सिंचित बना सकते हैं। ऐसे में हम अपने कृषि उत्पादन को चतुर्गुणित कर विश्व की दो तिहाई (450 करोड़) जनसंख्या की खाद्य आपूर्ति करने मे सक्षम बन विश्व की क्रमांक एक खाद्य शक्ति (Food Power) बन सकते हैं। किसान की आय दो गुनी भी हो जाने पर वह उस आय से बाजार से विविध उत्पादकीय उद्योगों का माल प्रचुरता में खरीदेगा– यथा बर्तन, पंखा, फ्रिज, स्कूटर, टी.वी., वस्त्रादि सम्मिलित है। उससे देश में औद्योगिक, उत्पादन, रोजगार, आय, सरकार का कर राजस्व आदि सभी बढ़ेगें और विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। आज देश को आधी से अधिक जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। कृषि उपज चार गुनी होने पर इतनी विशाल जनसंख्या की क्रय क्षमता भी चार गुनी हो जायेगी।

कृषि में जहाँ प्रथम तीन पंचवर्षीय योजनाओं में कुल निवेश में सार्वजनिक निवेश का अनुपात क्रमशः 50 प्रतिशत, 50 प्रतिशत व 62 प्रतिशत रहा है, वह अब घट कर मात्र 17.6 प्रतिशत रह गया है। कृषि में सार्वजनिक निवेश जहाँ 1976–80 के बीच हमारे GDP का 3.4 प्रतिशत रहा है, वह घट कर अब 1.8 रह गया है। कृषि अनुसंधान पर हमारा निवेश हमारे कृषि क्षेत्र के ळक्च् का मात्र 0.7 प्रतिशत है इसलिये कृषि उत्पादकता में हम विश्व के उच्च कृषि उत्पादकता वाले देशों के 1/6 पीछे हैं (देखें तालिका – 1)। इस अन्तर को पार कर हम विश्व की कृषि शक्ति बन सकते हैं।

Table 1. Productivity Gap in Agriculture of India in World

		Average yield, India (2010)	World's most productive farms (2010)[47]	
Rank	Produce	(tonnes per hectare)[50]	(tonnes per hectare)[51]	Country
1	Rice	3.3	10.8	Australia
2	Cow milk	1.2	10.3	Israel
3	Wheat	2.8	8.9	Netherlands
4	Mangoes	6.3	40.6	Cape Verde
5	Sugar cane	66	125	Peru
6	Bananas	37.8	59.3	Indonesia
7	Cotton	1.6	4.6	Israel
8	Fresh Vegetables	13.4	76.8	USA
9	Potatoes	19.9	44.3	USA
10	Tomatoes	19.3	524.9	Belgium
11	Soyabean	1.1	3.7	Turkey
12	Onions	16.6	67.3	Ireland
13	Chick peas	0.9	2.8	China
14	Okra	7.6	23.9	Israel
15	Beans	1.1	5.5	Nicaragua

इसके अतिरिक्त उत्पादकता में विविध राज्यों में भारी अन्तर है (तालिका 2 व 3)। उचित प्रयत्नों से इसे ठीक किया जा सकता है। हमारे कुल कृषि योग्य क्षेत्रफल का लगभग 2/3 क्षेत्रफल असिंचित है और सिंचित व असिंचित क्षेत्र की उत्पादकता में भी 4:1 से भी अधिक का अन्तर है हम अपने उपलब्ध जल संसाधनों से सिंचित क्षेत्र को दो गुना अत्यन्त सहजता से बढ़ा सकते हैं। हम नदियों में बह कर जाने वाले 20 करोड़ हैक्टेर मीटर पानी में से केवल 2.5 करोड़ हैक्टैर मीटर पानी का ही उपयोग कर पा रहे हैं।

Table 2. Yield gap within the Country between Irrigated and Rainfed Areas

	Irrigated			Rainfed			
State	Paddy	Wheat	Mustard	Maize	Bajra	Jowar	Groundnut
Andhra Pradesh	123	23			191	231	83
Assam	175	46	144				
Bihar	162	74	174	195			25
Gujrat	60	43	124	99	191	541	1
Harayan	55	25	1	3	85		
HP	49	163	420	11			
Karnataka	132	28			258	292	49
Kerala	166						
MP	135	73	89	105	165	231	55
Maharashtra	140	102					
Orissa	115	66	63	153			60
Punjab	87	40	25	6			
Rajasthan	27	82	130	114	309		106
Tamil nadu	61				163	479	62
Uttar Pradesh	101	93	164	106	92		106
West Bengal	90	19	131	11			

Table 3 : Yield Differences in Staes.

Crop [63]	Average farm yield in Bihar	Average farm yield in Karnataka	Average farm yield in Punjab
	kilogram per hectare	kilogram per hectare	kilogram per hectare
Wheat	2020	unknown	3880
Rice	1370	2380	3130
Pulses	610	470	820
Oil seeds	620	680	1200
Sugarcane	45510	79560	65300

इसलिये हम ठीक से प्रयास करें तो देश के उपलब्ध जल संसाधनों से हम सम्पूर्ण कृषि योग्य क्षेत्र के 90 प्रतिशत भाग को सिंचित कर सकते हैं (देखें तालिका–4)। यदि हम सिंचाई के साधनों के विकास के साथ ही बारानी कृषि (वर्षा जल आधारित कृषि) पद्धतियों व प्रजातियों को बढ़ावा देना प्रारम्भ कर देंगे और अकाल रोधी प्रजातियों (Drought Resistant Verieties) का बढ़ावा देंगे तो कृषि की उपज को 2–3 गुना कर लेना हमारे लिए सहज हो जायेगा। इससे हम देश की आधी जनसंख्या जो कृषि पर निर्भर है, उसकी आय व क्रय क्षमता को बढ़ा सकेंगे।

TABLE 4 : LAND AND WATER RESOURCES OF INDIA[1]

PARTICULARS	QUANTITY
Geographical Area of India	329 million ha.
Flood Prone Area	40 million ha.
Ultimate Irrigation Potential of the Country	140 million ha.
Total Cultivable Land Area	184 million ha.
Net Irrigated Area	50 million ha.
Natural Runoff (Surface Water and Ground Water)	1869 Cubic km.
Estimated Utilisable Surface Water Potential	690 Cubic km.
Groundwater Resource	432 Cubic km.
Available Groundwater resource for Irrigation	361 Cubic km.
Net Utilisable Groundwater resource for irrigation	325 Cubic km.

Source: National Institute of Hydrology Website: www.nih.ernet.in;
[1]Water Resource India, National Institute of Hydrology.

कृषि विकास हेतु आवश्यक कदम :

अतएव देश के कृषि क्षेत्र के GDP को, उचित व समेकित (Integrated) प्रयासों से मध्यमावधि (Medium term) में 3 से 4 गुना किया जाना असम्भव नहीं है। हमारे अधिकतम उत्पादकता के निष्पादन स्तर तक शेष क्षेत्रों को ही ले आया जाये तब भी यह सम्भव है। इस हेतु निम्न कार्य करणीय हैं :

(1) सिंचित क्षेत्रफल को वर्तमान 6 करोड़ हैक्टैर से 10 करोड़ हैक्टैर तक ले जाया जाये (हमारा कुल कृषि योग्य क्षेत्रफल 18.4 करोड़ हैक्टेर व 14 करोड़ हैक्टैर की सिंचाई जितनी जल राशि देश में सुलभ है।

(2) उच्च उत्पादन हेतु आवश्यक प्रौद्योगिकी को प्रयोगशालाओं से खेतों तक ले जाने की रीति–नीति का विकास। अल्प उत्पादकता वाले राज्यों को देश की शीर्ष उत्पादकता के स्तर तक लाना। सम्पूर्ण राष्ट्रीय उत्पादकता के स्तर को हमारे परीक्षणात्मक कीर्त्तिमान स्तर तक लाने व परीक्षणात्मक उत्पादन में प्रयुक्त तकनीक को खेतों तक ले जाने हेतु कृषि में आवश्यक सार्वजनिक या शासकीय निवेश।

(3) कृषि अनुसंधान पर व्यय कृषि GDP के 0.7 प्रतिशत से बढ़ाकर 1.2 प्रतिशत तक ले जा कर उत्पादकता वृद्धि के प्रयास।

(4) जैविक कृषि, उसके उत्पादों के विपणन, अनुसंधान Branding व Grading आदि के लिये एक Special Purpose Vehicle (SPV) का विकास। यथा केवल देशी नस्ल के A2 श्रेणी के दूध के उत्पादों की Branding से ही पशुपालन में व्यापक परिवर्तन सम्भव है।

(5) उचित भण्डारण व विपणन के लिये व्यावहारिक विकल्पों का विकास करना। इसमें e-marketing से क्रान्तिकारी परिवर्तन सम्भव है।

(6) बारानी कृषि की उपलब्ध तकनीकें व उसके लिये देश में विकसित प्रजातियाँ भी अभी किसानों तक नहीं पहुँची हैं। उनसे ही वर्षा पर निर्भर क्षेत्र में कृषित क्षेत्र व उपज 2 गुनी की जा सकती है।

(7) कृषि बीमा व कृषि ऋण की पहुंच में सकल परिवर्तन (Total reforms) करना आवश्यक है।

(8) कृषि विकास की दर में अब मुख्य योगदान गैर फसली कृषि अर्थात बागवानी, फ्लोरीकल्चर, मछली पालन व डेयरी क्षेत्र का ही रह गया है। इसलिये खाद्य सुरक्षार्थ फसली क्षेत्र (Crop Sector) के Revival की भी विशेष पहल अनिवार्य है।

IV. स्वदेशी व स्वावलम्बन का मार्ग

विगत 25 वर्षों में 1991 से वैश्वीकरण के नाम पर आयात व विदेशी निवेश प्रोत्साहन की नीतियों के चलते देश का विदेश व्यापार घाटा 1991 के 2.6 अरब डालर से बढ़ कर आज 2015–16 में 116 अरब डालर तक पहुँच गया है। इसके साथ ही विदेशी निवेश पर लाभांश के रूप में बड़ी राशि के देश से बाहर जाने के कारण निवेश आय का घाटा (Investment Income Deficit) 25 अरब डालर हो गया है। संभावित भुगतान घाटे इन घाटों से रूपये की कीमत को समय–समय पर गिरने से बचाने के लिये हमारे लिये विदेशी निवेश पर पराश्रयता मजबूरी की सीमा तक बढ़ जाती है। उदारीकरण के बाद भी देश में ब्याज की दरें बहुत ऊँची होने से देश के उद्यम घरेलू बाजार में भी और निर्यात बाजारों में भी स्पर्द्धा का सामना नहीं, कर पाते हैं। इस कारण हम न तो निर्यात बढ़ा कर व्यापार घाटे को नियंत्रित कर पा रहे हैं और न ही घरेलू बाजारो में विदेशी आयातित वस्तुओं का सामना कर पा रहे हैं। आज विश्व के 9 देशों में ब्याज दरें ऋणात्मक हैं और शेष प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शून्य के सन्निकट है।

ऐसे में आज वैश्विक विनिर्माणी उत्पादन (World Manufacturing) में भारत का योगदान मात्र 2.1 प्रतिशत ही रह गया है। वहीं चीन का योगदान आज 22 प्रतिशत है। हमारे इस 2.1 प्रतिशत योगदान में भी दो तिहाई विदेशी कम्पनियों का है। इस प्रकार देश के घरेलू स्वामित्व के उद्यमों का वैश्विक विनिर्माणी उत्पादन में योगदान 1 प्रतिशत से भी स्वल्प हो जाता है। ऐसे में हमारे लिये स्वदेशी, आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा व आर्थिक राष्ट्रवाद के सिद्धान्तों का अनुसरण करना आवश्यक हो जाता है। स्वदेशी व आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा या आर्थिक राष्ट्रवाद के कुछ विदेशों के उदाहरण निम्नानुसार हैं :–

1. **जापान में आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा** : औद्योगिक देशों में आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा या स्वदेशी को भारी प्राथमिकता दी जा रही है। जापान उनमें अग्रणी है। पूर्वी विश्व में अमेरीकी कारें और अमेरिकी केलिफोर्नियन चावल से लेकर अनेक कृषि पदार्थ अत्यन्त लोकप्रिय हैं। लेकिन जापान में केवल जापानी उत्पाद ही बिकतें हैं। केलिफोर्निया का अमेरिकी चावल जापानी चावल की तुलना में स्वाद में अत्यन्त उत्कृष्ट है वह और जापानी चावल की तुलना में अल्पमूल्य में जापान में उपलब्ध हो जाता है। तब भी जापानी उपभोक्ता यह सोचकर जापानी चावल को प्राथमिकता देते है कि कहीं जापान में चावल की खेती घट न जाये और जापान की खाद्य सुरक्षा संकट में न पड़ जाये।

जापानी कारें पूरे विश्व में बिकती हैं। जापान में अमेरिकी व अन्य विदेशी कारें नगण्य हैं। मुख्य धारा का कार खरीददार जापानी कारें ही खरीदता है। केवल संग्रह का शौकीन क्रेता ही विदेशी कारें खरीदता है। जापान के कारों के बाजार में 96 प्रतिशत बिक्री जापानी कारों की ही है। जापान में अमेरिकी कारों पर कोई आयात शुल्क नहीं है, जबकि अमेरिका में जापानी कारों पर 2.5 प्रतिशत का आयात शुल्क है। जापान में अमेरिकी कारों पर कोई आयात शुल्क न होने पर भी वहाँ जनता द्वारा केवल स्वदेशी कारें ही खरीदना उच्च आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा का प्रमाण है। 1980 से ही जापान पर अमेरिकी दबाव रहा है, चावल, सन्तरें, कारें आदि सभी उत्पादों के लिये जापानी बाजार खोलने के लिये। व्यापारिक तनाव व आर्थिक संघर्ष से बचने के लिये जापानी सरकार ने चाहे सभी अमेरिकी आयातों को खुला कर दिया, लेकिन फिर भी जापान की जनता अपनी आर्थिक राष्ट्र निष्ठा व स्वदेशी के भाव के चलते स्व–प्रेरणा से ही केवल स्वदेशी उत्पादों को ही क्रय करने को प्राथमिकता देते हैं।

2. **आर्थिक राष्ट्रवाद या शासकीय आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा के अन्य देशों के कुछ उदाहरण** (Economic Nationalism or Governmental Economic Patriotism in other nations) – आजकल अमेरिका, कई यूरोपीय देश, चीन, जपान, कोरिया व रूस आदि प्रमुख आर्थिक शक्तियों और वहाँ की जनता द्वारा आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा का अनुसरण कर स्वदेशी भाव का परिचय दिया जा रहा है। सभी औद्योगिक देश अपने प्रतिष्ठित या सुस्थापित उद्योगों को विदेशी कम्पनियों द्वारा खरीदे जाने या अधिग्रहीत किये जाने के विरूद्ध भी सभी प्रकार के प्रयास कर रहे हैं। देश के उद्यमों को विदेशी कम्पनियों के स्वामित्व मे जाने से रोकने के इन प्रयासों को अन्तर्राष्ट्रीय समालोचकों द्वारा आर्थिक राष्ट्रवाद कहा जा रहा है। अमेरिका में डोनाल्ड ट्रम्प ने अपना 2016 का चुनाव देश में रोजगार बचाने व आर्थिक राष्ट्रवाद के नारे पर ही जीता है। जापान में जनता में आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा इतनी उच्च है कि वहाँ अधिकांश आयात खुले व सस्ते होने पर भी लोग स्वदेशी उत्पाद ही खरीदते हैं। वर्ष 1988 में अमेरिकी सन्तरें सड़ गये पर जापान की जनता ने उन्हें नहीं खरीदा। यहाँ पर कुछ देशों के आर्थिक राष्ट्रवाद व स्वदेशी की चर्चा करना समीचीन ही है। ऐसे में भारत द्वारा वैश्वीकरण के नाम पर देश के उद्यमों को विदेशी निवेश के बदले विदेशी स्वामित्व व नियन्त्रण में जाने से रोकना भी आवश्यक है। विगत 25 वर्षों में डा. मनमोहन सिंह की पहल पर विदेशी निवेश प्रोत्साहन के नाम पर देश के उद्यमों को विदेशी कम्पनियों द्वारा अधिग्रहीत करने को बढ़ावा देने के प्रयास भी गम्भीर रूप से चिन्ताजनक ही रहे हैं। आर्थिक राष्ट्रवाद के कुछ उदाहरण आगे दिये जा रहे हैं :–

(i) **फ्रेंच कम्पनी डेन्वन का अधिग्रहण से बचाव** : फ्रांस में डेन्वन (Danone) एक प्रतिष्ठित डेयरी कम्पनी है। फ्रांस में अपना कारोबार द्रुतगति से बढ़ाने के लिये अमेरिका कम्पनी पेप्सीको ने उसे खरीदने का प्रस्ताव किया। डेन्वन कम्पनी के प्रवर्तकों ने उसे पेप्सीको को बेच देने का निर्णय भी कर लिया। पेप्सीको 21 अरब पाउण्ड अर्थात 30 अरब डालर (1,86,000 करोड़ रूपये) में डेन्वन को 2005 में खरीदने जा रही थी। तत्काल फ्रांस के तत्कालीन प्रधानमंत्री ने यह कहते हुये कि डेन्वन फ्रांस की अत्यन्त प्रतिष्ठा प्राप्त कम्पनी एवं देश के उद्योगों में एक अनमोल पुष्प है। यह फ्रेंच लोगों के स्वामित्व में ही रहेगी। उन्होंने इसे 'रणनीतिक उद्योग' (Strategyic Industry) कहते हुये, उसके अमरीकी कम्पनी द्वारा किये जाने वाले अधिग्रहण को रोक दिया। अधिग्रहण का औपचारिक प्रस्ताव आने के पूर्व इसकी प्रारम्भिक सरसरी सूचनाओं पर ही फ्रांस के राष्ट्रवादी समाज व राष्ट्रवादी राजनेताओं ने इस अधिग्रहण के विरूद्ध चेतावनियां देनी प्रारम्भ कर दी थीं। फ्रांस के श्रममंत्री जीन लुइस व वित्तमंत्री थिएर्री ब्रेटोन आदि तक ने इस सम्भावित अधिग्रहण के विरूद्ध चेतावनी के वक्तव्य देने प्रारम्भ कर दिये। फ्रांस के प्रधान मंत्री ने तब न केवल डेन्वन के अधिग्रहण को रूकवा दिया वरन 11 संवेदनशील व राजनीतिक उद्योगों की ऐसी सूची ही घोषित कर दी और उन्हें विदेशी अधिग्रहण के विरूद्ध पूर्ण सुरक्षित कर दिया। यूरो–अमेरीकी देशों या जापान, कोरिया आदि देशों की कम्पनियां जब हमारे किसी उद्यम को लेना होता है तो, वे हमें वैश्वीकरण का पाठ पढ़ाते हैं। लेकिन उनके राष्ट्रीय हितों के प्रति वे पूरी तरह सजग रह कर उनके यहाँ अधिग्रहण की दशा में सब प्रकार के अवरोध खड़े कर देते हैं। इसलिये कई अन्तर्राष्ट्रीय समालोचकों ने फ्रांस के तत्कालीन प्रधानमंत्री डोमिनिक डी. विलेपान को, इस घटना के बाद विश्व में आर्थिक राष्ट्रवाद का जन्मदाता घोषित कर दिया और अब यह शब्द चलन में आ गया।

(ii) **अमेरिकी कम्पनी यूनोकल के बचाव में अमेरिकी आर्थिक राष्ट्रवाद का उदाहरण** : वर्ष 2005 में अमेरिकी तेल कम्पनी यूनोकल (Unocal) को 18.4 अरब डालर (1,13,000 करोड़ रुपये तुल्य) में खरीदने का चाइना नेशनल ऑफ शोर एण्ड आयल कार्पोरेशन (CNOOC) ने प्रस्ताव किया। इस बार अमेरिका में इस बात का भारी विरोध व उनकी सीनेट में भी भारी हंगामा हुआ। सीनेट व हाउस ऑफ रीप्रेजेण्टेटिव्स में डेमोक्रेट्स व रिपब्लिकन संसादों ने एक स्वर में राष्ट्रपति बुश पर खुल कर दबाव बनाया। उनकी चिन्ता थी कि यूनोकल के चीन के हाथ में जाने से अमेरिका को ऊर्जा के क्षेत्र में वह स्पर्द्धात्मक चुनौति दे सकता है तथा इससे चीन का अनावश्यक सशक्तीकरण होगा, जो कई क्षेत्रों में अमेरिका से स्पर्द्धा कर रहा है। अमेरिकी प्रशासन ने इस चीनी अधिग्रहण को अवरूद्ध कर दिया।

(iii) **दिवालिया अमेरिकी कम्पनी ग्लोबल क्रासिंग का बचाव** : इस दिवालिया हो चुकी टेलीकॉम कम्पनी का ग्लोबल क्रासिंग के पास एक उपग्रह भी था। उसे जब एक चीनी कम्पनी ने 45 करोड़ डालर में खरीद रही थी तब भी अमेरिकी वित्त विभाग (ट्रेजरी) ने उसे अवरूद्ध कर दिया ताकि अमेरिकी संचार उपग्रह वाली कम्पनी चीन के हाथ नहीं जाये।

(iv) **आर्सेलर का उदाहरण** : यूरोप में आर्सेलर स्टील कम्पनी को भारतीय मूल इंग्लैण्ड के नागरिक लक्ष्मी मित्तल जिनकी कम्पनी भी यूरोपीय कम्पनी थी के भी उसके गैर यूरोपीय मूल के उद्यमी के हाथ जाने का स्पेन, फ्रांस व लक्जमबर्ग आदि ने प्रारम्भ में बहुत विरोध किया था।

(अ) इसी प्रकार इटली की टोल रोड़ की एक संचालक कम्पनी आटोस्ट्रेड को स्पेन की कम्पनी एबेर्टिस ने खरीदना चाहा तो उसका विरोध भी आर्थिक राष्ट्रवाद का इटालियन उदाहरण है।

(vi) स्पेनिश कम्पनी एण्डेसा को एक जर्मन कम्पनी ई. आन. द्वारा अधिग्रहीत किये जाने से रोकने के लिए स्पेनिश सरकार द्वारा नेचुरल गैस को खड़ा करना भी आर्थिक राष्ट्रवाद का ही उदाहरण है।

(vii) संयुक्त अरब अमीरात की एक कम्पनी डी.पी. वर्ल्ड द्वारा अमेरिका में 6 बन्दरगाहों (sea ports) के संचालन का काम अपने हाथ में लेने का 2006 में भारी विरोध होने से बन्दरगाह का स्वामित्व तो दूर उसका संचालन भी उसे नहीं लेने दिया गया। हमारे देश में हमने बन्दरगाहों व विमान पतनों (aairports) में 100 प्रतिशत तक विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की नीति घोषित की हुयी है, वह आश्चर्यजनक है। एक बार देश के बन्दरगाह व विमानपत्तन विदेशी अधिपत्य में गये तो हमारी सुरक्षा भी संकटापन्न होगी। भारत में मुम्बई में माएर्स्क (Maersk) का, व पी.एण्ड ओ का, कोचीन व विशाखापट्टनम के बन्दरगाहों में दुबई पोर्ट्स इंटरनेशनल का, ट्यूटिकोटिन में पी.एस.ए. सिंगापुर एवं चैन्नई में पी.एण्ड.ओ. का निवेश है। हमें मुम्बई ताज के आतंकवादी आक्रमण को भूलना चाहिये। हम अपने बन्दरगाहों के विकास के लिये छोटे से सिंगापुर जैसे नगर–राष्ट्रों (city country) जिसका (सिंगापुर का) क्षेत्रफल ही मात्र 625 वर्ग किमी. (लगभग 25x25 किमी.) है, की कम्पनियों पर पराश्रित हो रहे हैं।

देश में विमानपत्तनों (Airports) के क्षेत्र में नये ।पतचवतजे में 100 प्रतिशत और विद्यमान एयरपोर्ट्स में 74 प्रतिशत तक विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को स्वचालित अनुमोदन, जहाँ सरकार की अनुमति की भी आवश्यकता नहीं सीधे स्वतः अनुमोदन के प्रावधान जैसी नीतियाँ सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त गम्भीर भी हैं।

(viii) **ऑकलैण्ड एयरपोर्ट को विदेशी अधिग्रहण से बचाने की न्यूजीलैण्ड की सरकार की पहल** : न्यूजीलैण्ड के ऑकलैण्ड एयरपोर्ट की संचालक न्यूजीलैण्ड की ही निजी कम्पनी ऑकलैण्ड एयरपोर्ट लिमिटेड चलाती है। 2008 में कनाडा पेंशन प्लान इन्वेस्टमेण्ट बोर्ड ने इसके जब 24.9 प्रतिशत (एक चौथाई) शेयर खरीदने का सौदा कर लिया। तब न्यूजीलैण्ड की सरकार ने इस पर वीटो कर दिया। उस समय, जब कनाडा पेन्शन निवेश बोर्ड उसके शेयरों का मूल्य 3.6 डालर प्रतिशत शेयर चुका रहा था। तब इसके शेयर, शेयर बाजार में मात्र 2.1 डालर प्रति शेयर की कीमत पर उपलब्ध थे। बाजार मूल्य के डेढ़ गुने से अधिक कीमत पर केवल एक चौथाई हिस्सा पूंजी के शुद्ध व्यापारिक सौदे पर भी न्यूजीलैण्ड की सरकार ने रोक लगा दी। जिसमें कुल सौदा 180 करोड़ न्यूजीलैण्ड डालर (140 करोड़ अमरीकी डालर) में हुआ था और एयरपोर्ट कम्पनी के शेयर होल्डर भी इस सौदे के पक्ष में मतदान कर चुके थे। तब भी सरकार ने आर्थिक राष्ट्रवाद के भाव को बल देते हुये अल्पमत के शेयरों को भी विदेशी हाथों में जाने से रोक दिया।

(ix) **रूस का 2007 में प्रस्तावित विधेयक** : रूस का 2007 में कुछ चुने हुये उद्योगों व प्राकृतिक संसाधनों को विदेशी नियन्त्रण में जाने से रोकने का विद्येयक भी आर्थिक राष्ट्रवाद का उत्तम उदाहरण है।

(ग) जर्मनी की ग्लोबल मेल्ट डाऊन के बाद की अवधि में कुछ क्षेत्रों में गैर यूरोपियों (किसी व्यक्ति या कम्पनी) कंपनी के द्वारा वहाँ की किसी कम्पनी में 25 प्रतिशत से अधिक अंश खरीदने की दशा में सरकार को हस्तक्षेप करने के अधिकार का कानून, अर्जेण्टाइना में विदेशी हाथों में गये उद्यमों का पुनर्राष्ट्रीयकरण आदि ऐसे अनेक उदाहरण आर्थिक राष्ट्रवाद के सर्वत्र मिलते हैं। हमें भारत में भी अपने व्यापार, वाणिज्य, उद्योग कृषि, अवसंरचनाओं आदि को स्वदेशी स्वामित्व व नियन्त्रण में रखने की दृष्टि से आर्थिक राष्ट्रवाद का सहारा लेने की नीति को विकसित करना पड़ेगा। उससे भी आगे बढ़कर सामान्य जनता में स्वदेशी भाव जागरण का सहारा लेना ही पड़ेगा।

भारत एक प्राचीन राष्ट्र है लेकिन यहाँ विगत 25 वर्षों से देश के उद्यम विदेशी हाथों में जाते चले गये हैं। देश के उद्यम विदेशी हाथ में जाने के बदले कुछ विदेशी निवेश मिल जाने पर उसे वैश्वीकरण नहीं कहा जा सकता हैं। यह कोई हमारा वैश्वीकरण नहीं वैश्विक आर्थिक आक्रमण के सम्मुख आर्थिक विलोपन है। हमारे देश की सबसे बड़ी साबुन–डिटर्जेण्ट बनाने वाली कम्पनी टाटा आइल मिल्स लिमिटेड, सबसे बड़ी सौन्दर्य प्रसाधन कम्पनी लक्मे, सबसे बड़ी आइसक्रीम कम्पनी क्वालिटी आइसक्रीम लिमिटेड, उसके बाद मिल्कफुड आइसक्रीम, सबसे बड़ी शीतलपेय कम्पनी पार्ले के शीतल पेय के ब्राण्ड, सबसे बड़ी रेफ्रिजरेटर कम्पनी केल्वीनेटर ऑफ इण्डिया लिमिटेड, सबसे बड़ी सीमेण्ट कम्पनी ए.सी.सी. के अलावा दूसरी सबसे बड़ी सीमेण्ट

कम्पनी गुजरात अम्बुजा के साथ–साथ देश की आधी से अधिक सीमेण्ट उत्पादन क्षमता आदि एक–एक कर बिकती गयी। दवा कम्पनी रेनबेक्सी को विदेशी डाइईची ने खरीद लिया, तब किसी ने चिन्ता नहीं की थी। लेकिन जब उसे भारतीय कम्पनी सन फार्मा ने वापस खरीद लिया तो कम्पीटीशन कमीशन भी उसके विरूद्ध यह कहकर डट गया कि इस से स्पर्द्धा समाप्त हो रही हे। आश्चर्य है कि जब वोकहार्ड के खाद्य कारोबार को फ्रेंच कम्पनी डेन्वन द्वारा लेने के बाद डिब्बाबन्द खाद्य का 80 प्रतिशत नेस्ले व डेन्वन के हाथ में चला गया अथवा फ्रेंच कम्पनी लाफार्ज व स्विस कम्पनी हॉलसिम के विलय से सीमेण्ट में स्पर्द्धा घट जाने पर काम्पीटीशन कमीशन ने कोई प्रसंज्ञान नहीं लिया इसलिये देश में आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा या स्वदेशी के वैसे प्रकटीकरण की आवश्यकता है, जैसी फ्रांस के प्रधानमंत्री ही विलेपान या जापान की जनता में है, जिसका ऊपर विवेचन किया गया है।

देश को आज हमें उत्पादन व उद्योगों के क्षेत्र में स्वावलम्बी बनाना होगा। ऐसा करके देश में रोजगार, उत्पादन व आय वृद्धि कर सकेंगे। देश में विदेशी कम्पनियों के उत्पादों के स्थान पर स्वदेशी को अपनाना होगा। स्वदेशी व स्वावलम्बन हेतु निम्न प्रयास करने चाहिये :

(अ) वस्तु क्रय में स्वदेशी या आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा : आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा की अभिव्यक्ति या स्वदेशी भाव का परिचय देते हुए हमें विदेशी वस्तुओं का पूर्ण बहिष्कार करना ही है। अगर हम जूते का पालिश 'चेरी' खरीदने की बजाय 'रॉबिन' या 'गेही' खरीदेंगे तो मुनाफा और उसकी तकनीक सब कुछ हिन्दुस्तान का रहेगा और चेरी खरीदेंगे तो अमेरीकी होगा। आज हिन्दुस्तान के 80 प्रतिशत जूते का पालिश, रैकिट कालमेन अमेरीकी कम्पनी 'मेक इन इण्डिया' कर रही है। क्यों? उसमें कौन–सी प्रौद्योगिकी चाहिये? केवल ब्राण्ड व आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा। अगर हमें बल्ब खरीदना है और ट्यूबलाइट खरीदनी है और हम फिलिप्स की खरीदेंगे, तो मुनाफा हॉलैण्ड जायेगा। तकनीक उनकी सुधरेगी और अगर हम बजाज या ऑटोपाल या सूर्या या कोई हिन्दुस्तानी ब्राण्ड खरीदेंगे तो लाभ भी यहीं रहेगा, सम्पूर्ण उत्पादन यहीं होगा व प्रौद्योगिकी हमारी विकसित होगी और वह भी हमारी रहेगी। इसलिए हमको आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा का परिचय देते हुए विदेशी वस्तुओं का पूर्ण बहिष्कार की बात सोचनी चाहिए, अपने स्वदेशी उत्पादों व ब्राण्डों को अपनाना चाहिये। यदि हम अपनी खरीद में स्वदेशी को प्राथमिकता देंगे तो कितने महीने विदेशी कम्पनियाँ यहाँ पर टिकेंगी। स्वीडन से ए.बी. इलेक्ट्रोनिक्स कंपनी आयी उसने केल्वीनेटर ब्राण्ड अधिग्रहीत कर लिया। उसने महाराजा इण्टरनेशनल खरीदी। बिरला समूह की आलविन खरीदी और उसका इलेक्ट्रोनिक्स ब्राण्ड भी प्रस्तुत किया। लेकिन उसकी वांछित मात्रा में बिक्री नहीं हुयी तो सारा सब भारतीय कम्पनी वीडियोकॉन को बेच कर जाना पड़ा। एक पावर प्लांट चीन से आता है, या रेलों का साज सामान चीन या जापान से आता है, तो हमारा धन विदेशों में जायेगा। उसे बनाने में उसकी लागत के 10–20 गुने तक राशि का जो कारोबार, सहायक उद्योग व कम्पोनेण्ट सेक्टर विकसित होता वह नहीं हो सकेगा। इन सबसे रोजगार व सहायक उद्योगों का विकास हो सकता है, वह नहीं हो सकेगा। अगर हमारे पावर प्लांट हम देश में नहीं बना रहे हैं तो देश में संबंधित सहायक उद्योग व कम्पानेण्ट सेक्टर, उसमें विकसित होने वाले रोजगार और उनके धन के बहुत सारे हाथों में क्रमिक हस्तान्तरण से होने वाली उसकी दस–पन्द्रह गुनी आय के लाभ से भी हम वंचित रह जायेंगे। एक पावर प्लांट देश की भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (ठभ्म्स्), एल. एण्ड टी. (स् – ज) या अन्य किसी कम्पनी में बनता है तो उसकी जो कम्पोनेन्ट सेक्टर की कम्पनियाँ है, जिनको हम सहायक उद्योग कहते हैं उनको बड़ी मात्रा में काम मिलता है। इससे एक से दो हजार तक छोटे–बड़े सहायक उद्योगों को काम मिलता है। एक पावर प्लांट देश में बनता है तो उससे अनेक उद्योग पनपते हैं, तो उसमें उनको एनामल्ड वायर चाहिए, तो वायर एनामलिंग की 200 कम्पनियाँ खड़ी होती है, वायर एनामलिंग वाला अगर कॉपर वायर खरीदेगा, तो वायर ड्राइंग मशीन वाली 200 कम्पनियां खड़ी होती है, इस तरह 1000–1200 सहायक उद्योगों का कम्पोनेन्ट सेक्टर खड़ा होता है। उसके कारण खास करके इस प्रकार के मल्टीप्लायर इम्पैक्ट से देश में ही पावर प्लॉण्ट निर्माण होने पर कम्पोनेन्ट सेक्टर में 1000–1200 सहायक उद्योग चलते हैं, 7–8 गुणा रोजगार सृजित होता हैं और 8–10 गुना कारोबार का विस्तार होता है।

इसे समझाने के लिये हम बिल्कुल एक गाँव का उदाहरण लेते हैं जिससे कम्पोनेन्ट सेक्टर में गुणन प्रभाव से रोजगार व कारोबार विस्तार समझ में आ जायेगा। यथा – यदि गाँव के किसी व्यक्ति ने 200 रुपये का जूता वहाँ के मोची से खरीदा तो 100–100 रुपये के दो नोट उस मोची की जेब में चले गये, उस मोची ने गाँव के लोहार से जूता बनाने का औजार 200 रूपये का खरीदा तो वे ही 100–100 रुपये के दो ही नोट उस लोहार के पास चले जाते है। लोहार अगर दर्जी से 200 रुपये से कपड़े सिलवाता है तो वे ही 100–100 के दो नोट उसके पास चले जाते हैं और दर्जी अगर किसान से 200 रूपये के उत्पाद खरीदता है तो वे 100–100 रूपये के दो नोट उसके पास चले जाते हैं। ऐसे यदि तहसील, तालुका या गाँव में वह 100–100 रुपये के केवल दो नोट वहाँ पचास लोगों के बीच में घूम जाते हैं तो 10,000 रुपये की आय सृजित होती है और वही अगर हमने बाटा का जूता पहन लिया तो बाटा इण्डिया लिमिटेड, इंग्लैण्ड की कम्पनी है। और वे 200 रुपये अगर इंग्लैण्ड चले गये तो एक प्रकार से वह मल्टीप्लायर इम्पैक्ट से 200 रुपये से उस तहसील में 10,000 रुपये की आय और 50 लोगों को योगक्षेम मिल सकता था वह 200 रूपये की राशि बाहर चली जाती है। ठीक इसी प्रकार अगर पावर प्लांट चीनी कम्पनियाँ सप्लाई करती है तो यह जो कम्पोनेन्ट सेक्टर का विकास होता, वह चीन में होगा। यदि रूपये 1000 करोड़ के पावरप्लांट के आर्डर किसी भारतीय उत्पादक के पास हैं और वह कम्पोनेन्ट की सोर्सिंग अगर अपने देश से करता हैं तो मेड बाई इण्डिया के गुणन ;डनसजपचसपमतद्ध प्रभाव से कम से कम 20 हजार करोड़ रूपये तक का डाउन दि लाइन रोजगार व कारोबार विस्तार होता है। कोषों का प्रवाह या फ्लो ऑफ फण्ड नीचे तक जाता हैं और पावर प्लांट व रेल्वे के साज–सामान बाहर से आ जाते है, तो वह लाभ उन देशों को जाता है।

अतएव, विकास के लिये स्वदेशी व 'मेड बाई इण्डिया' का अनुसरण करना ही है। हम सभी देश भक्त हैं। देश के लिये आवश्यक है कि हम अपनी खरीददारी में रोजगार प्रधान स्थानीय उद्योगों व लघु उद्योगों की वस्तुओं को प्राथमिकता प्रदान करें। विकेन्द्रित उत्पादन से ही समावेशी विकास सम्भव है। लघु उद्योगों के उत्पाद व ब्राण्ड उपलब्ध नहीं होने पर ही रोजगार विस्थापक बड़े उद्योगों के उत्पाद खरीदें। स्वदेशी उत्पादों की तुलना में विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के एवं विदेशों से आयातित उत्पादों का पूर्ण बहिष्कार करें। यदि विदेशी कम्पनियों के उत्पाद देश में नहीं बिकेंगे तो वे कुछ माह भी यहाँ नहीं टिक पायेंगी। स्वदेशी भाव जागरण से ही देश में स्वदेशी एक सशक्त मुद्दा बनेगा। स्वदेशी जागरण मंच 1991 से देश में वैश्वीकरण की शुरूआत के समय से ही यह आवाहन करता रहा है एवं इस मुद्दे पर जन जागरण करता रहा है। हम सब स्वदेशी जागरण मंच का ही अंग हैं। आइये हम सब स्वेदशी भाव जगाकर स्वावलम्बी राष्ट्र बनायें। यदि अमेरिका जैसा देश (Be American-Buy American) का उद्घोष (Slogan) लगाता है तो हम स्वदेशी की बात क्यों नहीं करें। यदि एक सैनिक देश की राजनीतिक समप्रभुता के संरक्षण के लिए सीमा पर अपने प्राण तक न्यौछावर कर देता है तब हम भी देश की आर्थिक सम्प्रभुता के लिये आर्थिक राष्ट्रनिष्ठा व्यक्त करते हुए विदेशी वस्तुओं को त्यागकर मेड बाई इण्डिया को बढ़ावा दें। ऐसा करके ही हम स्वयं व हमारी भावी

पीढ़ी को आसन्न आर्थिक अराजकता से बचा पायेंगे। आइये हम सब स्वदेशी जागरण मंच के मेड बाई इण्डिया अभियान को सफल बनायें।

IV. स्वदेशी उद्यम, उत्पाद व ब्राण्ड विकास अर्थात 'मेड बाई भारत' की रीति–नीति :

यहाँ पर यह एक बार पुनः उद्धृत कर लेना समीचीन है कि हम विश्व की 16 प्रतिशत जनसंख्या हैं। लेकिन world manufacturing में हमारा अंश मात्र 2.04 प्रतिशत है, वहीं चीन, वैश्विक मैन्यूफैक्चरिंग में 23 प्रतिशत अंश के साथ क्रमांक एक पर है, जबकि, 1991 में उसका अंश मात्र 2.4 प्रतिशत था। अमेरिका भी अब 17.5 प्रतिशत अंश के साथ क्रमांक दो पर है। हमारे इस मात्र 2.04 प्रतिशत के स्वल्प अंश में भी भारतीय उद्यमों और भारतीय उत्पादों व ब्राण्डों की भागीदारी (share of Indian products and brands), 1/3 से कम है उसमें भी देश के अनेक उद्यम केवल विदेशी ब्राण्डों के लिये ही उत्पादन करते हैं या उनके लिये असेम्बलिंग (ंमउइसपदह) का ही काम करते हैं।

कई उद्योगों में तो भारत का अंश बहुत कम है यथा – वैश्विक जहाज निर्माण (world ship-building) में भारत का अंश 0.01 प्रतिशत है। दूसरी और सॉफ्टवेअर विकास में भारतीयों द्वारा अधिकांशतः विदेशी ब्राण्डों के लिये ही काम किया जाता है जिससे उसमें तो, भारतीय ब्राण्डों का अंश तो नगण्य है। यथा ERP Softwares में हमारा अंश 1 प्रतिशत से भी स्वल्प है, जबकि उसमें आधे से अधिक श्रम भारतीयों का है। ऐसे में 'मेड बाई इण्डिया' अर्थात् भारत के घरेलू उद्यमों की सहभागिता के विस्तार व देश–विदेश में मेड बाई इण्डिया उत्पादों व ब्राण्डों के प्रसार से ही भारत को औद्योगिक देशों की अग्र पंक्ति में प्रतिष्ठापित करने हेतु अग्रांकित प्रयास प्रभावी सिद्ध हो सकते है :

1. विदेशों में युक्ति परक अधिग्रहण (Takeovers Abroad)
2. तकनीकी राष्ट्रवाद से वैश्विक तकनीकी नेतृत्व (Techno-nationalism to Techno-globalism)
3. उद्योग सहायता संघों, प्रोद्योगिकी विकास सहकारी संघ या समझौते और सहकारी विकास अधिनियम (Industry Consotia, Technology Development Cooporative Association and Cooperative Research Act Like Us)
4. भारतीय उत्पादों व ब्राण्डों के प्रवर्तन व प्रसार और आधारिक रचनाओं (Infrastructure) के क्षेत्र में स्वावलम्बी पहल की आवश्यकता

1 **विदेशों में युक्ति परक अधिग्रहण (Takeovers Abroad)** : देश के निजी व सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा विदेशों में प्रत्यक्ष निवेश (Outbound Direct Investment अर्थात् ODI) के माध्यम से, ऐसे उपक्रमों, जिनके पास उन्नत प्रौद्योगिकी, उच्च प्रौद्योगिकी युक्त उत्पाद (Hightech products) या व्यापक बाजार वाले ब्राण्ड हैं, का अधिग्रहण (Takeover) करके उन्नत भारतीय उत्पादों व ब्राण्डों का प्रवर्तन किया जा सकता है।

चीन की कम्पनियों के ऐसे सीमा पार संविलयनों व अधिग्रहणों' (high profile cross border mergers and acquisitions) की संख्या बहुत बड़ी है। ऐसे चीनी कम्पनियों के सीमा पार अधिग्रहणों (Takeovers) में अधिग्रहणकर्त्ता चीनी कम्पनियों (Acquiring Companies) में सर्वाधिक शेयर भी चीन की सरकार के ही हैं। भारत के भी ऐसे सीमा पार निवेश (Outbound Direct Investment अर्थात् ODI) के माध्यम से अपने उत्पाद व ब्राण्ड स्थापित करने के कई उदाहरण हैं।

भारतीय कम्पनियों द्वारा भी सीमा पार निवेश द्वारा किये अधिग्रहणों द्वारा प्रतिष्ठित ट्रांस–नेशनल कम्पनी (Trans-national corporation या TNC) बनने के भी अनेक उदाहरण हैं। सभी प्रकार के उद्योगों में ऐसे अधिग्रहणों के पर्याप्त उदाहरण हैं। वर्ष 2001–2012 के बीच भारतीय कम्पनियों ने विदेशों में 1100 अधिग्रहण किये हैं। इनमें 80 प्रतिशत में भारतीय कम्पनियों ने ब्वदजतवससपदह जांम प्राप्त किया है। भारत की शीर्ष 25 ट्रान्स–नेशनल कम्पनियों ने विदेशों में 84 कम्पनियों का अधिग्रहण कर अन्तर्राष्ट्रीय विस्तार किया है। हम पहले भारत के व बाद में कुछ चीनी व अन्य उदाहरण लेंगे।

1.1 भारतीय उदाहरण :

भारतीय कम्पनियों द्वारा सीमा पार निवेश से उन्नत 'मेड बाई इण्डिया' उत्पादों के विकास के कुछ उदाहरण अग्रलिखित हैं–

1.1.1 अधिग्रहणों (Takovers) से टाटा मोटर्स की विश्व में 34 वें से शीर्ष 5 स्थान पर आने की विकास यात्रा : वर्ष 2004 तक टाटा मोटर्स के ट्रक व कारों की 95 प्रतिशत बिक्री, घरेलू बाजारों में ही थी और स्वचालित वाहन उद्योग में विश्व में उसका स्थान 30 क्रमांक से भी नीचे था। लेकिन, ट्रकों व बसों के उत्पादन के क्षेत्र में कोरिया में उसने डेवू कामर्शियल वेहिकल्स लिमिटेड (Daewoo commercial Vehicles Ltd.) व कुछ अन्य कम्पनियों के अधिग्रहण से, और कारों के क्षेत्र में जगुआर–लेण्ड रोवर के अधिग्रहण से विश्व के शीर्ष तीन स्वचालित वाहन के उद्यमों में स्थान बना लिया है, जहाँ अब विश्व के लगभग 100 देशों में उसके उत्पाद लोकप्रिय हो गये हैं।

(अ) टाटा मोटर्स द्वारा कोरियाई दिवालिया कम्पनी डेवू कामर्शियल वेहिकल्स लिमिटेड के अधिग्रहण से देश–विदेश में विश्व स्तरीय ट्रक व बसों (World class trucks & Buses) का प्रवर्तन : जब स्वीडन की 'ए.बी.एस. वाल्वो' कम्पनी ने अपनी 400 हार्स पावर तक के उच्च क्षमता युक्त ट्रक व बसें भारतीय बाजार में उतारे, तब टाटा मोटर्स के पास 200 हार्स पावर से ऊपर 200–400 हार्स पावर की श्रृंखला में न तो कोई उच्च क्षमता के ट्रक व बसों के मॉडल्स थे और नहीं ही उसकी कोई ऐसी तैयारी थी। ऐसे में टाटा मोटर्स यदि 200–400 हार्स पावर के वाल्वो जैसे उच्च श्रेणी के मॉडल स्वयं विकसित करती तो उसमें भी 3–4 वर्ष लग सकते थे। उनके विकास, प्रारम्भिक परीक्षण आदि में व 3–4 वर्ष धन लगाने के बाद वह सफल भी हो सकती थी या उसमें कोई समस्या भी रह सकती थी। पूर्व में भी टाटा मोटर्स की छोटी कार इण्डिका का पहला मॉडल अर्थात वेरिएण्ट–1 विफल हो चुका था। उसमें टाटा मोटर्स को तब एक वर्ष में ही 500 करोड़ रूपये का घाटा भी हुआ था। तब उन्होंने ट2 (वेरियेण्ट–2)

मॉडल बाजार में उतारा जो अत्यन्त सफल हुआ। वोल्वो के सम्मुख तत्काल टाटा के मेड बाई इण्डिया मॉडलों को बाजार में उतारने के हेतु टाटा मोटर्स डेवू के अधिग्रहण का निर्णय लिया। कोरिया में डेवू उद्यम समूह दिवालिया हो गया था और 'डेवू कामर्शियल वेहिकल्स लिमिटेड' भी कर्ज में डूबी एक बन्द पड़ी कम्पनी थी। लेकिन, उसके 200–400 हार्स पावर तक के ट्रक बाजार में सफल रहे थे और कोरिया में इनका बाजार अंश 25 प्रतिशत रहा था। इसलिये टाटा मोटर्स ने 'डेवू कॉमर्शियल वेहीकल्स' लिमिटेड 2004 में को 465 करोड़ रूपयों में खरीद कर तत्काल अपनी ओर से वे उच्च क्षमता वाले ट्रक बाजार में उतार दिये। यह अब मेड बाई इण्डिया मॉडल के रूप में पूरी तरह से भारतीय स्वामित्व व नियन्त्रण में निर्मित उत्पाद के रूप में अर्थात अब मेड बाई इण्डिया के रूप में देश–विदेश में बिक रहे है। उन पर पूरा आगे का अनुसन्धान, प्रौद्योगिकी विकास और उनके हिस्सें पुर्जों के उत्पादन पर भारत का अधिकार व नियन्त्रण भारत का है। कोरिया में आज टाटा–डेवू मोटर्स दूसरी सबसे बड़ी कामर्शियल व्हेकल कम्पनी है। पाकिस्तान में भी अफजल मोटर्स अब टाटा से उत्पादन लाइसेन्स लेकर इन उच्च क्षमता वाले ट्रकों को एसेम्बल कर रहा है। आज 40 देशों में टाटा मोटर्स के ये ट्रक निर्यात हो रहे हैं।

(ब) टाटा मोटर्स द्वारा 'जगुआर लैण्ड रॉवर' (Jaguar-Land Rover) के अधिग्रहण से विश्व स्तरीय कार उद्यम बनना – कारों के उत्पादन में टाटा मोटर्स 2008 तक देश की सामान्य एक घरेलू कम्पनी थी, जिसकी कारों की 90 प्रतिशत बिक्री केवल भारत के घरेलू बाजार में ही होती थी। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कारों में टाटा मोटर्स की कारों का कोई विशेष उल्लेखनीय स्थान नहीं था। कार उत्पादन के क्षेत्र में टाटा समूह 1991 में नेहरु–इन्दिरा युग के समाजवादी प्रतिबन्धों की समाप्ति के बाद ही आ पाया था। इसलिये वर्ष 2008 तक उसके पास इण्डिका व इण्डिगो श्रेणी की साधारण कारें थी। अति उन्नत वैश्विक प्रौद्योगिकी का अभाव था, ऐसे में उसने यूरोपीय लेण्ड रोवर एवं जगुआर कारें जो विश्व में अत्यन्त उच्च प्रतिष्ठा वाली व वैश्विक स्तर की अत्यन्त उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी से युक्त कम्पनियाँ थी। वे अत्यन्त उन्नत व अति उच्च मूल्य वर्ग की लक्जरी कारे बनाती थी। इसलिये अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में अपने ब्राण्ड की कारों की प्रतिष्ठा बनाने, वैश्विक बाजारों में टाटा की कारों की विश्व के सभी देशों में अपने ब्राण्ड की कारों की समुचित बिक्री सुनिश्चित करने एवं यूरोप–अमेरिका आदि में स्वीकार योग्य प्रौद्योगिकी जुटाने हेतु टाटा मोटर्स ने 2008 में ब्रिटिश कार कम्पनी जगुआर लेण्ड रोवर को फोर्ड मोटर्स के पास से खरीद लिया, जो जगुआर, लेण्ड रोवर और डेम्लर जैसे लक्जरी ब्राण्ड की कारें बनाती थीं। इससे टाटा मोटर्स कारों के क्षेत्र में एक उच्च वैश्विक प्रतिष्ठा व प्रौद्योगिकी वाली कम्पनी बन गयी थी। इन अधिग्रहणों में पूर्व टाटा मोटर्स का विश्व में शीर्ष 25 आटोमोबाइल कम्पनियों में कहीं भी स्थान नहीं था।

टाटा बनाम वोल्वो ट्रकों के उदाहरण की सीख : जब वर्ष 2000 के आसपास स्वीडन की कम्पनी के 200 हार्स पावर से उच्च क्षमता के 400 हार्स पावर तक के ट्रक भारत में आने लगे। आज वोल्वो कम्पनी अपने ट्रक व बस देश में ेमउइसम भी करती है। लेकिन, जब टाटा मोटर्स के पास 200 हार्स पावर से ऊपर के मॉडल नहीं थे और देश का उच्च स्तरीय ट्रकों का बाजार लगभग स्वीडन की कम्पनी वोल्वो के हाथ में ही जाने को था। वोल्वो कम्पनी भारत में मेक इन इण्डिया के नाम पर हिस्से पुर्जे जोड़ कर ट्रकों के बाजार के बड़े भाग पर अपना एकाधिकार भी कर लेने को थी ऐसे में टाटा द्वारा टाटा–डेवी मोटर्स के माध्यम से वोल्वो की स्पर्द्धा में अपने उत्पाद नहीं उतारे होते, तो देश में उच्च श्रेणी के ट्रकों व बसों का बाजार उस स्वीडिश कम्पनी के हाथ में जाने को था। वोल्वो समूह स्वीडन का उद्यम समूह है जो ट्रक, बस, कारें व कन्सट्रक्शन मशीनरी उत्पादन के क्षेत्र में है। इसका संयुक्त कारोबार लगभग 40 खरब डालर (+4.2 Trillion) अर्थात् 440 अरब स्वीडिश क्रोना अर्थात 258 लाख करोड़ रुपये तुल्य है। स्मरण रहे, स्वीडन की जनसंख्या मात्र 90 लाख है। यह स्वीडिश तकनीकी राष्ट्रवाद है कि 90 लाख जनसंख्या वाले देश की एक कम्पनी पूरे विश्व में बसों व ट्रकों को उत्पादन में नेतृत्व करती है। हम उससे बेहतर कर सकते हैं।

1.1.2 'टाटा टी' का टेटली का अधिग्रहण कर विश्व में 30 वें स्थान से उठकर, विश्व की दूसरी सबसे बड़ी चाय कम्पनी बनना : टाटा टी (कम्पनी) के भारी विज्ञापनों के उपरान्त भी टाटा चाय कम्पनी की टाटा ब्राण्ड की चाय व उस कम्पनी का समुचित विस्तार नहीं हो पा रहा था। ऐसे में टेटली कम्पनी जो वर्ष 2000 में भारी घाटे व आर्थिक संकट में थी। उसकी टाटा टी की तुलना में कई गुना अधिक बिक्री अवश्य रही थी। उसका तब टी बेग्ज में यूरोप व अमेरिका में लगभग 17 से 21 प्रतिशत तक बाजार रहा था। इसलिये टेटली कम्पनी के तब भारी आर्थिक संकट में होने पर भी टाटा टी ने 'टेटली टी' कम्पनी को खरीद लिया। अब उस टेटली नामक चाय के अन्तर्राष्ट्रीय ब्राण्ड के साथ 'टाटा ग्लोबल बेवरेज्स लिमिटेड' चाय के कारोबार में विश्व की दूसरी विशालतम कम्पनी बन गयी है।

1.1.3 महिन्द्रा का वायुयान उत्पादन के क्षेत्र में प्रवेश ।बुनपेपजपवद त्वनजम से विकास का उत्तम उदाहरण : महिन्द्रा समूह जो 2010 तक स्वचालित वाहनों के क्षेत्र (Automobile Sector) में देश का एक प्रतिष्ठित समूह रहा है। अब देश में रक्षा क्षेत्र में वायुयानों की बड़ी–बड़ी खरीद की सम्भावनाओं को देखते हुये इस उद्यम समूह को लगा कि उसे इस क्षेत्र में प्रवेश करना चाहिये। यह विचार आने पर महिन्द्रा समूह ने तत्काल आस्ट्रेलिया में चलती हुयी तीन वायुयान व वायुयानों के पुर्जों के उत्पादन में संलग्न कम्पनियों को अधिग्रहीत कर लिया। वर्ष 2009 में गिब्सलैण्ड एयरोनॉटिक्स व एयरोस्टॉफ को खरीदा ओर 2010 में बोईंग की एक सहायक कम्पनी को और खरीद लिया। भारत में भी बैंगलोर के पास मालूर में एयरोस्पेस कम्पोनेण्ट उद्यम के लिये भी महिन्द्रा एअरोस्पेस का संयंत्र स्थापित कर लिया है। अब महिन्द्रा एरोस्पेस 5 प्रकार के वायुयान बना रही है।

स्पात के क्रय–विक्रय हेतु बनी इस छोटी सी फर्म ने ठेके पर विलिज जीप एसेम्बल करने का काम लेकर धीरे–धीरे ट्रेक्टर व जीप उत्पादन में अपना स्थान बनाने के उपरान्त विश्व स्तरीय ट्रक उत्पादन हेतु अमेरिकी कम्पनी 'इण्टरनेशनल ट्रक्स' के साथ संयुक्त उपक्रम बना कर 49 टन तक की क्षमता के विश्व स्तरीय ट्रक विकसित किये। द. कोरिया में दहलवदह डवजवत ब्वउचंदल को क्रय करके अब वह स्वीडन की इ मोटर्स को अधिग्रहीत कर रही है। साथ ही जब वायुयान निर्माण (Aerospace) के क्षेत्र में प्रवेश का निश्चय किया तो महेन्द्रा एयरोस्पेस कम्पनी का निर्माण कर आस्ट्रेलियाई गिब्सलैण्ड एअरोनॉटिक्स नामक कम्पनी को खरीद लिया। इसके बाद इसने विमान के उच्च स्तरीय पुर्जे बनाने वाली कम्पनी 'एअरोस्टाफ आस्ट्रेलिया और जून 2010 में आस्ट्रेलिया में एक बोइंग की इकाई को अधिग्रहीत कर लिया। आज भारत की महेन्द्रा एअरोस्पेस निम्न

5 प्रकार के विमान बनाती है। जिनमें एक मॉडल इस समूह ने नेशनल एअरोस्पेस लेबोटरीज के साथ भी विकसित किया है। इसके वायुयान के प्रमुख मॉडल निम्न हैं।

Gippsland GA200 - Low-wing single-engine agricultural aircraft.

Gippsland GA8 Airvan - It can seat eight including one pilot.

Gippsland GA10 Airvan - It is a ten-seat, single-engined utility aircraft.

Gippsland GA18 - It is a twin-engine turboprop, high-winged, "short take off and landing" (STOL) aircraft.

NAL NM5 - Jointly developed by National Aerospace Laboratories (NAL) and Mahindra Aerospace.\

वैसे आम जनता में इसकी भी जानकारी नहीं है कि महिन्द्रा समूह वायुयान निर्माण के क्षेत्र में भी है। टाटा समूह ने भी इस क्षेत्र में सशक्त पहल की है।

1.1.4 भारतीय कम्पनियों द्वारा विदेशों में अधिग्रहण के कुछ अन्य उदाहरण

(अ) विडियोकॉन का डेवू इलेक्ट्रोनिक्स को लेने का प्रयास : सेमसंग व एल.जी. के बाद दक्षिणी कोरिया की तीसरी सबसे बड़ी इलक्ट्रोनिक्स कम्पनी डेवू इलक्ट्रोनिक्स (Daewoo Electronics) का विश्व में टी. वी., एअर कण्डीशनर्स, वाशिंग मशीन आदि में वैश्विक बाजारों में अच्छा नाम रहा है। डेवू समूह के दिवालिया हो जाने के बाद जब भारत के वीडियोकॉन उद्यम समूह ने देखा कि डेवू इलक्ट्रोनिक्स के पास उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी के साथ विश्व में अमेरिका व इग्लैण्ड सहित कई भागों में कुल 25 उत्पादन संयंत्र भी है। कम्पनी (डेवू इलेक्ट्रॉनिक्स) के पास तीसरी पीढ़ी के मनोरंजन की इलेक्ट्रोनिक (Entertainment Electronics) की प्रौद्योगिकी भी है और विदेशों में कई उत्कृष्ट अनुसन्धान केन्द्र (R & D centres) हैं। जब भारतीय वीडियोकॉन समूह ने इस 70 करोड डालर (3250 करोड़ रुपयों) में 2006 में खरीदने की पहल की थी। एक बार सब कुछ अनुकूल हो भी गया था। इससे उन्हे डेवू इलेक्ट्रानिक्स के यूरो–अमेरीकी व कोरिया, जापान के बाजारों सहित वैश्विक बाजारों में पहुँच और अत्यन्त उन्नत प्रौद्योगिकी प्राप्त हो जाती। इससे पूर्व भी उन्होंने टी. वी. ट्यूब की उन्नत प्रौद्योगिकी प्राप्त करने हेतु फ्रेंच कम्पनी थामसन पिक्चर ट्यूब्स को एवं स्वीडिश कम्पनी ए.बी. इलेक्ट्रोनिक्स की भारतीय सहायक कम्पनी को भी खरीद लिया था। उन्नत प्रौद्योगिकी वाली अनगिनत कम्पनियॉ खरीदे जाने के लिये सुलभ हैं। वैसे यह अधिग्रहण बाद में हो नहीं पाया था।

(ब) वीडियोकॉन का फ्रेच कम्पनी थामसन कलर पिक्चर ट्यूब्स का अधिग्रहण कर कलर पिक्चर ट्यूब उत्पादन में वैश्विक पहचान बनाना।

(स) टाटा द्वारा यूरोप में कोरस स्टील का अधिग्रहण : टाटा स्ट्रील ने 2007 में अपने से चार गुनी बड़ी व यूरोप की सबसे बड़ी स्टील कम्पनी कोरल को खरीद कर विश्व में स्पात उत्पादन में चौथा स्थान बना लिया। इससे वायुयान निर्माण में प्रयुक्त होने वाले स्टील सहित कई ऐसे ग्रेड के स्टील की टेक्नोलॉजी मिल गयी, जो इसके पास नहीं थी।

(द) सुजलॉन पॉवर का बेलजियम में हेन्सन ट्रांसमिशन्स को अधिग्रहीत कर गियर बॉक्स टेक्नोलॉजी प्राप्त कर उसे वापस बेचना व एक और जर्मनी में सेन्वियोन कम्पनी के अधिग्रहण के द्वारा Wind Power में 20,000 करोड़ रूपये की वैश्विक कम्पनी बनना।

1.2 छोटी सी चीनी कम्पनी लीनोवो का अधिग्रहण के मार्ग से विश्व की शीर्ष पी.सी. कम्प्यूटर कम्पनी बनना : लीनोवो चीन में एक छोटी सी सूचना प्रौद्योगिक कम्पनी थी। मात्र 2 लाख युआन की चीनी मुद्रा (Chinese currency) जो तब 24,000 डालर तुल्य अर्थात् 2.5 लाख रूपये तुल्य राशि होती थी के प्रारम्भिक निवेश से 1 नवम्बर 1984 को स्थापित की थी। वर्ष 2005 तक भी लीनोवो के कम्प्यूटर आदि उत्पादों का कोई विशेष स्थान नहीं था। तब 2005 में इसने प्रख्यात अमेरिकी कम्पनी IBM का पर्सनल कम्प्यूटर डिविजन (P.C. Division) 2.1 अरब डालर में खरीद लिया। उससे यह आज पर्सनल कम्प्यूटर के क्षेत्र में विश्व की क्रमांक एक की कम्पनी बन गयी है। भारत में भी सर्वाधिक कम्प्यूटर लीनोवो के ही कम्प्यूटर बिकते हैं। आज इसकी 47 अरब डालर (3,00,000 करोड़ रूपये तुल्य) बिक्री है। इसके बाद इसने मोटोरोला, जापानी NEC सहित विश्व की 1 दर्जन से अधिक आई.टी. कम्पनियों को अधिग्रहीत किया या अपने नियन्त्रण में उनके साथ संयुक्त उपक्रम स्थापित कर लिया। अब इसका विश्व के 160 देशों में कारोबार है, 57,000 कर्मचारी हैं और कम्प्यूटर व मोबाईल फोन उत्पादन के क्षेत्र में विश्व भर में नेतृत्व है।

1.3 भारत के लिये अधिग्रहणों द्वारा आगे बढ़ने का मार्ग चित्र

(i) देश के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के पास 2 लाख करोड़ रूपये से अधिक रोकड़ संसाधन विगत 2–3 वर्षों से बिना उपयोग के बैंकों में जमा हैं। ये कम्पनियाँ Diversification या expansion हेतु विदेशों में अधिग्रहण कर सकती हैं।

(ii) निजी क्षेत्र के सक्षम उद्यमों को उनके द्वारा प्रस्तावित अधिग्रहणों में चीन की तरह भारत को भी इस सम्बन्ध में प्रकट या अप्रकट अर्थात् गोपनीय सहायता दी जा सकती है।

(iii) इस हेतु लक्षित उद्योगों व कम्पनियों को चिह्नित कर विदेशों में चरणबद्ध अधिग्रहण से जहाँ हम बड़ी मात्रा में उन अधिग्रहीत कम्पनियों की उन्नत प्रौद्योगिक, अनुसंधान केन्द्र, उन कम्पनियों के पेटेण्ट, उत्पाद ब्राण्ड, ब्राण्ड ख्याति बाजार, वितरण तंत्र आदि पर नियन्त्रण के साथ–साथ उनके लाभों के रूप में भारी मात्रा में विदेशी मुद्रा भी प्राप्त कर सकेंगे। आज भारत से विदेशी निवेश पर जितनी आय देश से बाहर जाती है उसकी एक तिहाई ही वापस विदेशों में हमारे निवेश (ODI) पर वापस भारत में आती है। इसे हम विदेशों में सक्रिय अधिग्रहणों से बराबर तो कर ही सकते है।

(iv) **विदेशों में शेयर जारी करना (IPOs Abroad) व अन्य भी मार्गों से वित्तीय संसाधन जुटाना** : चीनी कम्पनियों द्वारा विदेशों में कम्पनियों की खरीद या अधिग्रहण के साथ–साथ विदेशों में शेयर (Shares) जारी करने के भी प्रचुर उदाहरण हैं। अकेली अलीबाबा ने 25 अरब डालर अमेरिका में शेयर जारी करके (IPO से) जुटाये हैं। वर्ष 1993 से ही चीन ने अपनी कम्पनियों को विदेशी Stock Exchanges पर लिस्टिंग करने की छूट दी हुयी है। वर्ष 2009 से 2014 तक चीनी कम्पनियों ने विदेशों में शेयर जारी करके 140 अरब डालर जुटाये हैं। भारत की भी अनेक निजी व सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनियाँ ऐसे ही विदेशों में सार्वजनिक रूप से शेयर जारी कर विदेशों में अधिकाधिक अधिग्रहण के लिये धन जुटा सकती हैं। कुछ Special Purpose Vehicles से भारतीय मूल के लोगों में प्रतिभूतियाँ जारी करके धन जुटाया जा सकता है।

2. तकनीकी राष्ट्रवाद से वैश्विक तकनीकी नेतृत्व (Techno-nationalism to Techno-globalism) : चीन ने जिस प्रकार तकनीकी राष्ट्रवाद के सहारे जहाँ प्रौद्योगिकी विकास व उत्पादन के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व की ओर पदार्पण किया, वैसे अवसर भारत के पास भी पर्याप्त रहे हैं। चीन की Techno-nationalism से Techno-globalism की इस सफल यात्रा के बिन्दु व उदाहरण अग्रानुसार हैं :

2.1 चीन द्वारा घरेलू प्रौद्योगिकी के पक्ष में तकनीकी मानकों का निरूपण (Promulgating Technical Standards in favour of homegrown technology) :

2.1.1 TD-SCDMA ls TD-LTE - TD-SCDMA यह 3 जी टेलीकॉम टेक्नोलॉजी (तीसरी पीढ़ी की टेलीकॉम टेक्नोलॉजी अर्थात Third Generation Telecom Technology) के क्षेत्र में चीनी विकल्प के रूप में तकनीकी राष्ट्रवाद का उदाहरण है, जो चीन ने CDMA की 2 जी प्रौद्योगिकी के आधार पर विकसित की थी। यूरो–अमेरिकी कम्पनियों की उन्नत 3 जी प्रौद्योगिकी के स्थान पर यह चीनी विकल्प कई दृष्टियों से कनिष्ट (Inferior) व अपूर्ण था। इसकी अनेक अपूर्णताओं के कारण चीन में 3 जी का अन्य देशों की तुलना में अल्प प्रसार ही हो पाया था। इसके कारण इसका अर्थात उसका subscriber base भी नहीं बढ़ पाया। लेकिन, चीन ने इसकी परवाह नहीं की और 3 जी दूर संचार प्रौद्योगिकी के अन्तर्गत इसी स्वदेशी प्रौद्योगिकी को अपनाया। इससे प्राप्त आय के पुनर्निवेश से ही चीन ने 4 जी प्रौद्योगिकी, यूरो–अमेरीकी कम्पनियों से पहले व बेहतर TD-LTE प्रौद्योगिकी विकसित कर ली। उसके इस धैर्य के कारण इसी में से चौथी पीढ़ी की TD-LTE प्रणाली का विकास कर चीन ने चौथी पीढ़ी की दूरसंचार प्रौद्योगिकी (4 G telecom technology) में यूरो–अमेरीकी कम्पनियों को पीछे छोड़ कर 4 जी में विश्व नेतृत्व (Technoglobalism) स्थापित करने की सशक्त पहल की है। अब उन्हीं साधनों से चीन 5जी Generation of Ttelecom Ttechnology के विकास में लग गया है। यह सब तब ही सम्भव हुआ जब 3 जी में अनेक अपूर्णताओं वाली ज्वैब्बड। को चीन ने स्वदेशी व तकनीकी राष्ट्रवाद की भावना से कठोरता पूर्वक लागू किया यदि चीन विदेशी कम्पनियों के दबाव व प्रलोभन से तब 3 जी में यूरो अमेरिकी प्रौद्योगिकी अपना लेता तो यह सम्भव ही नहीं होता।

जनवरी 2014 में, 21 देशों में 28 कॉमर्शियल TD-LTE नेटवर्क संचालित हो रहे थे और 45 अतिरिक्त नेटवर्क प्लानिंग या डिप्लायमेण्ट अवस्था में थे। चीन के 4 जी दूर संचार प्रौद्योगिकी में विश्व नेतृत्व करने में सफल होने में उसका टेक्नो नेशनलिज्म माध्यम बना जो उसे टेक्नो ग्लोबलिज्म तक ले गया। चीनी सरकार ने विदेशी निवेश आमंत्रित कर विदेशी कम्पनियों को चीन दूरसंचार तंत्र को विकसित करने का निमंत्रण नहीं दिया।

दूरसंचार के क्षेत्र में चीन ने किस प्रकार टेक्नो–नेशनलिज्म से टेक्नो ग्लोबलिज्म के क्षेत्र में पदार्पण किया है, इस पर दक्षिण कोरिया के प्रोफेसर हीजिन ली के आस्टेलियायी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में दिये व्याख्यान के ये अंश उद्धरणीय हैं –

China has become a significant player in the international standardisation regime of telecommunications. It is currently attempting international standardisation of its indigenous technologies. It is examined how China's approach to standardisation has evolved in the cases of WAPI (WLAN authentication and privacy infrastructure), TD-SCDMA and TD-LTE (locally developed 3G and 4G mobile standards). China's approach to standardisation has evolved from techno-nationalism to techno-globalism. In building, developing, and maintaining alliances, relatively more weight is placed on links with foreign firms over time than on those with local firms. China is increasingly open to foreign firms to gain their support and cooperation, which is required for international standardisation and commercialisation of locally-developed standards.

2.1.3 **Red Flag Linux :** माइक्रोसॉफ्ट के ऑपरेटिंग सिस्टम WINDOWS का यह चीन का अपना प्रारम्भिक विकल्प भी तकनीकी राष्ट्रवाद का उत्तम उदाहरण है। विण्डोज की तुलना में अनेक अपूर्णताओं के उपरान्त भी चीन ने माइक्रोसॉफ्ट को जाने वाली लाइसेन्स फीस बचाने हेतु इस ऑपरेटिंग सिस्टम को बढ़ावा देने की नीति बनायी हुयी है।

2.1.4 तकनीकी राष्ट्रवाद में भारत की चूकों में से एक उदाहरण :

(1) सी–डॉट की उपेक्षा : दूसरी और दूरसंचार के क्षेत्र में हम भारत का अनुभव देखें तो हमारे प्रथम पीढ़ी के इलेक्ट्रानिक एक्सचेंज मोटोरोला व सीमेन्स से भी उत्तम व विश्व स्तरीय थे। भारत भी 1 जी में विश्व नेतृत्व की स्थिति में था। लेकिन हमने चीन की सी कठोरता से तकनीकी राष्ट्रवाद का परिचय देते हुये अकेले सी. डाट के एक्सचेन्ज स्थापित न कर बड़ी संख्या में हम विदेशी एकसचेंज लगाते रहे। इसलिये 2 जी टेलीकॉम टेक्नोलॉजी पर अनुसंधान के लिये संसाधन ही विकसित नहीं कर पाये। अपने पास वैश्विक स्तर की प्रौद्योगिक होने पर भी एकमुखी होकर अपनी प्रौद्योगिकी को सम्बल न देकर चीनी व यूरो अमेरिकी एक्सचेंजों को खरीदते रहे। इससे हम 2 जी, 3 जी व 4 जी पर समुचित निवेश के लिये साधन नहीं जुटा पाये। हमने 2 जी के

लिये भी स्वदेशी विकल्प बवतकम्ब्ज के बारे में नहीं सोचा और न ही उन अनुसन्धानों पर समुचित निवेश किया। बस विदेशी कम्पनियों को उपकृत करते रहे। अन्यथा भारत के वैज्ञानिक बेहतर कर सकते थे।

(2) **घरेलू corDECT प्रौद्योगिकी की उपेक्षा** : 2 जी अर्थात Second Generation of Telecom Technology के क्षेत्र में भारत में IIT Chennai, C-DOT और BSNL द्वारा मिलकर 2 जी अपनाने के अवसर पर 90 के दशक में ही corDECT प्रौद्योगिकी पर सफल प्रयोग कर लेने के बाद भी corDECT के स्थान पर GSM का निर्णय कर देश 2जी, 3जी, व 4जी प्रौद्योगिकी के विकास में अत्यन्त पिछड़ गया और पूरी तरह विदेशों पर निर्भर हो गया। भारत विश्व का पहला देश था जिसने GSM के पक्ष में निर्णय लिया। हमारे विशाल Subscriber Potential को देखकर हमारे निर्णय के 2 सप्ताह में ही 6–7 अन्य देशों ने भी GSM के पक्ष में निर्णय लिया। हमसे बहुत बाद में 3 जी के समय पर ही चीन आगे बढ़ पाया था। हम उससे पहले आगे बढ़ सकते थे।

दूसरी ओर तकनीकी राष्ट्रवाद का अनुसरण करते हुये चीन द्वारा Third Generation Telecom Technology में स्वदेश में विकसित उसकी TD-SCDMA जैसी अत्यन्त अपूर्ण प्रौद्योगिकी (Imperfect Technology) को प्राथमिकता देते हुए, केवल उसी Technology के लिए Spectrum Release किया, जबकि, उससे उन्नत 3 जी की यूरो अमेरीकी प्रौद्योगिकी उस समय उपलब्ध थी। लेकिन तकनीकी राष्ट्रवाद का परिचय देते हुए चीन ने स्वदेश में विकसित TD-SCDMA प्रौद्योगिकी को ही प्राथमिकता दी, जिससे उन संसाधनों से चीन के लिए Fourth Generation की TD-LTE Technology जैसी उन्नत स्वदेशी तकनीक विकसित करना सम्भव हो सका। आज विश्व के 4 जी के 45 प्रतिशत नेटवर्कस चीन की TD-LTE प्रौद्योगिकी पर आधारित है। अब TD-LTE से प्राप्त संसाधनों से ही चीन Fifth Generation of Telecom Technology विकसित कर रहा है। इस प्रकार तकनीकी राष्ट्रवाद से चीन के लिए दूरसंचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व करना सम्भव हो सका।

2.2 **चीन के विदेशी प्रौद्योगिकी को रूपान्तरित कर अपने स्वदेशी विकल्पों से आर्थिक उत्कर्ष** : इसके कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं। हम चीन से बेहतर रूप में स्वदेशी विकल्प विकसित कर सकते हैं। बस, इनमें हम यह देख सकते है कि हमें किस दिशा में बढ़ना है।

2.2.1 **डी.वी.डी. के स्थान पर ई.वी.डी व ई.वी.डी. प्लेयर्स** : सम्पूर्ण विश्व में डी.वी.डी. (D.V.D.) व डी.वी.डी. प्लेयर्स (D.V.D. players) प्रयुक्त होते हैं। चीन में भी ये प्रयुक्त होते रहे हैं। एक डी.वी.डी. प्लेयर पर 4.5 डॉलर रायल्टी तक चीन से बाहर जाती रही है। इसलिये रायल्टी व अन्य रुपों में चीन से विदेशी मुद्रा का देश के बाहर प्रवाह नहीं हो, और चीन व चीन की अपनी घरेलू कम्पनियों के कारोबार में वृद्धि हो, इसके लिये, और साथ ही विदेशी कम्पनियाँ भी चीन में अपने उत्पाद बेचने हेतु चीनी प्रौद्योगिकी को खरीदने के लिये ही बाध्य हो, इस हेतु चीन ने डी.वी.डी. (D.V.D.) के विकल्प के रूप में कुछ छोटे से सामान्य परिवर्तनों के साथ ई.वी.डी. ;म्टण्क्द्ध अर्थात् एनहान्स्ड वर्सेटाइल डिस्क (Enhanced Versatile Disc) और ई.वी.डी. प्लेयर्स (E.V.D. Players) विकसित कर अब देश (चीन) में डी.वी.डी. व डी.वी.डी. प्लेयर्स को ई.वी.डी. व ई.वी.डी. प्लेयर्स से विस्थापित किया जा रहा है।

2.2.2 बेतार–संचार (Wireless Telecommunication) के लिये ''वापी'' का विकास (New encryption language 'WAPI' to replace 'Centrino' of Intel) : विश्व की सभी बेतार–संचार प्रणालियाँ (Wireless Communication systems) अमेरिकी कम्पनी इंटेल द्वारा विकसित 'सेण्ट्रिनो' नामक 'कूटलेखन भाषा' या एनक्रिप्शन लेंग्वेज (Encryption language) पर चलती हैं। चीन में विदेशी उत्पादों के आगमन पर रोक लगा कर चीन में विकसित या 'मेड बाई चाइना' उत्पादों का ही चलन हो, इस हेतु चीन ने एक वैकल्पिक कूटलेखन भाषा (Encryption language) WAPI विकसित कर 2004 में अपने राष्ट्रीय तकनीकी मानक बदलने की घोषणा कर दी। WLAN Authentication and Privacy Infrastructure (WAPI) वस्तुतः Wireless LANs (Large Area Networks) के लिये Chinese National Standard (GB 15629.11-2003) है। इससे यूरो अमेरीकी कम्पनियों को उनके Wireless Communication उत्पादों की चीन में बिक्री में भारी कठिनाई आती। जब तक वे चीन में अपने उत्पादन बेचने के लिये इसी चीनी तकनीक की रायल्टी देकर अपने उत्पाद वापी एनक्रिप्टेड नहीं कर लेतीं तब तक उन्हें चीन में बेचना सम्भव नहीं होता। इस पर उच्च स्तरीय बातचीत व सौदेबाजी के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति के हस्तक्षेप के बाद ही चीन ने इस राष्ट्रीय मानक की अनिवार्यता को स्थगित किया। ऐसा भी मत है कि, अभी इस मानक को और भी अधिक WIFI friendly बनाना शेष है। इसलिये केवल तब तक के लिये चीन ने इसे स्थगित किया है। अन्यथा जब भी चीन इस राष्ट्रीय तकनीकी मानक को लागू करेगा चीन के बाजार में चीन की WAPI encrypted चिप बनाने वाली आई.टी. कम्पनियों का ही अधिपत्य हो जायेगा। अथवा विदेशी यूरो अमेरिकी कम्पनियों को इस प्रौद्योगिकी का उपयोग करने हेतु चीन को रायल्टी भुगतान करना होगा। अभी भी एक विकल्प के रूप में चीन में यह मानक प्रयुक्त हो रहा है।

2.2.3 **विदेशी एकाधिकार के उत्पादों व प्रौद्योगिकी के घरेलू विकल्पों का विकास (Indian Potential पद Development of Alternative Technologies)** : चीन ने अनेक ऐसे विकल्प विकसित किए हैं। इसका एक उदाहरण यहाँ दिया जा रहा हैं –

WINDOWS के स्थान पर COS : विश्व भर में कम्प्यूटर, आज सामान्यतया अमेरिकी माइक्रोसॉफ्ट कम्पनी के ऑपरेटिंग सिस्टम ष्फ्प्छक्व्ॅैष् पर चलते हैं। इसी के कारण माइक्रोसॉफ्ट व बिल गेट्स क्रमशः विश्व के धनाढ्यतम कम्पनी व धनाढ्यतम व्यक्ति में गिने जाते हैं। चीन व भारत सहित सभी देशों से उसकी (WINDOWS की) रायल्टी/लाइसेन्स फीस के रूप में अरबों डालर प्रतिवर्ष अमेरिका में माइक्रोसॉफ्ट कम्पनी के पास जाते हैं। माइक्रोसॉफ्ट की 2014 में आय 86.83 अरब डालर (5.5 लाख करोड़ रूपये तुल्य) व कुल सम्पदा 172.38 अरब डालर (10.6 लाख करोड़ रूपये तुल्य) रही है।

चीन ने अपने तकनीकी राष्ट्रवाद (Techno-Nationalism) के अभियान में विदेशी मुद्रा बचाने और स्वदेशी व स्वावलम्बन हेतु WINDOWS को विस्थापित करने के लिये अपना स्वदेशी ऑपरेटिंग सिस्टम विकसित कर 2014 के अक्टोबर में अपने देश में विकसित ऑपरेटिंग सिस्टम COS को लागू कर दिया। विण्डोज की तुलना में इसमें सूचनाओं के संरक्षण व सुरक्षा के अनेक बेहतर लक्षण हैं। अभी 27 अक्टोबर से प्रारम्भ कर

उसने देश के 15 प्रतिशत सरकारी कम्प्यूटरों में प्रतिवर्ष COS को इन्स्टाल करना प्रस्तावित किया है। ऐसा करते–करते धीरे–धीरे वह चीन से विण्डोज व एण्ड्राइड को सदा के लिये विदा ही नहीं कर देगा, वरन् 4 जी की TD-LTE प्रणाली की तरह COS को विश्व में भी प्रवर्तित कर देगा।

भारत क्यों नहीं? क्या भारत अपना ऑपरेटिंग सिस्टम, अपने सॉफ्टवेअर और ई.आर.पी. ब्राण्ड आदि विकसित कर उन्हें प्रवर्तित नहीं कर सकता है? क्या हम माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, एप्पल, ऑरेकल आदि विदेशी कम्पनियों के लिये शारीरिक श्रम करना ही जारी रखेंगे? भारत जब स्वयं को विश्व की सॉफ्टवेयर राजधानी के रूप में देखता है और विश्व की सभी ख्यातनाम सॉफ्टवेयर कम्पनियों में प्रत्येक तीसरा व्यक्ति भारतीय है। उनकी शीर्ष उत्पाद विकास टीमों का नेतृत्व भारतीयों के पास है। तब यदि सरकार कोई प्रौद्योगिकी विकास सहयोग संघ जैसे प्रयासों से यह नहीं करवा सकती है क्या? विदेशी निवेशकों को देश में उत्पादन के लिये बुलाने के स्थान पर क्या चीन व अमेरिका आदि की तरह हमें प्रौद्योगिकी विकास सहायता संघों की पहल नहीं करनी चाहिये? आज आई.बी.एम. (IBM) जैसी कम्पनी के भारत में 1,12,000 कर्मी हैं, जबकि अमेरिका में केवल एक लाख ही कर्मचारी है, उनमें भी 36,000 भारतीय है। अर्थात आई.बी.एम. में 2,12,000 कार्मिकों में 1,48,000 भारतीय हैं। उनमें भी अनेक उत्पाद विकास विभागों में शीर्ष पर भारतीय हैं। अतएव, प्रतिभा भारतीयों में पर्याप्त है। आवश्यकता अपने उपक्रम व उनमें अपने उत्पाद व ब्राण्ड विकसित कर उनके संवर्द्धण की है।

2.4 वैकल्पिक प्रोद्योगिकी विकास में भारत की प्रबल सामर्थ्य (Indian Potential in Development of Alternative Technoloies) : इस सम्बन्ध में भारत की भी प्रबल सामर्थ्य है। मितव्ययी अभियांत्रिकी (Frugal Engineering या जुगाड़) में भी भारत की अच्छी सामर्थ्य है। कुछ भारतीय उदाहरण अग्रलिखित हैं :

2.4.1 सुपर कम्प्यूटर के विकल्प के रूप में पेरेलल प्रोसेसिंग (Parallel Processor as an indigenous frugal substitute for Super Computers) : जब अमेरिका ने भारत को 'क्रे' सुपर कम्प्यूटर 32 करोड़ रूपये में भी देने से सर्वथा इन्कार कर दिया था, तब भारत ने मात्र कुछ लाख रुपयों में पेरेलल प्रोसेसर 'परम' (Paralle Processor 'Param') बना लिया, जो क्रे सुपर कम्प्यूटर से भी कुछ मायनों के श्रेष्ठ व उच्च प्रोसेसिंग स्पीड युक्त था। उससे पूर्व विश्व में किसी ने भी समानान्तर प्रोसेसिंग की बात ही नहीं सोची थी। आज भारत 500 टेराफ्लाप तक की प्रोसेसिंग स्पीड के परम सुपर कम्प्यूटर (पेरेलल प्रोसेसर) बना रहा है और विश्व भर में निर्यात कर पेरेलल प्रोसेसर्स में विश्व नेतृत्व रखता हैं। भारत वर्ष 2017 में सुपर कम्प्यूटरों की नई पीढ़ी के साथ अब सुपर कम्प्यूटिंग के क्षेत्र में एक नए दौर में प्रवेश करने जा रहा है। 'नेशनल सुपर कम्प्यूटिंग मिशन' के अन्तर्गत भारत इस वर्ष अगस्त में देश का पहला 'पीटाफ्लॉप' प्रोसेसिंग गति वाला पहला कम्प्यूटर लाने जा रहा है। 10 हजार खरब गणनाएँ (अर्थात 1000 टेराफ्लॉप) प्रति सेकण्ड की गति को 'पीटाफ्लॉप' कहते हैं और 10 खरब गणनाएँ प्रति सेकण्ड (ट्रिलियन्स ऑफ फ्लोटिंग पाइण्ट इन्स्ट्रक्शन्स पर सेकण्ड) की गति को 'टेराफ्लॉप' कहते हैं। इससे अब भारत विश्व के उन गिने–चुने देशों की श्रेणी में आ जाएगा जो पीटाफ्लॉप गति के कम्प्यूटर विकसित कर चुके हैं। आज भी भारत विश्व के उन सात अग्रणी देशों में है, जिनके पास 500 से अधिक टेरालॉप से अधिक गति के सर्वाधिक कम्प्यूटर हैं। भारत का वर्तमान सुपर कम्प्यूटर ''परम युवा–II'' प्रति टेराफ्लॉप अति न्यून विद्युत व्यय पर चलने से विश्व के सर्वाधिक पर्यावरण कम्प्यूटर की श्रेणी में आता है, जो 537 टेरा फ्लॉप कि गति से गणना कर सकता है।

अस्सी के दशक में अमेरिका द्वारा, भारत के 32 करोड़ रूपये की लागत पर एक 'क्रे सुपर कम्प्यूटर' खरीदने के प्रस्ताव को निरस्त कर देने पर मात्र 30 करोड़ रूपये की लागत से ही भारत ने सी.डेक नामक एडवान्स कम्प्यूटिंग केन्द्र की स्थापना कर तत्कालीन 'क्रे' सुपर कम्प्यूटर से अधिक गति का पेरेलल प्रोसेसर 'परम' एक करोड़ रूपये से भी अल्प लागत में विकसित कर लिया था जिसकी प्रोसेसिंग की गति उस क्रे सुपर कम्प्यूटर तुल्य थी। यह विश्व का पहला पेरेलल प्रोसेसर था। आज हम उसी 'परम' श्रृंखला में 537 टेराफ्लाप प्रविधेयन की गति (प्रोसेसिंग स्पीड) के विश्व के अत्यन्त ऊर्जा – मितव्ययी सुपर कम्प्यूटर मात्र 13 करोड़ रूपये की लागत में ही बना रहे हैं व निर्यात भी कर रहे हैं। देश के राष्ट्रीय सुपर कम्प्यूटिंग मिशन के अन्तर्गत अब भारत 4500 करोड़ रूपये की लागत से भारत पीटाफ्लॉप (10 हजार खरब गणनाएँ प्रति सेकण्ड) के गति के 80 सुपर कम्प्यूटर विकसित कर रहा है। इस प्रकार भारत विश्व के उन 6 देशों में है जो ऐसे अत्यन्त ऊर्जा संवेदी और पीटाफ्लॉप गति वाले सुपर कम्प्यूटर बना रहा है। चीन इस वर्ष के अन्त में दस लाख खरब अर्थात् 1000 पीटाफ्लॉप गति का विश्व का सर्वाधिक द्रुत गणन क्षमता वाला सुपर कम्प्यूटर 'सनवे तेहुलाइट सुपर कम्प्यूटर' विकसित करने में लगा है। उसके पूर्व भी चीनी सुपर कम्प्यूटर 'तिआन्हे–2', वर्ष 2012–14 तक विश्व का सर्वाधिक द्रुत सुपर कम्प्यूटर आँका गया था। भारत भी अब पेरेलल प्रोसेसर से आगे बढ़ कर पीटाफ्लॉप गति के सम्पूर्ण सुपर कम्प्यूटर विकसित कर रहा है। भारत भी पीटाफ्लाप स्तर की गति वाले सुपर कम्प्यूटर विकसित कर अब 1000 पीटाफ्लाप की ओर भी द्रुत गति से बढ़ेगा।

उसके पूर्व भी चीनी सुपर कम्प्यूटर 'तिआन्हे–2', वर्ष 2012–14 तक विश्व का सर्वाधिक द्रुत सुपर कम्प्यूटर आँका गया था। भारत भी अब पेरेलल प्रोसेसर से आगे बढ़ कर पीटाफ्लॉप गति के सम्पूर्ण सुपर कम्प्यूटर विकसित कर इस क्षेत्र में तेजी से प्रगति कर रहा है।

2.4.2 अत्यन्त मितव्ययी लागत के साथ भारत एक अन्तरिक्ष महाशक्ति :

भारत आज अन्य देशों, अमेरिका, फ्रांस आदि की तुलना में लगभग एक तिहाई लागत पर उपग्रह प्रक्षेपण आदि के क्षेत्र में एक अन्तरिक्ष महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। हाल ही में भारतीय अंतरिक्ष संगठन (इसरो) ने एक ही रॉकेट से, रिकॉर्ड 104 उपग्रहों का फरवरी 15 को सफल प्रक्षेपण करके विश्व में एक अपूर्व कीर्तिमान रचा है। इन 104 उपग्रहों में 101 विदेशी उपग्रहों के साथ भारत का पृथ्वी पर्यवेक्षण उपग्रह कार्टोसेट–2 प्रमुख है। श्रीहरिकोटा स्थित अंतरिक्ष केंन्द्र से किये इस एकल मिशन प्रक्षेपण के अन्तर्गत एक ही प्रक्षेपण यान या रॉकेट से प्रक्षेपित किए उपग्रहों की, विश्व में यह अब तक की सबसे बड़ी संख्या है। अब तक यह कीर्तिमान रूस के नाम था, जिसने 2014 में एक बार में 37 उपग्रह प्रक्षेपित किये थे। देश में ही विकसित इस ध्रुवीय अंतरिक्ष प्रक्षेपण यान पीएसएलवी–सी 37 ने सतीश धवन अतरिक्ष केन्द्र के लॉन्च पैड से सफल उड़ान भरी। इसने सबसे पहले भारत के कार्टोसेट–2 श्रेणी के उपग्रह को कक्षा में प्रवेश कराया और इसके बाद शेष 103 नैनो उपग्रहों को 30 मिनट में प्रवेश कराया गया। इनमें 96 उपग्रह अमेरीका के थे। इन 104 में से 3 को छोड़कर शेष सभी उपग्रह अन्य देशों के थे। हमारे इस ध्रुवीय प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी) का यह लगातार 38वाँ सफल मिशन है। इन 104 उपग्रहों के प्रक्षेपण

के मिशन में भारत के 3 और अमेरिका की प्राइवेट फर्म्स के 96 सैटेलाईट्स हैं। इनके अतिरिक्त, 1–1 सैटेलाइट इजरायल, कजाकिस्तान, नीदरलैंड्स, स्विट्जरलैंड और संयुक्त अरब अमीरात का है। अब तक इसरो कुल 180 विदेशी उपग्रहो का प्रक्षेपण कर चुका है। इसका विवरण इस प्रकार है – अमेरिकी उपग्रह 114, कनाडा के उपग्रह 11, जर्मनी के 10, सिंगापुर के 8, इंग्लैण्ड 6, अल्जीरिया के 4, इण्डोनेशिया, जापान, स्विट्जरलैंड के 3–3 (कुल 9), इजरायल, नीदरलैंड, डैनमार्क, फ्रांस, ऑस्ट्रिया के 2–2 (कुल 10), दक्षिण कोरिया, बेल्जियम, अर्जेंटीना, इटली, तुर्की, लक्जेमबर्ग, संयुक्त अरब अमीरात व कजाकिस्तान के 1–1 (कुल 8)। इसरो ने तीसरी बार एक से अधिक उपग्रह एक साथ प्रक्षेपित किये हैं। इस सी–37 ध्रुवीय प्रक्षेपण यान से सबसे पहले 714 किलो के कार्टोसेट –2 सीरीज के सैटेलाइट को पृथ्वी की कक्षा में छोड़ा गया। इसके बाद 664 किलो वजनी बाकी 103 नैनो सैटेलाइट्स को धरती से 520 किलोमीटर दूर सन ऑर्बिट में स्थापित किया गया। इसरो ने अपनी व्यवसायिक शाखा अंतरिक्ष कॉरपोरेशन लिमिटेड के साथ मिलकर साल 1999 से विदेशी सैटेलाइट्स को लॉन्च करने का कार्यक्रम शुरू किया था। वर्ष 2014 में इसरो ने अकेले ही दूसरे देशों के 22 सैटेलाइट्स लॉन्च किए थे। इसरो ने 2008 में एक बार में 10 और जून, 2015 में 23 उपग्रह एक साथ प्रक्षेपित किए थे। इसरो ने कार्टोसेट–2 सीरीज का चौथा सैटेलाइट अब अंतरिक्ष में भेजा है। इसके माध्यम से दूर संवेदी सेवाएँ (रिमोट सेसिंग सर्विस) मिलेंगी। इसके माध्यम से भेजे चित्रों से तटीय क्षेत्रों में यातायात नियमन, जल वितरण, मैप रेग्युलेशन, समेत कई कामों में सहायता मिलेगी।

भारत का पीएसएलवी विश्व का सर्वाधिक विश्वसनीय प्रक्षेपण यान (लॉन्च व्हीकल) माना जाता है। अब भारत अपने भू समस्थैतिक प्रक्षेपण यान अर्थात जियोसिन्क्रानस लॉच वेहीकल (जीएसएलवी) पर विशेष ध्यान केन्द्रित कर रहा है। दो हजार किलो से अधिक भार के उपग्रहो का प्रक्षेपण जीएसएलवी से ही सम्भव है। इसके द्वारा प्रक्षेपित उपग्रह द्वारा 24 घण्टे में एक परिक्रमा करने के कारण उसे स्थान विशेष पर भू सापेक्ष स्थिति में स्थिर किया जा सकेगा। इस हेतु अब भारत को जीएसएलवी मेक–2 व मेक–3 पर बल देना है। इनसे हम 5 टन तक के उपग्रह प्रक्षेपित कर सकेंगे। मेक–2 का तो सफल परीक्षण विगत सितम्बर में कर चुके हैं। जीएसएलवी का प्रथम परीक्षण भारत 2014 के जनवरी में ही कर चुका है। उपग्रह प्रक्षेपण के 300 अरब डालर के बाजार में फ्रांस व चीन से स्पर्द्धा की दृष्टि से अब भारत की दृष्टि जीएसएलवी के संवर्द्धन पर लगी है।

अपनी 39वीं उड़ान के साथ हमारा ध्रुवीय प्रक्षेपण यान तो अब विश्व का सबसे विश्वसनीय भरोसेमंद सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल बन गया है। वस्तुतः 1993 से लेकर अब तक प्रक्षेपण यान की 38 उड़ानों में कई भारतीय और 180 विदेशी उपग्रहों को अंतरिक्ष मे सफलतापूर्वक स्थापित किया गया है। इस बार 104 उपग्रहों के प्रक्षेपण में हमारे वैज्ञानिकों ने पीएसएलवी के पावरफुल ग्स वर्जन का उपयोग किया है। वर्ष 2008 में हमारा मिशन चन्द्रयान और 2014 का मिशन मंगलयान भी इस अति विश्वसनीय प्रक्षेपण यान से सफल हो सके थे। अब अपनी इस विश्वसनीयता के कारण उपग्रह प्रक्षेपण, भारत के लिए आय का बड़ा स्रोत बनता जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों में भारत अंतरिक्ष प्रक्षेपण के बाजार में भरोसेमंद प्रक्षेपण देश बनकर उभरा है, और भारत ने अब तक विश्व के 21 देशों के उपग्रहों को अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया है, जिसमें गूगल और एयरबस जैसी बड़ी कम्पनियों के उपग्रह भी सम्मिलित रहे हैं। पीएसएलवी की कुल 39 उड़ानों में से 37 पूर्ण सफल व एक आंशिक सफल रही है जो एक विश्व कीर्तिमान है। एक साथ ही अब 104 उपग्रह अंतरिक्ष में भेजने के बाद इस बाजार में भारत की जगह और सुदृढ़ होगी। अमरीका की तुलना में भारत से किसी उपग्रह को अंतरिक्ष में भेजने का व्यय लगभग करीब 60–65 प्रतिशत कम होता है। इस प्रकार मात्र एक तिहाई लागत में भारत किसी भी देश का उपग्रह अंतरिक्ष में भेज सकता है। इसरो के अब ऐसे कई कीर्तिमान बन चुके है।

इसरो ने 1990 में ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी) को विकसित किया था, 1993 में इस यान से पहला उपग्रह अंतरिक्ष की कक्षा में भेजा गया, जो भारत के लिए अत्यंत गर्व की बात थी। इससे पहले यह सुविधा केवल रूस के पास थी। भारत का चन्द्रयान भी इसरो का एक अहम् कीर्तिमान है 2008 में इसरो ने चंद्रयान बनाकर इतिहास रचा था। 22 अक्टूबर 2008 को स्वदेश निर्मित इस मानव रहित अंतरिक्ष यान को चांद पर भेजा गया था। इससे पहले ऐसा केवल 6 देश सफलतापूर्वक कर पाए थे। इसलिये भारतीय मंगलयान ने तो इसरो को विश्व मान चित्र पर अत्यंत दैदीप्यमान स्थान दिलाया है। मंगल तक पहुँचने में पहले प्रयास में सफल रहने वाला भारत विश्व का एक मात्र व सबसे पहला देश बना है। अमेरिका, रूस और यूरोपीय स्पेस ऐजेंसियों को कई प्रयासों में बाद मंगल तक पहुंचने में सफलता मिली थी। चंद्रयान की सफलता के बाद मिली इस सफलता के बाद भारत की चर्चा अंतरिक्ष अनुसंधान में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होने लगी है। इसके पूर्व जीएसएलवी मार्क–2 का सफल प्रक्षेपण भी भारत के लिए अत्यन्त बडी सफलता थी, क्योंकि इसमें भारत ने अपने ही देश में बनाया हुआ क्रायोजेनिक इंजन लगाया था। इससे अब भारत को 2000 किलो से ऊपर के बड़े उपग्रह प्रक्षेपित करने के लिए दूसरे देशों पर निर्भर नही रहना पड़ेगा। अब भारत मार्क–3 भी विकसित कर रहा है। इसमें हम 5000 किलो तक के भी उपग्रह प्रक्षेपित कर भू–स्थैतिक कक्षा में स्थापित कर सकेंगे।

इसरो ने भारत को अपना स्वदेशी नौवहन तंत्र (नेविगेशन सिस्टम) भी दिया, यह भी हमारी अत्यन्त कीर्तिमयी उपलब्धि है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान ने 28 अप्रैल 2016 को भारत का सातवां नेविगेशन उपग्रह (इंडियन रीजनल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम) लॉन्च किया था। इसके साथ ही इसरो के माध्यम से भारत को अमेरिका के ज्योग्राफिकल पॉजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) के समान अपना खुद का नौवहन तंत्र नेविगेशन सिस्टम मिल गया है। इससे पहले यह क्षमता अमेरिका और रूस के पास ही थी। इस प्रकार अन्तरिक्ष अनुसन्धान के क्षेत्र में देश को स्वावलम्बी बनाने और विश्व में सबसे कम लागत पर सर्वाधिक विश्वसनीयता पूर्व प्रक्षेपण के क्षेत्र में अब इसरो का स्थान अत्यन्त प्रतिष्ठापूर्ण है। अन्य क्षेत्रों में भी उचित प्राथमिकता पूर्वक देश विश्व की अग्रणी शक्ति बन सकता है।

इसी प्रकार माइनिंग मशीनरी से ले कर अनेक मेकेनिकल इन्जिनीयरिगं उत्पाद हम कम खर्चीली (Frugal) इन्जिनीयरिंग से अपने देश में अन्यन्त अल्प लागत पर बना रहे हैं। 'मेड बाई इण्डिया' उत्पादों के विकास व प्रवर्तन में मितव्ययी अभियांत्रिकी अर्थात Frugal Engineering से जुगाड़ श्रेणी के उत्पाद प्रस्तुत करना और ऐसे कम खर्चीले आविष्कारों से बड़ी–बड़ी उत्पाद व प्रौद्योगिकी सम्बन्धी समस्याओं के हल निकालने के साथ ही विश्व के बाजारों में अपनी उपस्थिति बढ़ाना सहज सम्भव हैं। आज अमेरिका, इग्लैण्ड, फ्रांस व चीन से लेकर अर्जेण्टाइना, ब्राजील व इजरायल तक सभी देश कम खर्चीली उत्पादन प्रणालियों (Frugal Engineering) के आधार पर जुगाड़ जैसे उत्पाद या कम लागत से बनने वाले विकल्पों के विकास पर बल दे रहे हैं। मितव्ययी अभियांत्रिकी के लिये विकेन्द्रित उत्पादन और लचीली पेट्ण्ट व्यवस्था से ही सम्भव है। कठोर पेटेण्ट व्यवस्था समावेशी विकास की रोधक होती है।

2.4.3 लचीली व मानवोचित पेटेण्ट व्यवस्था से भारत के विश्व की फार्मेसी बनने की सफलता (Flexible and Humanitarian Patents Regime has made India the Pharmacy of the world) : भारत विश्व की फार्मेसी कहलाता है। हमारे यहाँ औषधियाँ व कृषि रसायन विश्व में सबसे कम कीमत पर बनते, बिकते व निर्यात होते हैं। यह सब 1970 में हमारे पेटेण्ट कानून में परिवर्तन कर हमारी आवश्यकताओं व विकास की अवस्था के अनुरूप मानवोचित आधार पर नया पेटेण्ट अधिनियम बनाने से ही सम्भव हुआ था। हमारे द्वारा औषधियों व कृषि रसायनों पर उत्पाद पेटेण्ट (Product Patent) दिये जाने को बन्द कर देने से औषधि व कृषि रसायनों के उत्पादन में प्रचुर वृद्धि हुयी। हम विश्व में बनने वाले प्रत्येक रसायन के उत्पादन की नयी विधि खोज कर उसे बनाने के लिये अधिकृत थे। विश्व में जो भी नयी दवा आती हम उसके निर्माण की वैकल्पिक प्रक्रिया खोज कर 2–4 वर्ष में बनाना प्रारम्भ कर देते। इससे विदेशी कम्पनियां भी दवाईयां हमारे देश में सस्ती बेचने को विवश थीं। इंग्लैण्ड की ग्लेक्सो कम्पनी नब्बे के दशक में एक 'जेण्टेक' टेबलेट जिसे वह पाकिस्तान में 26 रूपये, इग्लैण्ड में 70 रुपये व अमेरिका में 103 रूपये में बेचती थी, उसे भारत में 70 पैसे में बेचने को विवश थी। अब भी 1995 के पूर्व में आविष्कृत सारी औषधियां बनाने का हमें अधिकार होने से वे अत्यन्त अल्प मूल्य पर देश में उपलब्ध हैं। विश्व के अन्य देशों में ये दवाईयाँ भारत की तुलना में 10 से 60 व 100 गुनी तक मंहगी हैं। लेकिन 1995 के बाद आविष्कृत औषधियों पर 2005 से उत्पाद पेटेण्ट लागू कर देने से उनका उत्पादन हमारे अधिकार में नहीं रहा। केवल कुछ जन स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं की दशा में, महामारी फैलने पर, अनुपलब्धता की दशा में व कुछ अन्य मामलों में अनिवार्य लाइसेन्स जारी कर उनका सस्ती दर पर उत्पादन व विक्रय का लाइसेन्स मूल पेटेण्ट धारी के पेटेण्ट की अनदेखी करके दिया जा सकता है। उदाहरण के लिये यकृत व गुर्दे के केन्सर की दवा का एक इंजेक्शन 'नेक्सावर' की कीमत 2,88,000 रूपये थी। उसको अत्यन्त सस्ता एवं मात्र 8800 रुपये में बनाकर बेचने का प्रस्ताव भारत की एक कम्पनी नाट्को (Natco) ने करते हुये चीफ कण्ट्रोलर आफ पेटेण्ट्स को कम्पल्सरी लाइसैन्स के लिये आवेदन किया। भारतीय कम्पनी नाट्को ने इस इंजेक्शन के मूल आविष्कारक जर्मनी की कम्पनी 'बायर ए.जी. (Bayer A.G.) को भी इसकी कीमत की 6 प्रतिशत राशि रायॅल्टी के रुप में देने का भी प्रस्ताव किया था। इस पर तत्कालीन चीफ कण्ट्रोलर आफ पेटे्ण्टस ने मार्च 2012 में नाटको को नेक्सावर इंजेक्शन बनाने का कम्पल्सरी लाइसेन्स (Compulsory License) अर्थात अनिवार्य अनुज्ञा जारी कर दिया। आज वह 2,80,000 रुपये का इन्जेक्शन मात्र 3 प्रतिशत या 1/30 कीमत (रूपये 8800) में मिल रहा है। बायर ए.जी. को छोड़ कर यह इंजेक्शन विश्व में केवल नाट्को कम्पनी ही बना रही है। लेकिन, इस पर यूरो–अमेरिकी दबाव में तत्कालीन यू.पी.ए. सरकार ने घबरा कर उन चीफ कण्ट्रोलर आफ पेटेण्ट्स 'पी.एच. कुरियन' को पद से हटा दिया। जबकि उनके 5 वर्ष के कार्यकाल का ढाई वर्ष बाकी था। उसके बाद अनिवार्य लाइसेन्स के सभी आवेदन निरस्त हुये हैं। अब वर्तमान एन.डी.ए. सरकार पेटेण्ट के मामले में दृढ़तापूर्ण दृष्टिकोण लिये हुये है।

3. **उद्योग सहायता संघों, प्रौद्योगिकी विकास सहकारी संघ या समझौते और सहकारी विकास अधिनियम** (Industry Consortia, Technology Development Cooporative Association/Agreements and Cooperative Research Act Like U) –

उन्नत प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आधुनिकतम उन्नत उत्पादों के विकास और देश के विद्यमान उद्योगों की वैश्विक प्रतिस्पर्द्धा क्षमता बढ़ाने के लिये यूरोप व अमेरिका में Industry Consortium or Technology Development Cooperative Associations/Agreements का प्रचुरता से उपयोग किया जाता है। इस हेतु अमेरिका ने तो 1984 में ही अपने यहां एक 'सहकारी अनुसंधान एक्ट 1984' बना लिया था। उसके फलस्वरूप आज वहाँ 1000 से अधिक उद्योग सहायता संघ (Consotia) चल रहे हैं। इनमें सरकार का 70–90 प्रतिशत तक सहयोग मिल रहा है। आज आटोमोबाइल से इलेक्ट्रोनिक्स तक सभी उद्योगों के लिये उन्हीं consortiums के माध्यम से तकनीकी विकास के कार्य हो रहे है।

विश्व भर में अमेरिका सहित यूरोप, जापान, व कोरिया आदि देशों में सर्वत्र अन्तर्राष्ट्रीय स्पर्द्धा के बीच राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के उद्योगों सहित कई प्रकार के उद्योगों एवं उद्योग संकुलों के लिये प्रौद्योगिक विकास हेतु उद्योग सहायता संघों (Industry Consortia) एवं प्रौद्योगिकी विकास सहकारी समझौतों अथवा प्रौद्योगिकी विकास सहकार संघों (Technology Development Coorperation Associations or Technology Development Cooperation Agreements) का प्रचुरता से उपयोग किया है।

अमेरिका में इस हेतु 1984 में बना सहकारी अनुसन्धान अधिनियम (Cooperative Research Act 1984) technology development का प्रमुख आधार रहा है, जिससे किसी उद्योग विशेष में कार्यरत सभी इकाईयाँ सामूहिक अनुसन्धान कर सकें। इस प्रकार के स्पर्द्धा का लाभ किसी भी उद्योग संकुल (industry cluster) की प्रत्येक इकाई को लाभ मिलता है। उसके बाद a subsequent development अलग–अलग उद्यम इकाइयाँ करती रहती हैं। पूर्व अनुसंधान (Pre-competitive Research) ऐसे सामूहिक अनुसंधान संघों में Cooperative research associations अमरीकी सरकार आधे से अधिक व प्राथमिकता वाले उद्योगों के लिये 75–90 प्रतिशत तक वित्तीय योगदान तक करती है। उदाहरणतः वायुयान से स्वचालित वाहन (Motor car) उद्योग तक और फोटोनिक्स उद्योगों से लेकर जैव प्रौद्योगिकी तक के उद्योगों के सामूहिक अनुसन्धानों में अमेरिकी सरकार भारी योगदान देती है। वहाँ ऐसे सैकड़ों सामूहिक अनुसन्धान संघ हैं, जिनमें आधे से अधिक वित्तीय योगदान सरकार देती है। ऐसे उद्योग सहायता संघ व सहकारी अनुसन्धान संघ सरकार की पहल व उद्योगों की पहल, दोनों ही प्रकार से बनते हैं। उस नव विकसित प्रौद्योगिकी का उपयोग सभी सदस्य इकाईयाँ करती है।

यूरोपीय वायुयान कम्पनी 'एयर बस इण्डस्ट्री' भी प्रारम्भ में एक कन्सोर्टियम के रूप में ही विकसित की गयी थी। यह यूरोप के एक से अधिक देशों में फैले ऐसी सैकड़ों इकाईयों का उद्योग सहायता संघ था जो वायुयान के लिये अलग–अलग छोटे–छोटे पुर्जे अन्य यूरो अमेरिकी वायुयान निर्माताओं के लिये बनाते थे या बनाने में सक्षम थे। यूरोप की सरकारों के सहयोग से वे सब एकत्र आये, उनका एक पारस्परिक सहायता संघ बनाकर यूरोपीय वायुयान निर्माण सहायता समूह–'एयर बस कन्सोर्टियम' बनाया गया और अमेरिका व अमेरिकी कम्पनी बोइंग का बड़े यात्री विमानों में एकाधिकार तोड़ने एवं यूरोपीय गौरव की वृद्धि के लिये एयर बस को बाजार में उतारा गया। आज बड़े यात्री विमानों में बोईंग व एयर बस दो ही प्रमुख हैं। ऐसे सैकड़ों उदाहरण सभी प्रकार के कन्सोर्टियम के मिल जायेंगे यह उर्ध्व सहायता संघ (Vertical Consortium) था। क्षैतिजिक संघ (Horizontal Consortium) भी होते है, जहाँ

एक ही प्रकार के प्रतिस्पद्धी उद्यम साथ में आकर स्पर्द्धा पूर्व का अनुसंधान (Pre-competive Research) से लेकर बाजार अनुसन्धान, उन्नत उत्पाद विकास और कच्चे माल की सामूहिक व्यवस्था तक करते हैं। उसका लाभ सभी समान रूप से उठाने को अधिकृत होते हैं। भारत के उद्योग संकुलों के लिये ऐसे ही उद्योग सहायता संघ (Industry Consortium) उपयोगी हैं। उदाहरण के लिये राजस्थान में भीलवाड़ा में सूटिंग्स (पेण्ट आदि) के कपड़ों का संकुल, तमिलनाडु में तिरूपुर में बुनाई के वस्त्रों (knit-wear) का संकुल, सूरत में हीरों का, मोरवी (गुजरात) में टाइलों व सेरेमिक संकुल आदि ऐसे देश में 40 प्रमुख संकुल हैं। इन संकुलों के लिये उद्योग सहायता संघ (Industry Consortium) अथवा प्रौद्योगिकी विकास सहकारिता समझौता या संघ (Technology Development Cooperation Agreement ;k Association) क्या कर सकते हैं, उनमें कुछ बिन्दु संकेत रूप में नीचे दिये जा रहे हैं –

(i) कच्चे माल की प्राप्ति, उसके मोल भाव, संवर्द्धन आदि के समन्वित प्रयास

(ii) सामूहिक अनुसंधान से नयी पीढ़ी के उत्पादों के विकास की लागत बंट जाती है।

(iii) उत्पादन प्रक्रिया सुधार व मितव्यता, उत्पाद गुणवत्ता एवं उत्पादों के भावी उन्नयन हेतु अनुसंधान। उन्नत उत्पादों व नयी पीढ़ी की भावी प्रौद्योगिकी का विकास यथा चीनी टेलीकॉम कम्पनियों सरकारी सहयोग से 5 जी पाँचवी पीढ़ी की टेलीकॉम टेक्नोलॉजी और चीनी रेल कम्पनियों का संघ भी आगामी पीढ़ी के विकास पर काम कर रहा है।

(iv) मूल्य संवर्द्धित उत्पादों (Value added products) के लिये सामूहिक अनुसंधान व विकास। यथा भीलवाड़ा में पेण्ट–कोट का कपड़ा तो करोड़ों मीटर बनता है पर मूल्य संवर्द्धित उत्पाद (Value added products) नहीं बनते– यथा रेडीमेंट पेण्ट, कोट आदि जिन पर उच्च लाभ या मार्जिन होता है के लिये इस हेतु उन्नत व मितव्ययी उत्पादन के लिये अनुसंधान, बाजार, शोध आदि

(v) विदेशी बाजारों में निर्यात अनुसंधान, बाजार अध्ययन आदि पर सामूहिक व्यावसायिक शोध।

(vi) पर्यावरण संरक्षण पर अनुसंधान आदि। चाय का उत्पादन व विपणन हम भी करते हैं व श्रीलंका भी। श्रीलंका विश्वभर में ब्मलसवदमेम ज्मं का भारी विज्ञापन कर सभी श्रीलंकाई चाय के उद्यमों को सहयोग देता है। इस विषय पर व इसकी रीति–नीति पर लेखक द्वारा लेखनाधीन एक पृथक लघु पुस्तिका में चर्चा की जायेगी।

देश में आज 400 प्रमुख उद्योगों व 7000 सूक्ष्म उद्योगों के संकुल (Industry Clusters) हैं। इन उद्योग संकुलों में भारी उतार–चढ़ाव या आरोह–अवरोह के दौर आते रहते हैं। अनेक उद्योग संकुल चीनी व अन्य आयातित उत्पादों की स्पर्द्धा के कारण समस्याग्रस्त या विलोपन के कगार पर भी हैं। देश के ऐसे उद्योग संकुल समस्याग्रस्त नहीं होवें, उनमें कार्यरत सभी छोटे–बड़े उद्योग, उनके लिये साज सामान बनाने वाले उद्योग भी प्रगति करें और उनकी सबकी प्रौद्योगिकी, स्पर्द्धा क्षमता, आय, उपार्जन क्षमता, उनके उत्पादों की गुणवता, वैश्विक बाजारों पर पकड़, उनके ब्राण्डों की वैश्विक बाजारों में प्रतिष्ठा, वहाँ पर बिक्री, उनकी उत्पादन लागतों में मितव्ययता और लाभ सभी में वृद्धि हो, इस हेतु इन उद्योग संकुलों को (Industry Clusters) उद्योग सहायता संघ (Industry Consortium) में बदलना आवश्यक है।

उद्योग संकुल से उद्योग सहायता संघ (Industry cluster to consortium) का मार्गरू उदाहरणार्थ हमारे देश में 400 से अधिक संगठित लघु उद्योग संकुल (SSI Cluster) हैं और 20,000 से अधिक अति लघु या सूक्ष्म उद्योगों के असंगठित संकुल हैं। राजस्थान में भीलवाड़ा में वस्त्रोद्योग में सूटिंगस का, गुजरात के मोरवी में सेरेमिक उद्योग व घड़ी उद्योग के, सूरत में रत्न संवर्द्धन एवं साड़ियों व शर्टिंग्स के उद्योगों का और तमिलनाडु के तिरूपुर में बुनाई वाले वस्त्रों (Knit Wears) के संकुल हैं। बीस वर्ष पूर्व तिरूपुर की जनसंख्या 1.5 लाख थी, वह आज 8 लाख हो गई। वहाँ 6 लाख लोग 14 किमी. क्षेत्र में लगीं 4000 वस्त्रोद्योग इकाईयों में कार्यरत हैं। ऐसे उद्यम सकुंलों को उद्यम सहायता संघ (Industry consortium) के रूप में विकसित करके इनके उत्पादों व ब्राण्डों को और अधिक बेहतर वैश्विक प्रतिष्ठा,पहचान व बाजार दिलाये जा सकते हैं। आज तिरूपुर के अनेक उत्पादक अन्य विदेशी बहुराष्ट्रीय ब्राण्डों के लिये बनाते हैं। वहाँ के उन उत्पादकों के ब्राण्डों का विकास करके उन्हें अधिक लाभ की स्थिति में लाया जा सकता है। उर्ध्व सहायता संघों (Vertical Consortiums) के माध्यम से उन जटिल व उच्च प्रौद्योगिकी के Components उत्पादों का संवर्द्धन भी backward integration के नाते किया जा सकता है, जिनके सम्बन्ध में हम अभी बहुत पीछे हैं।

हमारा देश आज जिस प्रकार विदेशी वस्तुओं विशेष कर चीन से आयातित वस्तुओं के बाजार में बदलता जा रहा है। और देश में उत्पादित उत्पादों में भी विदेशी ब्राण्डों की ही अधिकता है। ऐसे में हमारे उद्योगों को प्रतिस्पर्द्धी बनाने एवं उनकी प्रौद्योगिकी के समुन्नयन व उनके ब्राण्डों को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने की दिशा में कन्सोर्टियम (Industry Consortium) या उद्योग सहायता संघ अत्यन्त ही प्रभावी साधन सिद्ध होंगे। ऐसे सहायता संघ एक ही प्रकार के उद्योगों या प्रति पूरक उद्योगों के सम्मिश्रण के या, दोनों ही प्रकार के हो सकते हैं। अमेरिका व यूरोप में अनेक बड़े उद्योग ऐसे ही विकसित हुये हैं व अब भी विकसित किये जा रहे हैं। एक समान उद्योगों के सहयोग संघ व प्रतिपूरक उद्योगों के सहयोग संघ की कार्य शैलियाँ भी भिन्न–भिन्न होती हैं।

भारत में भी ऐसे उद्योग सहायता संघों को उदार राजकोषीय सहायता से विश्वस्तरीय उत्पादों के विकास में सक्षम बनाया जा सकता है। वर्ष 2013 में अर्थशास्त्री Mariana Mazzucato द्वारा लिखित पुस्तक "The Entrepreneurial Stat : Debunking Private vs. Public Sector Myths" में यही बतलाया गया है कि एप्पल के I-Phone से लेकर जैव प्रौद्योगिकी तक अधिकांश निजी उद्यमों के विकास में शासकीय सहायता की बड़ी भूमिका रही है। इस संबंध में ब्लूमबर्ग का जून 19, 2013 के लेख पत्रिका के "Who created the I-Phone, Apple or the Government?" लेख का निम्न उद्धरण पठनीय है।

"Think of the Internet, biotechnology, electronics, photonics, materials science and nanotechnology -- all the

crucial technologies of our age. Go back further to oil, rail, the airlines and nuclear energy. None of these would be as developed as they are, and some would hardly exist, without the founding vision and directed action of government agencies.

LONG-TERM VISION

"Consider the Internet and the World Wide Web, energized by competition among behemoths such as Google and Facebook Inc. and countless garage-style startups such as Clarity and Avaaz. This frontier of market freedom was brought into existence by government pursuing a long-term vision that no company would have attempted. People at the Defense Advanced Research Projects Agency had the imagination to support a consortium of universities and research firms to build a network of computers able to exchange information, and undertook the sustained effort required to make it happen."

"The picture is similar throughout the economy. Of the roughly 100 most important innovations from 1971 to 2006, as identified by R&D Magazine, almost 90 percent depended heavily on federal research support, according to Mazzucato. And whatever big pharmaceutical companies might say about the risks they take and amounts they spend to develop new drugs, most of the really innovative discoveries the past few decades have come from publicly funded laboratories."

4. **भारतीय अर्थात ''मेड बाई इण्डिया'' उत्पादों व ब्राण्डों के प्रवर्तन की हमारी सामर्थ्य** : देश में स्थापित उद्यमों एवं Startups के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के उत्पाद या ब्राण्ड स्थापित करने की सुदीर्घ श्रृंखला है। उचित Enabling Environmental Support ब्रांच सहयोग से भारत भी चीन के मेड बाय चाइना उत्पादों की भाँति मेड बाय इण्डिया उत्पाद व ब्राण्डों को वैश्विक स्तर पर स्थापित कर सकता है। भारत के ऐसे कई छोटे–छोटे प्रयास जो बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का स्वरूप ले चुके हैं। उनका व कुछ नवीन startups के उदाहरण यहाँ उद्धृत किये जा रहे हैं।

4.1 **निरमा** : निरमा समूह जो आज 7000 करोड़ रूपये से अधिक कारोबार वाला समूह है व इसमें 18000 से अधिक कर्मचारी हैं। उसके प्रवर्तक (Promoter) करसन भाई पटेल साधारण रसायन कर्मी थे और अपनी नौकरी के बाद कार्यालय से आने के बाद शाम के समय घर के पिछवाड़े में फावड़े से रसायनों का सम्मिश्रण करके कपड़े धोने का डिटर्जेण्ट पाउडर बनाते और उसे अपनी साइकिल पर रख कर नौकरी पर आते–जाते समय रास्ते की अहमदाबाद की बस्तियों में आवाजें लगाकर बेचते थे। निरमा पाउडर की बिक्री बढ़ने पर उन्होंने हाथ से चलने वाला एक सीमेण्ट कांक्रीट मिक्सर खरीद कर उससे रसायन मिश्रण कर थोड़े बड़े स्तर पर डिटर्जेण्ट बनाना प्रारम्भ कर दिया। धीरे–धीरे निरमा डिटर्जेण्ट की बिक्री बढ़ती रही और आज निरमा के रासायनिक उत्पादों के अतिरिक्त निरमा विश्वविद्यालय भी देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में गिना जाने लगा है। आज देश के डिटरजेण्ट पाउडर के बाजार के 38 प्रतिशत व स्नान के साबुन के बाजार के 20 प्रतिशत पर निरमा का नियन्त्रण हैं, जहाँ कभी बहुराष्ट्रीय कम्पनी लीवर का ही वर्चस्व था और निरमा के अभाव में तो आज जिस प्रकार जूते के पॉलिश में चेरी या शीतलपेय में कोक–पेप्सी का अधिकार है उसी तरह ब्रिटिश कम्पनी लीवर का ही होता। कुछ समय पूर्व तो निरमा बांग्लादेश में सर्फ से भी अधिक बिकता रहा है। देश में भी आज सर्फ व लक्स के बाद निरमा दूसरा सर्वाधिक लोकप्रिय ब्राण्ड है। यदि आज गोदरेज, निरमा, हीपोलीन, फेना आदि ब्राण्ड नहीं होते तो अन्य देशों की तरह भारत में भी एंग्लोडच कम्पनी 'लीवर' (भारत में हिन्दुस्तान लीवर) व अमेरिकी कम्पनी प्रॉक्टर एण्ड गेम्बल और जर्मन कम्पनी हेंकेल पर ही पराश्रित रह जाते। विश्व के साबुन व प्रसाधनों के बाजारों पर इन्हीं तीन कम्पनियों का प्रमुख अधिकार है।

4.2 **अमूल** : 1945 में मुम्बई में अंग्रेज सरकार की 'बोम्बे मिल्क स्कीम' दूध संग्रह करने वाली पोल्सन कम्पनी द्वारा समय पर व पूरी कीमत नहीं देने के कारण खेड़ा कस्बे के 126 पशुपालकों ने एक अपनी ही स्थानीय सहकारी समिति बना ली जो प्रारम्भ में रोज 247 लीटर दूध वहाँ से एकत्र कर 425 किमी. दूर मुम्बई में आपूर्त्ति करने का काम करती थी। अधिकांश सदस्य सीमान्त कृषक थे। घरेलू उपयोग के बाद प्रतिदिन अपना 2–3 लीटर अतिरिक्त दूध ही बेचने को होता था। वस्तुतः 1946 में 126 सदस्यों की सोसाइटी गठन के बाद 1948 तक 432 किसान इस सोसाइटी के सदस्य बन गये और दूध संग्रह 5000 लीटर दैनिक हो गया। धीरे–धीरे दूध का संग्रह बढ़ाने लगा और सर्दियों में कभी–कभी सारा दूध नहीं भी बिकता था तो खेड़ा में ही दूध को पास्चराइज करने व शीतलीकृत करने हेतु एक छोटा सा शीत गृह बनाया। उसके लिये कुछ अतिरिक्त पूंजी भी जुटा ली। धीरे–धीरे दूध संग्रह बढ़ने लगा। 'अमूल ब्राण्ड' के नाम से दूध से चीजें आदि बनाना प्रारम्भ कर दिया। आज वह 20,000 हजार करोड़ रूपये के कारोबार वाली को–ऑपरेटिव फेडरेशन है। आज वही छोटी सी खेड़ा कस्बे की समिति विशाल त्रि–स्तरीय सहकारी फेडरेशन का रूप ले चुकी है। उसकी 20,000 करोड़ रूपये की वार्षिक बिक्री है। उसके 31 लाख 80 हजार दुग्ध उत्पादक सदस्य है, जिनमें 70 प्रतिशत छोटे, सीमान्त या भूमिहीन किसान हैं 1.3 करोड़ लीटर दूध, प्रतिदिन संग्रह होता है। आज इसकी 17 मिल्क यूनियनें और 24 जिलों में कुल 16,914 ग्राम सहकारी समितियाँ सदस्य हैं। पूरे देश में 1946 की स्वदेशी व स्वावलम्बन की पहल को देख कर दूध के क्षेत्र में जो सहकारी आन्दोलन खड़ा हुआ, उस मेड बाई इण्डिया परिवार में 1.5 करोड़ दुग्ध उत्पादक सदस्य हैं, उनकी कुल 1,44,500 दुग्ध सहकारी समितियाँ हैं, जिनका दूध 184 जिला सहकारी दुग्ध में प्रोसेस होता है और 22 प्रदेशों में अमूल जैसी फेडरेशन हैं।

यहाँ पर यह भी उल्लेखनीय है कि तब बम्बई की अंग्रेज सरकार दूध का संग्रहण पोल्सन लिमिटेड नामक कम्पनी से ही कराना चाहती थी। इसलिये उन छोटे किसानों को उसके विरूद्ध 15 दिन हड़ताल करनी पड़ी थी। उन किसानों ने 15 दिन दूध का नुकसान नहीं उठाया होता, तो आज पूरे गुजरात व पूरे देश का दुग्ध कारोबार इन किसानों के हाथ में नहीं रह कर पॉल्सन लिमिटेड या स्विस कम्पनी नेस्ले व फ्रेंच कम्पनी डेन्चन

जैसी कम्पनियों के पास होता। स्वदेशी व स्वावलम्बन से अपने उत्पाद व अपने ब्राण्ड के विकास के इस प्रयास से हम आज दूध के क्षेत्र में टेक्नो–नेशनलिज्म से टेक्नो–ग्लोबलिज्म की ओर बढ़ रहे है।

युवाओं को उद्यमिता व स्व–उद्यम स्थापना की प्रेरणा भारतीय उत्पादों व ब्राण्डों के विकास में चमत्कारी परिणाम दिखा सकती हैं। इसलिये एक उदाहरण बायोकॉन व उसकी प्रवर्तक किरण मजूमदार की चर्चा को यहां उद्धृत करेंगे।

4.3 **बायोकॉन व किरण मजूमदार** : जूलॉजी में एम.एस.सी. की उपाधि के युक्त किरण मजूमदार शाह ने अपने नाम मात्र की दस हजार रुपये की पूंजी से किराये के एक गैराज बायोकॉन नाम से 1994 में एक फर्म खोली जिसे तब बैंक ने भी ऋण देने से मना कर दिया। लेकिन, धीरे–धीरे उन्होने अपना व्यवसाय व अनुसंधान जारी रखा व ऐसे उत्पाद विकसित किये कि आज बायोकॉन भारत की सबसे बड़ी बायोफार्मास्यूटिकल्स की कम्पनी है। मधुमेह (Diabetes), कैन्सर व ऑटो इम्यून रोगों की महंगी दवाईयाँ अत्यन्त कम मूल्य पर सुलभ कराती हैं। आज कम्पनी की वार्षिक बिक्री 2000 करोड़ रूपये से अधिक व वार्षिक लाभ 250 करोड़ रूपये से अधिक है। जब बायोकॉन कम्पनी का पब्लिक इश्यू (IPO) बाजार में जारी किया तो उसके शेयरों के पब्लिक इश्यू के लिये 30 गुने आवेदन आये। आज वे हिन्दुस्तान की सबसे धनी महिला हैं और धनाढयतम महिला होने के साथ–साथ वे अनेक लाइफ सेविंग वैक्सीन, डी.एन.ए, रीकाम्बीनेन्ट टेक्नोलॉजी से जो वैक्सीन बनते हैं, जो बहुत महँगे हैं दुनिया में बहुत कम (Affordable) कीमत पर जीवन रक्षक दवाईयाँ उपलब्ध करवा रही हैं। यानि प्रतिभावान युवा वैज्ञानिक प्रतिभा की एम.एससी. उपाधि युक्त एक महिला ने अपना एक छोटा–सा 10,000 रुपये की पूँजी से कारोबार आरम्भ करके, इतना आगे जा सकती हैं तो औरों को भी प्रेरित किया जाये तो वे क्या नहीं कर सकते? इसलिये आवश्यकता है 'मेड बाई इण्डिया' के घोष से देश में हम प्रोडेक्ट व ब्राण्ड विकसित करें। अपने उद्यम विकसित कर उत्पादन करें। विदेशी पूंजी से आज अधिकांश उत्पादन हो रहा है, उसका स्थान भारतीय उद्यमी लें। हम अपने, हमारे उद्यमियों को प्रेरित करें कि वे अपने उत्पाद व ब्राण्ड विकसित (प्रोडक्ट एवं ब्राण्ड डेवलप) करें।

4.4 **स्टार्टअप व सूक्ष्म उद्यमों (Micro-Undertakings) के माध्यम से देश के उद्यमी रचेंगे नया इतिहास** : आज भारत विश्व का तीसरा सर्वाधिक स्टार्ट अप वाला देश है। विगत दो वर्षों में मुद्रा बैंक द्वारा 1.25 करोड़ अति लघु उद्यमियों को 59 हजार करोड़ व 2.76 करोड़ महिला उद्यमियों को 63 हजार करोड़ के ऋण प्रधानमंत्री मुद्रा योजना में वितरित किये हैं।

(i) **रेज पावर एक्सपर्ट का उदाहरण** : 2011 के अभियांत्रिकी स्नातक राहुल गुप्ता ने त्ंले च्वूमत म्ाचमतजे के नाम से एक कम्पनी स्थापित की। सौर ऊर्जा स्टार्ट–अप में जहाँ वे 1.37 लाख रूपये की एक टेण्डर की अर्नेस्ट मनी जुटा कर जमा करने में सफल नहीं हुये थे। उन्होंने अन्य कम्पनियों के लिये छोटे–छोटे काम कर कुछ राशि बचत कर 2012 से छोटे काम लेने शुरू किये थे। आज रेज पावर 500 करोड़ रूपये की कम्पनी है।

(ii) **सुजलॉन की सफलता** : पूना में छोटे से पारिवारिक वस्त्र व्यवसाय के स्वामी श्री तुलसी तांती ने अपने स्वयं के लिये एक पवन ऊर्जा संयंत्र बनवाया तो उस अनुभव से उन्होंने अपने अन्य परिचितों के लिये भी ऐसे संयंत्र बनवाने प्रारम्भ कर दिये। वे स्वयं अपना कोई निवेश न कर पवन ऊर्जा संयंत्र लगवाने के इच्छुक उद्यमी को ही प्रेरित करते कि पवन ऊर्जा के लिये 25 प्रतिशत पूंजी वह उद्यमी लगाये और शेष वे उसे बैंक से ऋण दिलवा देते और अपने कौशल से पवन ऊर्जा मिल एसेम्बल करा देते थे। धीरे–धीरे उन्होंने अपना कार्य विस्तार कर 25,000 करोड़ रूपये की बिक्री वाली कम्पनी, जिसका 20 देशों में कारोबार है और विश्व की अग्रणी पवन ऊर्जा कम्पनी के रूप में स्थापित कर लिया।

उपरोक्त विवेचना अनुसार आज देश अपने उद्यमियों को उचित प्रोत्साहन एवं युवाओं में उद्यमिता विकास के माध्यम से तकनीकी राष्ट्रवाद व उद्योग सहायता संघों को बढ़ावा देकर वैश्विक विनिर्माणी उत्पादन (वर्ल्ड मेन्यूफेक्चरिंग) में अपनी पहचान बना सकता है। हम स्वदेशी व स्वावलम्बन के मार्ग पर आगे बढ़ कर आर्थिक जगत में अपना प्रमुख स्थान बना सकते हैं।

V. **विकेन्द्रित नियोजन** : देश में छः लाख गांव हैं। उनका विकास विकेन्द्रित नियोजन से सम्भव है। विकेन्द्रित नियोजन पर विचार करें तो कोई एक तहसील तालुका या मंडल है वहाँ कितना पशुधन है? वहाँ कितने लोग काम करने योग्य हैं? वहाँ पर किस प्रकार के प्राकृतिक संसाधन (Raw Materials) हैं, वहाँ की कृषि सामर्थ्य (Agriculture Potential) किस तरह की है? किस प्रकार के कुटीर, सूक्ष्म, लघु व बड़े उघोग हैं? वहाँ कितने विद्यालय–महाविद्यालय हैं, लोगों में किस प्रकार का तकनीकी, व्यावसायिक या शिल्प ज्ञान है? इन सबके आधार पर वहाँ पर किस प्रकार के उद्यमों व कार्यो पर आधारित विकास की रचना होनी चाहिए? यह सभी विचार करके वैसी योजना विकसित करनी होगी। फिर पूरे देश के ग्रामों तहसीलों, जिलों व प्रदेशों की इन विकेन्द्रित स्थानीय योजनाओं को जोड़कर ही राष्ट्रीय योजनाओं में उन्हें समेकित (Integrate) करना चाहिए। पूर्व सोवियत संघ की शैली में, अब तक हमारा भी योजना आयोग जिस प्रकार पूरे देश के लिये एक केन्द्रीकृत योजना बना कर उसे आरोपित करता रहा है, वह शैली उपयुक्त नहीं थी। नीति आयोग को अब विकेन्द्रित नियोजन के मार्ग पर आगे बढ़ना होगा।

VI. **चीन के विरूद्ध प्रभावी रीति–नीति** : देश को विकास के मार्ग पर आगे ले जाने व आर्थिक स्वावलम्बन हेतु एक बार देश को चीनी उत्पादों की बाढ़ से भी बचाना होगा। आज लिखने के पेन व बल्ब से लेकर कम्प्यूटर व ट्रकों के टायर तक सभी प्रकार के चीन के उत्पाद देश के उद्योगों को चौपट कर रहे हैं। दूसरी ओर चीन हमारे विरूद्ध अनेक शत्रुतापूर्ण कार्यों में लिप्त है। इनका संक्षिप्त विवेचन विगत अध्याय में किया जा चुका है। इन सभी का हम प्रतिकार किस प्रकार करें, इसके कुछ सांकेतिक बिन्दु नीचे दिये जा रहे है।

चीन की सभी शत्रुतापूर्ण कार्यवाहियां का उत्तर चीनी वस्तुओं के बहिस्कार से ही दिया जा सकता है। इस सबंध में निम्न कार्य विशेष रूप से हमें करने हैं–

1. चीनी वस्तुओं का पूरी तरह से बहिष्कार हम स्वयं करें और देशवासियों से ही नहीं विश्व समुदाय से भी ऐसा ही आग्रह Social Media पर करें।

2. सभी व्यापारियों एवं उद्यमियों से भी चीनी वस्तुओं को आयात व उपयोग नहीं करने का आग्रह करना चाहिये।

3. चीनी वस्तुओं पर तकनीकी आधार पर यथा सम्भव रोक लगाने के लिए सरकार से आग्रह करना।

4. चीन को स्पष्ट चेतावनी देना कि यदि उसके द्वारा विविध अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत का विरोध जारी रहा और उसके द्वारा सीमा का अतिक्रमण भी जारी रहेगा तो भारत की जनता चीनी वस्तुओं का पूर्ण बहिष्कार कर देगी।

5. यदि तब भी चीन की सरकार नहीं माने तो पहले सीमित अवधि के लिए और बाद में पूरी तरह से सरकार भी चीनी आयातों पर प्रतिबन्ध लगा सकती है। चीन को यह स्पष्ट चेतावनी भी देनी कि यदि उसने भारत विरोधी गतिविधियों पर लगाम नहीं लगाई तो भारत के लोग सोशल मिडिया पर सम्पूर्ण विश्व समुदाय पर चीनी उत्पाद का बहिष्कार करने का आग्रह करेंगे।

6. चीन विश्व के अनेक भागों में मानवाधिकारों के हनन में लिप्त है और उसने तिब्बत में भी व्यापक स्तर पर मानवाधिकारों का हनन किया है साथ ही वह पर्यावरण विनाश की दृष्टि से सर्वाधिक ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन भी कर रहा है। इस दृष्टि से सम्पूर्ण वैश्विक समुदाय भी उसके विरोध में इस दिशा में आगे आ सकता है।

7. चीन के इन सभी दुष्कृत्यों का ठीक–ठाक प्रसार करने पर सम्पूर्ण विश्व में चीनी वस्तुओं का बहिस्कार प्रारम्भ हो जायेगा और इससे ही चीन सही मार्ग पर ठिकाने पर आएगा।

इसलिए आज यदि देशवासी संकल्प लें कि चाहे उन्हें किसी भी वस्तु के उपभोग से वंचित रहना पड़े तो भी कोई चीनी उत्पाद वे नहीं खरीदेंगे। समाज में भी अभियान चला कर सभी देशवासियों से आग्रह करें कि वे भी कोई चीनी सामान नहीं खरीदें। आजकल चीन कई वस्तुओं का उत्पादन भारत में ही कर रहा है। इसलिए उन पर 'मेड इन इण्डिया' भी लिखा होता है। इसलिए चीनी ब्राण्डों की पहचान करने हेतु कुछ चीन के सामानों व मोबाइल फोनों के ब्राण्डों के नाम यहाँ दिए जा रहे है। लेनोवा, ओपो, हुवाई, क्जिोमी, एमआई 4, एल्काटेल, अमोई, बीबीके, कूलपेड, कबोट, जी 5, जियोनी, हेयर, हिसेन्स, कोन्का, मोटा, जेडटीई, लिईको, मैजु, वनप्लस, क्हु 360 आदि चीनी ब्राण्डों के उत्पादों का बहिष्कार करना चाहिए। अंग्रेजी में इन ब्राण्डों का नाम अग्रानुसार है– Lenovo, Oppo, Huawei, Xiomi, mi4, Alcatel, Amoi, BBK, Coolpad, Cubot, G ve, Gionee, Haier, Hisense, Konka, Motto, ZTE, LeEco, Meizu, OnePlus, Qihoo360, QiKU, Ningbo Bird, Smartisan, Technology Happy Life, Vivo, Vsun, Wasam, Xiomi, Zopo Mobile, Zuk Mobile. आज समूचे विश्व में पर्यावरण संकट का पर्याय एवं मानवाधिकारों के लिये चुनौती बन रहे चीन के उत्पादों के स्थान पर हम भारतीय (मेड बाई इण्डिया) उत्पाद अपनायेंगे तो भारत में उत्पादन, रोजगार, आय व प्रौद्योगिकी विकास का मार्ग प्रशस्त होगा। स्वदेशी व स्वावलम्बन से जहाँ देश आर्थिक प्रगति के पथ पर बढ़ेगा, वहीं चीन के पर्यावरण विनाश, वैश्विक तनाव जनन एवं मानवाधिकार हनन की ओर बढ़ रहे कदमों को भी रोक सकेंगे। इससम हम मानव दर्शन का अनुसरण कर हम विश्व कल्याण के भी प्रेरक बनेंगे।

VII. एकात्म मानव दर्शन का अनुसरण व प्रसार : आज भारत में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में आर्थिक विषमता तेजी से बढ़ रही है। अनियंत्रित उपभोग से पर्यावरण में भारी असन्तुलन उत्पन्न हो रहा है, प्राकृतिक आपदायें बढ़ रही हैं और सृष्टि में प्रलय जैसी पर्यावरणीय चुनौतियाँ बढ़ रही हैं। एकान्तवादी उपासना मतों व अतिवादी आर्थिक विचारों से हिंसा व आतंक तेजी से बढ़ रहा है। विश्व के सभी भागों में आत्मघाती लड़ाकों का आतंक, भिन्न मतों व विचारों के समूहों की नृशंस हत्याएँ, संगठित उपराध आदि भी बढ़ रहे हैं।

इन परिस्थितियों में भारत के पारम्परिक जीवन मूल्यों की ''एकात्म मानव दर्शन'' के नाम से पण्डित दीन दयाल उपाध्याय ने जो काल–सुसंगत व्याख्या प्रस्तुत की थी, वह चिन्तन विश्व को इन सभी संकटों से उबार सकता है। एकात्म मानव दर्शन का अनुसरण करने पर जातीय व अन्य भेद–भाव और ऊँच–नीच आदि का उन्मूलन तो सहज ओर स्वाभाविक है।

पर्यावरण के क्षेत्र में बढ़ती विषमताओं और आर्थिक विकास की दृष्टि से प. दीन दयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित 'एकात्म मानव दर्शन' आज एकमात्र समाधान प्रतीत होता है। यदि व्यक्ति स्वयं को सम्पूर्ण वैश्विक संरचना के एक अंगागी घटक के रूप में मानकर सबके प्रति समन्वयपूर्वक चलता है, तब ऐसी स्थिति में हम सबके सारे व्यवहार, पर्यावरण, समाज व विश्व के प्रति सहिष्णुता पूर्ण होंगे। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व, जीव–सृष्टि और परमेष्टी परस्पर अवलम्बित हैं। इन सबके बीच परस्पर संबन्धों को दृष्टिगत रखते हुए ही विश्व के प्रत्येक व्यक्ति को अपना उपभोग व जीवन–चर्या निश्चित करनी चाहिए। प. दीनदयाल जी के इस विचार के अधीन प्रत्येक व्यक्ति को यह विचार मन में रखना चाहिये कि, वह स्वयं कोई स्वायत्त या सम्प्रभु इकाई नहीं होकर वह अपने परिवार व समाज का अंग है। प्रत्येक परिवार, अपने समाज या समुदाय का अंग है। समाज, या समुदाय राष्ट्र का अंग है। राष्ट्र विश्व का, विश्व इस सम्पूर्ण सृष्टि का, और यह सृष्टि उस परमेष्टी का अंग है जो इस अनन्त ब्रह्माण्ड में संव्याप्त है। इसलिये हमारा उपभोग इन सभी घटकों के बीच समन्वय पर आधारित होना चाहिये। इस प्रकार व्यक्ति यदि समष्टि से एकात्मकता का अनुभव कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्त्ति हेतु न्यूनतम ग्रहण करें और वह भी केवल नवकरणीय साधनों से तब ही यह सृष्टिक्रम अनवरत निर्बाध जारी रहेगा। यही बात 1965 में प. दीनदयाल उपाध्याय ने 50 वर्ष पूर्व प्रतिपादित की थी।

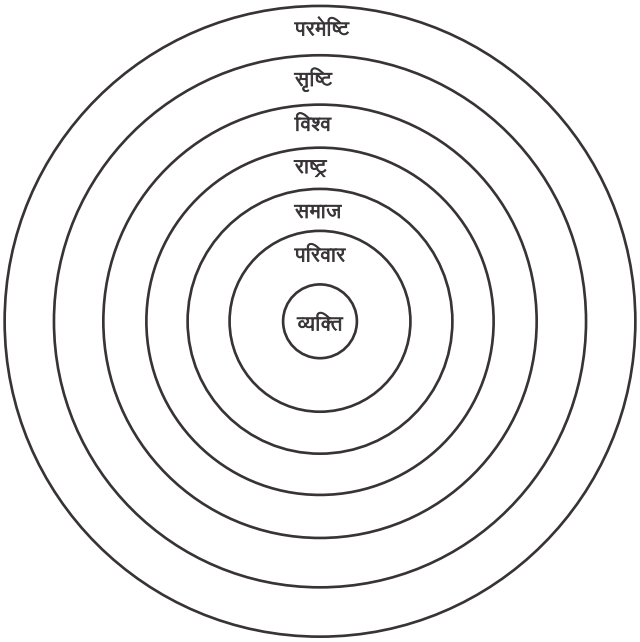

वस्तुतः मानव, परिवार, समाज, विश्व आदि के रूप में ये वलय भी पृथक–पृथक या खण्ड–खण्ड पृथकता वाले घटक न होकर एक ही समेकित इकाई के परस्पर अवलम्बित व अविच्छिन्न घटक हैं। इन्हें, एकात्म मानव दर्शन के भारतीय चिन्तन की व्याख्या करते हुये, स्व. दीनदयाल जी उपाध्याय ने निम्नानुसार अखण्ड मण्डलाकार रूप में दर्शाया है। इसका यही आशय है कि प्रत्येक व्यक्ति शेष सम्पूर्ण विश्व व परमेष्ठी के घटक के रूप में अन्य सभी वलयों अर्थात परिवार, समाज, देश, विश्व व प्रकृति के प्रति अपनत्व एवं एकात्मता की दृष्टि से व्यवहार करें। ऐसी स्थिति में विश्व में व्याप्त सभी तनाव व संघर्ष समाप्त होंगे। सब लोग प्रकृति का शोषण करने के स्थान पर उसका संपोषण करेंगे और मानव मात्र ही नहीं जीव मात्र के हित साधन में संचेष्ट रहेंगे और देश व विश्व में सबके बीच कौटुम्बिक भाव विकसित होगा।

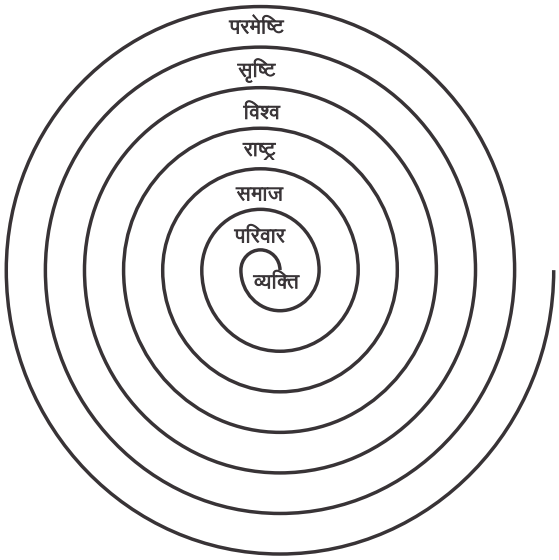

आज वि''व के सम्मुख उपस्थित सभी प्रमुख समस्याओं का प्रभावी समाधान हमारे पारम्परिक जीवन मूल्यों से अनुप्राणित एकात्म मानव दर्शन के अनुसरण से सम्भव है। इनमें तीन प्रमुख समस्याएँ हैं – (i) आतंकवाद (ii) बढ़ती आर्थिक विषमता और (iii) पर्यावरण संकट। व्यक्ति से विश्व एवं विश्व से संपूर्ण जीव सृष्टि, प्रकृति व परमेष्ठी पर्यन्त एक परस्पर अवलम्बित अंगागी भाव व व्यवहार से इन सभी समस्याओं के स्थान पर एक सुस्थिर सामंजस्यपूर्वक विश्व व्यवस्था को सर्वमंगल के आदर्श की ओर अग्रसर किया जा सकता है।

इस आदर्श की प्राप्ति हेतु सर्वप्रथम भारत को स्वदेशी स्वावलम्बन एवं 'मेड बाई इण्डिया' उत्पादों, सेवाओं व ब्राण्डों के प्रवर्तन की नीति का अनुसरण कर विश्व के सम्मुख एक समर्थ, समरस, सबल, समाधान कारक राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करना होगा।

हम अपने उसी प्राचीन गौरव को लौटा कर ही एकात्म मानव दर्शन का अनुसरण कर पुनः ''पृथिव्याये समुद्र पर्यन्त एक राडतिति'' पृथ्वी से समुद्र पर्यन्त एक राष्ट्र की वैदिक उक्ति एवं ''वसुधैव कुटुम्बकम'' सभी पृथ्वी वासी एक कुटुम्ब की तरह है व ''विश्व भवत्येकनीड़म'' सम्पूर्ण विश्व एक नीड़ या घोंसले के प्राणियों की तरह व्यवहार करें जैसे पौराणिक व औपनिषदिक उक्तियों के अनुरूप जीव मात्र के लिये सुख व सौहार्द का मार्ग प्रशस्त करेगा। अस्तु! ऐसा ही हो, इस हेतु हम सभी सक्रिय होवें। भारत व हिन्दुत्व का उत्कर्ष पुनः विश्व भवत्येकनीड़म के भाव से सर्व मंगल का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे।

इस लोक कल्याणकारक मार्ग का पहला चरण देश में सघन कृशि एवं समन्वित कृशि विकास को ओर अग्रसर करना है। पूर्वोक्त बिन्दु क्रमांक III अर्थात समन्वित कृषि विकास के अनुरूप कृषि में वांछित सार्वजनिक निवेश बढ़ाकर कृषि उत्पादकता में वृद्धि करने के साथ ही देश की आधी से अधिक जो जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, उसकी आय में समुचित वृद्धि की जा सकती है। कृषि पर निर्भर जनसंख्या के आर्थिक उत्थान के साथ ही उनके बढ़ी हुयी क्रय क्षमता से देश में औद्योगिक व वाणिज्यिक गतिविधियों में भी भारी वृद्धि होगी। इसके साथ ही उपरोक्त स्वदेशी व स्वावलम्बन के लिये स्वदेशी उद्यमों, स्वदेशी उत्पादों व स्वदेशी ब्राण्डों के विकास हेतु विदेशों में अधिग्रहण, तकनीकी राष्ट्रवाद स्टार्ट–अप संवर्द्धन आदि से 'मेड बाई भारत' आदि की रीति–नीति का जो विवेचन किया है, उनके आधार पर देश विश्व में अपना अग्रस्थान बना सकता है। इसके साथ ही सामाजिक समरसता पूर्वक एकात्म मानव दर्शन का अनुसरण करके भारत समग्र विश्व में सौहार्द व समेकित विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। आज हम विश्व की सर्वाधिक द्रुतगति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बन चुके हैं। हम अब विदेशी पूंजी के सीान पर अपने आन्तरिक आर्थिक व मौद्रिक संसाधन सृजन की नीति का अनुसरण करके विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी बन सकते हैं और अपने प्राचीन आर्थिक गौरव के युग को पुनः ला सकते हैं। अपने उस लक्ष्य को प्राप्त कर पुनः वसुधैव कुटुम्बकम के भाव से एकात्म मानव दर्शन के प्रसार से समग्र लोक मंगल के अपने पारम्परिक दायित्व का निर्वहन कर सकेंगे।

लेखक द्वारा लिखित स्नातक तथा स्नात्तकोत्तर स्तरीय पाठ्यपुस्तकें

1. प्रबंध
2. प्रबन्ध व संगठन व्यवहार
3. व्यावसायिक सन्नियम
4. प्रतिभूति विनियम एवं वित्तीय बाजार
5. कंपनी अधिनियम
6. व्यावसायिक वातावरण
7. उद्यमिता
8. अन्तर्राष्ट्रीय विपणन
9. व्यावसायिक संचार
10. विक्रय प्रबंध
11. औद्योगिक एवं व्यापारिक सन्नियम

1. Ethics and Indian Ethos in Management-Text and Cases
2. Innovative Practices in HR: Contemporary Issues and Challenges
3. Green Marketing: Issue and Perspectives
4. Consumer Behavior: Emerging Issues and Perspectives
5. Contemporary Issues in Marketing
6. Enhancing Human Capabilities: Big Challenge in Indian Perspective
7. Service Sector: Contemporary Issues
8. Emerging Issues in Accounting and Finance
9. Ethics and Values in Resource Management
10. Economic and Socio-Cultural Environment of Business

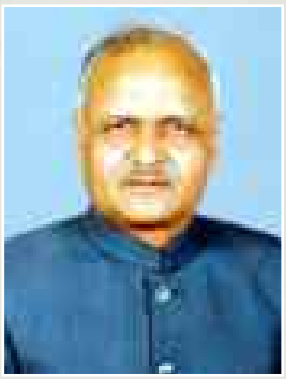

प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा

लेखक परिचय

प्रो. शर्मा 1978 से वाणिज्य एवं प्रबन्ध संकायों में स्नातकोत्तर स्तर पर अध्यापन कर रहे हैं। आपने वाणिज्य एवं प्रबन्ध के क्षेत्र में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के छात्रों के लिये 11 पुस्तकें लिखी हैं जो हिमालय पब्लिकेशन सहित राष्ट्रीय स्तर के ख्यातनाम प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित की गयी हैं। इनके मार्गदर्शन में 15 छात्रों ने पीएच.डी. स्तर का शोध किया है एवं इन्होंने 80 से अधिक अन्य शोध परियोजनाओं का निर्देशन किया है। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में इनके 230 से अधिक लेख एवं शोध पत्र प्रकाशित हुये हैं।

आर्थिक एवं वैश्विक व्यापार सम्बन्धी विषयों में रुचि होने से प्रो. शर्मा ने स्वदेशी जागरण मंच की ओर से, विश्व व्यापार संगठन (W.T.O.) के पाँचवे, छठे एवं दसवें मंत्रिस्तरीय द्विवार्षिक सम्मेलन में क्रमशः 2003 में केन्कुन (मैक्सिको), 2005 में हाँगकाँग व 2015 में नैरोबी (केन्या) में भाग लिया है।

प्रबन्ध के क्षेत्र में प्रो. शर्मा अन्तर्व्यक्ति व्यवहार की प्रभावशीलता, समय प्रबन्धन, संगठन विकास, शून्य आधारित बजट परिवर्तनों के प्रबन्ध, नेतृत्व विकास आदि विषयों के प्रशिक्षक भी हैं।

इन्होंने आर्थिक वैश्वीकरण, विश्व व्यापार संगठन, स्वदेशी, विनिवेश आदि विषयों पर 21 लघु पुस्तिकाएँ भी लिखी हैं। वर्तमान में प्रो. शर्मा स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय सहसंयोजक भी हैं।

इनका ई–मेल आई.डी. bpsharma131@yahoo.co.in है।

View publication stats